आचार्यपाणिनिप्रणीता

अष्टाध्यायी

(वार्तिकगणपाठसहिता)

सम्पादक

राजकिशोर मणि त्रिपाठी

संस्कृत सेवा संस्थान

गोरखपुर

आचार्यपाणिनिप्रणीता

अष्टाध्यायी

(वार्तिकगणपाठसहिता)

सम्पादक
राजकिशोर मणि त्रिपाठी

संस्कृत सेवा संस्थान
गोरखपुर

आचार्यपाणिनिप्रणीता

अष्टाध्यायी

(वार्तिकगणपाठसहिता)

सम्पादक
राजकिशोर मणि त्रिपाठी

संस्कृत सेवा संस्थान
गोरखपुर

प्रकाशक,
संस्कृत सेवा संस्थान
सी० १८९/१५९ खुर्रमपुर
पो०- गीताप्रेस
गोरखपुर-२७३००५

प्रथम संस्करण
१९९८ ई०

मूल्य : तीन सौ पचास रुपये

मुद्रक :
महावीर प्रेस
बी. २०/४४ भेलूपुर,
वाराणसी

प्रकाशकीय

पाणिनीय पद्धति से संस्कृत सीखने वाले व्यक्ति को दृष्टि में रखकर ***अष्टाध्यायी*** का यह संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। इससे न केवल जिज्ञासु जनों को ही लाभ मिलेगा, अपितु, सभी को मिलेगा। इसमें सूत्रों के अर्थ के साथ अनुवृत्त पदों तथा अनुवृत्त होने वाले पदों एवं कौमुदी क्रमाङ्क का सन्निवेश किया गया है। साथ ही सूत्रों में प्रयुक्त वार्तिक एवं गणों का भी सन्निवेश सूत्रों के नीचे ही किया गया है। इससे विषय को सद्यः तथा स्थायी रीति से समझने में लाभ होगा।

यह विश्वास किया जाता है कि जिज्ञासु जन तथा शान-शौकत की पूर्ति में मँहगाई का उत्साहपूर्वक सामना करने वाले विद्यार्थी पुस्तक के मूल्य को अतिरिक्त बोझ न मानकर अपने ज्ञान का सम्वर्द्धन करेंगे।

FROM PUBLISHER'S PEN

This edition of **ASTHADHYAYI** is being published keeping in mind a learner of Sanskrit with the help of the PANINIYA system. This book will benefit not only the inguisitive but others also.In this book are included together with the meanings of the ***SUTRAS***, ANUVRITTA and to be ***Anuvritta Padas*** and the serial numbers of ***SUTRAS*** given in ***KAUMUDI***. At the same time under the very ***SUTRAS*** are given the ***VARTIKAS*** and the ***GANAS*** aslo. This will be helpful in a quick and lasting understanding of the text.

It is hoped that those who are keen to learn and those students who do not mind the rising cost when it comes to buying ostensible goods will not feel that the cost of the book will mean an additioned burden on them and will add to their knowledge by reading this book.

●

पाणिनये नमः

(१) येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः ।। (पा० शि०)

(२) येन धौता गिरः पुंसां विमलैः शब्दवारिभिः
तमश्चाज्ञानजं भिन्नं तस्मै पाणिनये नमः ।। (पा० शि०)

(३) अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै पाणिनये नमः ।। (पा० शि०)

(४) पाणिनेराचार्यस्य सिद्धम् । (कात्यायन)

(५) प्रमाणभूत आचार्यो दर्भपवित्रपाणिः शुचावकाशे
प्राङ्मुख उपविश्य महता यत्नेन सूत्रं प्रणयतिस्म ।
तत्राशक्यं वर्णेनाप्यनर्थकेन भवितुं किं पुनरियता सूत्रेण । (पतञ्जलि)

(६) तत्राचार्य्यः सुहृद्भूत्वाऽन्वाचष्टे । (पतञ्जलि)

(७) तदनल्पमतेर्वचनं स्मरत । (पतञ्जलि)

(८) आकुमारं यशः पाणिनेः । (पतञ्जलि)

(९) यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम् । (पतञ्जलि)

(१०) सर्ववेदपारिषदं हीदं शास्त्रम् । (पतञ्जलि)

(११) शोभना खलु पाणिनेः सूत्रस्य कृतिः । (पतञ्जलि)

(१२) पाणिनीयं महत् सुविहितम् । (पतञ्जलि)

(१३) पाणिनि-शब्दो लोके प्रकाशते । (वामन)

(१४) महती सूक्ष्मेक्षिका वर्तते सूत्रकारस्य । (वामन)

(१५) मनसा वचसा च कर्मणा कृत एवायमिहानिवेशितः
न हि दर्भपवित्रपाणिताद्यपरं मङ्गलमत्र कीर्त्यते ।। (हरदत्त)

(१६) For paninis Grammar is the centre of a vast and important branch of the anicient literature. No work has struck deeper roots than this in the soil of the scientific development of India. ......who is a Rishi in the proper sense of the word.

(गोल्डस्ट्रकर)

(१७) पाणिनि ने संस्कृत भाषा को अमरता प्रदान की । (वासुदेवशरण)

(१८) भारतादन्यदेशेषु स्थापितं यैस्तु तद्यशः
तेषामग्र्याय मान्याय पाणिनये नमो नमः ।। (राजकिशोर)

●

समर्पण

जिनके तपः एवं स्वाध्याय से जमुई 'जमुई पण्डित' बना उन श्री रामदयालात्मज महनीयकीर्ति पं० कुञ्जविहारी शुक्ल की पावन भावना को उनके एक अन्यतम एवं लघुतम दायभोक्ता के द्वारा सश्रद्ध समर्पित ।

—राजकिशोर मणि त्रिपाठी

श्रीः

विभाकरं गणेशञ्च गौरीं मृत्युञ्जयं तथा
नारायणं हनूमन्तं श्रेयसे प्रणमाम्यहम् ।।

पुरोवाक्

अष्टाध्यायी का सम्पादन जिन लोगों ने सपरिश्रम किया है, उन्हें नमस्कार करके तथा उनके ग्रन्थों का अवलोकन करके वर्तमानकालोपयोगी एक अष्टाध्यायी संस्करण निकालने की अन्तःप्रेरणा मुझे हुई। फलस्वरूप यह संस्करण पाठकों के समक्ष है। इसके सम्पादन में मेरी भूमिका एक मालाकार की है। पुष्प किसी के हैं, चयन किसी ने किया है। मैंने तो सूई और तागा से काम किया है। फलस्वरूप इस माला की निर्मिति हुई है।

ग्रन्थस्वरूप—अध्याय और पाद का उल्लेख करके पाणिनीयसूत्र स्थूल अक्षर में बीच में दिया गया है। उसके सटे बायें सूत्राङ्क तथा सटे दायें सिद्धान्तकौमुदी का क्रमाङ्क दिया गया है। सिद्धान्तकौमुदी क्रमाङ्क के बाद उस सूत्र के जिन अंशों की अनुवृत्ति जहाँ तक जाती है, उसका उल्लेख किया गया है। सबसे बायें, उस सूत्र में पूर्व सूत्रों से जिन जिन पदों की अनुवृत्ति हुई है, उसका उल्लेख किया गया है तथा सबसे दायें राष्ट्रभाषामें संक्षिप्त अर्थ दिया गया है। सभी अन्वित पदों का समन्वय इसमें नहीं है। उसे ध्यान में रखना पड़ेगा। सूत्र लेखन के इस क्रम में जिन सूत्रों से सम्बद्ध वार्तिक मिलते हैं, उन्हें दूसरे टाइप में * इस चिह्न के अन्तर्गत उन्हीं सूत्रों के नीचे दिया गया है पर उनका अर्थ नहीं दिया गया है। क्योंकि सूत्रार्थ देना ही अपेक्षित था। जिन सूत्रों में गण का निर्देश आया है वहाँ सूत्र के नीचे गणशब्दों का उल्लेख भी कर दिया गया है। गणसूत्रों में अन्तर्गणसूत्र भी आते हैं, उन्हें वहाँ ही ऊपर या पार्श्व में एक क्रमाङ्क देकर निर्दिष्ट कर दिया गया है। अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करने में सुविधा के लिये बीस-बीस के छेदों में बाँटकर बचे हुये सूत्रों की संख्या पाद के अन्त में लिख दिया गया है। ग्रन्थ मुद्रण के बाद जो वार्तिक मिले उन्हें परिशिष्ट में संगृहीत कर दिया गया है। अन्त में सूत्रसूची, वार्तिकसूची, गणसूची तथा अन्तर्गणसूत्र सूची देकर ग्रन्थ को स्वरूप प्रदान किया गया है।

ग्रन्थोद्देश्य—पाणिनीय अष्टाध्यायी को पढ़ाने की दो विधियाँ सम्प्रति प्रचलित हैं। प्रथम में सूत्रों को स्मरण कराते हुए उनकी अनुवृत्ति आदि को ध्यान में रखकर सूत्रार्थ बताकर उदाहरण दिया जाता है। द्वितीय में प्रक्रिया के अनुसार सूत्रों का सङ्कलन कर निश्चित कार्य को निश्चित स्थान पर दिखाया जाता है तथा उदाहरण प्रस्तुत करके शब्द साधुत्व किया जाता है। ये दोनों ही विधियाँ सर्वथा निर्दुष्ट हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। अपितु, इन्हें एक दूसरे का पूरक मान लें तो सर्वथा सङ्गति बैठ जाती है। सूत्रक्रम से पढ़ने पर ***'न धातुलोप आर्धधातुके' १.१.४*** का अर्थ वहाँ ही प्रारम्भिक शिशु को समझाया ही नहीं जा सकता है। **इसी प्रकार** प्रक्रिया क्रम से पढ़ने पर सूत्रार्थ वैसा ही होता है, इसमें कोई प्रमाण नहीं बनता है तथा अर्थ करने में छात्र **कुण्ठितबुद्धि हो** जाता है। इसलिये सर्वप्रथम अष्टाध्यायी का, उसके क्रम के अनुसार, सामान्य ज्ञान कर एवं कराकर पुनः **प्रक्रियाक्रम से** उसका अनुशीलन करना एवं कराना ही वास्तविक विधि बनती है। इसी सिद्धान्त को दृष्टि में रखकर इस पुस्तक का सम्पादन हुआ है। अष्टाध्यायी यदि बाल्यावस्था में कण्ठस्थ हो जाय तो इससे अच्छी बात कोई दूसरी नहीं है।

पाठन प्रक्रिया—आचार्य पाणिनि से कम से कम ३००० वर्ष पीछे हम हुये हैं। पाणिनिकाल में जैसा संस्कृत का प्रचार

था वैसा इस समय नहीं है। इसलिये प्रारम्भ में छात्रों को थोड़ा सा संस्कृत सिखाकर हमें अष्टाध्यायी प्रारम्भ करना चाहिये, जिससे छात्र सम्बुद्धौ बहुव्रीहौ तरप्तमपौ आदेःसर्वस्य आदि का अपनी मातृभाषा में अर्थ समझ लें। पुनः उन्हें सूत्र की शिक्षा दी जानी चाहिये। साथ में अनुवृत्ति का रहस्य बताकर उनमें अर्थ करने की योग्यता उत्पन्न करनी चाहिये। यहाँ यथोद्देशपक्ष पर बल देना चाहिये। अवान्तर काल में प्रक्रिया ग्रन्थों के सहारे उन्हें व्युत्पन्न करना चाहिये तथा शब्दसाधुत्व बताना चाहिये।

विशेष—यह पुस्तक काशिकावृत्ति के आधार पर सम्पादित हुई है पर कहीं कहीं सिद्धान्त कौमुदी से भी सहायता ली गई है। यदि ईश्वरेच्छा से संस्करण की वृत्ति लिखी जा सकी तो अनागत विषयों की विस्तृत चर्चा उसमें होगी। यह संस्करण तो केवल स्वाध्याय एवं छात्र-पाठन के लिये है।

अन्त में इस पुस्तक के जटिल मुद्रण के लिये मैं महावीर प्रेस, वाराणसी के व्यवस्थापक को धन्यवाद देता हूँ।

राजकिशोर मणि त्रिपाठी

कृष्णोन्द्रराज भवन,
गोरखपुर
अक्षय तृतीया, २०५५ वि०

विषय सूची

टिप्पणी

इस संस्करण में 'निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई' से १९२९ ई० तथा 'बालमनोरमा प्रेस, चेन्नई' से १९२९ ई० में छपी सिद्धान्त कौमुदी को आदर्श माना गया है।

लिखतः स्खलनं क्वापि
भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति पण्डितम्मन्याः
समादधति पण्डिताः ।।

श्रीः

अष्टाध्यायी

सूत्रपाठगणपाठवार्तिकपाठसहिता

अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्
लण्, ञमङणनम्, झभञ्, घढधष्,
जबगडदश्, खफछठथचटतव्,
कपय्, शषसर्, हल्
इति माहेश्वराणि प्रत्याहारसूत्राणि ।

प्रथमोऽध्यायः
प्रथमः पादः

वृद्धिसंज्ञा

१. वृद्धिरादैच् १६ । — वृद्धिः ३ — आत् और ऐच् वृद्धिसंज्ञक होते हैं।

गुणसंज्ञा

२. अदेङ्गुणः १७ । — गुणः ३ — अत् और एङ् गुण कहलाते हैं।

गुणवृद्धिस्थानिनियम

गुणःवृद्धिः **३. इको गुणवृद्धी ३४ ।** — इकः ६, गुणवृद्धी ६ — गुण और वृद्धि शब्द से जहाँ गुण और वृद्धि का विधान किया जाता है वहाँ इकः यह षष्ठ्यन्त पद उपस्थित होता है।

गुणवृद्धिनिषेध

गुणवृद्धी, इकः **४. न धातुलोप आर्धधातुके २६५६ ।** — न ६ — धात्वंश लोप निमित्तक आर्द्धधातुक परे रहने पर इक् को गुणवृद्धि नहीं होती है।

न, गुणवृद्धी, इकः **५. क्ङिति च २२१७ ।** — इक् को गुणवृद्धि तब नहीं होती है जब निमित्त गित्, कित् या ङित् होता है।

न, गुणवृद्धी इकः **६. दीधीवेवीटाम् २१९० ।** — दीधीङ्, वेवीङ् धातु तथा इट् को प्राप्त गुण वृद्धि नहीं होती है।

संयोग संज्ञा

७. हलोऽनन्तराः संयोगः ३० । — अच् से रहित दो या अनेक हलों के समुदाय की संयोग संज्ञा होती है।

अनुनासिक संज्ञा

८. मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ९ । — मुखसहित नासिका से उच्चार्यमाण वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।

सवर्ण संज्ञा

	९. तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् १० । ** ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम् ।*	सवर्णम् १०	तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न (ये दोनों जिनका जिनसे) समान होते हैं वे परस्पर में सवर्ण संज्ञक होते हैं ।
सवर्णम्	**१०. नाज्झलौ १३ ।**		तुल्य आस्य प्रयत्न वाले अच् और हल् परस्पर में सवर्ण नहीं होते हैं ।

प्रगृह्य संज्ञा

	११. ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् १०० ।	ईदूत् १२ प्रगृह्यम् १९	ईत् ऊत् एत् अन्त वाले द्विवचन शब्द प्रगृह्य संज्ञक होते हैं ।
प्रगृह्यम्, ईदूत्	**१२. अदसो मात् १०१ ।**		अदस् शब्दावयव म से परे रहने वाले ईत् ऊत् प्रगृह्य होते हैं ।
प्रगृह्यम्	**१३. शे १०२ ।**		'शे' आदेश प्रगृह्य संज्ञक होता है । (वैदिक)
प्रगृह्यम्	**१४. निपात एकाजनाङ् १०३ ।**	निपातः १५	आङ् को छोड़कर एक अच् रूप निपात प्रगृह्य संज्ञक होता है ।
प्रगृह्यम्, निपातः	**१५. ओत् १०४ ।**	ओत् १६	ओदन्त निपात प्रगृह्य संज्ञक होता है ।
प्रगृह्यम्, ओत्	**१६. संबुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे १०५ ।**	शाकल्यस्ये- १७ तावनार्षे	शाकल्य के मत में अवैदिक इति शब्द यदि पर में हो तो सम्बुद्धि निमित्तक ओकार की प्रगृह्य संज्ञा होती है । (वैकल्पिक)
प्रगृह्यम्, शा-र्षे	**१७. उञः १०६ ।**		शा० के मत में अनार्ष इति के परे रहने पर उञ् को प्रगृह्य संज्ञा होती है ।
प्रगृह्यम्, शा-र्षे	**१८. ऊँ १०७ ।**		शा० के मत में उञ् को ऊँ ऐसा आदेश होता है और वह प्रगृह्य होता है ।
प्रगृह्यम्	**१९. ईदूतौ च सप्तम्यर्थे १०९ ।**		सप्तमी के अर्थ में पर्यवसित ईदन्त और ऊदन्त शब्द को प्रगृह्य संज्ञा होती है ।

घु संज्ञा

	२०. दाधा घ्वदाप् २३७३ । ॥ १ ॥		डुदाञ् दाण् दो देङ् डुधाञ् धेट् धातु घु संज्ञक होते हैं । दाप् और दैप् को घु नहीं होता हैं ।

	आद्यन्तवद्भाव		
	२१. आद्यन्तवदेकस्मिन् ३४८ ।		तदादि तदन्त को होने वाले कार्य तदादि तदन्त की तरह एक (असहाय) में भी हो ।
	घ संज्ञा		
	२२. तरप्तमपौ घः २००३ ।		तरप् और तमप् (प्रत्यय) घ संज्ञक होते हैं ।
	संख्या संज्ञा		
	२३. बहुगणवतुडति संख्या २५८ ।	संख्या २५	बहु गण वतु और डति संख्या संज्ञक होते है ।
	षट् संज्ञा		
संख्या	**२४. ष्णान्ता षट् ३६९ ।**	षट् २५	षान्त नान्त संख्यावाची शब्द षट् संज्ञक होते हैं ।
संख्या, षट्	**२५. डति च २५९ ।**		डति अन्त वाले संख्यावाची शब्द षट् संज्ञक होते हैं ।
	निष्ठा संज्ञा		
	२६. क्तक्तवतू निष्ठा ३०१२ ।		क्त और क्तवतु (प्रत्यय) निष्ठा संज्ञक होते हैं ।
	सर्वनाम संज्ञा		
	२७. सर्वादीनि सर्वनामानि २१३ ।	सर्वादीनि ३२ सर्वनामानि ३६	सर्व आदि वाले (परिगणित) शब्द सर्वनाम संज्ञक होते हैं ।
	[ग.सू. १-३] सर्व विश्व उभ उभय डतर डतम अन्य अन्यतर इतर त्वत् त्व नेम सम सिम । '[1]पूर्वपरावर-दक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्' '[2]स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्' । '[3]अन्तरं बहि-र्योगोप-संव्यानयोः' । त्यद् तद् यद् एतद् इदम् अदस् एक द्वि युष्मद् अस्मद् भवतु किम् ॥ इति सर्वादिः ॥१॥		
सर्वादीनि, सर्व-नि	**२८. विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ २९२ ।**	बहुव्रीहौ २९	बहुव्रीहि दिक्समास में सर्वादि को विकल्प से सर्वनाम संज्ञा होती है ।
सर्वादीनि, सर्व-नि बहुव्रीहौ	**२९. न बहुव्रीहौ २२२ ।** **** अकच्स्वरौ तु कर्तव्यौ प्रत्यङ्गं मुक्तसंशयौ ।***	न ३१	बहुव्रीहि समास में सर्वादि को सर्वनाम संज्ञा नहीं होती है ।
सर्वादीनि, न, सर्व-नि	**३०. तृतीयासमासे-२२३ ।**		तृतीया समास में सर्वादि को सर्वनाम संज्ञा नहीं होती है ।
सर्वादीनि, न, सर्व-नि	**३१. द्वन्द्वे च २२४ ।**	द्वन्द्वे ३२	द्वन्द्व समास में भी सर्वादि को सर्वनाम संज्ञा नहीं होती है ।

सर्वादीनि, सर्व-नि द्वन्द्वे	**३२. विभाषा जसि २२५ ।**	विभाषा-जसि ३६	३६, द्वन्द्व समास में सर्वादि को जस् के यहाँ विकल्प से सर्वनाम संज्ञा होती है। अर्थात् जस् को शी विकल्प से होगा।
विभाषा, जसि सर्व-नि	**३३. प्रथमचरमतयाल्पार्धकतिपयनेमाश्च २२६ ।**		प्रथम आदि ७ शब्दों को जस् के यहाँ विकल्प से सर्वनाम संज्ञा होती है।
विभाषा, जसि सर्व-नि	**३४. पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् २१८ ।**		पूर्वआदि ७ शब्दों को (गणपाठ के कारण प्राप्त) सर्वनाम संज्ञा जस् के यहाँ विकल्प से होगी। यदि व्यवस्था और असंज्ञा हो।
विभाषा, जसि सर्व-नि	**३५. स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् २१९ ।**		ज्ञाति और धन से अतिरिक्त अर्थ-वाले स्व शब्द को जस् के यहाँ विकल्प से सर्वनाम संज्ञा हो।
विभाषा, जसि सर्व-नि	**३६. अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः २२० ।** ** अपुरीति वक्तव्यम् ।* ** विभाषाप्रकरणे तीयस्य ङित्सूपसंख्यानम् ।*		बहिर्योग और उपसंव्यान अर्थ में प्रयुक्त अन्तर शब्द को जस् के यहाँ विकल्प से सर्वनाम संज्ञा हो।
	अव्यय संज्ञा **३७. स्वरादिनिपातमव्ययम् ४४७ ।**	अव्ययम् ४१	स्वर् आदि (परिगणित) शब्दों तथा निपात को अव्यय संज्ञा होती है।

[ग.सू. ४-१५] स्वर् अन्तर् प्रातर्-अन्तोदात्ताः । पुनर् सनुतर् उच्चैस् नीचैस् शनैस् ऋधक् ऋते युगपत् आरात् (अन्तिकात्) पृथक्—आद्युदात्ताः ॥ ह्यस् श्वस् दिवा रात्रौ सायम् चिरम् मनाक् ईषत् (शश्वत्) जोषम् तूष्णीम् वहिस् अधस् (अवस्) समया निकषा स्वयम् मृषा नक्तम् नव् हेतौ (हे है) इद्धा अद्धा सामि—अन्तोदात्ताः ॥ 'वँत्' बत सनत् सनात् तिरस्-आद्युदात्ताः ॥ अन्तरा—अन्तोदात्तः ॥ (अन्तरेण) मक् ज्योक् योक् नक् कम् शम् सना सहसा श्रद्धा अलम् स्वधा वषट् विना नाना स्वस्ति अन्यत् अस्ति उपांशु क्षमा विहायसा दोषा मुधा दिष्ट्या वृथा मिथ्या । 'क्त्वातोसुन्कसुनः, कृन्मकार-संध्यक्षरान्तः, अँव्ययीभावश्च' पुरा मिथो मिथस् (प्रायस् मुहुस्) प्रबाहुकम् (प्रवाहिका)

आर्यहलम् अभीक्ष्णम् साकम् सार्धम् सत्रम् समम् नमस् हिरुक् । ‘तसिलादयस्तद्धिता एधाच्पर्यन्ताः, [९]शस्तसी, [१०]कृत्वसुच्, [११]सुच्, [१२]आस्थालौ, [१३]च्व्यर्थाश्च (अथ) [१४]अम्, [१५]आम्, प्रताम्, (प्रतान्) प्रशान्—आकृतिगणोऽयम् ॥ तेनान्येऽपि । तथाहि माङ् श्रम् कामम् (प्रकामम्) भूयस् परम् साक्षात् साचि (सावि) सत्यम् मङ्क्षु संवत् अवश्यम् सपदि प्रादुस् आविस् अनिशम् नित्यम् नित्यदा सदा अजस्रम् सन्ततम् उषा ओम् भूर् भुवर् झटिति तरसा सुष्ठु कुअञ्जसा अ मिथु(अमिथु) विथक् भाजक् अन्वक् चिराय चिरम् चिररात्राय चिरस्य चिरेण चिरात् अस्तम् आनुषक् अनुषक् अनुषट् अम्नस् (अम्भस्) अम्मर् (अम्भर्) स्थाने वरम् दुष्ठु बलात् शु अर्वाक् शुदि वदि इत्यादि। तसिलादयः प्राक्पाशपः । शस्प्रभृतयः प्राक्समासान्तेभ्यः । मान्तः कृत्वोऽर्थः । तसिवती । नानञाविति—इति स्वरादिः ॥२॥

अव्ययम्	**३८. तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ४४८ ।**	जिससे सभी विभक्तियाँ उत्पन्न न हों उस तद्धितान्त शब्द की अव्यय संज्ञा होती है ।
अव्ययम्	**३९. कृन्मेजन्तः ४४९ ।**	मान्त एजन्त कृत् जिनके अन्त में हों उन्हें अव्यय संज्ञा होती है ।
अव्ययम्	**४०. क्त्वातोसुन्कसुनः ४५० ।** ॥२॥	क्त्वा तोसुन् कसुन् अन्त वाले शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है ।
अव्ययम्	**४१. अव्ययीभावश्च ४५१ ।**	अव्ययीभाव (समास) भी अव्यय संज्ञक होता है ।

सर्वनामस्थान संज्ञा

	४२. शि सर्वनामस्थानम् ३१३ ।	सर्वनामस्थानम् ४३ ‘शि’ को सर्वनामस्थान संज्ञा होती है ।
सर्वनामस्थानम्	**४३. सुडनपुंसकस्य २२९ ।**	नपुंसक से अतिरिक्त सुट् (सु से औट्) को सर्वनामस्थान संज्ञा होती है ।

विभाषा संज्ञा

४४. न वेति विभाषा २४ । — न (निषेध) वा (विकल्प) इन दोनों की विभाषा संज्ञा होती है ।

संप्रसारण संज्ञा

४५. इग्यणः संप्रसारणम् ३२८ । — यण् के स्थान में प्रयुज्यमान इक् की सम्प्रसारण संज्ञा होती है ।

आगमादेशस्थाननिर्देश

४६. आद्यन्तौ टकितौ ३६ ।
टित् आगम आदि अवयव को और कित् अन्त्य को होता है ।

४७. मिदचोऽन्त्यात्परः ३७ ।
** अन्त्यात्पूर्वो मस्जेरनुषङ्गसंयोगादिलोपार्थम् ।*
अचों के मध्य में अन्तिम अच् से परे मित् आगम होता है ।

४८. एच इग्घ्रस्वादेशे ३२३ ।
ह्रस्वादेश में एच् को ह्रस्व इक् ही होता है ।

४९. षष्ठी स्थानेयोगा ३८ ।
अनिर्द्धारित सम्बन्धविशेष षष्ठी स्थाने योग वाली होती है ।

५०. स्थानेऽन्तरमः ३९ ।
स्थान में प्राप्त अनेकों में सदृशतम को आदेश होता है ।

५१. उरण्रपरः ७० ।
** लपर इति वक्तव्यम् ।*
ऋ के स्थान में होने वाले अण् के बाद रेफ जुड़ जाता है ।

५२. अलोऽन्त्यस्य ४२ ।
अलः ५३, अन्त्यस्य ५३ । षष्ठीनिर्दिष्ट को होने वाला आदेश अन्तिम अल् को होता है ।

अलः, अन्त्यस्य **५३. ङिच्च ४३ ।**
ङित् आदेश भी अन्तिम अल् को होता है ।

५४. आदेः परस्य ४४ ।
पर को विहित कार्य उसके आदि को होता है ।

५५. अनेकाल्शित्सर्वस्य ४५ ।
अनेकाल् कार्य और शित् कार्य सम्पूर्ण को होता है ।

स्थानिवद्भाव

५६. स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ४९ ।
स्थानिवत् ५९, आदेशः ५९ । अलाश्रय भिन्न कार्य करने में आदेश स्थानिसदृश होता है ।

स्थानिवत्, आदेशः **५७. अचः परस्मिन्पूर्वविधौ ५० ।**
अचः ५९, परस्मिन् ५९ परनिमित्त अजादेश स्थानिसदृश होता है, यदि स्थानिभूत अच् से पूर्वत्वेन दृष्ट विधि कर्त्तव्य हो ।

स्थानिवत्, आदेशः अचः, परस्मिन् **५८. न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु ५१ ।**
** स्वरदीर्घयलोपेषु लोपाजादेशो न स्थानिवत् ।*
** क्विलुगुपधात्वचङ्परनिर्ह्रासकुत्वेषूपसंख्यानम् ।*
** पूर्वत्रासिद्धे न स्थानिवत् ।*
** तस्य दोषः संयोगादिलोपलत्वणत्वेषु ।*
पदान्त, द्विर्वचन, वरे, यलोप, स्वर, सवर्ण, अनुस्वार दीर्घ, जश् चर् विधियों में परनिमित्त अजादेश स्थानिवत् नहीं होता है ।

स्था०, आ०, अचः, पर० **५९. द्विर्वचनेऽचि २२४३ ।**

द्विर्वचन निमित्तक अच् के परे रहने पर यदि द्वित्व करना हो तो अच् को हुआ आदेश स्थानिवत् होता है। अर्थात् अच् को कोई आदेश नहीं होता है।

लोप संज्ञा

६०. अदर्शनं लोपः ५३ । ।।३।।

प्रसक्त का अदर्शन लोप कहलाता है।

६१. प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः २६० ।

(लुक् श्लु लुप् शब्दों से किया गया) प्रत्यय का अदर्शन (क्रमशः) लुक् श्लु लुप् कहलाता है।

प्रत्ययलक्षण

६२. प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् २६२ । प्रत्ययलक्षणम्- ६३

** वर्णाश्रये नास्ति प्रत्ययलक्षणम् ।*

प्रत्यय का लोप हो जाने पर भी प्रत्ययलक्षण कार्य होता है।

प्रत्ययलक्षणम् **६३. न लुमताऽङ्गस्य २६३ ।**

** उत्तरपदत्वे चापदादिविधौ ।*

लुक् श्लु लुप् शब्दों से प्रत्यय के लुप्त होने पर अङ्ग को प्रत्ययलक्षण कार्य नहीं होता है।

टि संज्ञा

६४. अचोऽन्त्यादि टि ७९ ।

अचों के मध्य में जो अन्तिम अच् होता है वह जिस समुदाय के आदि में हो, उस समुदाय की 'टि' संज्ञा होती है।

उपधा संज्ञा

६५. अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा २४९ ।

** नानर्थकेऽलोऽन्त्यविधिरनभ्यासविकारे ।*

अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण को उपधा संज्ञा होती है।

६६. तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ४०।

सप्तमी निर्देश से विधीयमान कार्य वर्णान्तर से अव्यवहित पूर्व को होता है।

६७. तस्मादित्युत्तरस्य ४१ ।

पञ्चमी निर्देश से क्रियमाण कार्य वर्णान्तर से अव्यवहित पर को होता है।

शब्दस्वरूप ग्राहक

६८. स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा २५ । स्वं ७२, रूपम् ७२ ।

** अर्थवद्ग्रहणे नानर्थकस्य ग्रहणम् ।*

शब्द शास्त्र में जो संज्ञा होती है, उसे छोड़कर शब्द अपने रूप का संज्ञी होता है।

स्वं रूपम् **६९. अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः १४ ।** अविधीयमान (पर णकार तक का) अण् और उदित् (कु चु टु तु पु) सवर्ण के ग्राहक होते हैं और अपने रूप का भी बोधक होते हैं।

स्वं रूपम् **७०. तपरस्तत्कालस्य १५ ।** (त जिसके बाद हो अथवा त के बाद जो हो, दोनों प्रकार का) तपर अपना और अपने समकाल का ग्राहक होता है।

स्वं रूपम् **७१. आदिरन्त्येन सहेता २ ।** अन्तिम इत् के साथ आदि वर्ण अपना और मध्यपतित वर्णों का ग्राहक होता है।

स्वं रूपम् **७२. येन विधिस्तदन्तस्य २६ ।** जिस (विशेषण) से विधि हो रही हो वह अपना और जिसके अन्त में वह हो, उस पूरे समुदाय का भी बोधक होता है।

***** *यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे ।*
***** *समासप्रत्ययविधौ प्रतिषेधः ।*
***** *उगिद्वर्णग्रहणवर्जम् ।*
***** *सुसर्वार्धदिक्छब्देभ्यो जनपदस्य ।*
***** *ऋतोर्वृद्धिमद्विधाववयवानाम् ।*
***** *पदाङ्गाधिकारे तस्य च तदुत्तरपदस्य च ।*
***** *तन्मध्यपतितस्तद्ग्रहणेन गृह्यते ।*
***** *अनिनस्मन्ग्रहणान्यर्थवता चानर्थकेन च तदन्तविधिं प्रयोजयन्ति ।*
***** *प्रत्ययग्रहणे चापञ्चम्याः ।*

वृद्धसंज्ञा

७३. वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम् १३३५ । वृद्धम् ७५ यस्याचामादिः ७५ जिस वर्ण समुदाय के अचों में आदि अच् वृद्धिसंज्ञक हो उस शब्द (वर्ण समुदाय) को वृद्ध संज्ञा होती है।

***** *वा नामधेयस्य ।*

यस्याचामादिः, वृद्धम् **७४. त्यदादीनि च १३३६ ।** त्यद् आदि (सर्वादिगण पठित १२ शब्द) की भी वृद्ध संज्ञा होती है।

यस्याचामादिः, वृद्धम् **७५. एङ् प्राचां देशे १३३८ ।** यदि पूर्व के देश का नाम हो तो अचों में आदि अच् (विकल्प से) वृद्ध संज्ञक होता है।

***** *शैषिकेष्विति वक्तव्यम् ।*

वृद्धिराद्यन्तवदव्ययीभावः प्रत्ययस्य लुम्पञ्चदश

इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः ।

ङित्वातिदेश

	१. गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् २४६१ । ** व्यचेः कुटादित्वमनसि ।*	ङित् ४	(इङ् अध्ययने को होने वाले) गाङ् आदेश से तथा कुटादि धातुओं से होने वाले प्रत्यय ङित् होते हैं, यदि वे ञित् तथा णित् न हों। ङित्-ङिद्वत्
ङित्	**२. विज इट् २५३६ ।**	इट् ३	ओविजी धातु से परे इडादि प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं।
ङित् इट्	**३. विभाषोर्णोः २४४७ ।**		ऊर्णुञ् धातु से परे इडादि प्रत्यय विकल्प से ङित् होते हैं।
ङित्	**४. सार्वधातुकमपित् २२३४ ।**	अपित् ५	अपित् सार्वधातुक ङिद्वत् होता है।

कित्वातिदेश

अपित्	**५. असंयोगाल्लिट्कित् २२४२ ।** ** ऋदुपधेभ्यो लिटः कित्त्वं गुणात्पूर्वविप्रतिषेधेन ।*	लिट् ६ कित् २६	असंयोग से परे अपित् लिट् कित् होता है।
कित् लिट्	**६. इन्धिभवतिभ्यां च ३३९३ ।** ** श्रन्थिग्रन्थिदम्भिस्वञ्जीनां लिटः कित्त्वं वा ।*		इन्धी और भू धातु से परे लिट् कित् होता है।
कित्	**७. मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा ३३२३ ।**	क्त्वा ८	मृड मृद गुध कुष क्लिश वद् वस धातुओं से परे (सेट्) क्त्वा कित् होता है।
कित् क्त्वा	**८. रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च २६०९ ।**	सन् १०	रुद् विद् मुष ग्रहि स्वपि प्रच्छ धातुओं से परे सन् और क्त्वा दोनों कित् होते हैं।
कित् सन्	**९. इको झल् २६१२ ।**	इकः ११ झल् १३	इगन्त धातुओं से परे झलादि सन् कित् होता है।
कित् सन् इकः झल्	**१०. हलन्ताच्च २६१३ ।**	हलन्तात् ११	इक् समीप हल् से परे झलादि सन् कित् होता है।
कित् हलन्तात् इकः झल्	**११. लिङ्सिचावात्मनेपदेषु २३०० ।**	लिङ् सिचौ १३ आत्मने पदेषु १७	इक्समीप हल् से परे झलादि लिङ् और आत्मनेपदपरक सिच् दोनों कित् होते हैं।
कित् लिङ् सिचौ, आत्मने०, झल्	**१२. उश्च २३६८ ।**		ऋवर्ण से परे झलादि लिङ् और आत्मने पद परक सिच् दोनों कित् होते हैं।

कित् लिङ् सिचौ, आत्मने०, झल्	**१३. वा गमः २७०० ।**		गम् धातु से परे झलादि लिङ् और आत्मनेपदपरक सिच् दोनों विकल्प से कित् होते हैं ।
कित् आत्मने०	**१४. हनः सिच् २६९७ ।**	सिच् १७	हन् धातु से परे आत्मनेपदपरक सिच् कित् होता है ।
कित् आत्मने० सिच्	**१५. यमो गन्धने २६९८ ।**	यमः १६	गन्धन अर्थ में वर्तमान यम धातु से परे आत्मनेपदपरक सिच् कित् होता है ।
कित् यमः आत्मने० सिच्	**१६. विभाषोपयमने २७३० ।**		उपयमन अर्थ में वर्तमान यम धातु से परे आत्मनेपदपरक सिच् विकल्प से कित् होता है ।
कित् आत्मने० सिच्	**१७. स्थाघ्वोरिच्च २३८९ ।**		स्था और घु संज्ञक धातु के आकार को इत् आदेश होता है और आत्मनेपदपरक सिच् कित् होता है ।
कित्	**१८. न क्त्वा सेट् ३३२२ ।**	सेट् २६ न २५	सेट् क्त्वा कित् नहीं होता है ।
कित् न सेट्	**१९. निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः ३०५२ ।**	निष्ठा २२	शीङ् स्विदि मिदि क्ष्विदि धृष् से परे सेट् निष्ठा कित् नहीं होती है ।
कित् न सेट् निष्ठा	**२०. मृषस्तितिक्षायाम् ३०५५ ।** ॥१॥		तितिक्षा अर्थ में मृष् से परे सेट् निष्ठा कित् नहीं होती है ।
कित् न सेट् निष्ठा	**२१. उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम् ३०५६ ।**		उत् उपधा वाले धातुओं में परे भाव तथा आदिकर्म में वर्तमान सेट् निष्ठा कुछ लोगों की राय में कित् नहीं होती है । अर्थात् विकल्प से कित् होती है ।
कित् न सेट् निष्ठा	**२२. पूङः क्त्वा च ३०५१ ।**	क्त्वा २६	पूङ् धातु से जहाँ इट् होता है वहाँ सेट् क्त्वा तथा निष्ठा कित् नहीं होती है ।
कित् न सेट् क्त्वा	**२३. नोपधात्थफान्ताद्वा ३३२४ ।**	वा २६	नकारोपध धातु थान्त तथा फान्त धातु से परे सेट् क्त्वा विकल्प से कित् नहीं होता है ।
कित् न सेट् वा क्त्वा	**२४. वञ्चिलुञ्च्यृतश्च ३३२५ ।**		वञ्चि लुञ्चि ऋत् धातुओं से परे सेट् क्त्वा विकल्प से कित् नहीं होता है ।

कित् न सेट् वा क्त्वा	**२५. तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य ३३२६ ।**		काश्यय के मत से तृषि मृषि कृशि धातुओं से परे सेट् क्त्वा विकल्प से कित् नहीं होता है ।
कित् सेट् वा क्त्वा	**२६. रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च २६१७ ।**		इकार उकार उपधावाले रल् प्रत्याहारान्त हलादि धातुओं से परे सेट् क्त्वा तथा सन् विकल्प से कित् होते हैं ।

ह्रस्वादि संज्ञा

	२७. ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः ४ ।	ह्रस्व दीर्घ प्लुताः २८	उ ऊ ऊ३ के उच्चारण काल के समान जिनका काल हो, ऐसे अच् क्रम से ह्रस्व दीर्घ तथा प्लुत संज्ञक होते हैं ।

ह्रस्वादिस्थान निर्देश

ह्रस्व दीर्घ प्लुताः	**२८. अचश्च ३५ ।**		ह्रस्व दीर्घ प्लुत शब्द से विधीयमान कार्य स्वस्थानीय अच् को होंगे ।

स्वरविधि

	२९. उच्चैरुदात्तः ५ ।		ऊर्ध्व अधः भाग में बटे तालु आदि स्थानों में ऊर्ध्व भाग में निष्पन्न अच् उदात्त संज्ञक होता है ।
	३०. नीचैरनुदात्तः ६ ।		अधः भाग में निष्पन्न अच् अनुदात्त संज्ञक होता है ।
	३१. समाहारः स्वरितः ७ ।		ऊर्ध्व और अधः दोनों भागों से एक साथ निष्पन्न अच् स्वरित संज्ञक होता है ।
	३२. तस्यादित उदात्तमर्धह्रस्वम् ८ ।		स्वरित की पहली आधी मात्रा उदात्त होती है । (शेष मात्रायें अनुदात्त होती हैं ।)
	३३. एकश्रुति दूरात्संबुद्धौ ३६६२ ।	एकश्रुति ३९	दूर से सम्बोधन में वाक्य एकश्रुति होता है ।
एकश्रुति	**३४. यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु ३६६३ ।**	यज्ञकर्मणि ३५	जप न्यूङ्ख साम को छोड़कर यज्ञ क्रिया में मन्त्र एकश्रुति होता है ।
एकश्रुति यज्ञकर्मणि	**३५. उच्चैस्तरां वा वषट्कारः ३६६४ ।**		यज्ञ कर्म में वौषट् का उच्चारण उदात्ततर अथवा एकश्रुति विकल्प से होता है ।
एकश्रुति	**३६. विभाषा छन्दसि ३६६५ ।**		छन्द में एकश्रुति विकल्प से होती है ।

एकश्रुति	**३७. न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः ३६६६**	स्वरितस्य ३८	सुब्रह्मण्या नामक निगद में एकश्रुति नहीं होती है। स्वरित को उदात्त हो जाता है।
एकश्रुति स्वरितस्य	**३८. देवब्रह्मणोरनुदात्तः ३६६७ ।**		सुब्रह्मण्या में ही 'देवा ब्रह्माणः' में स्वरित को अनुदात्त हो जाता है।
एकश्रुति	**३९. स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम् ३६६८ ।**	अनुदात्तानाम् ४०	स्वरित से परे अनुदात्तों को एकश्रुति हो जाता है संहिता में।
अनुदात्तस्य	**४०. उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः ३६६९ ।।२।।**		उदात्तस्वरित परक अनुदात्त अनुदात्ततर हो जाता है।
	अपृक्त संज्ञा		
	४१. अपृक्त एकाल्प्रत्ययः २५१ ।		एक अल् वाला प्रत्यय अपृक्त संज्ञक होता है।
	कर्मधारय संज्ञा		
	४२. तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ७४५ ।		समानाधिकरण अनेक पदों वाला तत्पुरुष कर्मधारय संज्ञक होता है।
	उपसर्जन संज्ञा		
	४३. प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् ६५३ ।	समासे ४४ उपसर्जनम् ४४	समास शास्त्र में प्रथमा विभक्ति से निर्दिष्ट उपसर्जन संज्ञक होता है।
समासे उपसर्जनम्	**४४. एकविभक्ति चापूर्वनिपाते ६५५ ।** ** एकविभक्तावषष्ठ्यन्तवचनम् ।*		पूर्वनिपात छोड़कर विग्रहवाक्य में जो नियत विभक्तिक होता है वह उपसर्जन संज्ञक होता है।
	प्रातिपदिक संज्ञा		
	४५. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् १७८ ** निपातस्थानर्थकस्य प्रातिपदिकसंज्ञा वक्तव्या ।*	प्रातिपादिकम् ४६	धातु प्रत्यय प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् शब्दस्वरूप प्रातिपदिक संज्ञक होता है।
प्रातिपदिकम्	**४६. कृत्तद्धितसमासाश्च १७९ ।**		कृदन्त तद्धितान्त और समास प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।
	ह्रस्वविधि		
	४७. ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ३१८ ।	ह्रस्वः ४८ प्रा० ४८	नपुंसक में प्रातिपदिक (अजन्त) को ह्रस्व होता है।
ह्रस्वः, प्रातिपदिकस्य	**४८. गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ६५६ ।** ** ईयसो बहुव्रीहेर्नेति वाच्यम् ।*	स्त्रियाः ४९ उप स० ४९	उपसर्जन गोशब्दान्त उपसर्जन स्त्रीप्रत्ययान्त प्रातिपदिक को ह्रस्व होता है।
	लुक्		
स्त्रियाः, उपसर्जनस्य	**४९. लुक्तद्धितलुकि १४०८ ।**	तद्धित लुकि ५०	तद्धित लुक् रहने पर उपसर्जन स्त्रीप्रत्यय का लुक् होता है।

	इदादेश		
तद्धितलुकि	**५०. इद्गोण्याः १७०३ ।**		तद्धितलुक् रहने पर गोणी के ई को इ हो जाता है ।
	युक्तवद्भाव		
तद्धित (स्य)	**५१. लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने १२९४ ।** **** समास उत्तरपदस्य बहुवचनस्य लुपः ।***	लुपि, यु०, व्य० ५२	लुप् होने पर लिङ्ग और वचन प्रकृतिवत् रहते हैं ।
तद्धितलुपि, व्यक्ति-वचने, युक्तवत्	**५२. विशेषणानां चाजातेः १३०० ।** *** हरीतक्यादिषु व्यक्तिः ।** *** खलतिकादिषु वचनम् ।** *** मनुष्यलुपि प्रतिषेध ।**		लुप् होने पर लुबर्थ के विशेषणों के लिङ्ग और वचन प्रकृतिवत् रहते हैं, जाति को छोड़कर ।
	अशिष्यत्व		
	५३. तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात् १२९५ ।	अशिष्यम् ५७	संज्ञा प्रमाण होने से 'युक्तवत्' यह नहीं कहना चाहिये ।
अशिष्यः	**५४. लुब्योगाप्रख्यानात् १२९६ ।**		लुप् (भी) नहीं कहना चाहिये । (क्योंकि यहाँ) अवयवार्थ की प्रतीति नहीं हो रही है ।
	५५. योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं स्यात् १२९७ ।		यदि अवयवार्थ का बोधक होता तो उसके अभाव में दर्शन नहीं होता ।
अशिष्यम्	**५६. प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात् १२९८ ।**	अर्थस्य, अन्य-प्रमाणत्वात् ५७	प्रत्ययार्थ प्रधान है, ऐसा भी नहीं कहना चाहिये । क्योंकि अर्थ अन्य प्रमाण है । अर्थात् अर्थ लोक से सिद्ध होता है ।
अशिष्यम्, अर्थस्य अन्य प्रमाणत्वात्	**५७. कालोपसर्जने च तुल्यम् १२९९ ।**		काल और उपसर्जन में भी अशिष्यता समान है । क्योंकि अर्थ की सिद्धि लोक से होती है ।
	वचनातिदेश		
	५८. जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम् ८१७ । **** संख्याप्रयोगे प्रतिषेधः ।***	बहुवचनम् ६० अन्यतरस्याम्- ६२	जाति कही जाने पर एकवचन के स्थान में विकल्प से बहुवचन भी होता है ।
बहुवचनम् अन्यतर-स्याम्	**५९. अस्मदो द्वयोश्च ८१८ ।** **** सविशेषणस्य प्रतिषेधः ।***	द्वयोः ६०	अस्मत् शब्द से एकत्व और द्वित्व की विवक्षा में विकल्प से बहुवचन भी हो सकता है ।
बहुवचनम् अन्यतर-स्याम्, द्वयोः	**६०. फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे ८१९ ।** **।। ३ ।।**		नक्षत्र वाचक फल्गुनी और प्रोष्ठपद शब्द से द्वित्व के अर्थ में विकल्प से बहुवचन भी हो सकता है ।

अन्यरस्याम्	**६१. छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् ३३८७ ।**	छन्दसि ६२ एकवचनम् ६२	द्विवचन पुनर्वसु शब्द में वेद में एकवचन भीं हो सकता है ।
एकवचनम् छन्दसि, अन्यरस्याम्	**६२. विशाखयोश्च ३३८८ ।**		द्विवचन विशाखा शब्द में वेद में एकवचन भी हो सकता है ।
	६३. तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम् ८२० ।		नक्षत्र वाचक तिष्य (१) और पुनर्वसु (२) के द्वन्द्व में प्राप्त बहुवचन को नित्य द्विवचन होता है ।
	एकशेष		
	६४. सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ १८८ ।	शेष: ७३	एक विभक्ति में समानरूप वाले शब्दों में एक ही अवशिष्ट रहता है ।
	**** विरूपाणामपि समानार्थकानामेकशेषो वक्तव्यः ।***		
शेष: (शिष्यते)	**६५. वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः ९३१ ।**	वृद्धो यूना ६६, तल्लक्षणश्चेदेव विशेष: ६९	यदि गोत्र और युव निमित्तक ही भेद हो तो गोत्रवाचक और युववाचक शब्दों में गोत्रवाचक अवशिष्ट रहता है ।
शेष: वृद्धो-विशेष:	**६६. स्त्री पुंवच्च ९३२ ।**		गोत्र वाचक स्त्रीलिङ्गान्त शब्द और युववाचक पुँल्लिङ्ग शब्दों में स्त्री शब्द ही शिष्ट रहता है यदि गोत्रवाचक का अर्थ पुँल्लिङ्गवत् हो ।
शेष: तल्ल-विशेष:	**६७. पुमान्स्त्रिया ९३३ ।**		पुंस्त्व और स्त्रीत्व मात्र से भेद रहने पर पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों में पुँल्लिङ्ग अवशिष्ट रहता है ।
शिष्यते	**६८. भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् ९३४ ।**		भ्रातृ और स्वसृ शब्द तथा पुत्र और दुहितृ शब्द साथ कहे जॉय तो क्रमश: भ्रातृ और पुत्र अवशिष्ट रहता है ।
शेष: तल्ल-विशेष:	**६९. नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् ९३५ ।**	अन्यतरस्याम् ७१	नपुँसक और अनपुंसक मात्र का भेद हो तो अनपुसंक और नपुंसक में नपुंसक अवशिष्ट रहता है और वह विकल्प से एकवत् होता है ।
शेष: अन्यतरस्याम्	**७०. पिता मात्रा ९३६ ।**		मातृ शब्द के साथ पितृ शब्द को कहने पर विकल्प से पितृ शब्द अवशिष्ट रहता है ।

शेषः अन्यतरस्याम् ७१. **श्वशुरः श्वश्र्वा ९३७ ।**
श्वश्रू शब्द के साथ कहा गया श्वशुर शब्द विकल्प से अवशिष्ट रहता है ।

शेषः ७२. **त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् ९३८ ।**
** त्यदादितः शेषे पुंनपुंसकतो लिङ्गवचनानि ।*
** अद्वन्द्वतत्पुरुषविशेषणानाम् ।*
सभी शब्दों के साथ कहे गये त्यद् आदि शब्द नित्य अवशिष्ट रहते हैं ।

शेषः ७३. **ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री ९३९ ।**
** अनेकशफेष्विति वक्तव्यम् ।*
तरुण भिन्न ग्राम्य पशुओं के सङ्घों में स्त्री ही अवशिष्ट रहती है ।

गाङ्कुटाद्युदुपधादपृक्तश्छन्दसि पुनर्वस्वोस्त्रयोदश

इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

धातुसंज्ञा

१. **भूवादयो धातवः १८ ।**
(क्रिया वाची) भू आदि (पठित) शब्दों की धातु संज्ञा होती है ।

इत्संज्ञा

२. **उपदेशेऽजनुनासिक इत् ३ ।** इत् ८ उपदेशे ३
उपदेश (अवस्था) में अनुनासिक अच् की इत् संज्ञा होती है ।

इत् उपदेशे ३. **हलन्त्यम् १ ।**
उपदेश (अवस्था) में अन्तिम हल् की इत् संज्ञा होती है ।

इत् ४. **न विभक्तौ तुस्माः १९० ।**
विभक्ति में वर्तमान तु स् और म् की इत् संज्ञा नहीं होती है ।

इत् ५. **आदिर्ञिटुडवः २२८९ ।** आदिः ८
(उपदेश में धातु के) आदि में वर्तमान ञि टु डु की इत् संज्ञा होती है ।

इत् आदिः ६. **षः प्रत्ययस्य ४७४ ।** प्रत्ययस्य ८
प्रत्यय के आदि में वर्तमान ष् की इत् संज्ञा होती है ।

इत् आदिः प्रत्ययस्य ७. **चुटू १८९ ।**
*** इर इत्संज्ञा वक्तव्या ।**
प्रत्यय के आदि में रहने वाले चु और टु की इत् संज्ञा होती है ।

इत् आदिः प्रत्ययस्य ८. **लशक्वतद्धिते १९५ ।**
तद्धित भिन्न प्रत्यय के आदि में रहने वाले ल् श् और कु इत् संज्ञक होते हैं ।

९. **तस्य लोपः ६२ ।**
उस (इत् संज्ञक) का लोप होता है ।

	संख्यातानुदेश		
	१०. यथासंख्यमनुदेशः समानाम् १२८ ।		सम संख्या वालों का क्रमानुसार विधान होता है ।
	अधिकारस्वरूपनिर्देश		
	११. स्वरितेनाधिकारः ४६ ।		स्वरित (चिह्न) से अधिकार जानना चाहिये ।
	आत्मनेपद		
	१२. अनुदात्तङित आत्मनेपदम् २१५७ ।	आत्मनेपदम् ७७	अनुदात्तेत् और (उपदेश) में जो ङित् हैं तदन्त धातुओं से होने वाला लकार आत्मनेपद होगा ।
आत्मनेपदम्	**१३. भावकर्मणोः २६७९ ।**		भाव और कर्म में होने वाला लकार आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्	**१४. कर्तरि कर्मव्यतिहारे २६८० ।**	कर्मव्यतिहारे १६ कर्तरि ७८	कर्मव्यतिहार होने पर धातु से कर्ता अर्थ में आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि कर्म-हारे	**१५. न गतिहिंसार्थेभ्यः २६८१ ।** * **हसादीनामुपसंख्यानम् ।** * **हरतेरप्रतिषेधः ।**	न १६	गत्यर्थक और हिंसार्थक धातुओं से कर्म व्यतिहार में भी आत्मने-पद नहीं होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि न, कर्म-हारे	**१६. इतरेतरान्योऽन्योपपदाच्च २६८२ ।** * ***परस्परोपपदाच्चेति वक्तव्यम् ।***		इतरेतर और अन्योन्य उपपद वाले धातु से कर्मव्यतिहार में आत्मने-पद नहीं होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**१७. नेर्विशः २६८३ ।**		नि पूर्वक विश् धातु से आत्मने पद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**१८. परिव्यवेभ्यः क्रियः २६८४ ।**		परि वि अव पूर्वक डु क्रीञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**१९. विपराभ्यां जेः २६८५ ।**		वि और परापूर्वक जि धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**२०. आङो दोऽनास्यविहरणे २६८६ ।।१।।** * ***स्वाङ्गकर्मकाच्चेति वक्तव्यम् ।***	आङः २१	मुखविकसन से भिन्न अर्थ में आङ्पूर्वक डुदाञ् धातु से आत्मने पद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि आङः	**२१. क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च २६८७ ।** * ***समोऽकूजने ।*** * ***आगमेः क्षमायाम् ।*** * ***शिक्षेर्जिज्ञासायाम् ।*** * ***किरतेर्हर्षजीविकाकुलायकरणेषु ।*** * ***हरतेर्गतताच्छील्ये ।***		अनु सम् परि तथा आङ् पूर्वक क्रीडृ विहारे धातु से आत्मनेपद होता है ।

	** आङि नुप्रच्छयोः ।* ** आशिषि नाथः ।* ** शप उपालम्भने ।*		
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**२२. समवप्रविभ्यः स्थः २६८९ ।** ** आङः प्रतिज्ञायाम् ।*	स्थः २६	सम् अव प्र वि पूर्वक ष्ठा धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि स्थः	**२३. प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च २६९० ।**		स्वाभिप्रायकथन तथा विवादपद निर्णेता रूप अर्थकथन में ष्ठा धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि स्थः	**२४. उदोऽनूर्ध्वकर्मणि २६९१ ।** * ईहायामिति वक्तवयम् ।		अनूर्ध्वकर्म अर्थ में वर्तमान स्था धातु को, यदि वह उत्पूर्व हो तो आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि स्थः	**२५. उपान्मन्त्रकरणे २६९२ ।** ** उपाद्देवपूजासंगतिकरणमित्रकरणपथिष्विति वक्तव्यम् ।* ** वा लिप्सायामिति वक्तव्यम् ।*	उपात् २६	मन्त्रकरण अर्थ में वर्तमान उप पूर्वक स्था धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि स्थः उपात्	**२६. अकर्मकाच्च २६९३ ।**	अकर्मकात् २९	अकर्मक क्रियावाची उप पूर्वक स्था धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि अकर्मकात्	**२७. उद्विभ्यां तपः २६९४ ।** ** स्वाङ्गकर्मकाच्च ।*		अकर्मक क्रियावाची उत् और विपूर्वक तप धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि अकर्मकात्	**२८. आङो यमहनः २६९५ ।** ** स्वाङ्गकर्मकाच्च ।*		अकर्मक क्रियावाची आङ्पूर्वक यम उपरमे तथा हन हिंसागत्योः धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि अकर्मकात्	**२९. समो गम्यृच्छिभ्याम् २६९९ ।** ** विदिप्रच्छिस्वरतीनामुपसंख्यानम् ।* ** अर्तिश्रुदृशिभ्यश्च ।* ** उपसर्गादस्यत्यूह्योर्वा वचनम् ।*		अकर्मक क्रियावाची सम् पूर्वक गम्लृ गतौ तथा तौदादिक ऋच्छ धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**३०. निसमुपविभ्यो ह्वः २७०३ ।**	ह्वः ३१	नि सम् उप वि पूर्वक ह्वेञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ह्वः	**३१. स्पर्धायामाङः २७०४ ।**		स्पर्द्धा का विषय रहने पर आङ्-पूर्वक ह्वेञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**३२. गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः २७०५ ।**	कृञः ३५	गन्धन अवक्षेपण सेवन साहसिक्य प्रतियत्न प्रकथन तथा उपयोग अर्थों में डुकृञ् करणे धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **३३. अधेः प्रसहने २७०६ ।** प्रसहन अर्थ में अधिपूर्वक डुकृञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।
कृञः

आत्मनेपदम्, कर्तरि **३४. वेः शब्दकर्मणः २७०७ ।** वेः ३५ शब्दकर्म अर्थ में वर्तमान वि पूर्वक डुकृञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।
कृञः

आत्मनेपदम्, कर्तरि **३५. अकर्मकाच्च २७०८ ।** अकर्मक वि पूर्वक डुकृञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।
कृञः वेः

आत्मनेपदम्, कर्तरि **३६. संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः २७०९ ।** नियः ३७ सम्मानन उत्सञ्जन आचार्यकरण ज्ञान भृति विगणन व्यय अर्थों में णीञ् प्रापणे धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **३७. कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि २७१० ।** कर्तृस्थ कर्म के रहने पर शरीरावयव भिन्न में ही णीञ् प्रापणे से आत्मनेपद होता है ।
नियः

आत्मनेपदम्, कर्तरि **३८. वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः २७११ ।** वृत्ति सर्ग तायनेषु ३९ क्रमः ४३ वृत्ति सर्ग तायन अर्थ में क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **३९. उपपराभ्याम् २७१२ ।** वृत्ति सर्ग तायन अर्थ में यदि क्रम धातु उप और परापूर्वक हो तो भी आत्मनेपद होता है ।
क्रमः वृत्तिसर्गतायनेषु

आत्मनेपदम्, कर्तरि **४०. आङ उद्गमने २७१३ ।।२।।** उद्गमन अर्थ में वर्तमान आङ्-पूर्वक क्रम धातु से आत्मनेपद होता है ।
क्रमः ***ज्योतिरुद्गमन इति वक्तव्यम् ।***

आत्मनेपदम्, कर्तरि **४१. वेः पादविहरणे २७१४ ।** पादविहरण अर्थ में वर्तमान वि पूर्वक क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है ।
क्रमः

आत्मनेपदम्, कर्तरि **४२. प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् २७१५ ।** तुल्यार्थ प्र उप पूर्वक क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है ।
क्रमः

आत्मनेपदम्, कर्तरि **४३. अनुपसर्गाद्वा २७१६ ।** उपसर्ग रहित क्रम धातु से विकल्प से आत्मनेपद होता है ।
क्रमः

आत्मनेपदम्, कर्तरि **४४. अपह्नवे ज्ञः २७१७ ।** ज्ञः ४६ अपह्नव अर्थ में वर्तमान ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **४५. अकर्मकाच्च २७१८** अकर्मक अर्थ में वर्तमान ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है ।
ज्ञः

आत्मनेपदम्, कर्तरि **४६. संप्रतिभ्यामनाध्याने २७१९ ।** अनाध्यान अर्थ में वर्तमान सम् प्रति पूर्वक ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है ।
ज्ञः

आत्मनेपदम्, कर्तरि वदः	**४७. भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः २७२० ।**	वदः ५०	भासन उपसंभाषा ज्ञान यत्न विमति उपमन्त्रण अर्थ में वर्तमान वद् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि वदः	**४८. व्यक्तवाचां समुच्चारणे २७२१ ।**	व्यक्तवाचां समुच्चारणे ५०	व्यक्ता वाक् के सामूहिक उच्चारण में वर्तमान वद् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि वदः व्य०-णे	**४९. अनोरकर्मकात् २७२२ ।**		व्यक्तवाक् विषयक अनुपूर्वक अकर्मक वद् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि वदः व्य०-णे	**५०. विभाषा विप्रलापे २७२३ ।**		व्यक्त वाक् विषयक विप्रलाप अर्थ में प्रयुक्त वद् धातुं से विकल्प से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**५१. अवाद्ग्रः २७२४ ।**	ग्रः ५२	अव पूर्वक गॄ निगरणे धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ग्रः	**५२. समः प्रतिज्ञाने २७२५ ।**		प्रतिज्ञान अर्थ में वर्तमान सम् पूर्वक गॄ शब्दे धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**५३. उदश्चरः सकर्मकात् २७२६ ।**	चरः ५४	सकर्मक उत् पूर्वक चर् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि चरः	**५४. समस्तृतीयायुक्तात् २७२७ ।**	समस्तृतीयायुक्तात् ५५	तृतीया विभक्ति से युक्त सम् पूर्वक चर् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि सम०-त्	**५५. दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे २७२८ ।** ** अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया भवतीति वक्तव्यम् ।*		चतुर्थी के अर्थ में वर्तमान तृतीया से युक्त दाण् दाने धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**५६. उपाद्यमः स्वकरणे २७२९ ।**		स्वकरण अर्थ में वर्तमान उप पूर्वक यम् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**५७. ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः २७३१ ।**	सनः ५९	सन्नन्त ज्ञा श्रु स्मृ दृश् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि सनः	**५८. नानोर्ज्ञः २७३२ ।**	न ५९	सन्नन्त अवपूर्वक ज्ञा धातु से आत्मनेपद नहीं होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि सनः, न	**५९. प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः २७३३ ।**		सन्नन्त प्रति आङ्पूर्वक श्रु धातु से आत्मनेपद नहीं होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि	**६०. शदेः शितः २३६२** ।। ३ ।।	शितः ६१	शित् शद्लृ शातने धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **६१. म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च २५३८ ।**
शितः

मृङ् प्राणत्यागे से लुङ् लिङ् तथा शित् के यहाँ ही आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **६२. पूर्ववत्सनः २७३४ ।**

सन् होने से पहले जो धातु आत्मनेपद होता है, वह सन्नन्त के बाद भी रहता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **६३. आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य २२४० ।**

आम् प्रत्यय जिससे हुआ हो उससे कृञ् का अनुप्रयोग होने पर कृञ् को भी आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **६४. प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु २७३५ ।**
**** स्वराद्यन्तोपसृष्टादिति वक्तव्यम् ।***

अयज्ञपात्रविषयक प्र उप पूर्वक युजिर् योगे धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **६५. समः क्ष्णुवः २७३६ ।**

सम् पूर्वक क्ष्णु तेजने धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **६६. भुजोऽनवने २७३७ ।**

अपालन अर्थ में प्रयुक्त भुज पालनाभ्यवहारयोः धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **६७. णेरणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्ताऽनाध्याने** णेः ७१
२७३८ ।

अण्यन्तावस्था की क्रिया यदि ण्यन्तावस्था में भी हो, अण्यन्तावस्था में प्रयुक्त कर्म यदि ण्यन्त में कर्ता हो तो धातु से आत्मनेपद होता है । आध्यान को छोड़कर ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **६८. भीस्म्योर्हेतुभये २५९४ ।**
णेः

हेतु से यदि भय और स्मय हो तो ण्यन्त ञिभी और स्मय् धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **६९. गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने २७३९ ।** प्रलम्भने ७०
णेः

प्रलम्भन अर्थ में वर्तमान ण्यन्त गृधु तथा वञ्चु धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **७०. लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च २५९२ ।**
णेः प्रलम्भने

संमानन शालीनीकरण तथा प्रलम्भन अर्थ में विद्यमान ण्यन्त लीङ् और ली धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि **७१. मिथ्योपपदात्कृञोऽभ्यासे २७४० ।**
णेः

अभ्यास अर्थ में विद्यमान मिथ्या उपपद से युक्त ण्यन्त कृ धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम् कर्तरि	७२. **स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले २१५८ ।**	कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ७७	कर्तृगामी क्रियाफल रहने पर स्वरितेत् और ञित् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि कर्त्र-फले	७३. **अपाद्वदः २७४१ ।**		कर्तृगामी क्रियाफल रहने पर अप् पूर्वक वद् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि कर्त्र-फले	७४. **णिचश्च २५६४ ।**		कर्तृगामी क्रियाफल रहने पर णिजन्त से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि कर्त्र-फले	७५. **समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे २७४२ ।**		कर्तृगामी क्रियाफल रहने पर सम् उत् आङ् पूर्वक यम् धातु से आत्मनेपद होता है यदि प्रयोग ग्रन्थ विषयक न हो ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि कर्त्र-फले	७६. **अनुपसर्गाज्ज्ञः २७४३ ।**		अनुपसर्ग ज्ञा धातु से कर्तृगामी क्रियाफल रहने पर आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि कर्त्र-फले	७७. **विभाषोपपदेन प्रतीयमाने २७४४ ।**		यदि कर्तृगामी क्रियाफलता किसी उपपद से प्रतीत हो रही हो तो स्वरितेतः आदि पाँच सूत्रों से होने वाला आत्मनेपद विकल्प से हो ।

परस्मैपद

कर्तरि	७८. **शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् २१५९ ।**	कर्तरि ९३ परस्मैपदम् ९३	जिस अर्थ में जिन धातुओं से आत्मनेपद किया गया है उनसे बचे धातुओं से कर्ता अर्थ में परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम्	७९. **अनुपराभ्यां कृञः २७४५ ।**		कृ धातु से जहाँ अनु और परा उपसर्ग लगा हो वहाँ कर्ता में परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम्	८०. **अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः २७४६ ।।४।।**		अभि प्रति अति पूर्वक क्षिप् धातु से कर्ता में परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम्	८१. **प्राद्वहः २७४७ ।**	वहः ८२	प्रपूर्वक वह में कर्ता से परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम् वहः	८२. **परेर्मृषः २७४८ ।**		परिपूर्वक मृष् धातु से कर्ता में परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम्	८३. **व्याङ्परिभ्यो रमः २७४९ ।**	रमः ८५	वि आङ् परि पूर्वक रम् धातु से कर्ता में परस्मैपद होता है ।

कर्तरि परस्मैपदम् रमः	**८४. उपाच्च २७५० ।**	उपात् ८५	उप पूर्वक रम् धातु से भी कर्ता में परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम् रमः उपात्	**८५. विभाषाऽकर्मकात् २७५१ ।**		उपपूर्वक रम् धातु यदि अकर्मक हो तो उससे कर्ता में विकल्प से परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम्	**८६. बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्योणेः २७५२ ।**	णेः ८९	ण्यन्त बुध युध् नश् जन् इङ् प्रु द्रु स्रु धातुओं से परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम् णेः	**८७. निगरणचलनार्थेभ्यश्च २७५३ ।** ** अदेः प्रतिषेधः ।*		ण्यन्त निगरणार्थक और चलनार्थक धातुओं से परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम् णेः	**८८. अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् २७५४ ।**		अण्यन्तावस्था में अकर्मक और चित्तवत्कर्तृक धातुओं से ण्यन्त में परस्मैपद हो जाता है ।
कर्तरि परस्मैपदम् णेः	**८९. न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः २७५५ ।** ** पादिषु धेट उपसंख्यानम् ।*		पा, दम्, आङ्पूर्वक यम्, आङ् पूर्वक यस्, परिपूर्वक मुह्, रुच् नृत् वद् वस् इन धातुओं से ण्यन्त में परस्मैपद नहीं होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम्	**९०. वा क्यषः २६६९ ।**	वा ९३	क्यषन्त धातुओं से वैकल्पिक परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम् वा	**९१. द्युद्भ्यो लुङि २३४५ ।**		द्युत् से कृपू तक पठित धातुओं से लुङ् में वैकल्पिक परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम् वा	**९२. वृद्भ्यः स्यसनोः २३४७ ।**	स्यसनोः ९३	वृत् वृधु शृधु स्यन्दू तथा कृपू से स्य और सन् परे रहने पर वैकल्पिक परस्मैपद होता है ।
कर्तरि परस्मैपदम् वा स्यसनोः ९३	**९३. लुटि च क्लृपः २३५१ ।**		क्लृप् धातु से लुट् स्य और सन् परे रहने पर वैकल्पिक परस्मैपद होता है ।

भूवादयः क्रीडोऽनु वेः पादम्रियतेः प्राद्वहस्त्रयोदश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

	एकसंज्ञाधिकार		
	१. आकडारादेका संज्ञा २३२ ।		यहाँ से कडाराः कर्मधारये २.२.३८ सूत्र तक एक ही संज्ञा होती है ।
	विप्रतिषेधकार्यनिर्णय		
	२. विप्रतिषेधे परं कार्यम् १७५ ।		तुल्य बल विरोध होने पर परकार्य होता है ।
	नदीसंज्ञा		
	३. यू स्त्र्याख्यौ नदी २६६ । ** प्रथमलिङ्गग्रहणं च ।*	यू ६, नदी ६	नित्य स्त्रीलिङ्ग ईदन्त ऊदन्त शब्द नदी संज्ञक होते हैं ।
यू नदी	**४. नेयङुवङ्स्थानावस्त्री ३०३ ।**	इयङुवङ्स्थानौ ६	इयङ् उवङ् के योग्य जो ईदन्त और ऊदन्त शब्द हैं उन्हें नदी संज्ञा नहीं होती है, केवल स्त्री शब्द को छोड़कर ।
यू इयङुवङ्स्थानौ नदी	**५. वाऽऽमि ३०४ ।**	वा ६	स्त्री शब्द को छोड़कर इयङ् उवङ् योग्य ईदन्त और ऊदन्त शब्दों को आम् के यहाँ विकल्प से नदी संज्ञा होती है ।
यू इयङुवङ्स्थानौ वा नदी	**६. ङिति ह्रस्वश्च २९६ ।**	ह्रस्वः ७	स्त्री शब्द भिन्न इयङ् उवङ् के योग्य नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों को तथा स्त्रीलिङ्ग में ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व अकारान्त शब्दों को भी ङित् परे रहने पर विकल्प से नदी संज्ञा होती है ।
	घि संज्ञा		
ह्रस्वः	**७. शेषो घ्यसखि २४३ ।**	घि ९	नदी संज्ञा से भिन्न और सखिशब्द को छोड़कर ह्रस्व इकरान्त ह्रस्व उकारान्त शब्द को घि संज्ञा होती है ।
घि	**८. पतिः समास एव २५७ ।**	पतिः ९	पति शब्द को समास में ही घि संज्ञा होती है ।
घि पतिः	**९. षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा ३३८९ ।**		षष्ठ्यन्त से युक्त पतिशब्द को वेद में विकल्प से घि संज्ञा होती है ।
	लघु संज्ञा		
	१०. ह्रस्वं लघु ३१ ।	ह्रस्वं ११	ह्रस्व को लघु संज्ञा होती है ।

	गुरु संज्ञा		
ह्रस्वम्	**११. संयोगे गुरु ३२ ।**	गुरु १२	यदि संयोग परे हो तो ह्रस्व को गुरु संज्ञा होती है ।
गुरु	**१२. दीर्घं च ३३ ।**		दीर्घ की भी गुरु संज्ञा होती है ।
	अङ्ग संज्ञा		
	१३. यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् १९९ ।		जिससे प्रत्यय का विधान किया जाय तदादि शब्दरूप को प्रत्यय परे रहने पर अङ्ग संज्ञा होती है ।
	पदसंज्ञा		
	१४. सुप्तिङन्तं पदम् २९ ।	पदम् १७	सुबन्त तिङन्त शब्दरूप को पद संज्ञा होती है ।
पदम्	**१५. नः क्ये २६५९ ।**		क्यच् क्यङ् क्यष् परे रहने पर नान्त शब्दरूप को ही पद संज्ञा होती है ।
पदम्	**१६. सिति च १२५२ ।**		सित् प्रत्यय परे रहने पर पूर्व को पद संज्ञा होती है ।
पदम्	**१७. स्वादिष्वसर्वनामस्थाने २३० ।**	स्वादिषु असर्वनामस्थाने १८	सर्वनामस्थान को छोड़कर कप् प्रत्ययावधिक स्वादि के परे रहने पर पूर्व को पद संज्ञा होती है ।
	भ संज्ञा		
स्वा०-ने	**१८. यचि भम् २३१ ।** ** नभोऽङ्गिरोमनुषां वत्युपसंख्यानम् ।* ** वृषण् वस्वश्वयोः ।*	भम् २०	सर्वनामस्थान को छोड़कर कप् प्रत्ययावधिक यादि अजादि स्वादि के परे रहने पर पूर्व को भ संज्ञा होती है ।
भम्	**१९. तसौ मत्वर्थे १८९६ ।**		मतुप् प्रत्यय परे रहने पर तान्त और सान्त शब्दरूप को भ संज्ञा होती है ।
भम्	**२०. अयस्मयादीनि छन्दसि ३३९० ।।१।।** ** उभयसंज्ञान्यपीति वक्तव्यम् ।*		अयस्मय आदि शब्द वेद में सिद्ध होते हैं ।
	वचनविनियोग		
	२१. बहुषु बहुवचनम् १८७ ।		बहुत्व में बहुवचन होता है ।
	२२. द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने १८६ ।		द्वित्व और एकत्व में (क्रमशः) द्विवचन और एकवचन होते हैं ।
	कारक		
	२३. कारके ५३४	कारके ५५	१/४/५५/ तक कारके के अधिकार में संज्ञायें होंगी ।

अपादान संज्ञा

कारके	२४. **ध्रुवमपायेऽपादानम् ५८६ ।** ** जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम् ।*	अपादानम् ३१	अपाय साध्य रहने पर अवधिभूत कारक अपादान संज्ञक होता है।
कारके अपादानम्	२५. **भीत्रार्थानां भयहेतुः ५८८ ।**		भयार्थक और त्राणार्थक धातु के प्रयोग होने पर भयहेतु कारक अपादान संज्ञक होता है।
कारके अपादानम्	२६. **पराजेरसोढः ५८९ ।**		परापूर्वक जि धातु के प्रयोग में असह्य अर्थ रूप कारक अपादान संज्ञक होता है।
कारके अपादानम्	२७. **वारणार्थानामीप्सितः ५९० ।**		वारणार्थक धातु के प्रयोग में ईप्सितार्थ कारक अपादान संज्ञक होता है।
कारके अपादानम्	२८. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति ५९१ ।**		व्यवधान रहने पर जिससे अपना अदर्शन इष्ट होता है वह कारक अपादान संज्ञक होता है।
कारके अपादानम्	२९. **आख्यातोपयोगे ५९२ ।**		नियमपूर्वक विद्या स्वीकार करने पर वक्ता रूप कारक अपादान संज्ञक होता है।
कारके अपादानम्	३०. **जनिकर्तुः प्रकृतिः ५९३ ।**	कर्तुः ३२	जायमान का हेतु कारक अपादान संज्ञक होता है।
कारके अपादानम् कर्तुः	३१. **भुवः प्रभवः ५९४ ।**		प्रथम प्रकाशन रूप प्रभवति के प्रयोग में प्रथम प्रकाशन स्थल रूप कारक अपादान संज्ञक होता है।

सम्प्रदान संज्ञा

कारके कर्तुः	३२. **कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम् ५६९ ।** ** क्रियया यमभिप्रैति स संप्रदानम् ।* ** कर्मणः करणसंज्ञा संप्रदानस्य च कर्मसंज्ञा वक्तव्या ।*	सम्प्रदानम् ४१	(कर्ता दान) कर्म से जिसे चाहता है वह सम्प्रदान संज्ञक होता है।
कारके सम्प्रदानम्	३३. **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ५७१ ।**		रुच्यर्थक धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण अर्थरूप कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है।
कारके सम्प्रदानम्	३४. **श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः ५७२ ।**		श्लाघ् ह्नुङ् स्था शप् धातुओं के प्रयोग में ज्ञीप्स्यमान अर्थरूप कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है।
कारके सम्प्रदानम्	३५. **धारेरुत्तमर्णः ५७३ ।**		धारि के प्रयोग में उत्तमर्ण अर्थरूप कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है।

कारके सम्प्रदानम्	**३६. स्पृहेरीप्सितः ५७४ ।**		स्पृह धातु के प्रयोग में ईप्सित अर्थ रूप कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।
कारके सम्प्रदानम्	**३७. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः ५७५ ।**	यं प्रतिकोषः ३८	क्रुध द्रुह ईर्ष्या असूया अर्थक धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप हो वह अर्थरूप कारक सम्प्रदानसंज्ञक होता है ।
कारके सम्प्रदानम् यं प्रतिकोपः	**३८. क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ५७६ ।**		सोपसर्ग क्रुध द्रुह के योग में जिसके प्रति कोप होता है वह कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।
कारके सम्प्रदानम्	**३९. राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ५७७ ।**		राध् और ईक्ष् के योग में जिसके प्रति कोप हो वह कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।
कारके सम्प्रदानम्	**४०. प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता ५७८ ।।२।।**	पूर्वस्य कर्ता ४१	प्रति आङ् पूर्वक श्रु धातु के योग में पूर्व प्रवर्तना रूप व्यापार का कर्ता कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।
कारके सम्प्रदानम् पूर्वस्य कर्ता	**४१. अनुप्रतिगृणश्च ५७९ ।**		अनुप्रति पूर्वक गृ शब्दे धातु के योग में पूर्व व्यापार का कर्तृभूत कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।

करण संज्ञा

कारके	**४२. साधकतमं करणम् ५६० ।**	साधकतमम् ४३ करणम् ४४	क्रियासिद्धि में प्रकृष्टोपकारक कारक करणसंज्ञक होता है ।
कारके साधकतमम् करणम्	**४३. दिवः कर्म च ५६२ ।**		दिव धातु के योग में साधकतम कारक कर्म संज्ञक तथा करण संज्ञक होता है ।
कारके करणम्	**४४. परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् ५८० ।**		परिक्रयण में साधकतम विकल्प से सम्प्रदान संज्ञक होता है। (पक्ष) में करण संज्ञक होता है)

अधिकरण संज्ञा

कारके	**४५. आधारोऽधिकरणम् ६३२ ।**	आधारः ४८	कर्तृगत कर्मगत धारणक्रिया का आश्रयीभूत आधार अधिकरण संज्ञक होता है ।

कर्म संज्ञा

कारके आधारः	**४६. अधिशीङ्स्थासां कर्म ५४२ ।**	कर्म ४८	अधि शीङ् स्था आस् धातुओं का आधार कारक कर्म संज्ञक होता है ।
कारके आधारः कर्म	**४७. अभिनिविशश्च ५४३ ।**		अभि नि पूर्वक विश् धातु का आधार कर्म संज्ञक होता है ।
कारके आधारः कर्म	**४८. उपान्वध्याङ्वसः ५४४ ।** * *वसेरश्यर्थस्य प्रतिषेधः*		उप अनु अधि आङ् पूर्वक वस् धातु का आधार कर्म संज्ञक होता है ।
कारके	**४९. कर्तुरीप्सिततमं कर्म ५३५ ।**	कर्म ५३	कर्ता का क्रिया के द्वारा पाने के लिये जो अत्यन्त इष्ट हो वह कारक कर्म संज्ञक होता है ।
कर्म कारके	**५०. तथायुक्तं चानीप्सितम् ५३८ ।**		ईप्सिततमवत् क्रिया से युक्त अनीप्सित कारक भी कर्म संज्ञक होता है ।
कर्म कारके	**५१. अकथितं च ५३९ ।** * *अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् ।*		(अपादानादि विशेष से) अविवक्षित कारक भी कर्म संज्ञक होता है ।
कर्म कारके	**५२. गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्ता स णौ ५४० ।** * *जल्पतिप्रभृतीनामुपसंख्यानम् ।* * *दृशेश्च ।* * *अदिखाद्योर्न ।* * *नीवह्योर्न ।* * *नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः ।* * *भक्षेरहिंसार्थस्य न ।* * *शब्दायतेर्न ।*	अणिकर्ता स णौ ५३	गत्यर्थक बुद्ध्यर्थक प्रत्यवसानार्थक शब्दकर्म तथा अकर्मक धातुओं के योग में अण्यन्तावस्था का कर्ता ण्यन्तावस्था में कर्मसंज्ञक होता है ।
कर्म अणिकर्तासणौ कारके	**५३. हृक्रोरन्यतरस्याम् ५४१ ।** * *अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् ।*		हृ और कृ धातु के अण्यन्तावस्था में जो कर्ता है वह ण्यन्तावस्था में कर्म संज्ञक होता है ।

कर्तृ संज्ञा

कारके	**५४. स्वतन्त्रः कर्ता ५५९ ।**	कर्ता ५५	(वक्ता क्रिया सिद्धि में स्वातन्त्र्य रूप से जिस अर्थ को कहने की इच्छा करता है) वह कर्तृ संज्ञक होता है ।

कर्ता कारके **५५. तत्प्रयोजको हेतुश्च २५७५ ।** कर्ता का प्रयोजक हेतु संज्ञक और कर्तृसंज्ञक होता है।

निपात संज्ञा

५६. प्राग्रीश्वरान्निपाताः १९ । निपाताः ९८ यहाँ से अधिरीश्वरे १.४.९८ तक निपात का अधिकार है।

निपाताः **५७. चादयोऽसत्त्वे २० ।** असत्त्वे ५८ अद्रव्यवाचक च आदि निपात संज्ञक होते हैं।

(३) च वा ह (अह) एव एवम् नूनम् शश्वत् युपत् (युगपत्) (भूयस्) सूपत् कूपत् कुवित् नेत् चेत् चण् कच्चित् यत्र तत्र नह हन्त माकिम् (माकीम्) माकिर् नकिम् (नकीम्) नकिर् (आकीम्) माङ् नञ् तावत् यावत् त्वा त्वे त्वै (द्वै रै) रे श्रौषट् वौषट् वषट् स्वाहा स्वधा ओम् तथा (तथाहि) खलु किल अथ सु (सुष्ठु) स्म अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ आदह उञ् उकञ् वेलायाम् मात्रायाम् यथा यत् तत् किम् पुरा वधा (वंध्वा) धिक् हाहा हे है (हहे) पाट् प्याट् आहो उताहो हो अहो नो (नौ) अथो ननु मन्ये मिथ्या असि ब्रूहि तु नु इति इव वत् वात् वन बत (सम् वशम् शिकम् दिकम्) सनुकम् छंवट् (छंवट) शङ्के शुकम् खम् सनात् सनतर् नहिकम् सत्यम् ऋतम् अद्धा इद्धा नोचेत् नचेत् नहि जातु कथम् कुतः कुत्र अव अनु हा रे (है) आहोस्वित् शम् कम् खम् दिष्ट्या पशु वट् सह (अनुषट्) आनुषक् अङ्ग फट् ताजक् (भाजक्) अये अरे वाट् (चाटु) कुम् खुम् घुम् अम् ईम् सीम् सिम् सि वै । 'उपसर्गविभक्तिस्वर-प्रतिरूपकाश्च निपाताः' १६—**आकृतिगणोऽयम् ।। इति चादयः ।।**

उपसर्ग संज्ञा

निपाताः असत्त्वे **५८. प्रादयः २१ ।** प्रादयः ६० अद्रव्यवाची प्र आदि भी निपात संज्ञक होते हैं।

(४) प्र परा अप सम् अनु अव निस् निर् दुस् दुर् वि आङ् नि अधि अपि सु उद् अभि प्रति परि उप—**इति प्रादयः ।।**

** मरुच्छब्दस्योपसंख्यानम् ।*

** प्रच्छब्दस्योपसंख्यानम् ।*

निपाताः प्रादयः **५९. उपसर्गाः क्रियायोगे २२ ।** क्रियायोगे ७९ प्र आदि क्रिया के योग में उपसर्ग संज्ञक होते हैं।

गति संज्ञा

प्रादयः क्रियायोगे **६०. गतिश्च २३** ।। ३ ।। गतिः ७९ प्र आदि क्रिया के योग में गति संज्ञक भी होते हैं।

निपाताः ** कारिकाशब्दस्योपसंख्यानम् ।*

** पुनश्च नसौ छन्दसि ।*

** दुरः षत्वणत्वयोरुपसर्गत्वप्रतिषेधो वक्तव्यः ।*

क्रियायोगे गतिः निपाताः **६१. ऊर्यादिच्विडाचश्च ७६२ ।** ऊरी आदि च्वि अन्त वाले और डाजन्त शब्द क्रिया के योग में गति संज्ञक होते हैं।

(५) ऊरी उररी तन्थी ताली आताली वेताली धूली धूसी शकला संशकला ध्वंसकला भ्रंसकला गुलुगुधा सजूस् फल फली विक्ली आक्ली आलोष्ठी केवाली केवासी सेवासी (पर्याली) शेवाली वर्षाली अत्यूमशा वश्मशा (मस्मसा) मसमसा औषट् (श्रौषट्) वौषट् वषट् स्वाहा स्वधा बन्धा प्रादुस् अत् आविस्—**इत्यूर्यादयः ।।**

क्रियायोगे गतिः निपाताः **६२. अनुकरणं चानितिपरम् ७६३ ।** पर में इति ऐसा शब्द न हो तो अनुकरण शब्द गतिसंज्ञक होता है।

क्रियायोगे गतिः निपाताः **६३. आदरानादरयोः सदसती ७६४ ।** आदर में प्रयुक्त सत् शब्द और अनादर में प्रयुक्त असत् शब्द गतिसंज्ञक होते हैं।

क्रियायोगे गतिः निपाताः **६४. भूषणेऽलम् ७६५ ।** भूषण अर्थ में अलम् शब्द गतिसंज्ञक होता है।

क्रियायोगे गतिः निपाताः **६५. अन्तरपरिग्रहे ७६६ ।** अपरिग्रह अर्थ में अन्तर्‌शब्द गतिसंज्ञक होता है।

** अन्तःशब्दस्याङ्किविधिणत्वेषूपसर्गत्वं वाच्यम् ।*

क्रियायोगे गतिः निपाताः **६६. कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते ७६७ ।** श्रद्धानिवृत्ति अर्थ में कणे शब्द और मनस् शब्द गतिसंज्ञक होते हैं।

क्रियायोगे गतिः निपाताः **६७. पुरोऽव्ययम् ७६८ ।** अव्ययम् ६९ अव्यय पुरस् शब्द गतिसंज्ञक होता है।

क्रियायोगे गतिः निपाताः, अव्ययम् **६८. अस्तं च ७६९ ।** अव्यय अस्तम् शब्द भी गतिसंज्ञक होता है।

क्रियायोगे गतिः अव्ययम् निपाताः **६९. अच्छ गत्यर्थवदेषु ७७० ।** गत्यर्थक और वद् धातु के योग में अव्यय अच्छ शब्द गतिसंज्ञक होता है।

क्रियायोगे गतिः नि- **७०. अदोऽनुपदेशे ७७१ ।**
पाताः
अनुपदेश अर्थ में प्रयुक्त अव्यय अदस् गतिसंज्ञक होता है ।

क्रियायोगे गतिः नि- **७१. तिरोऽन्तर्धौ ७७२ ।**
पाताः
तिरोऽन्तर्धौ ७२ व्यवधान में अव्यय तिरस् शब्द गतिसंज्ञक होता है ।

क्रियायोगे गतिः **७२. विभाषा कृञि ७७३ ।.**
ति०-र्धौ निपाताः
विभाषा ७६
कृञि ७९
यदिकृधातु परे हो तो अव्यय तिरस्‌शब्द विकल्प से गतिसंज्ञक होता है ।

क्रियायोगे गतिः वि- **७३. उपाजेऽन्वाजे ७७४**
भाषा कृञि निपाताः
यदि कृ धातु परे हो तो अव्यय उपाजे अन्वाजे शब्द विकल्प से गतिसंज्ञक होते हैं ।

क्रियायोगे गतिः वि- **७४. साक्षात्प्रभृतीनि च ७७५ ।**
भाषा कृञि निपाताः
यदि कृ धातु परे हो तो अव्यय साक्षात् आदि शब्द विकल्प से गतिसंज्ञक होते हैं ।

(६) साक्षात् मिथ्या चिन्ता भद्रा रोचना आस्था अमा अद्धा प्राजर्या प्राजरुहा बीजर्या बीजरुहा संसर्या अर्थे लवणम् उष्णम् शीतम् उदकम् आर्द्रम् अग्नौ वशे विकसने प्रसहने प्रतपने प्रादुस् नमस्— **आकृतिगणोऽयम् ।। इति साक्षात्प्रभृतयः ।।**

** च्व्यर्थ इति वक्तव्यम् ।*

क्रियायोगे गतिः वि- **७५. अनत्याधान उरसिमनसी ७७६**
भाषा कृञि निपाताः
यदि कृ धातु परे हो तो असंयोग अर्थ में उरसि और मनसि शब्द विकल्प से गतिसंज्ञक होते हैं ।

क्रियायोगे गतिः कृञि **७६. मध्ये पदे निवचने च ७७७ ।**
निपाताः विभाषा
यदि कृ धातु परे हो तो असंयोग अर्थ में मध्ये पदे निवचने शब्द विकल्प से गतिसंज्ञक होते हैं ।

क्रियायोगे गतिः कृञि **७७. नित्यं हस्ते पाणावुपयमने ७७८ ।**
निपाताः
यदि कृ धातु परे हो तो उपयमन अर्थ में हस्ते और पाणौ शब्द नित्य गतिसंज्ञक होते हैं ।

क्रियायोगे गतिः कृञि **७८. प्राध्वं बन्धने ७७९ ।**
निपाताः
यदि कृ धातु परे हो तो बन्धन अर्थ में प्राध्वम् अव्यय नित्य गतिसंज्ञक होता है ।

क्रियायोगे गतिः कृञि **७९. जीविकोपनिषदावौपम्ये ७८० ।**
निपाताः
यदि कृ धातु परे हो तो उपमा विषय में जीविका और उपनिषद् शब्द गतिसंज्ञक होते हैं ।

गत्युपसर्गाणां स्थाननिर्देशः

निपाताः	**८०. ते प्राग्धातोः २२३० । ।।४।।**	ते ८२ धातोः ८२	वे उपसर्ग और गतिसंज्ञक शब्द धातु से पूर्व प्रयुक्त होते हैं।
ते धातोः निपाताः	**८१. छन्दसि परेऽपि ३३९१ ।**	छन्दसि ८२	वे गत्युपसर्गसंज्ञक शब्द वेद में धातु के बाद भी प्रयुक्त होते हैं।
ते धातोः छन्दसि निपाताः	**८२. व्यवहिताश्च ३३९२ ।**		वे गत्युपसर्गसंज्ञक शब्द वेद में व्यवहित भी प्रयुक्त होते हैं।

कर्मप्रवचनीय संज्ञा

निपाताः	**८३. कर्मप्रवचनीयाः ५४६ ।**	कर्म-याः ९८	१/४/९८/ तक कर्म प्रवचनीयाः का अधिकार है।
कर्मप्र० निपाताः	**८४. अनुर्लक्षणे ५४७ ।**	अनुः ८६	लक्षण द्योत्य रहने पर अनु को कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।
कर्मप्र० अनुः निपाताः	**८५. तृतीयार्थे ५४९ ।**		तृतीयार्थ द्योत्य रहने पर अनु शब्द कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है।
कर्मप्र० अनुः निपाताः	**८६. हीने ५५० ।**	हीने ८७	हीन द्योत्य रहने पर अनु कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है।
कर्मप्र० हीने निपाताः	**८७. उपोऽधिके च ५५१ ।**		अधिक हीन दोनों द्योत्य रहने पर उप कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है।
कर्मप्र० निपाताः	**८८. अपपरी वर्जने ५९६ ।**		वर्जन में अप और परि कर्मप्रवचनीय संज्ञक होते हैं।
निपाताः कर्मप्र०	**८९. आङ्मर्यादावचने ५९७ ।** ** आङ्मर्यादाभिविध्योरिति वक्तव्यम् ।*		मर्यादावचन में आङ् कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है।
कर्मप्र० निपाताः	**९०. लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रति-पर्यनवः ५५२ ।**	लक्ष-सु ९१	लक्षण इत्थम्भूताख्यान भाग वीप्सा में प्रति परि अनु कर्मप्रवचनीय संज्ञक होते है।
कर्मप्र० निपाताः लक्ष-सु	**९१. अभिरभागे ५५३ ।**		लक्षण इत्थम्भूताख्यान वीप्सा में अभि कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है।
कर्मप्र० निपाताः	**९२. प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः ५९९ ।**		प्रतिनिधि और प्रतिदान अर्थ में प्रति कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है।
कर्मप्र० निपाताः	**९३. अधिपरी अनर्थकौ ५५४ ।**		अनर्थक अधि और परि कर्मप्रवचनीय संज्ञक होते हैं।
कर्मप्र० निपाताः	**९४. सुः पूजायाम् ५५५ ।**	पूजायाम् ९५	पूजा अर्थ में सु कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है।
कर्मप्र० निपाताः पूजायाम्	**९५. अतिरतिक्रमणे च ५५६ ।**		अतिक्रमण और पूजा अर्थ में अति कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है।

निपाताः कर्मप्र०	**९६. अपिः पदार्थसंभावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु ५५७ ।**		पदार्थ, संभावन, अन्ववसर्ग, गर्हा तथा समुच्चय अर्थ में अपि कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है ।
निपाताः कर्मप्र०	**९७. अधिरीश्वरे ६४४ ।**	अधिः ९८	ईश्वर अर्थ में अधि कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है ।
निपाताः कर्मप्र० अधिः	**९८. विभाषा कृञि ६४६ ।**		कृ परे रहने पर अधि विकल्प से कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है ।
	परस्मैपद संज्ञा		
	९९. लः परस्मैपदम् २१५५ ।		लादेश परस्मैपद संज्ञक होते हैं ।
	आत्मनेपद संज्ञा		
	१००. तङानावात्मनेपदम् २१५६ । ।।५।।		त आताम् झ आदि नव तथा शानच् कानच् आत्मनेपद संज्ञक होते हैं ।
	तिङ्विभाग		
	१०१. तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः २१६० ।	त्रीणित्रीणि १०३	तिप् से महिङ् तक १८ वों में क्रमशः ३-३ प्रथम मध्यम तथा उत्तम कहलाते हैं ।
त्रीणित्रीणि	**१०२. तान्येकवचनद्विवचबहुवचनान्येकशः २१६१ ।**	एक-कशः १०३	प्रथम मध्यम उत्तम के भी ३-३ क्रमशः एकवचन द्विवचन बहुवचन कहलाते हैं ।
	सुब्विभाग		
एक-कशः त्रीणित्रीणि	**१०३. सुपः १८५ ।**	सुपः १०४	सु से सुप् के भी ३-३ क्रमशः एकवचन द्विवचन बहुवचन कहलाते हैं ।
सुपः	**१०४. विभक्तिश्च १८४ ।**		सुप् और तिङ् विभक्तिसंज्ञक होते हैं ।
	पुरुष संज्ञा		
	१०५. युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः २१६२ ।	उ०-अपि १०८ मध्यमः १०६	उपपद में युष्मद् अप्रयुज्यमान हो या प्रयुज्यमान मध्यम कहलाता है ।
उ०-अपि मध्यमः	**१०६. प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरुत्तम एकवच्च २१६३ ।**		प्रहास में यदि दैवादिक मन, धातु उपपद में हो मध्यम उत्तम के स्थान में उत्तम मध्यम हो जाता है तथा उत्तम में द्वित्व और बहुत्व के स्थान में एकवत् होता है ।
उ०-अपि	**१०७. अस्मद्युत्तमः २१६४ ।**		उपपद में अस्मद् अप्रयुज्यमान हो या प्रयुज्यमान उत्तम (पुरुष) कहलाता है

उ०-अपि **१०८. शेषे प्रथमः २१६५ ।** युष्मद् और अस्मद् से अतिरिक्त हो वह प्रथम कहलाता है ।

संहिता संज्ञा

१०९. परः संनिकर्षः संहिता २८ । (वर्णों का) अतिशय संनिकर्ष संहिता संज्ञक होता है ।

अवसान संज्ञा

११०. विरामोऽवसानम् २७ । (वर्णों का) अभाव अवसान संज्ञक होता है ।

आ कडाराद्बहुष्वनुप्रतिगृण ऊर्यादिच्छन्दसि तिङो दश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च ।

।। अथ द्वितीयोऽध्यायः ।।

प्रथमः पादः ।

समर्थपरिभाषा

	१. समर्थः पदविधिः ६४७ ।		पद सम्बन्धी विधि समर्थाश्रित होती है ।

पराङ्गवद्भावातिदेश

	२. सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे ३६५६ । ** षष्ठ्यामन्त्रितकारकवचनम् ।* ** सुबन्तस्य पराङ्गवद्भावे समानाधिकरणस्योपसंख्यानमनन्तरत्वात् ।* ** पूर्वाङ्गवच्चेति वक्तव्यम् ।* ** अव्ययानां न ।* ** अव्ययीभावस्य त्विष्यते ।*	सुप् २.२.३८	स्वर कर्त्तव्य में आमन्त्रित पर रहने पर पूर्ववर्ती सुप् पर के अङ्ग के समान हो जाता है ।

समासाधिकार

सुप्	**३. प्राक्कडारात्समासः ६४८ ।**	समासः २.२.-३८	कडाराः कर्मधारये २.२.३८ तक समास का अधिकार होगा ।
सुप् समासः	**४. सह सुपा ६४९ ।** *** इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च ।**	सह सुपा २.२.-३८	१. सुबन्त समर्थ के साथ समस्त होगा । २. सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होगा ।

अव्ययीभाव समास

सुप् समासः सहसुपा	**५. अव्ययीभावः ६५१ ।**	अव्ययीभावः २१	यहाँ से २.१.२१ तक अव्ययीभाव संज्ञक होंगे ।
सुप् समासः सहसुपा अव्य-वः	**६. अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ६५२ ।**	अव्ययम् २१	विभक्ति समीप समृद्धि व्यृद्धि अर्थाभाव अत्यय असंप्रति शब्द-प्रादुर्भाव पश्चात् यथानुपूर्व्य यौगपद्य सादृश्य संपत्ति साकल्य और अन्तवचन अर्थों में प्रयुक्त अव्यय समर्थ सुबन्त के साथ समस्त होंगे ।
सुप् समासः सहसुपा अव्य-वः अव्य०	**७. यथाऽसादृश्ये ६६१ ।**		असादृश्य अर्थ में वर्तमान यथा अव्यय समर्थ के साथ समस्त होगा । (ऐसे समास अव्ययीभाव संज्ञक होंगे)
सुप् समासः सहसुपा अव्य-वः अव्य०	**८. यावदवधारणे ६६२ ।**		अवधारण अर्थ में यावत् सुबन्त के साथ समस्त होगा ।

सुप् समासः सहसुपा अव्य-वः अव्य०	**९. सुप्प्रतिना मात्रर्थे ६६३ ।**		मात्रा अर्थ में 'प्रति' सुबन्त के साथ समस्त होगा।
सुप् समासः सहसुपा अव्य-वः अव्य०	**१०. अक्षशलाकासंख्याः परिणा ६६४ ।**		अक्ष शलाका तथा (एक द्वि त्रि चतुर पञ्चन् रूप) संख्या शब्द परि के साथ समस्त होंगे।
सुप्, समा० सहसुपा	**११. विभाषा ६६५ ।**	विभाषा २.२.-३८	२.२.३८ तक विभाषा का अधिकार होगा।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा अव्य-व० अव्ययम्	**१२. अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या ६६६ ।**	पञ्चम्या १३	अप परि बहिस् अञ्चु पञ्चम्यन्त के साथ विकल्प से समस्त होंगे।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा अव्य-व० अव्ययम् पञ्च०	**१३. आङ्मर्यादाभिविध्योः ६६७ ।**		मर्यादा और अभिविधि में प्रयुक्त आङ् पञ्चम्यन्त के साथ विकल्प से समस्त होगा। (समास अव्ययीभाव होगा)।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा अव्य-व० अव्ययम्	**१४. लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये ६६८ ।**	लक्षणेन १६	आभिमुख्य अर्थ में अभि और प्रति लक्षणवाची सुबन्त के साथ विकल्प से समस्त होंगे।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा अव्य-व० अव्ययम् लक्ष०	**१५. अनुर्यत्समया ६६९ ।**	अनुः १६	अनु समीप अर्थ में लक्षणवाची सुबन्त के साथ विकल्प से समस्त होगा।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा अव्य-व० अव्ययम् लक्ष० अनुः	**१६. यस्य चायामः ६७० ।**		जिसमें आयाम हो ऐसे लक्षणवाची सुबन्त के साथ अनु विकल्प से समस्त होगा।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा अव्य-व० अव्ययम्	**१७. तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च ६७१ ।**		तिष्ठद्गु आदि (निम्नलिखित) शब्द निपातित होते हैं।

(७) तिष्ठद्गु वहद्गु आयतीगवम् खलेयवम् खलेबुसम् लूनयवम् लूयमानयवम् पूतयवम् पूयमानयवम् संहृतयवम् संह्रियमाणयवम् संहृतबुसम् संह्रियमाणबुसम् समभूमि समपदाति सुषमम् विषमम् दुःषमम् निःषमम् अपसमम् आयतीसमम् (प्रोढम्) पापसमम् पुण्यसमम् प्राह्णम् प्ररथम् प्रमृगम् प्रदक्षिणम् (अपरदक्षिणम्) संप्रति असंप्रति। 'इच्प्रत्ययः समासान्तः' १७—**इति तिष्ठद्गुप्रभृतयः ।।**

सुप्, समा० सहसुपा **१८. पारे मध्ये षष्ठ्या वा ६७२ ।**
विभाषा अव्य-व०
अव्ययम्

पार मध्य शब्द षष्ठ्यन्त के साथ विकल्प से समस्त होता है और वह अव्ययीभाव समास है।

सुप्, समा० सहसुपा **१९. संख्या वंश्येन ६७३ ।** संख्या २०
विभाषा अव्य-व०
अव्ययम्

वंश्यवाची सुबन्त के साथ संख्या-शब्द समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **२०. नदीभिश्च ६७४ ।** ।। १ ।। नदी २१
विभाषा अव्य-व०
अव्ययम् संख्या

नदीवाचक सुबन्त के साथ संख्या-वाचक शब्द समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **२१. अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् ६७५ ।**
विभाषा अव्य-व०
अव्ययम् नदी

अन्यपदार्थ में विद्यमान सुबन्त के साथ नदीवाचक शब्द नित्य समस्त होते हैं। यह अव्ययीभाव समास होता है।

तत्पुरुष समास

सुप्, समा० सहसुपा **२२. तत्पुरुषः ६८४ ।** तत्पुरुषः २.२.-२२
विभाषा

यहाँ २.२.२२ तक तत्पुरुषः का अधिकार होगा।

सुप्, समा० सहसुपा **२३. द्विगुश्च ६८५ ।**
विभाषा तत्पुरुषः

द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **२४. द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः ६८६ ।** द्वितीया २९
विभाषा तत्पुरुषः

** गम्यादीनामुपसंख्यानम् ।*

श्रित अतीत पतित गत अत्यस्त प्राप्त आपन्न शब्दों के साथ द्वितीयान्त सुबन्त विकल्प से समस्त होता है। यह तत्पुरुष समास है।

सुप्, समा० सहसुपा **२५. स्वयं क्तेन ६८७ ।** क्तेन २८
विभाषा तत्पुरुषः

क्तान्त के साथ 'स्वयं' यह सुबन्त समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **२६. खट्वा क्षेपे ६८८ ।**
विभाषा तत्पुरुषः
द्वि०, क्तेन

क्षेप गम्यमान होने पर द्वितीयान्त खट्वा शब्द समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **२७. सामि ६८९ ।**
विभाषा तत्पुरुषः
द्वि०, क्तेन

(अर्द्धपर्याय) सामि यह अव्यय क्तान्त सुबन्त के साथ समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **२८. कालाः ६९० ।** कालाः २९
विभाषा तत्पुरुषः
द्वि०, क्तेन

द्वितीयान्त कालवाची शब्द क्तान्त के साथ समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा **२९. अत्यन्तसंयोगे च ६९१ ।**
विभाषा, तत्पुरुषः
द्वि०, क्तेन, कालाः

अत्यन्त संयोग में कालवाची द्वि-तीयान्त सुबन्त के साथ समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा **३०. तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ६९२ ।** तृतीया ३५ — तृतीयान्त अर्थकृत गुणवचन अर्थ-वाचक शब्दों के साथ तृतीयान्त सुबन्त समस्त होते हैं।
विभाषा, तत्पुरुषः

सुप्, समा० सहसुपा **३१. पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः ६९३ ।** — पूर्व सदृश सम ऊनार्थ कलह निपुण मिश्र श्लक्ष्ण शब्दों के साथ तृतीयान्त समस्त होते हैं।
विभाषा, तत्पुरुषः,
तृ० **** अवरस्योपसंख्यानम् ।***

सुप्, समा० सहसुपा **३२. कर्तृकरणे कृता बहुलम् ६९४ ।** कर्तृकरणे ३५ — कर्ता और करण में होने वाली तृतीया बहुलतया कृदन्त के साथ समस्त होती है।
विभाषा, तत्पुरुषः,
तृ०

सुप्, समा० सहसुपा **३३. कृत्यैरधिकार्थवचने ६९५ ।** — अधिकार्थवचन में कर्तृकरण विहित तृतीया कृत्यान्त के साथ समस्त होती है।
विभाषा, तत्पुरुषः,
तृ०, कर्तृकरणे

सुप्, समा० सहसुपा **३४. अन्नेन व्यञ्जनम् ६९६ ।** — व्यञ्जनवाची तृतीयान्त अन्नवाची शब्द के साथ समस्त होता है।
विभाषा, तत्पुरुषः,
तृ०, कर्तृकरणे

सुप्, समा० सहसुपा **३५. भक्ष्येण मिश्रीकरणम् ६९७ ।** — मिश्रीकरणवाची तृतीयान्त के साथ भक्ष्यवाची सुबन्त समस्त होता है।
विभाषा, तत्पुरुषः,
तृ०, कर्तृकरणे

सुप्, समा० सहसुपा **३६. चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ६९८** — तदर्थ अर्थ बलि हित सुख रक्षित के साथ चतुर्थ्यन्त पद समस्त होता है।
विभाषा, तत्पुरुषः **** अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्।***

सुप्, समा० सहसुपा **३७. पञ्चमी भयेन ६९९ ।** पञ्चमी ३९ — पञ्चम्यन्त सुबन्त भय के साथ समस्त होता है।
विभाषा, तत्पुरुषः **** भयभीतभीतिभीभिरिति वक्तव्यम् ।***
**** भयनिर्गतजुगुप्सुभिरिति वक्तव्यम् ।***

सुप्, समा० सहसुपा **३८. अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः ७००** — अपेत अपोढ मुक्त पतित अपत्रस्त के साथ कुछ ही पञ्चम्यन्त समस्त होते हैं।
विभाषा, तत्पुरुषः,
पञ्च०

सुप्, समा० सहसुपा **३९. स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन ७०१** — पञ्चम्यन्त स्तोकार्थक अन्तिकार्थक दूरार्थक और कृच्छ्र शब्द क्तान्त के साथ समस्त होते हैं।
विभाषा, तत्पुरुषः,
पञ्च०

सुप्, समा० सहसुपा **४०. सप्तमी शौण्डैः ७१७** ।। २ ।। सप्तमी ४८ — शौण्ड आदि शब्दों के साथ सप्तम्यन्त समस्त होते हैं।
विभाषा, तत्पुरुषः

(८) शौण्ड धूर्त कितव व्याड प्रवीण संवीत अन्तर अधि पटु पण्डित कुशल चपल निपुण—
इति शौण्डादयः ।।

सुप्, समा० सहसुपा **४१. सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च ७१८ ।** — सिद्ध शुष्क पक्व बन्ध के साथ सप्तम्यन्त समस्त होता है।
विभाषा, तत्पुरुष:
सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा **४२. ध्वाङ्क्षेण क्षेपे ७१९ ।** — ध्वांक्षवाची के साथ सप्तम्यन्त समस्त होता है यदि क्षेप गम्यमान हो।
विभाषा, तत्पुरुष:,
सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा **४३. कृत्यैर्ऋणे ७२० ।** — यदि ऋण गम्यमान हो तो कृत्य-प्रत्ययान्त के साथ सप्तम्यन्त समस्त होता है।
विभाषा, तत्पुरुष:,
सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा **४४. संज्ञायाम् ७२१ ।** — संज्ञा के विषय में सप्तम्यन्त सुबन्त के साथ समस्त होता है।
विभाषा, तत्पुरुष:,
सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा **४५. क्तेनाहोरात्रावयवा: ७२२ ।** क्तेन ४७ — दिनरात्रि के अवयववाची सप्त-म्यन्त शब्द क्तान्त के साथ समस्त होते हैं।
विभाषा, तत्पुरुष:,
सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा **४६. तत्र ७२३ ।** — तत्र रूप सप्तम्यन्त क्तान्त के साथ समस्त होते हैं।
विभाषा, तत्पुरुष:,
सप्त० क्तेन

सुप्, समा० सहसुपा **४७. क्षेपे ७२४ ।** क्षेपे ४८ — क्षेप गम्यमान होने पर सप्तम्यन्त क्तान्त के साथ समस्त होते हैं।
विभाषा, तत्पुरुष:,
सप्त० क्तेन

सुप्, समा० सहसुपा **४८. पात्रेसमितादयश्च ७२५ ।** — क्षेप गम्यमान होने पर पात्रेसमिता आदि शब्द सिद्ध (निपातित) होते हैं।
विभाषा तत्पुरुष:
सप्त० क्षेपे

(९) पात्रेसमिता: पात्रेबहुला: उदुम्बरमशक: (उदुम्वरमशका:) उदुम्बरकृमि: कूपकच्छप: अवटकच्छप: कूपमण्डूक: कुम्भमण्डूक: उदपानमण्डूक: नगरकाक: नगरवायस: मातरिपुरुष: पिण्डीशूर: पितरिशूर: गेहेशूर: गेहेनर्दी गेहेक्ष्वेडी गेहेविजिती गेहेव्याड: गेहेमेही (गेहेदाही) गेहेद्दप्त: गेहेधृष्ट: गर्भेतृप्त: आखनिकवक: **गोष्ठेशूर:** गोष्ठेविजिती गोष्ठेक्ष्वेडी गोष्ठेपटु: गोष्ठेपण्डित: गोष्ठेप्रगल्भ: कर्णेटिरिटिरा कर्णेचुरुचुरा—**आकृतिगणोऽयम् ।**
इति पात्रेसमितादय: ।।

तत्पुरुषान्तर्गत कर्मधारय समास

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः **४९. पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन ७२६ ।** समानाधिकरणेन ७२ पूर्वकाल एक सर्वजरत् पुराण नव केवल (ये सभी) समानाधिकरण सुबन्त के साथ समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना० **५०. दिक्संख्ये संज्ञायाम् ७२७ ।** दिक्संख्ये ५१ संज्ञा विषय में दिग्वाची और संख्या शब्द समानाधिकरण सुबन्त के साथ समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०, दिक्सं० **५१. तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च ७२८ ।** तद्धितार्थ विषय में उत्तरपद परे रहने पर और समाहार में दिक्संख्या शब्द समानाधिकरण सुबन्त के सात समस्त होते हैं।

*** द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्यसमासवचनम् ।***

*** उत्तरपदेन परिमाणिना द्विगोः सिद्धये बहूनां तत्पुरुषस्योपसंख्यानम् ।***

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना० **५२. संख्यापूर्वो द्विगुः ७३० ।** तद्धितार्थोत्तरपदसमाहार में संख्यापूर्व समास द्विगु संज्ञक होता है।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना० **५३. कुत्सितानि कुत्सनैः ७३२ ।** कुत्सितवाची सुबन्त कुत्सनवचन सुबन्तों के साथ समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना० **५४. पापाणके कुत्सितैः ७३३ ।** कुत्स्यमान शब्द पाप और आणक शब्द के साथ समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना० **५५. उपमानानि सामान्यवचनैः ७३४ ।** उपमानवाची सुबन्त सामान्यवचन सुबन्त के साथ समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना० **५६. उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे ७३५** यदि सामान्य-साधारण धर्म का प्रयोग न हो तो उपमेयवाची सुबन्त व्याघ्र आदि शब्दों के साथ समस्त होते हैं।

(१०) व्याघ्र सिंह ऋक्ष ऋषभ चन्दन वृक वृष वराह हस्तिन् तरु कुञ्जर रुरु पृषत् पुण्डरीक पलाश कितव—**इति व्याघ्रादयः ।। आकृतिगणोऽयम् ।** तेन—मुखपद्मम् मुखकमलम् करकिसलयम् पार्थिवचन्द्रः इत्यादि ।।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना० **५७. विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ७३६ ।** विशेषणवाची सुबन्त समानाधिकरण विशेष्यवाची सुबन्त के साथ बहुल प्रकार से समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

५८. पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्यमवीराश्च ७३७ ।

पूर्व अपर प्रथम चरम जघन्य समान मध्य मध्यम वीर ये सुबन्त समानाधिकरण सुबन्त के साथ समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

५९. श्रेण्यादयः कृतादिभिः ७३८ ।

श्रेणि आदि सुबन्त समानाधिकरण कृत आदि के साथ समस्त होते हैं ।

(११) श्रेणि [ऊक] एक पूग कुन्दुम (मुकुन्द) [राशि] निचय [विशेष] निधन (विधान) [पर] इन्द्र देव मुण्ड भूत श्रमण वदान्य अध्यापक अभिरूपक ब्राह्मण क्षत्रिय [विशिष्ट] पटु पण्डित कुशल चपल निपुण कृषण—**इत्येते श्रेण्यादयः ।।**

(१२) कृत मित मत भूत उक्त [युक्त] समाज्ञात समाम्नात समाख्यात संभावित [संसेवित] अवधारित अवकल्पित निराकृत उपकृत उपाकृत [छ्ष्ट कलित दलित उदाहृत विश्रुत उदित] **आकृतिगणोऽयम् ।। इति कृतादयः ।।**

**** श्रेण्यादिषु च्व्यर्थवचनम् ।***

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

६०. क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ् ७३९ ।।३।।

**** शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम् ।***

अनञ् क्तान्त नञ्विशिष्ट क्तान्त के साथ समस्त होते हैं ।

(१३. वा० ग०) । शाकपार्थिव कुतपसौश्रुत अजातौल्वलि—**आकृतिगणोऽयम् ।।** कृतापकृत भुक्ताविभुक्त पीतविपीत गतप्रत्यागत यातानुयात क्रयाक्रयिका पुटापुटिका फलाफलिका [मानोन्मानिका ।।] **इति शाकपार्थिवादयः ।।**

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

६१. सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः ७४०

सत् महत् परम उत्तम उत्कृष्ट पूज्यमान के साथ समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

६२. वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम् ७४१ ।

पूज्यमानवाची सुबन्त वृन्दारक नाग कुञ्जर के साथ समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

६३. कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने ७४२ ।

जाति परिप्रश्न में वर्तमान कतर कतम शब्द समर्थ सुबन्त के साथ समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

६४. किं क्षेपे ७४३ ।

क्षेप गम्यमान होने पर किम् शब्द सुबन्त के साथ समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

६५. पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशावेहद्बष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः ७४४ । जातिः ६६

पोटा युवति स्तोक कतिपय गृष्टि धेनु वशा वेहत् बष्कयणी प्रवक्तृ श्रोत्रिय अध्यापक धूर्त शब्दों के साथ जातिवाचक सुबन्त समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०, जातिः

६६. प्रशंसावचनैश्च ७४७ ।

जातिवाची सुबन्त प्रशंसावचनों के साथ समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

६७. युवा खलतिपलितवलिनजरतीभिः ७४८

समानाधिकरण खलति पलित वलिन जरती शब्दों के साथ युवशब्द समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

६८. कृत्यतुल्याख्या अजात्या ७४९ ।

कृत्य प्रत्ययान्त और तुल्यपर्याय सुबन्त अजातिवचन के साथ समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

६९. वर्णो वर्णेन ७५० ।

वर्ण विशेषवाची सुबन्त समानाधिकरण वर्णविशेषवाची सुबन्त के साथ समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

७०. कुमारः श्रमणादिभिः ७५२ ।

कुमार शब्द श्रमणा आदि शब्दों के साथ समस्त होता है।

(१४) श्रमणा प्रव्रजिता कुलटा गर्भिणी तापसी दासी बन्धकी अध्यापक अभिरूपक पण्डित पटु मृदु कुशल चपल निपुण—**इति श्रमणादयः** ।।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

७१. चतुष्पादो गर्भिण्या ७५३ ।

** चतुष्पाज्जातिरिति वक्तव्यम् ।*

चतुष्पादवाची सुबन्त गर्भिणी शब्द के साथ समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, समाना०

७२. मयूरव्यंसकादयश्च ७५४ ।

मयूरव्यंसक आदि शब्द निपातित होते हैं तथा तत्पुरुष कहलाते हैं।

(१५) मयूरव्यंसक छात्रव्यंसक कम्बोजमुण्ड यवनमुण्ड छन्दसि। हस्तेगृह्य (हस्तगृह्य) पादेगृह्य (पादगृह्य) लाङ्गूलेगृह्य (लाङ्गूलगृह्य) पुनर्दाय।

'एहीडादयोऽन्यपदार्थे' १८ । एहीडं वर्तते । एहियवं वर्तते । एहिवाणिजा क्रिया । अपेहिवाणिजा प्रेहिवाणिजा एहिस्वागता अपेहिस्वागता एहिद्वितीया अपेहिद्वितीया प्रेहिद्वितीया एहिकटा अपेहिकटा प्रेहिकटा आहरकटा प्रेहिकर्दमा प्रोहकर्दमा विधमचूडा उद्धमचूडा (उद्धरचूडा) आहरचेला आहरवसना [आहरसेना] आहरवनिता (आहरविनता) कृन्तविचक्षणाउद्धरोत्सृजा उद्धरावसृजा उद्धभविधमा उत्पचनिपचा उत्पतनिपता उच्चावचम् उच्चनीचम् आचोपचम् आचपराचम् नखप्रचम् निश्चप्रचम् अकिञ्चन स्नात्वाकालक पीत्वास्थिरक भुक्त्वासुहित प्रोष्यपापीयान् उत्पत्यपाकला निपत्यरोहिणी निषण्णश्यामा अपेहिप्रघसा एहिविघसा इहपञ्चमी इहद्वितीया । 'जहि कर्मणा बहुलभाभीक्ष्ण्ये' १९ । कर्तारं चाभिदधाति । जहिजोडः (जहिजोडम्) जहिस्तम्बम् (जहिस्तम्बः) [उज्जाहिस्तम्बम्] । 'आख्यातमाख्यातेन क्रियासातत्ये' २० ! अश्नीतपिबता पचतभृज्जता खादतमोदता खादतवमता (खादताचमता) आहरनिवपा आहरनिष्किरा (आवपनिष्किरा) उत्पचविपचा भिन्धिलवणा कृन्धिविचक्षणा पचलवणा पचप्रकूटा—**आकृतिगणोऽयम्** तेन । अकुतोभयः कान्दिशीकः (कान्देशीकः) आहोपुरुषा आहोपुरुषिका अहमहमिका यदृच्छा एहिरेयाहिरा उन्मृजावमृजा द्रव्यान्तरम् अवश्यकार्यम् ॥ **इति मयूरव्यंसकादयः ॥**

समर्थोऽन्यपदार्थे च सिद्धशुष्कसन्महद्द्वादश ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः

तत्पुरुष समास

सुप्, समा० सहसुपा **१. पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ७ १ २** एकदे-णे ३ विभाषा, तत्पुरुषः,

एकत्वसंख्याविशिष्ट अवयवी के साथ पूर्व अपर अधर उत्तर शब्द समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा **२. अर्धं नपुंसकम् ७१३ ।**
विभाषा, तत्पुरुषः,
एक- देशे

नित्य नपुंसक समांशवाची अर्द्धशब्द एकत्वविशिष्ट अवयवी के साथ समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **३. द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्यतरस्याम् ७१४**
विभाषा, तत्पुरुषः,
एक-देशे

एकत्वसंख्या विशिष्ट अवयवी के साथ द्वितीय तृतीय चतुर्थ तुर्य शब्द विकल्प से समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा **४. प्राप्तापन्ने च द्वितीयया ७१५**
विभाषा, तत्पुरुषः,

प्राप्त और आपन्न शब्द द्वितीयान्त के साथ समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा **५. कालाः परिमाणिना ७१६ ।**
विभाषा, तत्पुरुषः,

परिच्छेद्यवाची सुबन्त के साथ कालवाची शब्द समस्त होते हैं।

सुप्, समा० सहसुपा **६. नञ् ७५६ ।**
विभाषा, तत्पुरुषः,

समर्थ सुबन्त के साथ नञ् समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **७. ईषदकृता ७५५ ।**
विभाषा, तत्पुरुषः, **** ईषद्गुणवचनेनेति वक्तव्यम् ।***

अकृदन्त सुबन्त के साथ ईषत् शब्द समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **८. षष्ठी ७०२ ।** षष्ठी १७
विभाषा, तत्पुरुषः, **** कृद्योगा च षष्ठी समस्यत इति वक्तव्यम् ।***

षष्ठ्यन्त सुबन्त समर्थ सुबन्त के साथ समस्त होता है।

सुप्, समा० सहसुपा **९. याजकादिभिश्च ७०३ ।**
विभाषा, तत्पुरुषः,
षष्ठी

षष्ठ्यन्त, याजक आदि शब्दों के साथ समस्त होता है।

(१६) याजक पूजक परिचारक परिवेषक (परिषेचक) स्नापक अध्यापक उत्साहक उद्वर्तक होतृ भर्तृ रथगणक पत्तिगणक—**इति याजकादयः ।।**

सुप्, समा० सहसुपा **१०. न निर्धारणे ७०४ ।** न १६
विभाषा, तत्पुरुषः, **** प्रतिपदविधाना च षष्ठी न समस्यत इति वक्तव्यम् ।***
षष्ठी

निर्द्धारण में वर्तमान षष्ठी नहीं समस्त होती है।

सुप्, समा० सहसुपा **११. पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन ७०५ ।**
विभाषा, तत्पुरुषः,
षष्ठी, न

पूरण गुण सुहितार्थ सत् अव्यय तव्य और समानाधिकरण के साथ षष्ठी नहीं समस्त होती है।

सुप्, समा० सहसुपा **१२. क्तेन च पूजायाम् ७०६ ।** क्तेन १३
विभाषा, तत्पुरुषः,
षष्ठी, न

३.२.१८८ सूत्र से विहित क्त के साथ षष्ठी नहीं समस्त होती है।

सुप्, समा० सहसुपा **१३. अधिकरणवाचिना च ७०७ ।**
विभाषा, तत्पुरुषः,
षष्ठी, न, क्तेन

३.४.७६ सूत्र से विहित क्त के साथ षष्ठी नहीं समस्त होती है।

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, षष्ठी, न	**१४. कर्मणि च ७०८ ।**		२.३.६६ सूत्र से कर्म में विहित षष्ठी नहीं समस्त होती है ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, षष्ठी, न	**१५. तृजकाभ्यां कर्तरि ७०९ ।**	तृजकाभ्यां १७	कर्ता में होने वाली षष्ठी तृच् और अक् के साथ नहीं समस्त होती है ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, षष्ठी, न, तृज-म्	**१६. कर्तरि च ७१० ।**		कर्ता में होने वाले तृच् और अक् के साथ षष्ठी नहीं समस्त होती है ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, षष्ठी, तृज-म्	**१७. नित्यं क्रीडाजीविकयोः ६११ ।**	नित्यम् १९	क्रीडा और जीविका में अक् के साथ षष्ठी नित्य समस्त होती है ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, नित्यम्	**१८. कुगतिप्रादयः ७६१ ।** ** कर्मप्रवचनीयानां प्रतिषेधः ।* ** प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया ।* ** अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया ।* ** अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया ।* ** पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या ।* ** निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या ।* ** इवेन विभक्त्यलोपः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च ।*		कु अव्यय गति संज्ञक और प्रादि समर्थ के साथ नित्य समस्त होते हैं ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, नित्यम्	**१९. उपपदमतिङ् ७८२ ।**	उपपदम् २१	अतिङन्त उपपद समर्थ के साथ नित्य समस्त होता है ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, उपपदम्	**२०. अमैवाव्ययेन ७८३ ।** ।। १ ।।	अमैव २१ अव्य-न २१	अव्यय के साथ उपपद का जो समास होता है वह अम् के ही साथ होगा ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, उपपदम्, अमैव, अव्य०	**२१. तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम् ७८४ ।**	तृ०-नि २२	३.४.४७ सूत्र से प्रारम्भ कर जिन उपपदों की चर्चा की गई है वे अम् अव्यय के साथ विकल्प से समस्त होते हैं ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, तत्पुरुषः, तृ०-नि	**२२. क्त्वा च ७८५ ।**		पूर्वसूत्र में वर्णित उपपद क्त्वा के साथ विकल्प से समस्त होते हैं ।

बहुव्रीहि समास

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा	**२३. शेषो बहुव्रीहिः ८२९ ।**	बहुव्रीहिः २८	२.२.२८ तक बहुव्रीहि का अधिकार है यह समास प्रथमान्त में होता है।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, बहुव्रीहिः	**२४. अनेकमन्यपदार्थे ८३० ।** **** प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः । * नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः ।***	अनेकम् २९	अन्य पदार्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त समस्त होते हैं।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, बहुव्रीहिः, अनेकम्	**२५. संख्ययाव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये ८४३ ।**		संख्येय अर्थ में प्रयुक्त संख्या शब्दों के साथ अव्यय आसन्न दूर अधिक और संख्या शब्द समस्त होते हैं।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, बहुव्रीहिः, अनेकम्	**२६. दिङ्नामान्यन्तराले ८४५ ।**		यदि अन्तराल वाच्य हो तो दिङ्-नाम सुबन्त समस्त होते हैं।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, बहुव्रीहिः, अनेकम्	**२७. तत्र तेनेदमिति सरूपे ८४६ ।**		ग्रहण अर्थ में सरूप सप्तम्यन्त शब्द तथा प्रहरण अर्थ में तृतीयान्त शब्द समस्त होते हैं।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, बहुव्रीहिः, अनेकम्	**२८. तेन सहेति तुल्ययोगे ८४८ ।** **** सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावो वक्तव्यः ।***		तुल्य योग में वर्तमान सह शब्द तृतीयान्त के साथ समस्त होता हैं।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, अनेकम्	द्वन्द्व समास **२९. चार्थे द्वन्द्वः ९०१ ।**		च के विषय में वर्तमान् अनेक सुबन्त समस्त होते हैं। यह द्वन्द्व संज्ञक समास होता है।

पूर्वनिपात

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा	**३०. उपसर्जनं पूर्वम् ६५४ ।**	पूर्वम् ३८ उपसर्जनम् ३१	समास में उपसर्जन संज्ञक का पूर्व में प्रयोग करना चाहिए।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, पूर्वम् उपसर्जनम्	**३१. राजदन्तादिषु परम् ९०२ ।**		राजदन्त आदि शब्दों में उपसर्जन का पर में प्रयोग करना चाहिये।

(१७) राजदन्तः अग्रेवणम् लिप्तवासितम् नग्न-मुषितम् सिक्तसंमृष्टम् मृष्टलुञ्चितम् अवक्लिन्नपक्वम् अर्पितोप्तम् उप्तगाढम् उलूखलमुसलम् तण्डु-लकिण्वम् दृषदुपलम् आरड्वायनि (आरग्वायन-बन्धकी) चित्ररर्थबाह्लीकं अवन्त्यश्मकं शूद्रार्थ स्नातकराजानौ विष्वक्सेनार्जुनौ अक्षिभ्रुवम् दारगवम् शब्दार्थौ धर्मार्थौ कामार्थौ अर्थशब्दौ अर्थधर्मौ अर्थकामौ

वैकारिमतं गाजवाजम् (गोजवाजं) गोपालिधान-पूलासं (गोपालधानीपूलासम्) पूलासकारण्डं (पूला-सककुरण्डम्) स्थूलासम् (स्थूलपूलासम्) उशीर-बीजं [जिज्ञास्थि] सिञ्जास्थम् (सिञ्जाश्वत्थं) चित्रास्वाती (चित्रस्वाती) भार्यापती दम्पती जम्पती जायापती पुत्रपती पुत्रपशू केशश्मथू शिरोबीजु (शिरोबीजम्) शिरोजानु सर्पिर्मधुनी मधुसर्पिषी [आद्यन्तौ] अन्तादी गुणवद्धी वृद्धिगुणौ—**इति राजदन्तादयः ।।**

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, पूर्वम्	**३२. द्वन्द्वे घि ९०३ ।**	द्वन्द्वे ३४	द्वन्द्व समास में घि संज्ञक का पूर्व में प्रयोग करना चाहिये ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, पूर्वम्, द्वन्द्वे	**३३. अजाद्यदन्तम् ९०४ ।**		द्वन्द्व समास में अजादि अदन्त शब्द का पूर्व में प्रयोग करना चाहिये ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, पूर्वम्, द्वन्द्वे	**३४. अल्पाच्तरम् ९०५ ।** ** अनेकप्राप्तावेकस्य नियमोऽनियमः शेषे ।* ** ऋतुनक्षत्राणामानुपूर्व्येण समानाक्षराणाम् ।* ** अभ्यर्हितं च ।* ** लघ्वक्षरम् ।* ** वर्णानामानुपूर्व्येण ।* ** भ्रातुश्च ज्यायसः ।* ** संख्याया अल्पीयस्याः ।* ** धर्मादिषूभयम् ।*		अल्प अच् वाले शब्द का पूर्व में प्रयोग करना चाहिये ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, पूर्वम्	**३५. सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ ८९८ ।** ** सर्वनामसंख्ययोरुपसंख्यानम् ।* ** वा प्रियस्य ।* ** गड्वादिभ्यः परा सप्तमी ।*	बहुव्रीहौ ३७	बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त और विशेषण का पूर्वप्रयोग होता है ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, पूर्वम्, बहु०	**३६. निष्ठा ८९९ ।** ** जातिकालसुखादिभ्यः परानिष्ठा ।* ** प्रहरणार्थेभ्यश्च परे निष्ठासप्तम्यौ ।*		बहुव्रीहि समास में निष्ठान्त का पूर्व प्रयोग होता है ।
सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, पूर्वम्, बहु०	**३७. वाऽऽहिताग्न्यादिषु ९०० ।**	वा ३८	आहिताग्नि आदि शब्दों में निष्ठान्त का विकल्प से पूर्व प्रयोग होता है ।

(१८) आहिताग्नि जातपुत्र जातदन्त जातश्मश्रु तैलपीत घृतपीत [मद्यपीत] ऊढभार्य गतार्थ—

आकृतिगणोऽयम् ।। तेन। गडुकण्ठ अस्युद्यत (अरमुद्यत) दण्डपाणिप्रभृतयोऽपि ।। **इत्याहिताग्न्या-दयः ।।**

सुप्, समा० सहसुपा विभाषा, पूर्वम्, वा० **३८. कडाराः कर्मधारये ७५१ ।** कर्मधारय समास में कडार आदि शब्दों का विकल्प से पूर्व प्रयोग होता है।

(१९) कडार गडुल खञ्ज खोड काण कुण्ठ खलति गौर वृद्ध भिक्षुक पिङ्ग पिङ्गुल (पिङ्गल) तड तनु [जठर] बधिर मठर कञ्ज बर्बर—**इति कडारादयः ।।**

पूर्वापराधरोत्तरं तृतीयाप्रभृतीन्यष्टादश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

विभक्ति विधान

१. अनभिहिते ५३६ । यहाँ से अनभिहिते का अधिकार होगा।

** तिङ्कृत्तद्धितसमासैः परिसंख्यानम् ।*

द्वितीयाविभक्ति

२. कर्मणि द्वितीया ५३७ । कर्मणि ३ द्वितीया ५ अनभिहित कर्म में द्वितीया हो।

** उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु । द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ।।*

** अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि ।*

द्वितीया, कर्मणि **३. तृतीया च होश्छन्दसि ३३९४ ।** जुहोति के कर्म में तृतीया और द्वितीया हो वेद में।

द्वितीया **४. अन्तरान्तरेणयुक्ते ५४५ ।** अन्तरा और अन्तरेण के योग में द्वितीया हो।

द्वितीया **५. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ५५८ ।** कालाध्वनोः ७ अत्यन्तसंयोगे ६ अत्यन्त संयोग में काल और अध्वा वाची शब्दों से द्वितीया हो।

कालाध्वनोः, अत्यन्तसंयोगे **६. अपवर्गे तृतीया ५६३ ।** अपवर्ग गम्यमान होने पर अत्यन्त संयोग में काल और अध्वा वाची शब्दों से तृतीया हो।

कालाध्वनोः **७. सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये ६४३ ।** दो कारकों के मध्य में काल और अध्वावाची शब्दों से सप्तमी और पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं।

	८. कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ५४८ ।	कर्मप्रवचनीय युक्ते ११	कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया होती है ।
कर्म०-युक्ते	**९. यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी ६४५ ।**		'जिससे अधिक या जिसका ऐश्वर्य' ऐसा अर्थ जहाँ हो वहाँ कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी होती है ।
कर्म०-युक्ते	**१०. पञ्चम्यपाङ्परिभिः ५९८ ।**	पञ्चमी ११	कर्मप्रवचनीय के योग में अप आङ् परि से पञ्चमी होती है ।
कर्म०-युक्ते, पञ्चमी	**११. प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ६०० ।**		कर्मप्रवचनीय के योग में जिससे प्रतिनिधि और प्रतिदान हो वहाँ पञ्चमी होती है ।
	१२. गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि ५८५ ।		चेष्टा रहने पर अध्वभिन्न गत्यर्थकर्म में द्वितीया और चतुर्थी होती हैं ।
	चतुर्थी विभक्ति		
	१३. चतुर्थी संप्रदाने ५७० । ** तादर्थ्ये चतुर्थी वक्तव्या ।* ** क्लृपि संपद्यमाने च ।* ** उत्पातेन ज्ञापिते च ।* ** हितयोगे च ।*	चतुर्थी १७	सम्प्रदान कारक में चतुर्थी होती है ।
चतुर्थी	**१४. क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः ५८१ ।**		क्रियार्था क्रिया जिसका उपपद हो उस स्थानी से अप्रयुज्यमान तुमुन् के कर्म में चतुर्थी होती है ।
चतुर्थी	**१५. तुमर्थाच्च भाववचनात् ५८२ ।**		(३.३.११ सूत्र से विहित) तुमर्थ भाववचन प्रत्ययान्त से चतुर्थी होती है ।
चतुर्थी	**१६. नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च ५८३ ।** ** अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम् ।*		नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा अलं वषट् के योग में चतुर्थी होती है ।
चतुर्थी	**१७. मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु ५८४** ** अप्राणिष्वित्यपनीय नौकाकान्नशुकसृगालवर्जेष्विति वाच्यम् ।* (२०. वा०ग०) नौ काक अन्न शुक शृगाल— **इति नावादयः ।।**		अनादर गम्यमान रहने पर दैवादिक मन धातु के प्राणिरहित कर्म में चतुर्थी विकल्प से होती है ।
	तृतीया विभक्ति		
	१८. कर्तृकरणयोस्तृतीया ५६१ । ** प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् ।*	तृतीया २३	अनभिहित कर्ता कर्म में तृतीया होती है ।

	(**२१. वा०ग०**) प्रकृति प्राय गोत्र सम विषम द्विद्रोण पञ्चक साहस्र—**इति प्रकृत्यादयः** ।।		
तृतीया	**१९. सहयुक्तेऽप्रधाने ५६४ ।**		सहार्थ से युक्त अप्रधान में तृतीया होती है ।
तृतीया	**२०. येनाङ्गविकारः ५६५ । ।। १ ।।**		जिस अङ्ग के विकृत होने से अङ्गी का विकार लक्षित हो उससे तृतीया होती है ।
तृतीया	**२१. इत्थंभूतलक्षणे ५६६ ।**		इत्थंभूतलक्षण में तृतीया होती है ।
तृतीया	**२२. संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि ५६७ ।**		सम् पूर्वक ज्ञा धातु के कर्म में विकल्प से तृतीया हो ।
तृतीया	**२३. हेतौ ५६८ ।** * ***निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् ।***	हेतौ २७	हेतु अर्थ में तृतीया हो ।
हेतौ	**२४. अकर्तर्यृणे पञ्चमी ६०१ ।**	पञ्चमी २५	कर्तृवर्जित ऋण यदि हेतु हो तो उससे पञ्चमी हो ।
हेतौ, पञ्चमी	**२५. विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् ६०२ ।**		यदि स्त्रीलिङ्ग भिन्न गुण हेतु हो तो विकल्प से पञ्चमी होती है ।
हेतौ	**२६. षष्ठी हेतुप्रयोगे ६०७ ।**	षष्ठी हेतु प्रयोगे २७	यदि हेतु शब्द का प्रयोग हो और हेतु ही द्योत्य हो तो षष्ठी हो ।
हेतौ, षष्ठी हेतु०	**२७. सर्वनाम्नस्तृतीया च ६०८ ।**		यदि हेतु द्योत्य हो और सर्वनाम तथा हेतु शब्द का भी प्रयोग हो तो तृतीया और षष्ठी दोनों हों ।
	पञ्चमी विभक्ति		
	२८. अपादाने पञ्चमी ५८७ । * ***ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च ।*** * ***यतश्चाध्वकालनिमानं तत्र पञ्चमी तद्युक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यौ कालात्सप्तमी च वक्तव्या ।***	पञ्चमी ३५	अपादान में पञ्चमी होती है ।
पञ्चमी	**२९. अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहि-युक्ते ५९५ ।**		अन्य आरात् इतर ऋते दिक्शब्द अञ्चूत्तरपद आच् आहि के योग में पञ्चमी होती है ।
पञ्चमी	**३०. षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन ६०९ ।**		५.३.२८ के अनुसार अतसर्थ प्रत्यय के योग में षष्ठी हो ।
पञ्चमी	**३१. एनपा द्वितीया ६१० ।**		५.३.३५ के अनुसार एनबन्त के योग में द्वितीया हो ।
पञ्चमी	**३२. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् ६०३ ।**	तृतीया ३५ अन्यतरस्याम् ३३	पृथक् बिना नाना के योग में तृतीया पञ्चमी (और द्वितीया) हो ।

पञ्चमी, तृतीया, अन्यतरस्याम्	**३३. करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य ६०४ ।**		असत्त्ववाची स्तोक अल्प कृच्छ्र कतिपय शब्दों से करण में तृतीया और पञ्चमी हो ।
पञ्चमी, तृतीया	**३४. दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् ६११ ।**		दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों के योग में षष्ठी और पञ्चमी होती हैं ।
पञ्चमी, तृतीया	**३५. दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च ६०५ ।**	दूरा-थेभ्यः ३६	दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों से द्वितीया तृतीया और पञ्चमी होती हैं ।
	सप्तमी विभक्ति		
दूरा-थेभ्यः	**३६. सप्तम्यधिकरणे च ६३३ ।** ** क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम् ।* ** साध्वसाधुप्रयोगे च ।* ** अर्हाणां कर्तृत्वेऽनर्हाणामकर्तृत्वे तद्वैपरीत्ये च ।* ** निमित्तात्कर्मसंयोगे ।*	सप्तमी ४१	अधिकरण में तथा दूरार्थ अन्तिकार्थ शब्दों से सप्तमी होती है ।
सप्तमी	**३७. यस्य च भावेन भावलक्षणम् ६३४ ।**	यस्य-लक्षणम् ३८	जिसकी क्रिया से क्रियान्तर लक्षित होता है उससे सप्तमी होती है ।
सप्तमी, यस्य-लक्षणम्	**३८. षष्ठी चानादरे ६३५ ।**	षष्ठी ४१	अनादराधिक्य क्रियान्तर लक्षण में षष्ठी और सप्तमी होती है ।
सप्तमी, षष्ठी	**३९. स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च ६३६ ।**		स्वामिन् ईश्वर अधिपति दायाद साक्षिन् प्रतिभू प्रसूत शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी होती हैं ।
सप्तमी, षष्ठी	**४०. आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् ६३७ । ।। २ ।।**		आसेवा गम्यमान होने पर आयुक्त और कुशल शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी होती हैं ।
सप्तमी, षष्ठी	**४१. यतश्च निर्धारणम् ६३८ ।**	यतः-णम् ४२	जिससे निर्द्धारण किया जाय उससे षष्ठी और सप्तमी होती हैं ।
यतः-णम्	**४२. पञ्चमी विभक्ते ६३९ ।**		निर्धार्यमाण का जिसमें भेद हो उसमें पञ्चमी होती है ।
	४३. साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः ६४० । ** अप्रत्यादिभिरिति वक्तव्यम् ।*	सप्तमी ४५	यदि प्रति का प्रयोग न हो और अर्चा गम्यमान हो तो साधु निपुण के योग में सप्तमी होती है ।

(२२) प्रति परि अनु—**एते प्रत्यादयः ।**

सप्तमी	**४४. प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च ६४१ ।**	तृतीया ४५	प्रसित और उत्सुक के योग में तृतीया और सप्तमी होती हैं।
सप्तमी, तृतीया	**४५. नक्षत्रे च लुपि ६४२ ।**		लुबन्त नक्षत्र शब्द से तृतीया और सप्तमी होती हैं।
	प्रथमाविभक्ति		
	४६. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा ५३२ ।	प्रथमा ४७	प्रातिपदिकार्थ मात्र लिङ्ग मात्र परिमाणमात्र और वचनमात्र में प्रथमा होती है।
प्रथमा	**४७. संबोधने च ५३३ ।**	संबोधने ४८	संबोधन में प्रथमा होती है।
	आमन्त्रित संज्ञा		
संबोधने	**४८. सामन्त्रितम् ४११ ।**		संबोधन में प्रथमान्त शब्दरूप आमन्त्रित कहलाता है।
	संबुद्धि संज्ञा		
	४९. एकवचनं संबुद्धिः १९२ ।		आमन्त्रित प्रथमा का एकवचन सम्बुद्धि संज्ञक होता है
	षष्ठी विभक्ति		
	५०. षष्ठी शेषे ६०६ ।	षष्ठी, शेषे ७३	कर्मादि एवं प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त शेष में षष्ठी होती है।
षष्ठी, शेषे	**५१. ज्ञोऽविदर्थस्य करणे ६१२ ।**		अविदर्थ ज्ञा अवबोधने धातु के करण में शेष में षष्ठी होती है।
षष्ठी, शेषे	**५२. अधीगर्थदयेशां कर्मणि ६१३ ।**	कर्मणि ६१	स्मरणार्थक धातु दानगतिरक्षणार्थक दय धातु तथा ईश ऐश्वर्ये धातु के कर्म में शेष में षष्ठी होती है।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि	**५३. कृञः प्रतियत्ने ६१४ ।**		प्रतियत्न में कृ धातु के कर्म में शेष में षष्ठी होती है।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि	**५४. रुजार्थानां भाववनचनानामज्वरेः ६१५** ** अज्वरिसन्ताप्योरिति वक्तव्यम् ।*		भावकर्तृक ज्वरिवर्जित रुजार्थ धातुओं के कर्म में शेष में षष्ठी होती है।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि	**५५. आशिषि नाथः ६१६ ।**		आशीः अर्थ में नाथृ धातु के कर्म में शेष में षष्ठी होती है।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि	**५६. जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम् ६१७ ।**		हिंसार्थक जासि निप्रहण नाट क्राथ पिष् धातुओं के कर्म में शेष में षष्ठी होती है।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि	**५७. व्यवहृपणोः समर्थयोः ६१८ ।**		समानार्थ व्यवह और पण् के कर्म में शेष में षष्ठी होती है।

षष्ठी, शेषे, कर्मणि	**५८. दिवस्तदर्थस्य ६१९ ।**	दिवस्तदर्थस्य ६१	व्यवहृ पण् समानार्थ दिव् के कर्म में शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि, दिवस्तदर्थस्य	**५९. विभाषोपसर्गे ६२० ।**		सोपसर्ग दिव् के कर्म में शेष में विकल्प से षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि, दिवस्तदर्थस्य	**६०. द्वितीया ब्राह्मणे ३३९५ ।। ३ ।।**		श्रुति के ब्राह्मण भाग में दिवस्तदर्थस्य के कर्म में द्वितीया होती है ।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि, दिवस्तदर्थस्य	**६१. प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासंप्रदाने ६२१ ।** * *हविषोऽप्रस्थितस्य ।*		देवता सम्प्रदान में प्रेष्य और ब्रू के कर्म हविष् वाचक शब्दों से शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे	**६२. चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि ३३९६ ।** * *षष्ठ्यर्थे चतुर्थी*	छन्दसि, बहुलम् ६३	वेद में चतुर्थी के अर्थ में बहुल प्रकार से षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे, छन्दसि बहुलम्	**६३. यजेश्च करणे ३३९७ ।**		वेद में यज् धातु के करण में बहुल प्रकार से षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे	**६४. कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे ६२२ ।**		कृत्वसुच् अर्थक के प्रयोग में कालवाची अधिकरण में शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे	**६५. कर्तृकर्मणोः कृति ६२३ ।** * *गुणकर्मणि वेष्यते ।*		कृत् के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे	**६६. उभयप्राप्तौ कर्मणि ६२४ ।** * *स्त्रीप्रत्यययोरकाकारयोर्नायं नियमः ।* * *शेषे विभाषा ।*		कृत् के योग में जहाँ एक साथ कर्ता और कर्म हों वहाँ कर्म में ही षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे	**६७. क्तस्य च वर्तमाने ६२५ ।**	क्तस्य ६८	वर्तमान में विहित क्त के योग में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे, क्तस्य	**६८. अधिकरणवाचिनश्च ६२६ ।**		अधिकरणवाची क्त के योग में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे	**६९. न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ६२७ ।** * *उकप्रतिषेधे कमेर्भाषायामप्रतिषेधः ।* * *अव्ययप्रतिषेधे तोसुन्कसुनोरप्रतिषेधः ।* * *द्विषः शतुर्वा ।*	न ७०	ल उक अव्यय निष्ठा खलर्थ और तृन् के योग में षष्ठी नहीं होती है ।
षष्ठी, शेषे, न	**७०. अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः ६२८ ।**		भविष्यत् काल में विहित अक् और भविष्यत् आधमर्ण्य में इन् के योग में षष्ठी नहीं होती है ।
षष्ठी, शेषे	**७१. कृत्यानां कर्तरि वा ६२९ ।**		कृत्य के प्रयोग में कर्ता में विकल्प से षष्ठी होती है ।

षष्ठी, शेषे	७२. तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ६३० ।		तुला और उपमा शब्दों को छोड़ कर तुल्यार्थवाची शब्दों के योग में तृतीया और षष्ठी होती हैं।
षष्ठी, शेषे	७३. चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः ६३१ ।		आशिष् में प्रयुक्त आयुष्य मद्र भद्र कुशल सुख अर्थ हित के योग में चतुर्थी और षष्ठी होती है।

अनभिहित इत्थंभूतयतश्च प्रेष्यब्रुवोस्त्रयोदश ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयास्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

	एकवद्भाव **१. द्विगुरेकवचनम् ७३१ ।**	एकवचनम् १६	द्विगवर्थ (समाहार में) एकवत् होता है।
एकवचनम्	**२. द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् ९०६ ।**	द्वन्द्वः १६	प्राण्यङ्ग तूर्याङ्ग सेनाङ्ग द्वन्द्व एकवत् होता है।
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**३. अनुवादे चरणानाम् ९०७ ।** ** स्थेणोर्लुङीति वक्तव्यम् ।*		अनुवाद गम्यमान होने पर चरणों का द्वन्द्व एकवत् होता है।
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**४. अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम् ९०८ ।**		यजुर्वेद के अनपुंसक क्रतु वाची शब्दों को द्वन्द्व में एकवत् होता है।
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**५. अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्यानाम् ९०९ ।**		अध्ययन से जिनकी प्रत्यासन्न आख्या होती है उनके द्वन्द्व में एकवत् होता है।
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**६. जातिरप्राणिनाम् ९१० ।**		प्राणी को छोड़ कर जाति वाची शब्दों के द्वन्द्व में एकवत् होता है।
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**७. विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः ९११ ।**		भिन्न लिङ्ग नदीवाचक शब्दों के तथा ग्रामातिरिक्त देशवाची शब्दों के द्वन्द्व में एकवत् होता है।
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**८. क्षुद्रजन्तवः ९१२ ।**		क्षुद्र जन्तुवाचियों के द्वन्द्व में एकवत् होता है।
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**९. येषां च विरोधः शाश्वतिकः ९१३ ।**		नित्य विरोधी वाचक शब्दों के द्वन्द्व में एकवत् होता है।
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**१०. शूद्राणामनिरवसितानाम् ९१४ ।**		अनिरवसित शूद्रवाचक शब्दों के द्वन्द्व में एकवत् होता है।

एकवचनम्, द्वन्द्वः	**११. गवाश्वप्रभृतीनि च ९१५ ।**		गवाश्व आदि शब्द यथालिखित साधु हैं ।
	(२३) गवाश्वम् गवाविकम् गवैडकम् अजाविकम् [अजैडकम्] कुब्जवामनम् कुब्जकिरातम् पुत्रपौत्रम् श्वचण्डालम् स्त्रीकुमारम् दासीमाणवकम् शाटीपटीरम् शाटीप्रच्छदम् शाटीपट्टिकम् उष्ट्रखरम् उष्ट्रशशम् मूत्रशकृत् मूत्रपुरीषम् यकृन्मेदः मांसशोणितम् दर्भशरम् दर्भपूतीकम् अर्जुनशिरीषम् अर्जुनपुरुषम् तृणोपलम् (तृणोलपम्) दासीदासम् कुटाकुटम् भागवतीभागवतम् **इति गवाश्वप्रभृतीनि ।।**		
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**१२. विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्वबडबपूर्वापराधरोत्तराणाम् ९१६ ।** **** बहुप्रकृतिः फलसेनावनस्पतिमृगशकुनिक्षुद्रजन्तुधान्यतृणानाम् ।***	विभाषा १३	वृक्ष मृग तृण धान्य व्यञ्जन पशु शकुनि इनका द्वन्द्व तथा अश्वबडव पूर्वापर अधरोत्तर ये तीन द्वन्द्वरूप विकल्प से एकवत् होते हैं ।
एकवचनम्, द्वन्द्वः, विभाषा	**१३. विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि ९१७ ।**		विरुद्धार्थक अद्रव्यार्थक शब्दों का द्वन्द्व एकवत् होता है ।
एकवचनम्, द्वन्द्वः	**१४. न दधिपयआदीनि ९१८ ।**	न १६	दधिपयस् आदि शब्द एकवत् नहीं होते हैं ।
	(२४) दधिपयसी सर्पिर्मधुनी मधुसर्पिषी ब्रह्मप्रजापती शिववैश्रवणौ स्कन्दविशाखौ परिव्राजककौशिकौ (परिव्राट्कौशिकौ) प्रवर्ग्योपसदौ शुक्लकृष्णौ इध्माबर्हिषी दीक्षातपसी [श्रद्धातपसी मेधातपसी] अध्ययनतपसी उलूखलमुसले आद्यवसाने श्रद्धामेधे ऋक्सामे वाङ्मनसे—**इति दधिपयआदीनि ।।**		
एकवचनम्, द्वन्द्वः, न	**१५. अधिकरणैतावत्त्वे च ९१९ ।**	अधि-वे १६	द्रव्यसंख्या के अवगम में एकवत् नहीं होता है ।
एकवचनम्, द्वन्द्वः, न, अधि-वे	**१६. विभाषा समीपे ९२० ।**		द्रव्यसंख्यावगम में यदि समीप-लगभग-अर्थ भासित हो तो विकल्प से एकवत् होता है ।
	समासलिङ्ग प्रकरण		
	१७. स नपुंसकम् ८२१	नपुंसकम् २५	समाहार में द्विगु और द्वन्द्व नपुंसक होते हैं ।
नपुं०	**१८. अव्ययीभावश्च ६५९ ।**		अव्ययीभाव समास नपुंसक लिङ्ग होता है ।

नपुं०	**१९. तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः ८२२ ।**	तत्पुरुषः २५ अन-रयः २५	२५ वें सूत्र तक अनञ् अकर्मधारय तत्पुरुष का अधिकार रहेगा।
नपुं०, तत्पु०, अन-रयः	**२०. संज्ञायां कन्थोशीनरेषु ८२३ ।।१।।**		संज्ञा में कन्थान्त तत्पुरुष नपुंसक लिङ्ग होता है, यदि वह कन्था उशीनर देश की हो।
नपुं०, तत्पु०, अन-रयः	**२१. उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम् ८२४**		यदि उपज्ञायमान और उपक्रम्यमान की प्रथमता को कहने की इच्छा हो तो उपज्ञात और उपक्रमान्त तत्पुरुष नपुंसक होता है।
नपुं०, तत्पु०, अन-रयः	**२२. छाया बाहुल्ये ८२५ ।**		यदि पूर्व पदार्थ की बहुलता हो तो छायान्त तत्पुरुष नपुंसक होता है।
नपुं०, तत्पु०, अन-रयः	**२३. सभा राजाऽमनुष्यपूर्वा ८२६ ।**	सभा २४	सभान्त तत्पुरुष नपुंसक होता है यदि सभा राजपर्यायपूर्व और अमनुष्य पूर्व हो।
नपुं०, तत्पु०, अन-रयः, सभा	**२४. अशाला च ८२७ ।**		सभान्त तत्पुरुष नपुंसक होता है यदि सभा का अर्थ सङ्घात हो।
नपुं०, तत्पु०, अन-रयः	**२५. विभाषा सेनासुराच्छायाशालानिशानाम् ८२८ ।**		सेना सुरा छाया शाला निशा अन्त वाला तत्पुरुष विकल्प से नपुंसक होता है।
	२६. परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ८१२ । * *द्विगुप्राप्तापन्नालंपूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वक्तव्यः ।*		(इतरेतर योग) द्वन्द्व और तत्पुरुष में परसदृश लिङ्ग होता है।
	२७. पूर्ववदश्वबडवौ ८१३ ।	पूर्ववत् २८	अश्वबडवा में पूर्ववत् लिङ्ग होता है।
पूर्ववत्	**२८. हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि ३३९९**		वेद में हेमन्तशिशिर तथा अहोरात्र में पूर्ववत् लिङ्ग होता है।
	२९. रात्राह्नाहाः पुंसि ८१४ * *अनुवाकादयः पुंसि ।* * *संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम् ।*		रात्र अहन् अह अन्तवाले द्वन्द्व तत्पुरुष पुँल्लिङ्ग में ही होते हैं।
	३०. अपथं नपुंसकम् ८१५ । * *पुण्यसुदिनाभ्यामह्नः क्लीबतेष्टा ।* * *पथः संख्याव्ययादेः ।* * *अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः ।* * *आबन्तो वा ।* * *अनो नलोपश्च वा द्विगुः स्त्रियाम् ।*		तत्पुरुष अपथ नपुंसक होता है।

** पात्राद्यन्तस्य न ।*
** सामान्ये नपुंसकम् ।*
३१. अर्धर्चाः पुंसि च ८१६ ।

अर्धर्च आदिशब्द पुँल्लिङ्ग और नमुंसक दोनों में होते हैं।

(२५) अर्धर्च गोमय कषाय कार्षापण कुतप कुसप (कुणप) कपाट शङ्ख गूथ यूथ ध्वज कबन्ध पद्म गृह सरक कंस दिवस यूष अन्धकार दण्ड कमण्डलु मण्ड भूत द्वीप द्यूत चक्र धर्म कर्मन् मोदक शतमान यान नख नखर चरण पुच्छ दाडिम हिम रजत सक्तु पिधान सार पात्र घृत सैन्धव औषध आढक चषक द्रोण खलीन पात्रीव षष्टिक वारबाण (वारवारण) प्रोथ कपित्थ [शुष्क] शाल शील शुक्ल (शुल्क) शीधु कवच रेणु [शृण] कपट शीकर मुसल सुवर्ण वर्ण पूर्व चमस क्षीर कर्ष आकाश अष्टापद मङ्गल निधन निर्यास जृम्भ वृत्त पुस्त बुस्त क्ष्वेडित शृङ्ग निगड [खल] मूलक मधु मूल स्थूल शराव नाल वप्र विमान मुख प्रग्रीव शूल वज्र कटक कण्टक (कर्पट) शिखर कल्क (वल्कल) नटमक (नाटमस्तक) वलय कुसुम तृण पङ्क कुण्डल किरीट (कुमुद) अर्बुद अङ्कुश तिमिर आश्रय भूषण इक्कस (इष्वास) मुकुल वसन्त तटाक (तडाग) पिटक विटङ्क विडङ्ग पिण्याक माष कोश फलक दिन दैवत पिनाक समर स्थाणु अनीक उपवास शाक कर्पास (वि-शाल) चषाल (चखाल) खण्ड दर विटप (रण बल मक) मृणाल हस्त आर्द्र हल (सूत्र) ताण्डव गाण्डीव मण्डप पटह सौध योध पार्श्व शरीर फळ (छल) पुर (पुरा) राष्ट्र अम्बर बिम्ब कुट्टिम मण्डल (कुक्कुट) कुडप ककुद खन्डल तोमर तोरण मञ्चक पञ्चक पुङ्ख मध्य (बाल) छाल वल्मीक वर्ष वस्त्र वसु देह उद्यान उद्योग स्नेह स्तेन (स्तन स्वर) संगम निष्क क्षेम शूक क्षत्र पवित्र (यौवन कलह) मालक (पालक) मूषिक (मण्डल वल्कल) कुज (कुञ्ज) विहार लोहित विषाण भवन अरण्य पुलिन दृढ आसन ऐरावत शूर्प तीर्थ लोमन (लोमश) तमाल लोह

दण्डक शपथ प्रतिसर दारु धनुस् मान वर्चस्क कूर्च तण्डक मठ सहस्र ओदन प्रवाल शकट अपराह्न नीड शकल तण्डुल—**इत्यर्धर्चादिः ।।**

अन्वादेशे आदेश

	३२. इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ ३५०	अश् ३३ इद-शे ३४	तृतीयादि में अन्वादेश विषयक अशादेश होता है वह अनुदात्त होता है।
इद-शे अश्	**३३. एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदात्तौ १९६२ ।**	एतदः ३४	अन्वादेश विषय में एतद् को अश् होता है वह अनुदात्त है यदि त्र और तस् हों और वे भी अनुदात्त होते हैं।
इद-शे, एतदः	**३४. द्वितीयाटौस्स्वेनः ३५१ ।** **** अन्वादेशे नपुंसके एनद्वक्तव्यः ।***		अन्वादेशे में इदम् एतद् को एन होता है जो अनुदात्त होता है, यदि बाद में द्वितीया टा तथा ओस् हों।

आर्धधातुके धात्वादेश

	३५. आर्धधातुके २४३२ ।	आर्द्धधातुके ५७	२.४.५७ तक आर्द्धधातुके का अधिकार होगा।
आर्द्धधातुके	**३६. अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति ३०८० ।**	अदः ४०	तादि कित् और ल्यप् के यहाँ अद् धातु को जग्ध् आदेश होगा।
आर्द्धधातुके, अदः	**३७. लुङ्सनोर्घस्लृ २४२७ ।** **** घस्लृ भावेऽच्युपसंख्यानम् ।***	घस्लृ ४०	लुङ् और सन् परे रहने पर अद् को घस्लृ होता है।
आर्द्धधातुके, अदः, घस्लृ	**३८. घञपोश्च ३२३६ ।**		घञ् और अप् परे रहने पर अद् को घस्लृ आदेश होता है।
आर्द्धधातुके, अदः, घस्लृ	**३९. बहुलं छन्दसि ३३९८ ।**		छन्दोविषय में अद् को बहुल प्रकार से घस्लृ होता है।
आर्द्धधातुके, अदः, घस्लृ	**४०. लिट्यन्यतरस्याम् २४२४ ।।२।।**	लि-म् ४१	लिट् के यहाँ अद् को विकल्प से घस्लृ आदेश होता है।
आर्द्धधातुके, लि०-म्	**४१. वेञो वयिः २४११ ।**		लिट् के यहाँ वेञ् को विकल्प से वयि आदेश होता है।
आर्द्धधातुके	**४२. हनो वध लिङि २४३३ ।**	हनः ४४ वध ४४	आर्द्धधातुक लिङ् के यहाँ हन् को वध आदेश होता है।
आर्द्धधातुके, वध हनः	**४३. लुङि च २४३४ ।**	लुङिः ४४	लुङ् परे रहने पर हन् को वध आदेश होता है।
आर्द्धधातुके, वध हनः, लुङि	**४४. आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् २६९६ ।**		यदि आत्मनेपद हो तो लुङ् के यहाँ हन् को विकल्प से वध आदेश होता है।

आर्द्धधातुके	**४५. इणो गा लुङि २४५८ ।** ***इण्वदिक इति वक्तव्यम् ।***	इण: ४७ ।	लुङ् परे रहने पर इण् को गा आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, इण:	**४६. णौ गमिरबोधने २६०७ ।**	गमि-ने ४८	यदि णि परे हो तो अवबोधनार्थक इण् को गम् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, इण:, गमि-ने०	**४७. सनि च २६१५ ।**	सनि ४८	सन् परे रहने पर अवबोधनार्थक इण् को गम् होता है ।
आर्द्धधातुके, सनि, गमि-ने०	**४८. इङश्च २६१६ ।**	इङ: ५१	सन् परे रहने पर इङ् धातु को भी गम् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, इङ:	**४९. गाङ्लिटि २४५९ ।**	गाङ् ५१	इङ् को लिट् के यहाँ गाङ् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, इङ:, गाङ्	**५०. विभाषा लुङ्लृङो: २४६० ।**	विभाषा ५१	लुङ् और लृङ् के यहाँ इङ् को विकल्प से गाङ् होता है ।
आर्द्धधातुके, इङ:, गाङ्, विभाषा	**५१. णौ च संश्चङो: २६०१ ।**		ण्यन्त में सन् और चङ् के पर में रहने पर इङ् को विकल्प से गाङ् होता है ।
आर्द्धधातुके	**५२. अस्तेर्भू: २४७० ।**		आर्द्धधातुक में अस् धातु को भू आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके	**५३. ब्रुवो वचि: २४५३ ।**		आर्द्धधातुक में ब्रू को वच् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके	**५४. चक्षिङ: ख्याञ् २४३६ ।** ***वर्जने प्रतिषेध: ।*** ***असनयोश्च ।***	चक्षिङ:ख्याञ् ५५	आर्द्धधातुक में चक्षिङ् को ख्याञ् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, चक्षिङ: ख्याञ्	**५५. वा लिटि २४३७ ।**		लिट् में चक्षिङ् को विकल्प से ख्याञ् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके	**५६. अजेर्व्यघञपो: २२९२ ।** ***घञपो: प्रतिषेधे क्य उपसंख्यानम् ।*** ***वलादावार्धधातुके वेष्यते ।***	अजेर्वी ५७	घञ् और अप् को छोड़कर आर्द्धधातुक में अज् को वी आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, अजेर्वी	**५७. वा यौ ३२९२ ।**		ल्युट् परे रहने पर अज् को विकल्प से वी आदेश होता है ।

लुक् प्रकरण

	५८. ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञो: १२७६	यूनि ६१ लुक् ८३	णि प्रत्ययान्त क्षत्रियगोत्र प्रत्ययान्त ऋष्यभिधायी गोत्र प्रत्ययान्त और ञित् से परे युवाभिधायी अण् और इञ् का लुक् होता है ।

लुक्, यूनि **५९. पैलादिभ्यश्च १०८४ ।** पैल आदि शब्दों से युव प्रत्यय का लुक् होता है ।

(२६) पैल शालङ्कि सात्यकि सात्यंकामि राहवि रावणि औदञ्चि औदव्रजि औदमेघि औदव्यज्रि (औदमज्जि) औदभृज्जि दैवस्थानि पैङ्गलौदायनि राहक्षति (राह क्षति) भौलिङ्गि राणि औदन्यि औद्राहमानि औज्जिहानि औदशुद्धि 'तद्राजाच्चाण:' २१ (तद्राज)—**आकृतिगणोऽयम् ।। इति पैलादि: ।।**

लुक्, यूनि **६०. इञ: प्राचाम् १०८५ ।** ।। ३ ।। गोत्र इञ् प्रत्ययान्त से युव प्रत्यय का लुक् होता है, यदि गोत्र प्राक्-देशीय हो ।

लुक्, यूनि **६१. न तौल्वलिभ्य: १०८६ ।** तौल्वलि आदि शब्दों से युव प्रत्यय का लुक् नहीं होता है ।

(२७) तौल्वलि धारणि पारणि रावणि दैलीपि दैवति वार्कलि नैवति (नैवकि) दैवमित्रि (दैव-मति) दैवयज्ञि चाफट्टकि बैल्वकि वैकि (वैङ्कि) आनुहारति (आनुराहति) पौष्करसादि आनुरोहति आनुति प्रादोहनि नैमिश्रि प्राडाहति बान्धकि वैशीति आसिनासि आहिंसि आसुरि नैमिषि आसिबन्धकि पौष्पि कारेणुपालि वैकर्णि वैरकि वैहति—**इति तौल्वल्यादि: ।।**

लुक् **६२. तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम् ११९३ ।** बहु-म् ७० अस्त्रीलिङ्ग बह्वर्थ में वर्तमान तद्राज संज्ञक प्रत्ययों का लुक् होता है, यदि बहुत्व तद्राजकृत हो ।

लुक्, बहु-म् **६३. यस्कादिभ्यो गोत्रे ११४६ ।** गोत्रे ७० यस्क आदिशब्दों से अस्त्रीलिङ्ग व-ह्वर्थ में वर्तमान गोत्र प्रत्यय का लुक् होता है, यदि बहुत्व गोत्र-प्रत्ययकृत हो ।

(२८) यस्क लह्य द्रुह्य अयस्थूण (अय:स्थूण) तृणकर्ण सदामत्त कम्बलहार बहिर्योग कर्णाढक पर्णाढक पिण्डीजङ्घ बकसस्थ (बकसक्थ) विश्रि कुद्रि अजबस्ति मित्रयु रक्षोमुख जङ्घारथ उत्कास कटुक मथक (मन्थक) पुष्करट् (पुष्करसद्) विषपुट उपरिमेखल क्रोष्टुकमान (क्रोष्टुमान) क्रोष्टुपाद

क्रोष्टुमाय शीर्षमाय खरप पदक वर्षुक भलन्दन भडिल भण्डिल भडित भण्डित । **एते यस्कादयः ।।**

लुक्, बहु-म्, गोत्रे **६४. यञञोश्च ११०८ ।**

यञादीनामेकस्य द्वयोर्वा तत्पुरुषे षष्ठ्या उपसंख्यानम्

यञन्त और अञन्त शब्दों से अस्त्रीलिङ्ग बह्वर्थ में वर्तमान गोत्रप्रत्यय का लुक् होता है, यदि बहुत्व गोत्र प्रत्यय कृत हो ।

लुक्, बहु-म्, गोत्रे **६५. अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठगोतमाङ्गिरोभ्यश्च ११४७ ।**

अत्रि भृगु कुत्स वसिष्ठ गोतम अङ्गिरस् शब्दों से बह्वर्थ में वर्तमान अस्त्रीलिङ्ग गोत्र प्रत्यय का लुक् होता है, यदि बहुत्व गोत्र प्रत्यय कृत हो ।

लुक्, बहु-म्, गोत्रे **६६. बह्वच इञः प्राच्यभरतेषु ११४८ ।**

बह्वच् प्रातिपादिक से परे प्राच्य तथा भरत गोत्र में वर्तमान इञ् का लुक् होता है, बहुत्व में ।

लुक्, बहु-म्, गोत्रे **६७. न गोपवनादिभ्यः ११४९ ।**

गोपवन आदि शब्दों से गोत्र प्रत्यय का लुक् नहीं होता है ।

(२९) गोपवन शेयु (शिग्रु) बिन्दु भाजन अश्वावतान श्यामाक (श्योमाक) श्यामक श्यापर्ण— **बिदाद्यन्तर्गणोऽयं गोपवनादिः ।।**

लुक्, बहु-म्, गोत्रे **६८. तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे ११५० ।**

द्वन्द्व में तिककितव आदि शब्दों से बहुत्व में गोत्र प्रत्यय का लुक् होता है ।

(३०) तिककितवाः वङ्खरभण्डीरथाः उपकलमकाः फफकनरकाः बकनखगुदपरिणद्धाः उब्जककुभाः लङ्कशान्तमुखाः उत्तरशलङ्कटाः कृष्णाजिनकृष्णसुन्दराः भ्रष्टाककपिष्ठलाः अग्निवेशदशेरुकाः —**एते तिककितवादयः ।।**

लुक्, बहु-म्, गोत्रे **६९. उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे ११५१ ।**

द्वन्द्व और अद्वन्द्व में उपक आदि शब्दों से बहुत्व में गोत्र प्रत्यय का विकल्प से लुक् होता है ।

(३१) उपक लमक भ्रष्टक कपिष्ठल कृष्णाजिन कृष्णसुन्दर चूडारक आडारक गडुक उदङ्क सुधायुक्त अबन्धक पिङ्गलक पिष्टक सुपिष्ट (सुपिष्ठ) मयूरकर्ण खरीजङ्घ शलाथल पतञ्जल पदञ्जल कठेरणि कुषीतक कशकृत्स्न (काशकृत्स्न) निदाय कल-

शीकण्ठ दामकण्ठ कृष्णपिङ्गल कर्णक पर्णक जटिरक बधिरक जन्तुक अनुलोम अनुपद प्रतिलोम अपजग्ध प्रतान अनभिहित कमक वराटक लेखाभ्र कमन्दक पिञ्जूलक वर्णक मसूरकर्ण मदाघ कबन्तक कमन्तक कदामत्त दामकण्ठ—**एते उपकादयः ।।**

लुक्, बहु-म्, गोत्रे	**७०. आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्तिकुण्डिनच्** ११५२ ।		आगस्त्य और कौण्डिन्य शब्दों से परे अण् और यञ् का—बहुत्व में वर्तमान गोत्रप्रत्यय का—लुक होता है तथा प्रकृतिभाग को क्रमशः अगस्ति और कुण्डिनच् आदेश होता है ।
लुक्	**७१. सुपो धातुप्रातिपदिकयोः** ६५० ।		धातु और प्रातिपदिक के अवयव सुप् का लुक् होता है ।
लुक्	**७२. अदिप्रभृतिभ्यः शपः** २४२३ ।	शपः ७६	अद् भक्षणे आदि (आदादिक) धातुओं से परे शप् का लुक् होता है ।
लुक्, शपः	**७३. बहुलं छन्दसि** ३४०० ।		छन्द में शप् का बहुल प्रकार से लुक् होता है ।
लुक्, शपः	**७४. यङोऽचि च** २६५० ।		अच् प्रत्यय परे रहने पर यङ् का लुक् होता है ।
लुक्, शपः	**७५. जुहोत्यादिभ्यः श्लुः** २४८९ ।	श्लुः ७६	हु (जुहोत्यादि) आदि धातुओं से परे शप् को श्लु होता है ।
लुक्, शपः, श्लुः	**७६. बहुलं छन्दसि** ३४०१ ।		छन्द में शप् को बहुल प्रकार से श्लु होता है ।
लुक्	**७७. गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु** २२२३ ।	सिचः ७९ पर-षु ७८	परस्मैपद में गाति स्था घु पा भू से सिच् का लुक् होता है ।
	*** गापोर्ग्रहणे इण्पिबत्योर्ग्रहणम् ।**		
लुक्, सिचः, पर-षु	**७८. विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः** २३७६ ।	विभाषा ७९	परस्मै पद में घ्रा धेट् शा छा सा से परे सिच् का विकल्प से लुक् होता है ।
लुक्, सिचः, विभाषा	**७९. तनादिभ्यस्तथासोः** २५४७ ।		तनादि से परे, त और थास् के यहाँ सिच् का विकल्प से लुक् होता है ।
लुक्	**८०. मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाद्वृच्कृगमिजनिभ्यो लेः** ३४०२ ।।४।।	लेः ८१	मन्त्रविषय में घस ह्वर णश वृ दह आत् वृच् कृ गमि जनि से लि का लुक् होता है ।

लुक्, लेः	**८१. आमः २२३८ ।**		आम् से परे लि का लुक् होता है ।
लुक्	**८२. अव्ययादाप्सुपः ४५२ ।**	सुपः ८३	अव्यय से परे आप् और सुप् का लुक् होता है ।
लुक्, सुपः	**८३. नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः ६५७ ।**	अव्ययीभावात्, अतोऽम् ८४	अदन्त अव्ययीभाव से परे सुप् का लुक् नहीं होता है और पञ्चमी से अतिरिक्त सुप् को अम् आदेश होता है ।
अतोऽम् अव्ययी-भावात्	**८४. तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् ६५८ ।**		अदन्त अव्ययीभाव से परे तृतीया और सप्तमी को बहुल प्रकार से अम् होता है ।
	लुट आदेश **८५. लुटः प्रथमस्य डारौरसः २१८८ ।**		लुट् के प्रथमपुरुष को क्रमशः डा रौ रस् आदेश होते है ।

द्विगुरुपञ्जोपक्रमं वेञो वयिर्नतौल्वलिभ्य आमः पञ्च ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च ।

।। अथ तृतीयोऽध्यायः ।।

प्रथमः पादः ।

	प्रत्ययाधिकारः		
प्रत्ययानुवृत्तिः ५.-४.१६०. यावदस्ति । अग्रे सप्तमसूत्रात् न दर्शिता ।	**१. प्रत्ययः १८० ।**	प्रत्ययः ५.४.-१६०	प्रकृति उपपद उपाधि विकार आगम को छोड़कर यहाँ से पञ्चम अध्याय की समाप्ति तक प्रत्यय संज्ञा का अधिकार होगा ।
	प्रत्ययस्थान निर्देशः		
प्रत्ययः	**२. परश्च १८१ ।**		पञ्चम अध्याय की समाप्ति तक धातु या प्रातिपदिक से होने वाला प्रत्यय पर में होगा ।
	प्रत्ययस्वरनिर्देशः		
प्रत्ययः	**३. आद्युदात्तश्च ३७०८ ।**		जो प्रत्ययसंज्ञक होगा वह आद्युदान्त होगा ।
प्रत्ययः	**४. अनुदात्तौ सुप्पितौ ३७०९ ।**		सुप् और पित् प्रत्यय अनुदात्त होते हैं ।
	सन्प्रत्ययः		
प्रत्ययः	**५. गुप्तिज्किद्भ्यःसन् २३९३ ।**	सन् ७	गुप् तिज् कित् धातु से सन् प्रत्यय होता है ।
प्रत्ययः, सन्	**६. मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य २३९४**		मान् वध दान् शान् धातु से सन् होता है तथा अभ्यास इकार को दीर्घ आदेश होता है ।
सन्	**७. धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा २६०८ ।** ** आशङ्कायां सन्वक्तव्यः ।*	वा ११ कर्मणः १० इच्छायां ९	जो इष् धातु का कर्म हो और इष् धातु के साथ समानकर्तृक भी हो उस धातु से इच्छा अर्थ में विकल्प से सन् होता है ।
	सुब्धातु प्रत्ययः		
वा, कर्मणः, इच्छायाम्	**८. सुप आत्मनः क्यच् २६५७ ।** ** मान्तादव्ययाच्च क्यच् न ।*	सुपः ११ आत्म-नः ९ क्यच् १०	इष् धातु का कर्म और एषिता के द्वारा अपने लिये जो चाहा हो तद्वाचक सुबन्त से विकल्प से क्यच् प्रत्यय होता है, इच्छा अर्थ में ।
वा, कर्मणः, इच्छायाम्, आ० क्यच्, सुपः	**९. काम्यच्च २६६३ ।**		सुबन्त कर्म से आत्मेच्छा में काम्यच् प्रत्यय विकल्प से होता है ।

वा, कर्मण:, क्यच्, सुप:	**१०. उपमानादाचारे २६६४** ** अधिकरणाच्चेति वक्तव्यम् ।*	आचारे ११ उपमानात् ११	उपमान कर्म सुबन्त से आचार अर्थ में विकल्प से क्यच् प्रत्यय होता है ।
वा, आचारे, सुप: उपमानात्	**११. कर्तुः क्यङ्सलोपश्च २६६५ ।** ** आचारेऽवगल्भक्लीबहोढेभ्यः क्विब्वा वक्तव्यः ।*	क्यङ् १८	उपमान कर्ता सुबन्त से आचार अर्थ में विकल्प से क्यङ् प्रत्यय होता है और यदि कर्ता में स् हो तो उसका लोप होता है ।
क्यङ्	**१२. भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः २६६७**	भुवि १३	अच्व्यन्त भृश आदि प्रातिपदिकों से भवति अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है और यदि प्रातिपदिक के अन्त में हल् हो तो उसका लोप भी होता है ।
	(३२) भृश शीघ्र चपल मन्द पण्डित उत्सुक सुमनस् दुर्मनस् अभिमनस् उन्मनस् रहस् रोहत् रेहत् संश्वत् तृपत् शश्वत् भ्रमत् वेहत् शुचिस् शुचिवर्चस् अण्डरवर्चस् ओजस् सुरजस् अरजस्— **एते भृशादयः ।**		
भुवि	**१३. लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् २६६८ ।**		लोहित आदि से और डाजन्त से भवति अर्थ में क्यष् प्रत्यय होता है ।
	(३३) लोहित चरित नलि फेनमद्र हरित दास **मन्द—लोहितादिराकृतिगणः ।।** ** लोहितडाज्भ्यः क्यष्वचनम् ।* ** भृशादिष्वितराणि ।*		
क्यङ्	**१४. कष्टाय क्रमणे २६७० ।** ** सत्रकक्षकष्टकृच्छ्रगहनेभ्यः कण्वचिकीर्षायामिति वक्तव्यम् ।*		चतुर्थ्यन्त कष्ट शब्द से उत्साह अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है ।
क्यङ्	**१५. कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः २६७१ ।** ** हनुचलन इति वक्तव्यम् ।* ** तपसः परस्मैपदं च ।*	कर्मण: २०	कर्म में वर्तमान रोमन्थ और तपस् शब्द से क्रमशः वर्तना एवं चरण अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है ।
क्यङ्, कर्मण:	**१६. बाष्पोष्मभ्यामुद्वमने २६७२ ।** ** फेनाच्चेति वक्तव्यम् ।*		कर्म में वर्तमान वाष्प एवम् ऊष्म शब्द से उद्वमन अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है ।

क्यङ्, कर्मण:	**१७. शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे** करणे २१ **२६७३ ।** ** सुदिनदुर्दिननीहारेभ्यश्च ।*	कर्म में वर्तमान शब्द वैर कलह अभ्र कण्व मेघ शब्दों से करोति अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है ।
क्यङ्, कर्मणः, करणे	**१८. सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् २६७४ ।**	कर्म में वर्तमान सुख आदि शब्दों से वेदना अर्थ में क्यङ् होता है, यदि सुखादि वेदनाकर्ता के ही हों ।
	(३४) सुख दुःख तृप्त कृच्छ्र अस्र आस्र अलीक प्रतीप करुण कृपण सोढ—**इत्येतानि सुखादीनि ।।**	
करणे, कर्मण:	**१९. नमोवरिवश्चित्रङः क्यच् २६७५ ।** ** नमसः पूजायाम् ।* ** वरिवसः परिचर्यायाम् ।* ** चित्रङ आश्चर्ये ।*	नमस् वरिवस् चित्रङ् शब्दों से करण विशेष में क्यच् प्रत्यय होता है ।
करणे, कर्मण:	**२०. पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ् २६७६ ।।१।।** ** भाण्डात्समाचयने ।* ** चीवरादार्जने परिधाने च ।* ** पुच्छादुदसने व्यसने पर्यसने च ।*	पुच्छ भाण्ड चीवर शब्दों से करण विशेष में णिङ् प्रत्यय होता है ।
करणे	**२१. मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच् २६७७ ।** ** हलिकल्योरत्वनिपातनं सन्वद्भावप्रतिषेधार्थम् ।*	मुण्ड मिश्र श्लक्ष्ण लवण व्रत वस्त्र हल कल कृत तूस्त शब्दों से करण विशेष में णिच् प्रत्यय होता है ।
	२२. धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् यङ् २४ **२६२९ ।** ** सूचिसूत्रिमूत्र्यट्यर्त्यशूर्णोतिभ्यो यङ्वाच्यः ।*	क्रियासमभिहार में एकाच् हलादि धातु से यङ् प्रत्यय होता है ।
यङ्	**२३. नित्यं कौटिल्ये गतौ २६३४ ।**	गत्यर्थक धातुओं से कौटिल्य में ही यङ् होता है ।
यङ्	**२४. लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो भाव गर्हाभ्याम् २६३५ ।**	धात्वर्थगर्हा में लुप सदचरजप जभ दह दश गृ धातु से यङ् होता है ।
	२५. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् २५६३ । णिच् २६ ** अर्थवेदसत्यानामापुक् ।*	सत्य आप पाश रूप वीणा तूल श्लोक सेना लोमन् त्वच वर्म वर्ण चूर्ण शब्दों से तथा चुरादि धातुओं से णिच् प्रत्यय होता है ।
णिच्	**२६. हेतुमति च २५७६ ।** ** तत्करोति तदाचष्टे ।* ** आख्यानात्कृतस्तदाचष्टे कृल्लुक्प्रकृतिप्रत्यापत्तिः प्रकृतिवच्च कारकम् ।* ** प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलम् ।*	प्रेषणादिरूप प्रयोजकव्यापर रहने पर धातु से णिच् प्रत्यय होता है ।

** धातुरूपं च ।*

** कर्तृकरणाद्धात्वर्थे ।*

** (बहुलमेतन्निदर्शनम् ।)*

** णिङङ्गान्निरसने ।*

२७. कण्ड्वादिभ्यो यक् २६७८ ।

कण्डूञ् आदि से स्वार्थ में यक् प्रत्यय होता है ।

(३५) कण्डूञ् मन्तु हृणीङ् वल्गु असु (मनस्) महीङ् लाट् लेट् इरस् इरज् (इरञ्) दुवस् उषस् वेट् मेधा कुषुभ (नमस्) मगध तन्तस् पम्पस् (पपस्) सुख दु:ख (भिक्ष चरण चरम अवर) सपर अरर (अरर्) भिषज् भिण्णुज् (अपर आर) इषुध वरण चुरण तुरण भुरण गद्गद एला केला खेला (वेला शेला) लिट् लोट् लेखा लेख) रेखा द्रवस् तिरम् अगद उरस् तरण (तरिण) पयस् संभूयस सम्बर—**आकृतिगणोऽयम् ।। इति कण्ड्वादिः ।।**

२८. गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः २३०३

गूपू धूप विच्छ पण पन धातु से स्वार्थ में आय होता है ।

२९. ऋतेरीयङ् २४२२ ।

ऋत सौत्रधातु से स्वार्थ में ईयङ् होता है ।

३०. कमेर्णिङ् २३१० ।

कम् धातु से स्वार्थ में णिङ् होता है ।

३१. आयादय आर्धधातुके वा २३०५ ।

आर्धधातुक विवक्षा में आय ईयङ् णिङ् विकल्प से होते हैं ।

३२. सनाद्यन्ता धातवः २३०४ ।

सन् से णिङ् तक जिनके अन्त में हों उन्हें धातु संज्ञा होती है ।

विकरण प्रत्ययः

३३. स्यतासी लृलुटोः २१८६ ।

लृट् और लृङ् के परे रहने पर तथा लुट् परे रहने पर धातु से क्रमशः स्य और तास् होते हैं ।

३४. सिब्बहुलं लेटि ३४२५ ।

** सिब्बहुलं छन्दसि णिद्वक्तव्यः ।*

धातु से लेट् परे रहने पर बहुल प्रकार से सिप् होता है ।

३५. कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि २३०६ ।

** कास्यनेकाज्ग्रहणं कर्तव्यम् ।*

आम् ४२ लिटि ३९

अमन्त्र विषय में लिट् के यहाँ कास् धातु से तथा प्रत्ययान्त धातुओं से आम् प्रत्यय होता है ।

आम्, लिटि	**३६. इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः २२३७ ।**		ऋच्छ् को छोड़कर गुरुमान् इजादि धातुओं से लिट् के यहाँ आम् प्रत्यय होता है ।
आम्, लिटि	**३७. दयायासश्च २३२४ ।**		दय अय आस धातुओं से लिट् के यहाँ आम् होता है ।
आम्, लिटि	**३८. उषविदजागृभ्योऽन्तरस्याम् २३४१ ।**	अन्य-म् ३९	उष विद जागृ धातुओं से लिट् के यहाँ विकल्प से आम् होता है ।
आम्, लिटि, अन्य-म्	**३९. भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च २४९१ ।**		भीह्री भृ हु धातु से लिट् के यहाँ विकल्प से आम् होता है तथा श्लु के समान कार्य भी होता है ।
आम्	**४०. कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि २२३९ ।।२।।**		लिट् के यहाँ आम् के पश्चात् कृ भू अस् का अनुप्रयोग होता है ।
आम्	**४१.विदांकुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् २४६५ ।**	अन्य-म् ४२	विकल्प से 'विदाङ्कुर्वन्तु' ऐसा निपातित होता है ।
आम्, अन्य-म्	**४२. अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयांरमयामकः पावयांक्रियाद्विदामक्रन्निति च्छन्दसि ३४०३ ।**		वेद में विकल्प से अभ्युत्सादयामकः प्रजनयामकः चिकयामकः रमयामकः पावयांक्रियात् विदामक्रन् निपातित होते हैं ।
	४३. च्लि लुङि २२२१ ।		लुङ् के यहाँ धातु से च्लि प्रत्यय होता है ।
	च्लेरादेशः		
	४४. च्लेः सिच् २२२२ । ** स्पृशमृशकृषतृपदृपां च्लेः सिज्वा वक्तव्यः ।*	च्लेः ६६	च्लि को सिच् होता है ।
च्लेः	**४५. शल इगुपधादनिटः क्सः २३३६ ।**	क्सः ४७	इगुपध शलन्त धातु से अनिट् च्लि को क्स होता है ।
च्लेः, क्सः	**४६. श्लिष आलिङ्गने २५१४ ।**		आलिङ्गनार्थ श्लिष् धातु से परे च्लि को क्स होता है ।
च्लेः, क्सः	**४७. न दृशः २४०७ ।**		दृश् धातु से परे च्लि को क्स नहीं होता है ।
च्लेः	**४८. णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ् २३१२ ।** ** कमेश्च्लेश्चङ्वक्तव्यः ।*	चङ् ५१	कर्तृवाची लुङ् परे रहने पर ण्यन्त तथा श्रिद्रुस्रु धातु से च्लि को चङ् होता है ।
च्लेः, चङ्	**४९. विभाषा धेट्श्व्योः २३७५ ।**	विभाषा ५०	कर्तृवाची लुङ् परे रहने पर धेट् तथा टुओश्वि धातु से च्लि को विकल्प से चङ् होता है ।

च्लेः, चङ्, विभाषा	५०. **गुपेश्छन्दसि ३४०४ ।**	छन्दसि ५१	वेद में गुप् से परे च्लि को विकल्प से चङ् होता है ।
च्लेः, चङ्, छन्दसि	५१. **नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः ३४०५**		वेद में ण्यन्त ऊन ध्वन इल अर्द धातु से च्लि को चङ् नहीं होता है ।
च्लेः	५२. **अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् २४३८ ।**	अङ् ५९	कर्तृवाची लुङ् परे रहने पर असु वच ख्या से च्लि को अङ् होता है ।
च्लेः, अङ्	५३. **लिपिसिचिह्वश्च २४१८ ।**	लि-ह्वः ५४	लिप सिच ह्वेञ् से परे च्लि को अङ् आदेश होता है ।
च्लेः, अङ्, लि-ह्वः	५४. **आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् २४१९ ।**		आत्मनेपद में लिप सिच ह्वेञ् से परे च्लि को विकल्प से अङ् होता है ।
च्लेः, अङ्	५५. **पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु २३४३**	पर-देषु ५८	परस्मैपद में पुषादि द्युतादि ॡदित् धातु से च्लि को अङ् होता है ।
च्लेः, पर-देषु, अङ्	५६. **सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च २३८२ ।**		सृ शासु ऋ धातु से परे च्लि को अङ् आदेश होता है ।
च्लेः, पर-देषु, अङ्	५७. **इरितो वा २२६९ ।**	वा ५८	इरित् धातु से परे च्लि को विकल्प से अङ् होता है ।
च्लेः, पर-देषु, अङ्, वा	५८. **जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च २२९१**		जॄ स्तम्भु म्रुचु म्लुचु ग्रुचु ग्लुचु ग्लुञ्चु श्वि धातु से परे च्लि को विकल्प से अङ् आदेश होता है ।
च्लेः, अङ्	५९. **कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि ३४०६ ।**		वेद में कृ मृ दृ रुह् धातु से परे च्लि को अङ् होता है ।
च्लेः	६०. **चिण्ते पदः २५१३** ।।३।।	चिण् ६५ ते ६६	पद धातु से परे च्लि को चिण् होता है, यदि पर में आत्मनेपद का एकवचन 'ते' हो ।
च्लेः, चिण्, ते	६१. **दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्माम् २३२८ ।**	अन्य-म् ६३	दीपी जनी बुध पूरी तायृ प्यायी धातु से परे च्लि को विकल्प से चिण् होता है, यदि बात में ते हो ।
च्लेः, चिण्, ते, अन्य-म्	६२. **अचः कर्मकर्तरि २७६८ ।**	कर्म कर्तरि ६५	कर्मकर्ता में अजन्त धातु से परे च्लि को चिण् होता है, यदि बाद में ते हो ।

च्लेः, चिण्, ते, कर्म कर्तरि, अन्य-म्	**६३. दुहश्च २७६९ ।**		दुह से परे च्लि को विकल्प से चिण् होता है, कर्मकर्ता में ।
च्लेः, चिण्, ते, कर्म कर्तरि	**६४. न रुधः २७७० ।**	न ६५	कर्मकर्ता में रुधिर् से परे च्लि को चिण् नहीं होता है ।
च्लेः, चिण्, ते, कर्म कर्तरि, न	**६५. तपोऽनुतापे च २७६० ।**		कर्मकर्ता में अनुताप अर्थ में तप से परे च्लि को चिण् नहीं होता है ।
च्लेः, ते	**६६. चिण्भावकर्मणोः २७५८ ।**	भाव-णोः ६७	भावकर्म में ते के यहाँ धातु से परे च्लि को चिण् होता है ।
भाव-णोः	**६७. सार्वधातुके यक् २७५६ ।**	सार्वधातुके ८२	भावकर्मवाची सार्वधातुक परे रहने पर धातु से यक् प्रत्यय होता है ।
	विकरणप्रत्ययाः		
सा-के	**६८. कर्तरि शप् २१६७ ।**	कर्तरि ८८	कर्तृवाची सार्वधातुक परे रहने पर धातु से शप् प्रत्यय होता है ।
सा-के, कर्तरि	**६९. दिवादिभ्यः श्यन् २५०५ ।**	श्यन् ७२	दिवादि धातुओं से श्यन् प्रत्यय होता है ।
सा-के, कर्तरि, श्यन्	**७०. वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषः २३२१ ।**	वा ७२	भ्राशृ भ्लाशृ भ्रमु क्रमु क्लमु त्रसी त्रुटी लष धातु से विकल्प से श्यन् होता है ।
सा-के, कर्तरि, श्यन्, वा	**७१. यसोऽनुपसर्गात् २५२१ ।**		अनुपसर्ग यसु से विकल्प से श्यन् होता है ।
सा-के, कर्तरि, श्यन्, वा	**७२. संयसश्च २५२२ ।**		सम्-पूर्वक यस् से विकल्प से श्यन् होता है ।
सा-के, कर्तरि	**७३. स्वादिभ्यः श्नुः २५२३ ।**	श्नुः ७६	स्वादि धातुओं से श्नु प्रत्यय होता है ।
सा-के, कर्तरि, श्नुः	**७४. श्रुवः शृ च २३८६ ।**		श्रु से श्नु प्रत्यय होता है तथा श्रु को शृ आदेश होता है ।
सा-के, कर्तरि, श्नुः,	**७५. अक्षोऽन्यतरस्याम् २३३८ ।**	अन्य-म् ७६	अक्षू से विकल्प से श्नु होता है ।
सा-के, कर्तरि, श्नुः, अन्य-म्	**७६. तनूकरणे तक्षः २३३९ ।**		तनूकरण अर्थ में तक्षू धातु से विकल्प से श्नु प्रत्यय होता है ।
सा-के, कर्तरि	**७७. तुदादिभ्यः शः २५३४ ।**		तुदादि धातुओं से श प्रत्यय होता है ।
सा-के, कर्तरि	**७८. रुधादिभ्यः श्नम् २५४३ ।**		रुधादि धातुओं से श्नम् प्रत्यय होता है ।

सा-के, कर्तरि	**७९. तनादिकृञ्भ्य उः २४६६ ।**	उः ८०	तनादि धातुओं से तथा कृ धातु से उ प्रत्यय होता है ।
सा-के, कर्तरि, उः	**८०. धिन्विकृण्व्योर च २३३२ ।** ।।४।।		धिवि कृवि धातुओं से उ प्रत्यय होता है तथा अकार अन्तादेश होता है ।
सा-के, कर्तरि	**८१. क्र्यादिभ्यः श्ना २५५४ ।**	श्ना ८२	क्र्यादि धातुओं से श्ना प्रत्यय होता है ।
सा-के, कर्तरि, श्ना	**८२. स्तन्भुस्तुन्भुस्कन्भुस्कुन्भुस्कुञ्भ्यः श्नुश्च २५५५ ।**		स्तन्भु स्तुन्भु स्कन्भु स्कुन्भु स्कुञ् धातुओं से श्ना तथा श्नु दोनों होते हैं ।
कर्तरि	**८३. हलः श्नः शानज्झौ २५५७ ।**	श्नः ८४ हौ ८४	हि के यहाँ हल् से परे श्ना को शानच् आदेश होता है ।
कर्तरि, श्नः, हौ	**८४. छन्दसि शायजपि ३४३२ ।**	छन्दसि ८६	वेद में श्ना को शायच् और शानच् दोनों होते हैं ।
	व्यत्ययः		
कर्तरि, छन्दसि	**८५. व्यत्ययो बहुलम् ३४३३ ।**		शप् आदि विकरण वेद में बहुल प्रकार से होते हैं ।
कर्तरि, छन्दसि	**८६. लिङ्याशिष्यङ् ३४३४ ।** * ***दृशेरग्वक्तव्यः ।***		आशीर्लिङ् में वेद में अङ् प्रत्यय होता है ।
	कर्मवद्भावः		
कर्तरि	**८७. कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः २७६६ ।** * ***सकर्मकाणां प्रतिषेधो वक्तव्यः ।*** * ***दुहिपच्योर्बहुलं सकर्मकयोः ।*** * ***सृजियुज्योः श्यंस्तु ।*** * ***सृजेः श्रद्धोपपन्ने कर्तर्येवेति वाच्यम् ।*** * ***भूषाकर्मकिरादिसनां चान्यत्रात्मनेपदात् ।***	कर्मवत् ९०	कर्मस्थ क्रिया से तुल्यक्रिय कर्ता कर्मवत् होता है ।
कर्तरि, कर्मवत्	**८८. तपस्तपःकर्मकस्यैव २७७१ ।**		तपःकर्मक तपधातु का कर्ता कर्मवत् होता है ।
कर्मवत्	**८९. न दुहस्नुनमां यक्चिणौ २७६७ ।** * ***यक्चिणोः प्रतिषेधे हेतुमण्णिच् श्रिब्रूञामुपसंख्यानम् ।*** * ***यक्चिणोः प्रतिषेधे णिश्रन्थिग्रन्थिब्रूञात्मनेपदाकर्मकाणामुपसंख्यानम् ।***		कर्मकर्ता में दुह स्नु नम् को यक् और चिण् नहीं होता है ।

कर्मवत्	**९०. कुषिरञ्जोः प्राचां श्यन्परस्मैपदं च २७७२**		प्राचीन आचार्यों के मत से कर्मकर्ता में कुष और रञ्ज को श्यन् होता है तथा परस्मैपद भी होता है।
	धातुविहिताःप्रत्ययाः		
	९१. धातोः २८२९ ।	धातोः ३.४.-११७	तृतीय अध्याय की समाप्ति तक धातोः का अधिकार है।
	उपपद संज्ञा		
धातोः	**९२. तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ७८१ ।**	तत्र ९४	धात्वधिकार में सप्तमीनिर्दिष्ट उपपद संज्ञक होता है।
	कृत्संज्ञा		
धातोः, तत्र	**९३. कृदतिङ् ३७४ ।**	कृत् ३.४.७७	धात्वधिकार में तिङ्भिन्न प्रत्यय कृत् संज्ञक होता है।
धातोः, तत्र, कृत्	**९४.वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् २८३० ।**		स्त्र्यधिकार को छोड़कर इस धात्वधिकार में असरूप अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग का विकल्प से बाधक होता है।
	कृत्यप्रत्ययः		
धातोः, कृत्	**९५. कृत्याः (प्राङ्ण्वुलः) २८३१ ।**	कृत्याः १३२	ण्वुल्तृचौ सूत्र से पहले कृत्य संज्ञक प्रत्यय होते हैं।
धातोः, कृत्याः, कृत्	**९६. तव्यत्तव्यानीयरः २८३४ ।** ** केलिमर उपसंख्यानम् ।* ** वसेस्तव्यत्कर्तरि णिच्च ।*		धातु से तव्यत् तव्य और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।
धातोः, कृत्याः, कृत्	**९७. अचो यत् २८४२ ।** ** तकिशसिचतियतिजनिभ्यो यद्वाच्यः ।* ** हनो वा यद्वधश्च वक्तव्यः ।*	यत् १०६	अजन्त धातु से यत् प्रत्यय होता है।
धातोः, कृत्याः, यत्, कृत्	**९८. पोरदुपधात् २८४४ ।**		अकारोपध पवर्गान्त धातु से यत् प्रत्यय होता है।
धातोः, कृत्याः, यत्, कृत्	**९९. शकिसहोश्च २८४७ ।**		शक्ल और षह धातु से यत् प्रत्यय होता है।
धातोः, कृत्याः, यत्, कृत्	**१००. गदमदचरयमश्चानुपसर्गे २८४८ ।** ** चरेराङि चागुरौ ।* ॥५॥	अनुपसर्गे १०८	अनुपसर्ग गद मद चर यम धातु से यत् प्रत्यय होता है।
धातोः, कृत्याः, यत्, अनु०, कृत्	**१०१. अवद्यपण्यवर्या गर्ह्यपणितव्यानिरोधेषु २८४९ ।**		गर्ह्य पणितव्य अनिरोध अर्थ में क्रमशः अवद्य, पण्य वर्या शब्द निपातित होते हैं।

धातोः, कृत्याः, य-त्, अनु०, कृत्
१०२. वह्यं करणम् २८५० ।
करण अर्थ में वह धातु से यत् प्रत्यय होता है ।

धातोः, कृत्याः, य-त्, अनु०, कृत्
१०३. अर्यः स्वामिवैश्ययोः २८५१ ।
स्वामी और वैश्य अर्थ में ऋ गतौ से यत् प्रत्यय होता है ।

धातोः, कृत्याः, य-त्, अनु०, कृत्
१०४. उपसर्या काल्या प्रजने २८५२ ।
गर्भग्रहण में प्राप्तकाल के लिये उपसर्या निपातित होता है ।

धातोः, कृत्याः, य-त्, अनु०, कृत्
१०५. अजर्यं सङ्गतम् २८५३ ।
सङ्गत अर्थ में अजर्य निपातित होता है ।

धातोः, कृत्याः, य-त्, अनु०, कृत्
१०६. वदः सुपि क्यप्च २८५४ ।
क्यप् १२१
सुपि १०८
अनुपसर्ग सुबन्त उपपद रहने पर वद धातु से क्यप् और यत् प्रत्यय होते हैं ।

धातोः, कृत्याः, सुपि, अनु०, क्यप्, कृत्
१०७. भुवो भावे २८५५ ।
भावे १०८
अनुपसर्ग सुबन्त उपपद रहने पर भाव अर्थ में भू धातु से क्यप् प्रत्यय होता है ।

धातोः, कृत्याः, सुपि, अनु०, क्यप्, कृत्, भावे
१०८. हनस्त च २८५६ ।
अनुपसर्ग सुबन्त उपपद रहने पर भाव अर्थ में हन् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है और तकार अन्तादेश भी होता है ।

धातोः, कृत्याः, क्यप्, कृत्
१०९. एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् २८५७ ।
** आङ्पूर्वादञ्जेः संज्ञायामुपसंख्यानम् ।*
** शंसिदुहिगुहिभ्यो वा ।*
एति स्तु शास् वृ दृ जुष् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है ।

धातोः, कृत्याः, क्यप्, कृत्
११०. ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः २८५९ ।
क्लृप् और चृत् को छोड़कर ऋकारोपध धातु से क्यप् प्रत्यय होता है ।

धातोः, कृत्याः, क्यप्, कृत्
१११. ई च खनः २८६० ।
खन् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है और इकार अन्तादेश भी होता है ।

धातोः, कृत्याः, क्यप्, कृत्
११२. भृञोऽसंज्ञायाम् २८६१ ।
** समश्च बहुलम् ।*
असंज्ञा में भृञ् से क्यप् होता है ।

धातोः, कृत्याः, क्यप्, कृत्
११३. मृजेर्विभाषा २८६२ ।
मृज् धातु से विकल्प से क्यप् प्रत्यय होता है ।

धातोः, कृत्याः, क्यप्, कृत्
११४. राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः २८६५ ।
क्यप् परे रहने पर राजसूय सूर्य मृषोद्य रुच्य कुप्य कृष्टपच्य अव्यथ्य शब्द निपातित होते हैं ।

धातोः कृत्, कृत्याः, क्यप् — **११५. भिद्योद्ध्यौ नदे २८६६ ।** — यदि नद अभिधेय हो तो भिद् और उज्झ् से क्यप् का निपातन होता है।

धातोः कृत्, कृत्याः, क्यप् — **११६. पुष्यसिध्यौ नक्षत्रे २८६७ ।** — यदि नक्षत्र अभिधेय हो तो पुष् और सिध् से अधिकरण में क्यप् का निपातन होता है।

धातोः कृत्, कृत्याः, क्यप् — **११७. विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्कहलिषु २८६८ ।** — विपूय विनीय जित्य शब्द क्रमशः मुञ्ज कल्क और हलि अर्थ में निपातित होते हैं।

धातोः कृत्, कृत्याः, क्यप् — **११८. प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः २८६९ ।** — वेद में प्रति अपि पूर्वक गृह् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है।

** छन्दसीति वक्तव्यम् ।*

धातोः कृत्, कृत्याः, क्यप् — **११९. पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च २८७० ।** — पद अस्वैरी बाह्या पक्ष्य अर्थ में गृहधातु से क्यप् होता है।

धातोः कृत्, कृत्याः, क्यप् — **१२०. विभाषा कृवृषोः २८७१ ।।६।।** — कृञ् और वृष् धातु से विकल्प से क्यप् होता है।

धातोः कृत्, कृत्याः, क्यप् — **१२१. युग्यं च पत्रे २८७३ ।** — वाहन अर्थ में युग्य का निपातन होता है।

धातोः कृत्, कृत्याः — **१२२. अमावस्यदन्यतरस्याम् २८७४ ।** — अमापूर्वक वस् धातु से काल अर्थ में ण्यत् का निपातन होता है तथा विकल्प से वृद्धि का अभाव होता है।

धातोः कृत्, कृत्याः — **१२३. छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छिष्यमर्यस्तर्याध्वर्यखन्यखान्यदेवयज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्यभाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि ३४०७ ।** — वेद में निष्टर्क्य देवहूय प्रणीय उन्नीय उच्छिष्य मर्य स्तर्य अध्वर्य खन्य खान्य देवयज्या आपृच्छ्य प्रतिषीव्य ब्रह्मवाद्य भाव्य स्ताव्य उपचाय्यपृड शब्द निपातित होते हैं।

** हिरण्य इति वक्तव्यम् ।*

धातोः कृत्, कृत्याः — **१२४. ऋहलोर्ण्यत् २८७२ ।** — ण्यत् १३१ — ऋवर्णान्त और हलन्त धातु से ण्यत् प्रत्यय होता है।

** पाणौ सृजेर्ण्यत् ।*

** समवपूर्वाच्च ।*

** लपिदभिभ्यां चेति वक्तव्यम् ।*

धातोः कृत्, कृत्याः, ण्यत् — **१२५. ओरावश्यके २८८६ ।** — आवश्यक द्योत्य होने पर उवर्णान्त धातु से ण्यत् होता है।

धातोः कृत्, कृत्याः, ण्यत् — **१२६. आसुयुवपिरपित्रपिचमश्च २८८७ ।** — आङ्पूर्वक सु यु वप् रप् (लप्) त्रप् चम् धातु से ण्यत् होता है।

धातोः कृत्, कृत्याः, ण्यत् — **१२७. आनाय्योऽनित्ये २८८८ ।** — अनित्य अभिधेय हो तो आनाय्य निपातित होता है।

धातोः कृत्, कृत्याः, ण्यत् **१२८. प्रणाय्योऽसंमतौ २८८९ ।** असंमतता अभिधेय हो तो प्रणाय्य निपातित होता है ।

धातोः कृत्, कृत्याः, ण्यत् **१२९. पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्या मान-हविर्निवाससामिधेनीषु २८९० ।** पाय्य सान्नाय्य निकाय्य धाय्य शब्द निपातित होते हैं, यदि क्रमशः मान हविष् निवास सामिधेनी अभिधेय हो ।

धातोः कृत्, कृत्याः, ण्यत् **१३०. क्रतौ कुण्डपाय्यसंचाय्यौ २८९१ ।** क्रतु अभिधेय होने पर कुण्डपाय्य और संचाय्य निपातित होते हैं ।

धातोः कृत्, कृत्याः, ण्यत् **१३१. अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः २८९२** अग्नि धारणार्थ स्थलविशेष में परिचाय्य, उपचाय्य तथा समूह्य शब्द निपातित होते हैं ।

धातोः कृत्, कृत्याः **१३२. चित्याग्निचित्ये च २८९३ ।** चित्य और अग्निचित्या शब्द निपातित होते हैं ।

कृत्प्रत्ययः

धातोः कृत्, ण्यत् **१३३. ण्वुल्तृचौ २८९५ ।** कर्ता अर्थ में सभी धातुओं से ण्वुल् और तृच् प्रत्यय होते हैं ।

धातोः कृत् **१३४. नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः २८९६** नन्दि, ग्रहि और पच् आदि गणों से क्रमशः ल्यु, णिनि और अच् प्रत्यय होते हैं ।

(३६) 'नन्दिवाशिमदिदूषिसाधिवर्धिशोभिरोचिभ्योण्यन्तेभ्यः संज्ञायाम्' २२ । नन्दनः वाशनः मदनः दूषणः साधनः वर्धनः शोभनः रोचनः । 'सहितपिदमः संज्ञायाम्' २३ । सहनः तपनः दमनः जल्पनः रमणः दर्पणः संक्रन्दनः संकर्षणः जनार्दनः यवनः मधुसूदनः विभीषणः लवणः चित्तविनाशनः कुलदमनः (शत्रुदमनः) ।। **इति नन्द्यादिः** ।।

(३७) ग्राही उत्साही उद्दासी उद्भासी स्थायी मन्त्री संमर्दी । 'रक्षश्रुवपशां नौ' २४ । निरक्षी निश्रावी निवापी निशायी । 'याचृव्याहृसंख्याहृव्रजवदवसां प्रतिषिद्धानाम्' २५ । अयाची अव्याहारी असंव्याहारी अव्राजी अवादी अवासी । 'अचामचित्तकर्तृकाणाम्' २६ । अकारी अहारी अविनायी (विशायी विषायी) 'विशयी विषयी देशे'' २७ । विशयी विषयी देशः । 'अभिभावी भूते' २८ । अपराधी उपरोधी परिभवी परिभावी ।। **इति ग्रहादिः** ।।

(३८) पच वच वप वद चल पत नदट् भषट् प्लवट् चरट् गरट् तरट् चोरट् गाहट् सूरट् देवट् (दोषट्) जर (रज) मर (मद) क्षम (क्षप) सेव मेष कोप (कोष) मेध नर्त व्रण दर्श सर्प [दम्भ दर्प] जारभर श्वपच ।। **इति पचादिराकृतिगणः ।।**

धातोः कृत्	**१३५. इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः २८९७ ।**	कः १३६	इगुपध, ज्ञा, प्री और किर धातु से क प्रत्यय भी होता है ।
धातोः कृत्, कः.	**१३६. आतश्चोपसर्गे २८९८ ।**	उपसर्गे १३७	सोपसर्ग आकारान्त धातुओं से क प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, उपसर्गे	**१३७. पाघ्राध्माधेट्दृशः शः २८९९ ।** ** घ्रः संज्ञायां न ।*	शः १३९	सोपसर्ग पा घ्रा ध्मा धेट् दृश् धातुओं से श प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, शः	**१३८. अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च २९०० ।** ** नौ लिम्पेः ।* ** गवादिषु विन्देः संज्ञायामुपसंख्यानम् ।*	अनुपसर्गात् - १४०	अनुपसर्ग लिम्प विन्द धारि पारि वेदि उदेजि चेति साति साहि धातुओं से श प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, शः, अनुपसर्गात्	**१३९. ददातिदधात्योर्विभाषा २९०१ ।**	विभाषा १४०	अनुपसर्ग डुदाञ् तथा डुधाञ् से वैकल्पिक श प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, विभाषा, अनुपसर्गात्	**१४०. ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः २९०२ ।।७।।** ** तनोतेर्ण उपसंख्यानम् ।*	णः १४३	अनुपसर्ग ज्वलादि और कसन्त धातुओं से वैकल्पिक ण प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, णः	**१४१. श्याद्व्यधास्रुसंस्र्वतीणवसावहृलिहश्लिषश्वसश्च २९०३ ।**		श्यैङ्, आकारन्त धातु तथा व्यध, आपूर्वक स्रु, संस्रु, अतिपूर्वक इण, अवपूर्वक षो, अवपूर्वक हृ, लिह, श्लिष तथा श्वस धातुओं से ण प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, णः	**१४२. दुन्योरनुपसर्गे २९०४ ।**		'टु दु' उपतापे तथा णीञ् प्रापणे धातु यदि अनुपसर्ग हों तो ण प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, णः	**१४३. विभाषा ग्रहः २९०५ ।**	ग्रहः १४४	ग्रह धातु से विकल्प से ण प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, ग्रहः	**१४४. गेहे कः २९०६ ।**		यदि गेह कर्ता हो तो ग्रह धातु से क प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्	**१४५. शिल्पिनि ष्वुन् २९०७ ।** ** नृतिखनिरञ्जिभ्य इति वक्तव्यम् ।*	शिल्पिनि १४७	यदि कर्ता शिल्पी हो तो धातु से ष्वुन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, शिल्पिनि	**१४६. गस्थकन् २९०८ ।**	गः १४७	यदि कर्ता शिल्पी हो तो गै धातु से थकन् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, गः, शिल्पिनि	**१४७. ण्युट् च २९०९ ।**	ण्युट् १४८	यदि कर्ता शिल्पी हो तो गै धातु से ण्युट् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, ण्युट्	**१४८. हश्च व्रीहिकालयोः २९१० ।**		व्रीहि या काल को कहने पर कर्ता में ओहाक् ओहाङ् धातु से ण्युट् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्	**१४९. प्रुसृल्वः समभिहारे वुन् २९११ ।** ** साधुकारिण्युपसंख्यानम् ।*	वुन् १५०	यदि साधुकारिता लक्षित हो तो कर्ता में प्रु सृ ल्‌ धातु से वुन् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वुन्	**१५०. आशिषि च २९१२ ।** **प्रत्ययो मुण्डविदां दीपजनक्र च्यादिभ्योऽवद्य-युग्यं च श्यादव्यधा दश ।।**		यदि आशिष् गम्यमान हो तो धातु मात्र से कर्ता में वुन् प्रत्यय होता है ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः ।

उत्तरपदप्रत्ययाः तत्र अण्प्रत्ययः

धातोः कृत्	**१. कर्मण्यण् २९१३ ।** ** शीलिकामिभक्ष्याचरिभ्यो णः ।* ** ईक्षिक्षमिभ्यां चेति वक्तव्यम् ।*	अण्-२ कर्मणि ५६	कर्म उपपद रहने पर धातु से अण् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि, अण्	**२. ह्वावामश्च २९१४ ।**		कर्म उपपद रहने पर ह्वेञ् वेञ् मा धातु से अण् प्रत्यय होता है ।

क प्रत्ययः

धातोः कृत्, कर्मणि	**३. आतोऽनुपसर्गे कः २९१५ ।** ** कविधौ सर्वत्र प्रसारणिभ्यो डः ।*	अनुपसर्गे ६० कः ७	अनुपसर्ग आकारन्त धातुओं से कर्म उपपद रहने पर क प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-र्गे, कः	**४. सुपि स्थः २९१६ ।**	सुपि ७५	१. सुप् उपपद रहने पर आदन्त धातु से क प्रत्यय होता है । २. स्थाधातु से भाव में भी क प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-र्गे, कः, सुपि	**५. तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः २९१९ ।** ** आलस्यसुखाहरणयोरिति वक्तव्यम् ।* ** कप्रकरणे मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानम् ।* (३९) (वा०ग०) मूलविभुज नखमुच काक-		तुन्द और शोक यदि कर्मोपपद हों तो परिमृज् और अपनुद् से क प्रत्यय होता है ।

गुह कुमुद महीध्र कुध्र गिद्र—**आकृतिगणोऽयम् ।।**
इति मूलविभुजादयः ।।

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, कः, सुपि
६. प्रे दाज्ञः २९२० ।
प्र के कर्मोपपद में रहने पर दा रूप तथा ज्ञा धातु से क प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, कः, सुपि
७. समि ख्यः २९२१ ।
सम् पूर्वक ख्या धातु से कर्म उपपद रहने पर क प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, सुपि
८. गापोष्टक् २९२२ ।
पिबतेः सुराशीध्वोरिति व्यक्तव्यम् ।
बहुलं तणि ।
अनुपसर्ग कर्म उपपद रहने पर गै तथा पा धातु से टक् प्रत्यय होता है।

अच्प्रत्ययः

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, सुपि
९. हरतेरनुद्यमनेऽच् २९२३ । अच् १५ हरतेः ११
शक्तिलाङ्गलाङ्कुशयष्टितोमरघटघटीधनुष्षु ग्रहेरुपसंख्यानम् ।
सूत्रे च धार्येऽर्थे ।
कर्म उपपद रहने पर श्रमरहित हृ से अच् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, अच्, सुपि हरतेः
१०. वयसि च २९२४ ।
अवस्था लक्षित कराने वाले कर्म उपपद रहने पर हृ धातु से अच् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, अच्, सुपि हरतेः
११. आङि ताच्छील्ये २९२५ ।
ताच्छील्य गम्यमान रहने पर कर्मोपपद युक्त आपूर्वक हृ धातु से अच् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, अच्, सुपि
१२. अर्हः २९२६ ।
कर्म उपपद रहने पर अर्ह पूजायाम् धातु से अच् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, अच्, सुपि
१३. स्तम्बकर्णयो रमिजपोः २९२७ ।
हस्तिसूचकयोरिति वक्तव्यम् ।
सुबन्त स्तम्ब और कर्ण के उपपद रहने पर क्रमशः रमु और जप धातु से अच् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, अच्, सुपि
१४. शमि धातोः संज्ञायाम् २९२८ ।
शमि संज्ञायां धातुग्रहणं कृञो हेत्वादिषु टप्रतिषेधार्थम् ।
संज्ञा में शम् उपपद रहने पर धातु मात्र से अच् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, कर्मणि, अनु-गें, अच्, सुपि
१५. अधिकरणे शेतेः २९२९ । अधिकरणे १६
पार्श्वादिषूपसंख्यानम् ।
अधिकरण उपपद रहने पर शीङ् धातु से अच् प्रत्यय होता है।

(४०) (वा०ग०) पार्श्व उदर पृष्ठ उत्तान अपमूर्धन्—**इति पार्श्वादिः ।।**

** दिग्धसह पूर्वाच्चेति वक्तव्यम् ।*
** उत्तानादिषु कर्तृषु ।*
** गिरौ डश्छन्दसि ।*

ट प्रत्ययः

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, अधिकरणे
१६. चरेष्टः २९३० ।
टः २३ चरेः १७
अधिकरण सुबन्त उपपद रहने पर चर धातु से ट प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, टः चरेः
१७. भिक्षासेनादायेषु च २९३१ ।
भिक्षा सेना आदाय उपपद रहने पर चर धातु से ट प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, टः
१८. पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः २९३२ ।
सर्तेः १९
पुरस् अग्रतस् अग्र उपपद रहने पर सृ धातु से ट प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, टः, सर्तेः
१९. पूर्वे कर्तरि २९३३ ।
कर्तृवाची पूर्व शब्द उपपद रहने पर सृ धातु से ट प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, टः
२०. कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु २९३४ । ॥ १ ॥
कृञः २३
यदि हेतु ताच्छील्य आनुलोम्य हो तो कर्म उपपद रहने पर कृ धातु से ट प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, टः, कृञः
२१. दिवाविभानिशाप्रभाभास्कारान्तानन्तादिबहुनान्दीकिंलिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घाबाह्वहर्यत्तद्धनुररुःषु २९३५ ।
** किंयत्तद्बहुषु कृञोऽज्विधानम् ।*
हेतु आदि के न रहने पर भी दिवा विभा निशा प्रभा भास् कार अन्त अनन्त आदि बहु नान्दी किं लिपि लिबि बलि भक्ति कर्तृ चित्र क्षेत्र संख्या जङ्घा बाहु अहन् यत् तत् धनुष् अरुष् के उपपद रहने पर कृ धातु से ट प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, टः, कृञः
२२. कर्मणि भृतौ २९३६ ।
भृति अर्थ में कर्मवाची कर्म शब्द उपपद रहने पर कृ धातु से ट प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, टः, कृञः
२३. न शब्दश्लोककलहगाथावैरचाटुसूत्रमन्त्रपदेषु २९३७ ।
हेत्वादि रहने पर भी शब्द श्लोक कलह गाथा वैर चाटु सूत्र मन्त्र पद उपपद रहने पर कृ धातु से ट प्रत्यय नहीं होता है ।

इन् प्रत्यय

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें
२४. स्तम्बशकृतोरिन् २९३८ ।
** व्रीहिवत्सयोरिति वक्तव्यम् ।*
इन् २७
स्तम्ब और शकृत् के कर्मोपपद रहने पर कृ धातु से इन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, इन्	**२५. हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ २९३९ ।**		यदि कर्ता पशु हो तो दृति, नाथ के कर्मोपपद रहने पर हृ धातु से इन् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, इन्	**२६. फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च २९४० ।**		फलेग्रहि तथा आत्मम्भरि शब्द निपातित होते हैं ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, इन्	**२७. छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् ३४०८ ।**		वेद में कर्म उपपद रहने पर वन सन रक्ष मथे धातु से इन् प्रत्यय होता है ।
	खश् प्रत्यय		
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें	**२८. एजेः खश् २९४१ ।** * ***वातशुनीतिलशर्धेष्वजधेट्तुदजहातिभ्य उपसंख्यानम् ।***	खश् ३७	कर्म उपपद रहने पर ण्यन्त एजृ धातु से खश् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, खश्	**२९. नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः २९४४ ।** * ***स्तने धेटः ।*** * ***नासिकायां ध्मश्च ।*** * ***घटिखारीखरीषूपसंख्यानम् ।***	ध्माधेटोः ३०	नासिका और स्तन के कर्मोपपद रहने पर ध्मा और धेट् धातु से खश् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, खश्, ध्मा	**३०. नाडीमुष्ट्योश्च २९४५ ।**		नाडी और मुष्टि के कर्मोपपद रहने पर ध्मा और धेट् धातु से खश् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, खश्	**३१. उदि कूले रुजिवहोः २९४६ ।**		कूल के कर्मोपपद रहने उत्पूर्वक रुजो तथा वह धातु से खश् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, खश्	**३२. वहाभ्रे लिहः २९४७ ।**		वह और अभ्र के कर्मोपपद रहने पर लिह धातु से खश् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, खश्	**३३. परिमाणे पचः २९४८ ।**	पचः ३४	परिमाण वाची के कर्मोपपद रहने पर पच धातु से खश् प्रत्यय होत है ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, खश्, पचः	**३४. मितनखे च २९४९ ।**		मित और नख के कर्मोपपद रहने पर पच धातु से खश् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, खश्	**३५. विध्वरुषोस्तुदः २९५० ।**		विधु अरुष् के कर्मोपपद रहने पर तुद धातु से खश् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-गें, खश्	**३६. असूर्यललाटयोर्दृशितपोः २९५१ ।**		असूर्य और ललाट के कर्मोपपद रहने पर दृश और तप धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, खश् **३७. उग्रम्पश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च २९५२ ।**
उग्रम्पश्य इरम्मद और पाणिन्धम निपातित होते हैं ।

खच् प्रत्ययः

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे **३८. प्रियवशे वदः खच् २९५३ ।** खच् ४७
** गमेः सुपि वाच्यः ।*
** विहायसो विह इति वाच्यम् ।*
** खच्च डिद्वा वाच्यः ।*
** डे च विहायसो विहादेशो वक्तव्यः ।*
प्रिय और वश के कर्मोपपद रहने पर वद धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, खच् **३९. द्विषत्परयोस्तापेः २९५४ ।**
द्विषत् और पर के कर्मोपपद रहने पर तापि धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, खच् **४०. वाचि यमो व्रते २९५६ ।।२।।**
यदि व्रत गम्यमान हो तो वाक् शब्द के कर्मोपपद रहने पर यम धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, खच् **४१. पूःसर्वयोर्दारिसहोः २९५८ ।**
** भगे च दारेरिति काशिका ।*
पुरस् और सर्व के कर्मोपपद रहने पर क्रमशः दारि और सह धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, खच् **४२. सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः २९५९ ।**
सर्व कूल अभ्र करीष के कर्मोपपद रहने पर कष धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, खच् **४३. मेघर्तिभयेषु कृञः २९६० ।** कृञः ४४
मेघ ऋति भय के कर्मोपपद रहने पर कृ से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, कृञः, खच् **४४. क्षेमप्रियमद्रेऽण्च २९६१ ।**
क्षेम प्रिय मद्र के कर्मोपपद रहने पर कृ से अण् भी होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, खच् **४५. आशिते भुवः करणभावयोः २९६२ ।**
सुबन्त आशित शब्द के उपपद रहने पर करण और भाव में भू धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, खच् **४६. संज्ञायां भृतॄवृजिधारिसहितपिदमः २९६३ ।** संज्ञायाम् ४७
संज्ञा में सुबन्त उपपद रहने पर भृ तॄ वृजि धारि सहि तपि दम धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, संज्ञायाम्, खच् **४७. गमश्च २९६४ ।** गमश्च ४८
संज्ञा में सुबन्त उपपद रहने पर गम् धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

डादि प्रत्यय:

धातो: कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, गमश्च

४८. अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः २९६५ डः ५०

* *डप्रकरणे सर्वत्रपन्नयोरुपसंख्यानम् ।*
* *उरसो लोपश्च ।*
* *सुदुरोरधिकरणे ।*
* *निसो देशे ।*
* *अन्यत्रापि दृश्यत इति वक्तव्यम् ।*

अन्त अत्यन्त अध्वन् दूर पार सर्व अनन्त के कर्मोपपद रहने पर गम् धातु से ड प्रत्यय होता है।

धातो: कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, डः

४९. आशिषि हनः २९६६ । हनः ५५

* *दारावाहनोऽणन्तस्य च टः संज्ञायाम् ।*
* *चारौ वा ।*
* *कर्मणि समि च ।*

यदि आशीः गम्यमान हो और कर्मोपपद हो तो हन् धातु से ड प्रत्यय होता है।

धातो: कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, डः, हनः

५०. अपे क्लेशतमसोः २९६७ ।

क्लेश और तमस् के कर्मोपपद रहने पर अपपूर्वक हन् धातु से ड प्रत्यय होता है।

धातो: कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, हनः

५१. कुमारशीर्षयोर्णिनिः २९६८ ।

यदि कुमार और शीर्ष उपपद हों तो हन् धातु से णिनि प्रत्यय होता है।

धातो: कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, हनः

५२. लक्षणे जायापत्योष्टक् २९६९ । टक् ५४

जाया और पति के कर्मोपपद रहने पर हन् धातु से टक् प्रत्यय होता है, यदि कर्ता लक्षणवान् हो।

धातो: कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, टक्, हनः

५३. अमनुष्यकर्तृके च २९७० ।

जाया और पति के कर्मोपपद रहने पर हन् धातु से टक् प्रत्यय होता है, यदि कर्ता मनुष्य न हो।

धातो: कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, टक्, हनः

५४. शक्तौ हस्तिकवाटयोः २९७१ ।

हस्ति और कवाट के कर्मोपपद रहने पर हन् से टक् प्रत्यय होता है, यदि शक्ति गम्यमान हो।

धातो: कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे, हनः

५५. पाणिघताडघौ शिल्पिनि २९७२ ।

* *राजघ उपसंख्यानम् ।*

यदि कर्ता शिल्पी हो तो पाणिघ और ताडघ निपातित होते हैं।

धातो: कृत्, कर्मणि सुपि, अनु-र्गे

५६. आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन् २९७३ । आढ्य-षु ५७ च्व्य-च्वौ ५७

यदि आढ्य सुभग स्थूल पलित नग्न अन्ध प्रिय शब्द कर्मोपपद हों तथा अच्व्यन्त होते हुये च्व्यन्त अर्थ में हों तो करण में कृ धातु से ख्युन् प्रत्यय होता है।

धातो: कृत् सुपि, अनु-र्गे, आढ्य, च्व्य-च्वौ

५७. कर्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ २९७४ ।

आढ्य आदि पूर्वलिखित के सुबन्तोपपद रहने पर तथा अच्व्यन्त होते हुये च्व्यन्त अर्थ में वर्तमान रहने पर कर्ता में कृ धातु से खिष्णुच् और खुकञ् प्रत्यय होते हैं।

अविद्यमान प्रत्यय:			
धातोः कृत् सुपि, अनु-र्गे	**५८. स्पृशोऽनुदके क्विन् ४३२ ।**	क्विन् ६०	अनुदक सुबन्त उपपद रहने पर स्पृश धातु से कर्ता में क्विन् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत् सुपि, अनु-र्गे, क्विन्	**५९. ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च ३७३ ।**		ऋत्विक् दधृक् स्रक् दिक् उष्णिक् (ये पाँच शब्द) निपातित होते हैं । सुबन्तोपपद अञ्चु तथा केवल युज् और क्रुञ्च धातु से क्विन् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत् सुपि, अनु-र्गे, क्विन्	**६०. त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च ४२९ ।** ।। ३ ।। ** समानान्ययोश्चेति वक्तव्यम् ।* ** दृशेः क्सश्चेति वक्तव्यम् ।*		त्यदादिके उपपद रहने पर अनालोचन अर्थ में वर्तमान दृश् धातु से कञ् तथा क्विन् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत् सुपि	**६१. सत्सूद्विषद्रुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप् २९७५ ।**	उपसर्गेपि ७०	सत् षूङ् द्विष द्रुह युज विद भिद छिद जि नी राज् धातुओं से क्विप् होता है, भले ही ये धातु उपसर्गयुक्त हों । (अनुपसर्ग में तो होता ही है) ।
धातोः कृत् सुपि, उपसर्गेऽपि	**६२. भजो ण्विः २९७६ ।**	ण्विः ६४	सोपसर्ग अनुपसर्ग सुबन्तोपपद भज धातु से ण्वि प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत् सुपि, उपसर्गेऽपि, ण्विः	**६३. छन्दसि सहः ३४०९ ।**	छन्दसि ६७	वेद में सह धातु से सुबन्त उपपद रहने पर ण्वि प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत् सुपि, उपसर्गेऽपि, ण्विः, छन्दसि	**६४. वहश्च ३४१० ।**	वहः ६६	वेद में वह धातु से सुबन्तोपपद रहने पर ण्वि प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत् सुपि, उपसर्गेऽपि, वहः, छन्दसि	**६५. कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट् ३४११ ।**	ञ्युट् ६६	कव्य पुरीष पुरीष्य के उपपद रहने पर वह धातु से वेद में ञ्युट् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत् सुपि, उपसर्गेऽपि, वहः, छन्दसि, ञ्युट्	**६६. हव्येऽनन्तःपादम् ३४१२ ।**		वेद में हव्योपपद वह धातु से ञ्युट् होता है, यदि हव्य अन्तः-पाद न हो ।
धातोः कृत् सुपि, उपसर्गेऽपि, छन्दसि	**६७. जनसनखनक्रमगमो विट् ३४१३ ।**	विट् ६९	वेद में जन जनी षणु षण खन क्रम गम धातु से सुबन्तोपपद रहने पर विट् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, सुपि, उपसर्गेऽपि, विट्,	**६८. अदोऽनन्ने २९७७ ।**	अदः ६९	अन्न शब्द भिन्न सुप् उपपद रहने पर अद धातु से विट् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, सुपि, उपसर्गेऽपि, विट्, अदः	**६९. क्रव्ये च २९७८ ।**		क्रव्योपपद रहने पर अद से विट् होता है ।
धातोः कृत्, सुपि, उपसर्गेऽपि	**७०. दुहः कब्घश्च २९७९ ।**		सुप् उपपद रहने पर दुह धातु से कप् होता है तथा घकार अन्तादेश होता है ।
धातोः कृत्, सुपि	**७१. मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन् ३४१४ ।** **** श्वेतवहादीनां डस् पदस्येति वक्तव्यम् ।*** **** अवया श्वेतवाः पुरोडाश्च ।***	मन्त्रे ७२ ण्विन् ७२	श्वेतवह उक्थशस् पुरोडाश शब्दों से ण्विन् होता है । अर्थात् निपातन होता है । यदि विषय मन्त्र हो ।
धातोः कृत्, सुपि, मन्त्रे, ण्विन्	**७२. अवे यजः ३४१५ ।**	यजः ७३	मन्त्र विषय में अवपूर्वक यज धातु से ण्विन् होता है ।
धातोः कृत्, सुपि, यजः	**७३. विजुपे छन्दसि ३४१७ ।**	विच् ७५ छन्दसि ७४	छन्द में उपपूर्वक यज धातु से विच् प्रत्यय होता है ।
	मनिन् क्वनिप् वनिपः		
धातोः कृत्, सुपि, विच्, छन्दसि	**७४. आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च ३४१८ ।**	मनि-पः ७५	छन्द में सुप् उपपद रहने पर आकारान्त धातुओं से मनिन् क्वनिप् वनिप् तथा विच् प्रत्यय होते हैं ।
धातोः कृत्, सुपि, मनि-पः, विच्	**७५. अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते २९८० ।**		छन्दोभिन्न अन्य धातुओं से भी मनिन् क्वनिप् वनिप् विच् होते हैं ।
धातोः कृत्	**७६. क्विप्च २९८३ ।**	क्विप् ७७	सोपपद निरुपपद, छन्द या लोक में, सभी धातुओं से क्विप् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, क्विप्	**७७. स्थः क च २९८७ ।**		सुप् उपपद रहने पर स्था धातु से क और क्विप् होते हैं ।
	णिनि प्रत्ययः		
धातोः कृत्	**७८. सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये २९८८ ।** **** णिङ्विधौ साधुकारिण्युपसंख्यानम् ।*** **** ब्रह्मणि वदः ।***	सुपि ८३ णिनि ८६	सुप् उपपद रहने पर तथा ताच्छील्य गम्य रहने पर धातुओं से णिनि प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, णिनि, **७९. कर्तर्युपमाने २९८९ ।** सुपि		कर्तृवाची उपमान उपपद में रहने पर धातुओं से णिनि प्रत्यय होता है।
धातोः कृत्, णिनि, **८०. व्रते २९९० ।** ।।४।। सुपि		सुबन्तोपपद धातु से णिनि होता है, यदि व्रत गम्यमान हो।
धातोः कृत्, णिनि, **८१. बहुलमाभीक्ष्ण्ये २९९१ ।** सुपि		यदि आभीक्ष्ण्य गम्यमान हो तो धातु से बहुल प्रकार से णिनि होता है।
धातोः कृत्, णिनि, **८२. मनः २९९२ ।** सुपि	मनः ८३	सुबन्तोपपद दैवादिक मन धातु से णिनि होता है।
धातोः कृत्, णिनि, **८३. आत्ममाने खश्च २९९३ ।** सुपि, मनः		सुबंन्तोपपद आत्ममान में वर्तमान दैवादिक मन धातु से खश् और णिनि होते हैं।
भूतकालिक कृत् प्रत्ययः		
धातोः कृत्, णिनि **८४. भूते २९९५ ।**	भूते १२२	जब तक वर्तमाने लट् न आये भूत का अधिकार रहेगा।
धातोः कृत्, णिनि, **८५. करणे यजः २९९६ ।** भूते		भूत में करणोपपद यज धातु से णिनि प्रत्यय होता है।
धातोः कृत्, णिनि, **८६. कर्मणि हनः २९९७ ।** भूते	हनः ८८ कर्मणि ९२	भूत में कर्मोपपद हन धातु से णिनि प्रत्यय होता है।
धातोः कृत्, हनः, भूतकालिक क्विप् प्रत्ययः कर्मणि, भूते **८७. ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् २९९८ ।**	क्विप् ९२	ब्रह्म भ्रूण वृत्र उपपद रहने पर भूत में हन धातु से क्विप् प्रत्यय होता है।
धातोः कृत्, हनः, **८८. बहुलं छन्दसि ३४१९ ।** कर्मणि, क्विप्, भूते		छन्द में अन्योपपद रहने पर भी हन धातु से बहुलतया क्विप् होता है।
धातोः कृत्, कर्मणि, **८९. सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः २९९९ ।** क्विप्, भूते		सु, कर्म पाप मन्त्र पुण्य के कर्मोपपद रहने पर हन् से क्विप् होता है।
धातोः कृत्, कर्मणि, **९०. सोमे सुञः ३००० ।** क्विप्, भूते		सोम के कर्मोपपद रहने पर षु धातु से क्विप् होता है।
धातोः कृत्, कर्मणि, **९१. अग्नौ चेः ३००१ ।** क्विप्, भूते	चेः ९२	अग्नि के कर्मोपपद रहने पर चिञ् धातु से क्विप् होता है।

धातोः कृत्, चेः, कर्मणि, क्विप्, भूते **९२. कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ३००२ ।** अग्न्याख्या में कर्मोपपद चिञ् धातु से कर्मकारक में क्विप् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भूते **९३. कर्मणीनिविक्रियः ३००३ ।** कर्मोपपद वि पूर्वक क्री धातु से इनि होता है, यदि कर्म कुत्सा निमित्तक हो।

**** कुत्सितग्रहणं कर्तव्यम् ।***

क्वनिप् प्रत्ययः

धातोः कृत्, भूते **९४. दृशेः क्वनिप् ३००४ ।** क्वनिप् ९६ कर्मोपपद दृश धातु से क्वनिप् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, क्वनिप्, भूते **९५. राजनि युधिकृञः ३००५ ।** राजन् शब्द के कर्मोपपद रहने पर युध् और कृ धातु से क्वनिप् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, क्वनिप्, भूते **९६. सहे च ३००६ ।** सहोपपद युध् और कृ से क्वनिप् प्रत्यय होता है।

ड प्रत्ययः

धातोः कृत्, भूते **९७. सप्तम्यां जनेर्डः ३००७ ।** डः १०१ सप्तम्यन्त उपपद रहने पर जन् धातु से ड प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, डः, भूते **९८. पञ्चम्यामजातौ ३००८ ।** जाति वर्जित पञ्चम्यन्त उपपद रहने पर जन् से ड होता है।

धातोः कृत्, डः, भूते **९९. उपसर्गे च संज्ञायाम् ३००९ ।** संज्ञा में सोपसर्ग जन् धातु से ड प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, डः, भूते **१००. अनौ कर्मणि ३०१० ।** ।।५।। कर्मोपपद रहने पर अनुपूर्वक जनी धातु से ड होता है।

धातोः कृत्, डः, भूते **१०१. अन्येष्वपि दृश्यते ३०११ ।** अन्य कारकों के उपपद में रहने पर भी जन् से ड होता है।

**** अन्येभ्योऽपि दृश्यते ।***

धातोः कृत्, भूते **१०२. निष्ठा ३०१३ ।** निष्ठा प्रत्यय भूत में ही होते हैं।

**** आदिकर्मणि निष्ठा वक्तव्या ।***

धातोः कृत्, भूते **१०३. सुयजोर्ङ्वनिप् ३०९१ ।** (स्वादि के) षु तथा यज धातु से भूत में ङ्वनिप् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भूते **१०४. जीर्यतेरतृन् ३०९२ ।** जॄ धातु से भूत में अतृन् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भूते **१०५. छन्दसि लिट् ३०९३** छन्दसि १०७ छन्दस् में धातु से लिट् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भूते, छन्दसि **१०६. लिटः कानज्वा ३०९४ ।** वा, लिटः १०९ छन्दस् में लिट् को विकल्प से कानच् आदेश होता है।

धातोः कृत्, भूते, **१०७. क्वसुश्च ३०९५ ।** छन्दसि, वा, लिटः	क्वसुः १०९	छन्दस् में लिट् को क्वसु आदेश होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **१०८. भाषायां सदवसश्रुवः ३०९७ ।** क्वसुः, वा, लिटः		भाषा में भूतसामान्य में भी सद् वस श्रु धातुओं से लिट् होता है और उसे क्वसु आदेश होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **१०९. उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च ३०९८ ।** क्वसुः, वा, लिटः		उपेयिवान् अनाश्वान् अनूचान निपातित होते हैं ।
धातोः कृत्, भूते **११०. लुङ् २२१८ ।**		भूत में वर्तमान धातु से लुङ् प्रत्यय होते हैं ।
धातोः कृत्, भूते **१११. अनद्यतने लङ् २२०५ ।**	अनद्यतने १२२	अनद्यतन भूत में वर्तमान धातु से लङ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **११२. अभिज्ञावचने लृट् २७७३ ।** अनद्यतने, अ-ने	अ-ने लृट् ११४	अभिज्ञा वाचक शब्द रहने पर अनद्यतन भूत में धातु से लृट् होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **११३. न यदि २७७४ ।** अनद्यतने, अ-ने		यदि अभिज्ञावचन में यत् का प्रयोग हो तो लृट् नहीं होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **११४. विभाषा साकाङ्क्षे २७७५ ।** अनद्यतने, अ-ने		प्रयोक्ता के साकाङ्क्ष रहने पर यत् शब्द का प्रयोग हो या न हो लृट् विकल्प से होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **११५. परोक्षे लिट् २१७१ ।** अनद्यतने **** अत्यन्तापह्नवे लिड्वक्तव्यः ।***	परोक्षे ११८ लिट् ११७ ।	भूतानद्यतन परोक्षार्थ में धातु से लिट् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **११६. हशश्वतोर्लङ् च २७७६ ।** अनद्यतने, परोक्षे, लिट्	लङ् ११७	ह शश्वत् उपपद रहने पर भूतानद्यतन परोक्ष में धातु से लङ् और लिट् होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **११७. प्रश्ने चासन्नकाले २७७७ ।** अनद्यतने, परोक्षे, लिट्, लङ्		पूछा गया प्रश्न यदि सद्यः का हो तो भूतानद्यतनपरोक्षार्थवृत्ति धातु से लङ् लिट् दोनों होते हैं ।
धातोः कृत्, भूते, **११८. लट् स्मे २७७८ ।** अनद्यतने, परोक्षे	लट् १२२ स्मे ११९	स्म उपपद रहने पर भूतानद्यतनपरोक्षार्थवृत्ति धातु से लट् होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **११९. अपरोक्षे च २७७९ ।** अनद्यतने, परोक्षे, लट्, स्मे		भूतानद्यतन अपरोक्ष वृत्ति धातु से भी लट् होता है ।
धातोः कृत्, भूते, **१२०. ननौ पृष्टप्रतिवचने २७८० ॥६॥** लट्	पृष्ट-ने १२१	पृष्टप्रतिवचन भूत में धातु से ननु उपपद रहने पर लट् होता है ।

धातोः कृत्, भूते, लट्, पृष्ट-ने	**१२१. नन्वोर्विभाषा २७८१ ।**	विभाषा १२२	न और नु उपपद रहने पर पृष्टप्रतिवचन भूत में लट् होता है।
धातोः कृत्, भूते, अनद्यतने, लट्, वि०	**१२२. पुरि लुङ्चास्मे २७८२ ।**		पुरा शब्द उपपद रहने पर और स्म का प्रयोग न रहने पर भूतानद्यतन अर्थ में धातु से लुङ् और लट् दोनों होते हैं।

वर्तमानकालिक प्रत्ययः

धातोः कृत्	**१२३. वर्तमाने लट् २१५१ ।**	वर्तमाने ३.३.१	वर्तमान अर्थ में धातु से लट् प्रत्यय होता है।
धातोः कृत्, वर्तमाने	**१२४. लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ३१०० ।**	लटः १२६ शतृ-शानचौ १-२६	अप्रथमान्त के साथ यदि सामान्याधिकरण हो तो लट् को शतृ-शानच् आदेश होते हैं।
धातोः कृत्, वर्तमाने, लटः, श-चौ	**१२५. संबोधने च ३१०२ ।**		प्रथमा सामान्याधिकरण तथा सम्बोधन में लट् को शतृ शानच् आदेश होते हैं।
धातोः कृत्, वर्तमाने, लटः, श-चौ	**१२६. लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ३१०३ ।**		लक्षण और हेतु अर्थ में वर्तमान धातु से लट् को शतृ शानच् होते हैं, यदि वे दोनों क्रिया के हेतु हों।
धातोः कृत्, वर्तमाने	**१२७. तौ सत् ३१०६ ।**		शतृ और शानच् मात्र को सत् संज्ञा होती है।
धातोः कृत्, वर्तमाने	**१२८. पूङ्यजोः शानन् ३१०८ ।**		पूङ् और यज् धातु को शानन् प्रत्यय होता है।
धातोः कृत्, वर्तमाने	**१२९. ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश् ३१०९ ।**		ताच्छील्य वयोवचन और शक्ति के द्योत्य रहने पर धातु से वर्तमान में चानश् प्रत्यय होता है।
धातोः कृत्, वर्तमाने	**१३०. इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि ३११० ।**	शतृ १३३	इङ् और धारि धातु से शतृ होता है, यदि कर्ता अकृच्छ्री हो।
धातोः कृत्, वर्तमाने, शतृ	**१३१. द्विषोऽमित्रे ३१११ ।**		अमित्र कर्ता होने पर द्विष धातु से शतृ प्रत्यय होता है।
धातोः कृत्, वर्तमाने, शतृ	**१३२. सुञो यज्ञसंयोगे ३११२ ।**		यज्ञ संयोग में वर्तमान सु धातु से शतृ प्रत्यय होता है।
धातोः कृत्, वर्तमाने, शतृ	**१३३. अर्हः प्रशंसायाम् ३११३ ।**		अर्ह धातु से प्रशंसा में शतृ प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, वर्तमाने	**१३४. आ क्वेस्तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिषु ३११४ ।**	तच्छील-षु १७८	भ्राजभास सूत्र १७७ तक जो भी प्रत्यय होंगे वे तच्छील तद्धर्म तत्साधुकारी अर्थ में होंगे ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु	**१३५. तृन् ३११५ ।** ** तृन्विधावृत्विक्षु चानुपसर्गस्य ।* ** नयतेः षुक् ।* ** त्विषेर्देवतायामकारश्चोपधाया अनिट्त्वं च ।* ** क्षदेश्च युक्ते ।* ** छन्दसि तृच्च ।*		तच्छील आदि अर्थों में सभी धातु से तृन् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु	**१३६. अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मद-रुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच् ३११६ ।**	इष्णुच् १३८	अलंकृ निराकृ प्रजन उत्पच उत्पत उन्मद रुचि अपत्रप वृतु वृधु सह चर धातुओं से कर्ता में तच्छील आदि अर्थों में इष्णुच् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, इष्णुच्, त-षु	**१३७. णेश्छन्दसि ३११७ ।**	छन्दसि १३८	ण्यन्त में तच्छील आदि अर्थों में धातुओं से कर्ता में इष्णुच् प्रत्यय होता है छन्द में ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु छन्दसि इष्णुच्	**१३८. भुवश्च ३११८ ।**	भुवः १३९	भू धातु से कर्ता में तच्छीलादि अर्थों में छन्द में इष्णुच् होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, भुवः, त-षु	**१३९. ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः ३११९ ।**		तच्छीलादि अर्थ में ग्ला जि स्था भू धातुओं से ग्स्नुः प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु	**१४०. त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः ३१२० ।।७।।**		तच्छीलादि अर्थ में त्रसि आदि धातुओं से क्नु प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु	**१४१. शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ३१२१ ।**	घिनुण् १४५	शम आदि आठ धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में घिनुण् होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, घिनुण्, त-षु	**१४२. संपृचानुरुधाङ्यमाङ्यसपरिसृसंसृज-परिदेविसंज्वरपरिक्षिपपरिरटपरिवद-परिदहपरिमुहदुषद्विषद्रुहदुहयुजाक्रीड-विविचत्यजरजभजातिचरापचरामुषा-भ्याहनश्च ३१२२ ।**		संपृच आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में घिनुण् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, घिनुण्, त-षु	**१४३. वौ कषलसकत्थस्रम्भः ३१२३ ।**	वौ १४४	वि युक्त कष आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में घिनुण् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, घिनुण्, वौ, त-षु	**१४४. अपे च लषः ३१२४ ।**		अप् युक्त लष धातु से तच्छीलादि अर्थ में घिनुण् होता है, वि युक्त को भी ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, घिनुण्, त-षु	**१४५. प्रे लपसृद्रुमथवदवसः ३१२५ ।**		प्र युक्त लप आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में घिनुण् होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु	**१४६. निन्दहिंसक्लिशखादविनाशपरिक्षिपपरिरटपरिवादिव्याभाषासूयो वुञ् ३१२६ ।**	वुञ् १४७	तच्छीलादि अर्थ में निन्द हिंस आदि धातुओं से कर्ता में वुञ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, वुञ्, त-षु	**१४७. देविक्रुशोश्चोपसर्गे ३१२७ ।**		सोपसर्ग ण्यन्त दिव् तथा क्रुश धातु से वुञ् होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु	**१४८. चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच् ३१२८ ।**	युच् १५३ अकर्मकात् १४९	चलनार्थ शब्दार्थ और अकर्मक धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में युच् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु, युच्, अकर्म०	**१४९. अनुदात्तेतश्च हलादेः ३१२९ ।**		हलादि अनुदात्तेत् अकर्मक धातुओं से युच् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु, युच्	**१५०. जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृगृधिज्वलशुचलषपतपदः ३१३० ।**		जु यङन्त क्रम तथा द्रम सृ आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में युच् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु, युच्	**१५१. क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ३१३१ ।**		क्रुध मडि अर्थ वाले धातुओं से युच् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु, युच्	**१५२. न यः ३१३२ ।**	न १५३	यकारान्त धातुओं से युच् प्रत्यय नहीं होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु, युच्, न	**१५३. सुददीपदीक्षश्च ३१३३ ।**		सूद दीप दीक्ष धातुओं से युच् नहीं होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु	**१५४. लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशृभ्य उकञ् ३१३४ ।**		लष आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में उकञ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु	**१५५. जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन् ३१३५**		जल्प आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में षाकन् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु	**१५६. प्रजोरिनिः ३१३६ ।**	इनिः १५७	प्रपूर्वक जु धातु से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में इनि प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, इनि, त-षु	**१५७. जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यमपरिभूप्रसूभ्यश्च ३१३७ ।**		जि आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में इनि प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१५८. स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच् ३१३८ ।**　स्पृह आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में आलुच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१५९. दाधेट्सिशदसदो रुः ३१३९ ।**　दा आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में रु प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१६०. सृघस्यदः क्मरच् ३१४० ।।८।।**　सृ घस् अद् धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में क्मरच् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१६१. भञ्जभासमिदो घुरच् ३१४१ ।**　भञ्ज आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में घुरच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१६२. विदिभिदिच्छिदेः कुरच् ३१४२ ।**　विदादि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में कुरच् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१६३. इण्नशिजिसर्तिभ्यः क्वरप् ३१४३ ।**　इण् नश् जि सर्ति से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में क्वरप् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१६४. गत्वरश्च ३१४४ ।**　गम् से गत्वर बनता है । (इसमें अनुनासिक लोप और क्वरप् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१६५. जागरूकः ३१४५ ।**　ऊकः १६६　जागृ से ऊक प्रत्यय होता है तच्छीलादि अर्थ में ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, ऊकः, त-षु　**१६६. यजजपदशां यङः ३१४६ ।**　यङन्त यजादि से ऊक प्रत्यय होता है तच्छीलादि अर्थ में ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१६७. नभिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः ३१४७ ।**　नम कम्प स्मि नपूर्व जस कम हिंस दीप् धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में र प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु　**१६८. सनाशंसभिक्ष उः ३१४८ ।**　उः १७०　सन् प्रत्ययान्त, आपूर्वशंस तथा भिक्ष धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में उ प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, उः, त-षु　**१६९. विन्दुरिच्छुः ३१४९ ।**　विद इष से निपातनात् विन्दु इच्छु बनता है तच्छीलादि में ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, उः, त-षु　**१७०. क्याच्छन्दसि ३१५० ।**　छन्दसि १७१　क्य प्रत्ययान्त धातु से छन्द में उकार होता है तच्छीलादि में ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, छन्दसि, त-षु　**१७१. आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च ३१५१**　आकारान्त ऋवर्णान्त गम हन जन से छन्द में कि किम् प्रत्यय होते हैं तच्छीलादि में । वे लिड्वत् होते हैं।

** भाषायां धाञ्कृसृगमि[1]जनिनमिभ्यः ।*

---

१. 'गमि' इति न भाष्ये ।

** सासहिवावहिचाचलिपापतीनामुपसंख्यानम् ।*

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु — **१७२. स्वपितृषोर्नजिङ् ३१५२ ।**
** धृषेश्चेति वाच्यम् ।*
स्वप तृष धातु से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में नजिङ् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु — **१७३. शॄवन्द्योरारुः ३१५३ ।**
शॄ वदि से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में आरु होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु — **१७४. भियः क्रुक्लुकनौ ३१५४ ।**
** क्रुकन्नपि वक्तव्यः ।*
ञिभी धातु से क्रुक् और लुकन् प्रत्यय होते हैं तच्छीलादि में ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु — **१७५. स्थेशभासपिसकसो वरच् ३१५५ ।** वरच् १७६
स्था ईश भासृ पिसृ पेसृ कस धातुओं से तच्छीलादि में कर्ता में वरच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, वरच्, त-षु — **१७६. यश्च यङः ३१५६ ।**
यङन्त या धातु से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में वरच् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, त-षु — **१७७. भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपॄजुग्रावस्तुवः क्विप् ३१५७ ।** क्विप् १७९
भ्राज, भास, धुर्वि, द्युत, ऊर्जि, पॄ, जु और ग्रावस्तु से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में क्विप् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, क्विप्, त-षु — **१७८. अन्येभ्योऽपि दृश्यते ३१५८ ।**
** क्विब्वचिप्रच्छयायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसंप्रसारणं च ।*
** द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च ।*
** जुहोतेर्दीर्घश्च ।*
** दृणातेर्ह्रस्वश्च । ।*
** ध्यायतेः संप्रसारणं च ।*
तच्छीलादि अर्थ में अन्य धातुओं से भी क्विप् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, क्विप् — **१७९. भुवः संज्ञान्तरयोः ३१५९ ।** भुवः १८०
संज्ञा और अन्तर गम्यमान रहने पर भू धातु से क्विप् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, भुवः — **१८०. विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम् ३१६० ।।९।।**
** डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम् ।*
वि प्र सम् पूर्वक भू धातु से डु प्रत्यय होता है, यदि संज्ञा न हो ।

धातोः कृत्, वर्तमाने — **१८१. धः कर्मणि ष्ट्रन् ३१६१ ।** ष्ट्रन् १८३
घेट् और डुधाञ् से कर्म में ष्ट्रन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, ष्ट्रन् — **१८२. दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे ३१६२ ।** करणे १८६
दाप् नी शसु यु युजिर् स्तु तुद षिञ् षिचिर् मिह पत्लृ दंश नह धातुओं से करण में ष्ट्रन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, **१८३. हलसूकरयोः पुवः ३१६४ ।**
ष्ट्रन्, करणे

यदि हल और सूकर का अवयव हो तो पू धातु से करण में ष्ट्रन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, **१८४. अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः ३१६५ ।** इत्रः १८६
करणे

ऋ लू धू सू खन सह चर धातु से करण में ष्ट्रन् होता है

धातोः कृत्, वर्तमाने, **१८५. पुवः संज्ञायाम् ३१६६ ।** पुवः १८६
इत्रः, करणे

पू धातु से करण में इत्र प्रत्यय होता है, यदि निष्पन्न शब्द संज्ञा हो ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, **१८६. कर्तरि चर्षिदेवतयोः ३१६७ ।**
इत्रः, करणे, पुवः

पू धातु से कर्ता और करण में इत्र प्रत्यय होता है । ऋषि सम्बन्ध में कर्ता में तथा देवता सम्बन्ध में करण में ।

धातोः कृत्, वर्तमाने **१८७. ञीतः क्तः ३०८८ ।** क्तः १८८

जिन धातुओं से ञि की इत्संज्ञा हो उनसे वर्तमान में भी क्त प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, **१८८. मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च ३०८९ ।**
क्तः

मति बुद्धि पूजार्थक धातुओं से वर्तमान में भी क्त प्रत्यय होत है ।

कर्मणि दिवापूःसर्वसत्सूबहुलमन्येष्वपि नन्वोः
शमिति भञ्जभासधः कर्मण्यष्टौ ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

धातोः कृत्, वर्तमाने **१. उणादयो बहुलम् ३१६९ ।** उणादयः ३

उणादि प्रत्यय वर्तमान में तथा संज्ञा में बहुल प्रकार से होते हैं ।

धातोः कृत्, उणादयः **२. भूतेऽपि दृश्यन्ते ३१७० ।**

उणादि प्रत्यय प्रायः भूत में भी देखे जाते हैं ।

भविष्यत्कालिक कृत्प्रत्ययः

धातोः कृत्, उणादयः **३. भविष्यति गम्यादयः ३१७१ ।** भविष्यति १५

भविष्यत् काल में गमी आदि शब्द निपातित होते हैं ।

(४१) गमी आगमी भावी प्रस्थायी प्रतिरोधी प्रतियोधी प्रतिबोधी प्रतियायी प्रतियोगी—**एते गम्यादयः ।**

धातोः कृत्, भविष्यति	**४. यावत्पुरानिपातयोर्लट् २७८३ ।**	लट् ९	निपात संज्ञक यावत् और पुरा शब्द के उपपद रहने पर भविष्यत् काल में धातु से लट् होता है।
धातोः कृत्, भविष्यति, लट्	**५. विभाषा कदाकर्ह्योः २७८४ ।**	विभाषा ९	कदा और कर्हि उपपद रहने पर भविष्यत् काल में धातु से विकल्पेन लट् होता है।
धातोः कृत्, भविष्यति, लट्, विभा०	**६. किंवृत्ते लिप्सायाम् २७८५ ।**		किंवृत्त उपपद रहने पर लिप्सा में भविष्यत् काल में धातु से विकल्पेन लट् होता है।
धातोः कृत्, भविष्यति, लट्, विभा०	**७. लिप्स्यमानसिद्धौ च २७८६ ।**		लिप्स्यमान सिद्धि गम्यमान हो तो भ० काल में विकल्प से लट् होता है।
धातोः कृत्, भविष्यति, लट्, विभा०	**८. लोडर्थलक्षणे च २७८७ ।**	लो-णे ९	लोडर्थ लक्षण धात्वर्थ के रहने पर धातु से भ० काल में विकल्प से लट् होता है।
धातोः कृत्, भविष्यति, लट्, विभा०, लो-णे	**९. लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके २७८८ ।**		ऊर्ध्वमौहूर्तिक भ० काल में लोडर्थ लक्षण में वर्तमान धातु से लिङ् तथा लट् होता है।
धातोः कृत्, भविष्यति	**१०. तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ३१७५**	क्रिया-यां १३ क्रि-म् १३	क्रियार्था क्रिया के उपपद रहने पर भविष्यत् काल में तुमुन् और ण्वुल् प्रत्यय होते हैं।
धातोः कृत्, भविष्यति, क्रि०याम् क्रि-म्	**११. भाववचनाश्च ३१८० ।**		भाव के अधिकार में पठित प्रत्यय क्रियार्था क्रिया में भविष्यत् काल में होते हैं।
धातोः कृत्, भविष्यति, क्रि०याम् क्रि-म्	**१२. अण्कर्मणि च ३१८१ ।**		कर्म उपपद रहने पर क्रियार्था क्रिया में भविष्यत् काल में धातु से अण् होता है।
धातोः कृत्, भविष्यति, क्रि०याम् क्रि-म्	**१३. लृट् शेषे च[१] २१९३ ।**		क्रियार्था क्रिया रहने पर भविष्यत् में तथा शुद्ध भविष्यत् में भी लृट् होता है।
धातोः कृत्, भविष्यति	**१४. लृटः सद्वा ३१०७ ।**		लृट् के स्थान पर सत् अर्थात् शतृ शानच् विकल्प से होते हैं।
धातोः कृत्, भविष्यति	**१५. अनद्यतने लुट् २१८५ ।**		भविष्यत् अनद्यतन अर्थ में वर्तमान धातु से लुट् प्रत्यय होता है।

१. च रहितः पाठो भाष्ये।

घञ्प्रत्ययः

धातोः कृत्,	**१६. पदरुजविशस्पृशो घञ् ३१८२ ।** ** स्पृश उपतापे ।*	घञ् ५५	पद आदि धातुओं से (तीनों कालों में) घञ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, घञ्	**१७. सृ स्थिरे ३१८३ ।** ** व्याधिमत्स्यबलेषु चेति वाच्यम् ।*		कर्ता के स्थिर रहने पर सृ धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।
	भावार्थक प्रत्ययः		
धातोः कृत्, घञ्	**१८. भावे ३१८४ ।**	भावे ११२	भाव वाच्य रहने पर धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे	**१९. अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् ३१८६ ।**	अक-म् ११२	संज्ञा विषय में कर्तृभिन्न कारक में धातु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२०. परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः ३१९०।।१।।** ** दारजारौ कर्तरि णिलुक् च ।*		परिमाणाख्या गम्यमान रहने पर सभी धातुओं से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२१. इङश्च ३१९१ ।** ** अपादाने स्त्रियामुपसंख्यानम् तदन्ताच्च वा ङीष् ।* ** शॄवायुवर्णनिवृतेषु ।*		इङ् धातु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२२. उपसर्गे रुवः ३१९२ ।**		उपसर्ग उपपद रहने पर रु धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२३. समि युदुद्रुवः ३१९४ ।**		सम् उपसर्ग उपपद रहने पर यु दु द्रु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२४. श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे ३१९५ ।**		उपसर्गरहित श्रि णी भू धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२५. वौ क्षुश्रुवः ३१९६ ।**		वि उपपद रहने पर क्षु श्रु धातु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२६. अवोदोर्नियः ३१९७ ।**		अव और उद् उपपद रहने पर नी से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२७. प्रे द्रुस्तुस्रुवः ३१९८ ।**		प्र उपपद रहने पर द्रु स्तु स्रु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२८. निरभ्योः पूल्वोः ३१९९ ।**		निर् पूर्वक पू और अभिपूर्वक लू धातु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**२९. उन्न्योर्ग्रः ३२०० ।**	उन्न्योः ३०	उद् नी उपपद रहने पर गृ धातु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्, उन्न्योः	**३०. कृ धान्ये ३२०१ ।**		धान्य विषयक कॄ के प्रयोग में उद् नी उपपद रहने पर घञ् होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, **३१. यज्ञे समि स्तुवः ३२०२ ।**
भावे, अक-म्
सम् पूर्वक स्तु से घञ् होता है, यदि यज्ञविषयक प्रयोग हो।

धातोः कृत्, घञ्, **३२. प्रे स्त्रोऽयज्ञे ३२०३ ।** स्त्रः ३४
भावे, अक-म्
प्र पूर्वक स्तृञ् धातु से घञ् होता है, यदि यज्ञविषय न हो।

धातोः कृत्, घञ्, **३३. प्रथने वावशब्दे ३२०४ ।** वौ ३४
भावे, अक-म्, स्त्रः
वि पूर्वक स्तृञ् धातु से घञ् होता है यदि प्रथन-विस्तीर्णता-शब्द विषयक न हो।

धातोः कृत्, घञ्, **३४. छन्दोनाम्नि च ३२०५ ।**
भावे, अक-म्, स्त्रः वौ
वि पूर्वक स्तृ धातु से घञ् होता है, यदि विषय छन्द हो।

धातोः कृत्, घञ्, **३५. उदि ग्रहः ३२०७ ।** ग्रहः ३६
भावे, अक-म्
उद् पूर्वक ग्रह धातु से घञ् होता है।

धातोः कृत्, घञ्, **३६. समि मुष्टौ ३२०८ ।**
भावे, अक-म्, ग्रहः
सम् पूर्वक ग्रह धातु से घञ् होता है, यदि धात्वर्थ मुष्टि विषयक हो।

धातोः कृत्, घञ्, **३७. परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः ३२०९ ।**
भावे, अक-म्
परिपूर्वक नी और निपूर्वक इण् धातु से घञ् होता है, यदि धात्वर्थ क्रमशः द्यूत विषयक तथा अभ्रेष विषयक हो।

धातोः कृत्, घञ्, **३८. परावनुपात्यय इणः ३२१० ।**
भावे, अक-म्
यदि अनुपात्यय गम्यमान हो तो परिपूर्वक इण् से घञ् होता है।

धातोः कृत्, घञ्, **३९. व्युपयोः शेतेः पर्याये ३२११ ।**
भावे, अक-म्
वि और उपपूर्वक शीङ् धातु से घञ् होता है, यदि पर्याय गम्यमान हो।

धातोः कृत्, घञ्, **४०. हस्तादाने चेरस्तेये ३२१२** ।।२।। चेः ४२
भावे, अक-म्
हस्तादान गम्यमान हो तो चि से घञ् होता है, स्तेय में नहीं।

धातोः कृत्, घञ्, **४१. निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः ३२१३ ।** आदेश्च कः ४२
भावे, अक-म्, चेः
निवास चिति शरीर उपसमाधान अर्थों में चि धातु से घञ् होता है और आदि को क हो जाता है।

धातोः कृत्, घञ्, **४२. सङ्घे चानौत्तराधर्ये ३२१४ ।**
भावे, अक-म्, चेः,
आ-कः
उत्तराधरभाव विहीन सङ्घ में चि धातु से घञ् तथा आदि को क हो जाता है।

धातोः कृत्, घञ्, **४३. कर्मव्यतिहारे णच्स्त्रियाम् ३२१५ ।**
भावे, अक-म्,
कर्मव्यतिहार गम्यमान रहने पर धातु से णच् होता है, यदि स्त्रीलिङ्ग भाव वाच्य हो।

धातोः कृत्, घञ्, **४४. अभिविधौ भाव इनुण् ३२१८ ।**
भावे, अक-म्
अभिविधि में धातु से भाव में इनुण् होता है।

धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**४५. आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः ३२२० ।**	ग्रहः ४७	आक्रोश गम्यमान होने पर अव नि पूर्वक ग्रह धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्, ग्रहः	**४६. प्रे लिप्सायाम् ३२२१ ।**		लिप्सा गम्यमान होने पर प्र पूर्वक ग्रह धातु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्, ग्रहः	**४७. परौ यज्ञे ३२२२ ।**		यदि यज्ञ विषय हो तो परिपूर्वक ग्रह धातु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**४८. नौ वृ धान्ये ३२२३ ।**		धान्य विशेष अभिधेय होने पर निपूर्वक वृ धातु से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**४९. उदि श्रयतियौतिपू द्रुवः ३२२४ ।**		उत् पूर्वक श्रि यु पू द्रु धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्	**५०. विभाषाऽऽङि रुप्लुवोः ३२२५ ।**	विभाषा ५५	आङ् उपपद रहने पर रु प्लु धातु से विकल्प से घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्, वि०	**५१. अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे ३२२६ ।**	ग्रहः ५३	अव पूर्वक ग्रह धातु से विकल्पेन घञ् होता है, यदि वर्ष प्रतिबन्ध अभिधेय हो ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्, वि०, ग्रहः	**५२. प्रे वणिजाम् ३२२७ ।**	प्रे ५४	प्र पूर्वक ग्रह धातु से विकल्पेन घञ् होता है, यदि वाच्य वणिक् सम्बन्धी हो ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्, वि०, ग्रहः, प्रे	**५३. रश्मौ च ३२२८ ।**		प्र पूर्वक ग्रह धातु से विकल्पेन घञ् होता है, यदि वाच्य रश्मि हो ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्, वि०, प्रे	**५४. वृणोतेराच्छादने ३२२९ ।**		यदि आच्छादन विशेष अर्थ हो तो प्रपूर्वक वृ धातु से विकल्पेन घञ् होता है ।
धातोः कृत्, घञ्, भावे, अक-म्, वि०	**५५. परौ भुवोऽवज्ञाने ३२३० ।**		असत्कार अर्थ में परिपूर्वक भू धातु से विकल्पेन घञ् होता है ।

अच्प्रत्ययः

धातोः कृत्, भावे, अक-म्	**५६. एरच् ३२३१ ।** ** भयादीनामुपसंख्यानं नपुंसके क्तादिनिवृत्त्यर्थम् ।* ** जवसवौ छन्दसि वक्तव्यौ ।*		इवर्णान्त धातुओं से अच् प्रत्यय होता है, भाव तथा कर्तृभिन्न कारक में तथा संज्ञा में ।

अप् प्रत्ययः

धातोः कृत्, भावे, अक-म्	**५७. ॠदोरप् ३२३२ ।**	अप् ८७	ॠकारान्त तथा उवर्णान्त धातुओं से अप् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**५८. ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च ३२३४ ।** * *वशिरण्योश्चोपसंख्यानम् ।* * *घञर्थे कविधानाम् ।*		ग्रह आदि धातुओं से अप् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**५९. उपसर्गेऽदः ३२३५ ।**	अदः ६०	उपसर्ग रहने पर अद धातु से अप् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, अदः	**६०. नौ ण च ३२३७ ।** ।।३।।		नि उपपद रहने पर अद धातु से ण तथा अप् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**६१. व्यधजपोरनुपसर्गे ३२३८ ।**	अनुपसर्गे ६५	उपसर्ग विहीन व्यध जप धातुओं से अप् होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, अनु०	**६२. स्वनहसोर्वा ३२३९ ।**	वा ६५	उपसर्गहीन स्वन और हस धातु से वैकल्पिक अप् होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, अनु०, वा	**६३. यमः समुपनिविषु च ३२४० ।**		अनुपसर्ग यम अथवा सम् उप नि वि उपसर्ग युक्त यम धातु से विकल्पेन अप् होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, अनु०, वा	**६४. नौ गदनदपठस्वनः ३२४१ ।**	नौ ६५	नि पूर्वक गद णद पठ स्वन से वैकल्पिक अप् होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, अनु०, वा, नौ	**६५. क्वणो वीणायां च ३२४२ ।**		अनुपसर्ग अथवा निपूर्व क्वण धातु से अप् होता है सोपसर्ग वीणाअर्थ में भी ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**६६. नित्यं पणः परिमाणे ३२४३ ।**		परिमाण गम्यमान रहने पर पण से नित्य अप् होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**६७. मदोऽनुपसर्गे ३२४४ ।**		अनुपसर्ग मद धातु से अप् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**६८. प्रमदसंमदौ हर्षे ३२४५ ।**		हर्ष गम्यमान रहने पर प्रमद संमद निपातित होते हैं ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**६९. समुदोरजः पशुषु ३२४६ ।**		पशु विषय में सम् उद् पूर्वक अज धातु से धात्वर्थ में अप् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**७०. अक्षेषु ग्लहः ३२४७ ।**		अक्षविषय में धात्वर्थ में ग्लह निपातित होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**७१. प्रजने सर्तेः ३२४८ ।**		प्रजन अर्थ में सृ धातु से अप् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्	**७२. ह्वः संप्रसारणं च न्यभ्युपविषु ३२४९ ।**	ह्वः ७५ सम्प्रसारणम् ७५	नि अभि उप वि पूर्वक ह्वेञ् धातु से अप् तथा सम्प्रसारण होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, ह्वः, सम्प्रसारणम्	**७३. आङि युद्धे ३२५० ।**		युद्ध विषय में आङ् पूर्वक ह्वेञ् धातु से सम्प्रसारण और अप् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, ह्वः, सम्प्रसारणम्	**७४. निपानमाहावः ३२५१ ।**		निपान विषय में आङ् पूर्वक ह्वेञ् धातु से सम्प्रसारण अप् प्रत्यय तथा वृद्धि निपातित होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, ह्वः, सम्प्रसारणम्	**७५. भावेऽनुपसर्गस्य ३२५२ ।**	भावे-स्य ७६	भाव में अनुपसर्ग ह्वेञ् धातु से सम्प्रसारण और अप् होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, भावे-स्य	**७६. हनश्च वधः ३२५३ ।**	हनः ८७	भाव में अनुपसर्ग हन् धातु से अप् होता है । (सन्नियोग वश) होने वाला वध अन्तोदात्त होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, हनः	**७७. मूर्तौ घनः ३२५४ ।**		मूर्ति अभिधेय होने पर हन् को घन् आदेश तथा अप् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, हनः	**७८. अन्तर्घनो देशे ३२५५ ।**		यदि देश अभिधेय हो तो हन् से अप् तथा उसे घन आदेश होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, हनः	**७९. अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च ३२५६ ।**		द्वार के बाहरी प्रकोष्ठ अर्थ में हन् से प्रघण और प्रघाण शब्द निपातित होते हैं ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, हनः	**८०. उद्घनोऽत्याधानम् ३२५७ ॥४॥**		अत्याधान-ठीहा-में उत् पूर्वक हन् से उद्घन निपातित होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, हनः	**८१. अपघनोऽङ्गम् ३२५८ ।**		शरीर के एक भाग के लिये अप् पूर्वक हन् से अपघन निपातित होता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, हनः	**८२. करणेऽयोविद्रुषु ३२५९ ।**	करणे ८४	अयस् वि द्रु उपपद हों तो करण में हन् से अप् होता है तथा हन् को घन आदेश हो जाता है ।
धातोः कृत्, भावे, अक-म्, अप्, हनः, करणे	**८३. स्तम्बे क च ३२६० ।**		स्तम्ब उपपद रहने पर हन् से करण में क प्रत्यय होता है तथा अप् भी होता है ।

धातोः कृत्, भावे, **८४. परौ घः ३२६१ ।**
अक-म्, अप्, हनः,
करणे

परि उपपद में हन् धातु से करण में अप् होता है तथा घ आदेश हन् को हो जाता है।

धातोः कृत्, भावे, **८५. उपघ्न आश्रये ३२६३ ।**
अक-म्, अप्, हनः

सामीप्य में उपपूर्वक हन् से अप् तथा उपधा लोप होता है।

धातोः कृत्, भावे, **८६. सङ्घोद्घौ गणप्रशंसयोः ३२६४ ।**
अक-म्, अप्, हनः

गणार्थ में सम् पूर्वक तथा प्रशंसा में उत् पूर्वक हन् अप् प्रत्यय टिलोप और घत्व निपातित होता है।

धातोः कृत्, भावे, **८७. निघो निमितम् ३२६५ ।**
अक-म्, अप्, हनः

भलीभांति जानने के अर्थ में नि पूर्वक हन् धातु से अप्, टिलोप घत्व निपातित होता है।

धातोः कृत्, भावे, **८८. ड्वितः क्त्रिः ३२६६ ।**
अक-म्

ड्वित् धातु से क्त्रि प्रत्यय होता है भाव तथा कर्तृभिन्न कारक में।

धातोः कृत्, भावे, **८९. ट्वितोऽथुच् ३२६७ ।**
अक-म्

भावादि में ही ट्वित् धातु से अथुच् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, **९०. यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ् ३२६८ ।**
अक-म्

भावादि में ही यज आदि धातुओं से नङ् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, **९१. स्वपो नन् ३२६९ ।**
अक-म्

स्वप् धातु से नन् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, **९२. उपसर्गे घोः किः ३२७० ।** घोः किः ९३
अक-स्

भाव तथा कर्तृभिन्न कारक में सोपसर्ग घु संज्ञक धातुओं से कि प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, **९३. कर्मण्यधिकरणे च ३२७१ ।**
अक-म्, घोः किः

कर्म उपपद रहने पर अधिकरण में घु संज्ञक धातुओं से कि प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, **९४. स्त्रियां क्तिन् ३२७२ ।** स्त्रियां ११२
अक-म् **** निष्ठायां सेट इति वक्तव्यम् ।*** क्तिन् ९७

स्त्रीलिङ्ग में भावादि में धातु से क्तिन् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, **९५. स्थागापापचो भावे ३२७३ ।** भावे ९६
अक-म्, स्त्रियां, क्तिन् **** श्रुयजीषिस्तुभ्यः करणे ।***
**** ग्लाम्लाज्याहाभ्यो निः ।***

स्था गा पा पच धातुओं से भाव में स्त्रीलिङ्ग में क्तिन् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, **९६. मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः ३४२० ।** उदात्तः १००
अक-म्, स्त्रियां,
क्तिन्, भावे

मन्त्र विषय में वृष आदि धातुओं से भाव तथा स्त्रीलिङ्ग में क्तिन् प्रत्यय होता है, वह उदात्त होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां, क्तिन्, उदात्तः
९७. ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्तयश्च ३२७४
ऊति आदि शब्द निपातित होते हैं।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां, उदातः
९८. व्रजयजोर्भावे क्यप् ३२७५। क्यप् १००
व्रज और यज धातु से स्त्रीलिङ्ग भाव में क्यप् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां, क्यप्, उदात्तः
९९. संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविद्षुञ्शीङ्भृञिणः ३२७६।
संज्ञा विषय में समज निषद निपत मन विद षुञ् शीङ् भृञ् तथा इण् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है। वह उदात्त होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां, क्यप्, उदात्तः
१००. कृञः श च ३२७७ ।।५।। श १०१
कृ धातु से स्त्रीलिङ्ग में श होता है। क्यप् तथा क्तिन् भी होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां, शः
१०१. इच्छा ३२७८।
** परिचर्यापरिसर्यामृगयाटाट्यानामुपसंख्यानम्।*
** जागर्तेरकारो वा।*
इष धातु से स्त्रीलिङ्ग में इच्छा निपातित होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां
१०२. अ प्रत्ययात् ३२७९।
प्रत्ययान्त धातुओं से स्त्रीलिङ्ग में अ प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां
१०३. गुरोश्च हलः ३२८०।
** निष्ठायां सेट इति वक्तव्यम्।*
हलन्त गुरुमान् धातु से स्त्रीलिङ्ग में अ प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां
१०४. षिद्भिदादिभ्योऽङ् ३२८१। अङ् १०६
षित् और भिदा आदि धातुओं से स्त्रीलिङ्ग में अङ् प्रत्यय होता है।

(४२) ('भिदा[1] विदारणे' २९) ('छिदा द्वैधीकरणे' ३०) विदा। क्षिपा। ('गुहा गिर्योषध्योः' ३१) श्रद्धा। मेधा गोधा। ('आरा शस्त्र्याम्' ३२) हारा। ('कारा बन्धने' ३३) क्षिया। ('तारा ज्योतिषि' ३४) ('धारा प्रपातने' ३५) रेखा चूडा पीडा वपा वसा मृजा। ('क्रपेः संप्रसारणं च' ३६) कृपा। **इति भिदादिः।।**
**** क्रपेः संप्रसारणं च।***

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां, अङ्
१०५. चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च ३२८२।
चिति पूज कथ कुबि चर्च धातु से स्त्रीलिङ्ग में अङ् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां, अङ्
१०६. आतश्चोपसर्गे ३२८३।
उपसर्ग रहने पर आदन्त धातु से स्त्रीलिङ्ग में अङ् प्रत्यय होता है।

---

१. एवं सर्वत्र धनुराकारान्तर्गतानि वार्तिकेष्वागतान्यपि गणसूत्रवत् गणे पठितानि भवन्ति।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां **१०७. ण्यासश्रन्थो युच् ३२८४ ।**
***घट्टिवन्दिविदिभ्यश्चेति वाच्यम् ।**
***इषेरनिच्छार्थस्य ।**
***परेर्वा ।**
ण्यन्त, आस तथा श्रन्थ धातु से स्त्रीलिङ्ग में युच् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां **१०८. रोगाख्यायां ण्वुल्बहुलम् ३२८५ ।** ण्वुल् ११०
***धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल् ।**
***इक्श्तिपौ धातुनिर्देशे ।**
***वर्णात्कारः ।**
***रादिफः ।**
***मत्वर्थाच्छः ।**
***इणजादिभ्यः ।**
***इञ् वपादिभ्यः ।**
***इत्कृष्यादिभ्यः ।**
***संपदादिभ्यः क्विप् ।**
(४३) (वा०ग०) । संपद् विपद् आपद् प्रतिपद् परिषद्—**एते संपदादयः ।।**
रोगाख्या गम्यमान रहने पर धातु से बहुल प्रकार से ण्वुल् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां, ण्वुल **१०९. संज्ञायाम् ३२८६ ।**
संज्ञा में धातु से ण्वुल् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां, ण्वुल् **११०. विभाषाख्यानपरिप्रश्नयोरिञ्च ३२८७**
परिप्रश्न और आख्यान गम्यमान रहने पर धातु से इञ् प्रत्यय तथा ण्वुल् भी होता है। (यथा प्राप्त अन्य भी)

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां **१११. पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच् ३२८८ ।**
पर्याय अर्ह ऋण उत्पत्ति अर्थों में धातु से ण्वुच् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, भावे, अक-म्, स्त्रियां **११२. आक्रोशे नञ्यनिः ३२८९ ।**
धातु से नञ् उपपद रहने पर अनि प्रत्यय होता है, आक्रोश में।

धातोः कृत् **११३. कृत्यल्युटो बहुलम् २८४१ ।**
कृत्यसंज्ञक और ल्युट् प्रत्यय बहुल प्रकार से होते हैं।

धातोः कृत् **११४. नपुंसके भावे क्तः ३०९० ।** नपुं-के, भावे ११६
नपुंसक लिङ्ग में तथा भाव में धातु से क्त प्रत्यय होते हैं।

धातोः कृत्, नपुं-भा० **११५. ल्युट् च ३२९० ।** ल्युट् ११७
नपुंसक लिङ्ग में तथा भाव में धातु से ल्युट् प्रत्यय होते हैं।

धातोः कृत्, नपुं-भा०, ल्युट् **११६. कर्मणि च येन संस्पर्शात्कर्तुः शरीरसुखम् ३२९१ ।**
जिसके संस्पर्श से कर्ता को शरीर सुख प्राप्त हो उस कर्म के उपपद रहने पर धातु से ल्युट् प्रत्यय होता है।

धातोः कृत्, ल्युट्	**११७. करणाधिकरणयोश्च ३२९३ ।**	कर-योः १२५	करण और अधिकरण में धातु से ल्युट् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, कर-योः	**११८. पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण ३२९६ ।**	पुंसि-म् १२५ घः ११९	करणाधिकरण में पुंल्लिङ्ग अभिधेय रहने पर प्रायः धातु से घ प्रत्यय होता है, संज्ञा में ।
धातोः कृत्, कर-योः, पुंसि सं०, घः	**११९. गोचरसंचरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्च ३२९८ ।**		पूर्वार्थ में ही घ प्रत्ययान्त गोचर आदि शब्द निपातित होते हैं ।
धातोः कृत्, कर-योः, पुंसि सं०	**१२०. अवे तॄस्त्रोर्घञ् ३२९९** ।।६।।	घञ् १२५	अव उपपद रहने पर तॄ और स्तॄ धातु से घञ् प्रत्यय होता है करणाधिकरण और संज्ञा में ।
धातोः कृत्, कर-योः, पुंसि सं०, घञ्	**१२१. हलश्च ३३०० ।** ** घञ्विधाववहाराधारावायानामुपसंख्यानम् ।*		हलन्त धातु से घञ् प्रत्यय पूर्वोक्त स्थिति में होता है ।
धातोः कृत्, कर-योः, पुंसि सं०, घञ्	**१२२. अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च ३३०१ ।**		घञन्त अध्याय आदि शब्द निपातित होते हैं ।
धातोः कृत्, कर-योः, पुंसि सं०, घञ्	**१२३. उदङ्कोऽनुदके ३३०२ ।**		धात्वर्थ यदि अनुदक विषय हो तो उदङ्क शब्द निपातित होता है ।
धातोः कृत्, कर-योः, पुंसि सं०, घञ्	**१२४. जालमानायः ३३०३ ।**		यदि जाल अर्थ हो तो आपूर्वक नी से आनाय बनता है ।
धातोः कृत्, कर-योः, पुंसि सं०, घञ्	**१२५. खनो घ च ३३०४ ।** ** खनेर्डडरेकेकबका वाच्याः ।*		करणाधिकरण में खन् धातु से घ और घञ् होते हैं ।
धातोः कृत्	**१२६. ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् ३३०५ ।**	ईष-थेषु १३० खल् १२७	ईषत् दुस् सु के उपपद में रहने पर कृच्छ्र और अकृच्छ्र अर्थ में भाव और कर्म में खल् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, ई-थेषु, खल्	**१२७. कर्तृकर्मणोश्च भूकृञोः ३३०८ ।** ** कर्तृकर्मणोश्च्व्यर्थयोरिति वाच्यम् ।*		कर्ता कर्म ईषत् दुस् सु उपपद में रहें तो भू और कृ धातु से खल् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, ई-थेषु	**१२८. आतो युच् ३३०९ ।**	युच् १३०	ईषत् दुस् सु उपपद में हों तो आकारान्त धातु से युच् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, ई-थेषु, युच्	**१२९. छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ३४२१ ।**	छन्दसि १३०	ईषदादि उपपद में हो तो छन्द में गत्यर्थक धातुओं से युच् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, युच्, छन्दसि	**१३०. अन्येभ्योऽपि दृश्यते ३४२२ ।** ** भाषायां शासियुधिदृशिधृषिमृषिभ्यो युज्वाच्यः ।*		अगत्यर्थक धातुओं से भी छन्द में युच् प्रत्यय होता है ।

लकारार्थनिर्देशः

धातोः कृत्	**१ ३ १. वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा २७८९ ।**	वर्त-वत् १ ३ २	वर्तमाने लट् से उणादयो बहुलम् तक जो भी प्रत्यय हुये हैं वे वर्तमान के समीप में भी विकल्प से वर्तमान सरीखे ही होंगे ।
धातोः कृत्, वर्त-वत्	**१ ३ २. आशंसायां भूतवच्च २७९० ।**	आ-यां १ ३ ३	आशंसा में भूत और वर्तमान की तरह भविष्य में भी प्रत्यय होते हैं ।
धातोः कृत्, आ-यां	**१ ३ ३. क्षिप्रवचने लृट् २७९१ ।**		क्षिप्रवचन उपपद में हो और आशंसा गम्यमान हो तो धातु से लृट् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्	**१ ३ ४. आशंसावचने लिङ् २७९२ ।**		आशंसा वचन उपपद में हो तो धातु से लिङ् होता है ।
धातोः कृत्	**१ ३ ५. नानद्यतनवत्क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः २७९३ ।**	ना-वत् १ ३ ८	क्रियाप्रबन्ध और सामीप्य गम्यमान रहने पर धातु से अनद्यतनवत् लकार नहीं होते हैं ।
धातोः कृत्, ना-वत्	**१ ३ ६. भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् २७९४ ।**	भ-ति १ ३ ९ म-ने १ ३ ८ अव-न् १ ३ ७	मर्यादा वचन और उसके प्रविभाग के रहने पर अनद्यतनवत् प्रत्ययविधि नहीं होती है ।
धातोः कृत्, ना-वत्, भ-ति, म-ने अव-न्	**१ ३ ७. कालविभागे चानहोरात्राणाम् २७९५ ।**	काल-म् १ ३ ८	काल मर्यादा विभाग में उसके प्रविभाग के रहने पर भविष्य काल में अनद्यतनवत् प्रत्यय विधि नहीं होती है ।
धातोः कृत्, ना-वत्, भ-ति, म-ने, का-म्	**१ ३ ८. परस्मिन्विभाषा २७९६ ।**		यदि अहोरात्र सम्बन्धी प्रविभाग न हो तो अन्य विभाग में अनद्यतनवत् विधि विकल्प से होती है ।
धातोः कृत्, भ-ति,	**१ ३ ९. लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ २२२९**	लिङ्-त्तौ १ ४ १	यदि क्रियातिपत्ति हो तो लिङ्निमित्त भविष्यकाल में लृङ् होता है ।
धातोः कृत्, लिङ्-त्तौ	**१ ४ ०. भूते च २७९७** ॥७॥	भूते १ ४ १	भूत में भी लिङ् निमित्त क्रियातिपत्ति रहने पर लृङ् होता है ।
धातोः कृत्, लिङ्-त्तौ, भूते	**१ ४ १. वोताप्योः २७९८ ।**	उताप्योः १ ५ १	३.३.१५२ तक 'भूते लिङ् निमित्ते क्रियातिपत्तौ लृङ् वा' का अधिकार रहेगा ।
धातोः कृत्, उताप्योः[१]	**१ ४ २. गर्हायां लडपिजात्वोः २७९९ ।**	ग-यां १ ४ ४ लट् १ ४ ३	अपि और जातु उपपद में हो और गर्हा हो तो (सभी काल में) लट् होता है ।

१. उताप्योः की अनुवृत्ति का तात्पर्य 'भूते लिङ्निमित्ते क्रियातिपत्तौ लृङ् वा' से है, उताप्योः के शब्दार्थ से नहीं है । नात्र शब्दार्थो विवक्षितः, अपि तु १३९-१४० सूत्राङ्क निर्दिष्टार्थो विवक्षितः ।

धातोः कृत्, उता-प्योः, लट्, ग-यां	**१४३. विभाषा कथमि लिङ् च २८०० ।**		कथम् उपपद में हो और गर्हा हो तो लिङ् लट् दोनों (प्राप्त सभी) होते हैं ।
धातोः कृत्, उता-प्योः, गं-यां	**१४४. किंवृत्ते लिङ्लृटौ २८०१ ।**	लिङ्-टौ १४५	विभक्त्यन्त डतरडतमान्त किं शब्द निष्पन्न के उपपद में रहने पर गर्हा में लिङ् और लृट् होते हैं ।
धातोः कृत्, उता-प्योः, लिङ्-टौ	**१४५. अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि २८०२**	अन-योः १४८	किंवृत्त उपपद में न हो तो भी असंभावना और अक्षमा अर्थ में धातु से लिङ् और लृट् होते हैं ।
धातोः कृत्, उता-प्योः, अन-योः	**१४६. किंकिलास्त्यर्थेषु लृट् २८०३ ।**		किंकिल तथा अस्त्यर्थक उपपद में हो तो धातु से लृट् होता है ।
धातोः कृत्, उता-प्योः, अन-योः	**१४७. जातुयदोर्लिङ् २८०४ ।** ** यदायद्योरुपसंख्यानम् ।*	लिङ् १५०	जातु और यत् उपपद में हो असंभावना अक्षमा में लिंङ् होता है ।
धातोः कृत्, उता-प्योः, अन-योः, लिङ्	**१४८. यच्चयत्रयोः २८०५ ।**	य-योः १५०	यच्च और यत्र उपपद में हो तथा अनवक्लृप्ति या अमर्ष गम्यमान हो तो धातु से लिङ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, उता-प्योः, य-योः, लिङ्	**१४९. गर्हायां च २८०६ ।**		यच्च और यत्र उपपद में हो तथा गर्हा गम्यमान हो तो धातु से लिङ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, उता-प्योः, य-योः, लिङ्	**१५०. चित्रीकरणे च २८०७ ।**	चि-णे १५१	यच्च और यत्र उपपद में हो तथा चित्रीकरण गम्यमान हो तो धातु से लिङ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, उता-प्योः, चि-णे	**१५१. शेषे लृडयदौ २८०८ ।**		यच्च और यत्र के अतिरिक्त भी उपपद में हो तथा चित्रीकरण हो तो लृट् होता है पर यदि शब्द न हो ।
धातोः कृत्	**१५२. उताप्योः समर्थयोर्लिङ् २८०९ ।**	लिङ् १५५	समानार्थ उत अपि शब्द के उपपद में रहने पर धातु से लिङ् होता है ।
धातोः कृत्, लिङ्	**१५३. कामप्रवेदनेऽकच्चिति २८१० ।**		कामप्रवेदन में धातु से लिङ् होता है पर उपपद 'कच्चित्' न हो ।
धातोः कृत्, लिङ्	**१५४. संभावनेऽलमिति चेत्सिद्धाप्रयोगे २८११**	संभा-गे १५५	सिद्ध के अप्रयोग में यदि सम्भावन ही पर्याप्त हो तो ऐसे संभावन में लिङ् होता है ।

धातोः कृत्, लिङ्, संभा-गे	**१५५. विभाषा धातौ संभावनवचनेऽयदि** २८१२।	विभाषा १५६	यदि यत् शब्द का प्रयोग न हो और धातु से पहले संभावनवाचक शब्द हों तो धातु से विकल्प से लिङ् होता है।
धातोः कृत्, विभाषा	**१५६. हेतुहेतुमतोर्लिङ् २८१३।**		हेतु भूत अथवा फलभूत अर्थ में वर्त-मान धातु से वैकल्पिक लिङ् होता है।
धातोः कृत्	**१५७. इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ २८१४।** ** कामप्रवेदन इति वक्तव्यम्।*	इ-षु १५९	यदि इच्छार्थक शब्द धातु के उपपद में हो तो धातु से लिङ् और लोट् होते हैं।
धातोः कृत्, इ-षु	**१५८. समानकर्तृकेषु तुमुन् ३१७६।**	स-षु १५९	एक कर्तृक और इच्छार्थक उपपद रहने पर धातु से तुमुन् प्रत्यय भी होता है।
धातोः कृत्, इ-षु, स-षु	**१५९. लिङ् च २८१५।**	लिङ् १६०	एककर्तृक और इच्छार्थक उपपद रहने पर धातु से लिङ् प्रत्यय भी होता है।
धातोः कृत्, लिङ्	**१६०. इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने २८१६ ॥८॥**		इच्छार्थक धातुओं से वर्तमान काल में विकल्प से लिङ् होता है।
धातोः कृत्	**१६१. विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् २२०८।**	विधि-षु १६२	विधि निमन्त्रण आमन्त्रण अधीष्ट संप्रश्न तथा प्रार्थना अर्थों में धातु से लिङ् होता है।
धातोः कृत्, विधि-षु	**१६२. लोट् च २१९४।**	लोट् १६३	विध्यादि अर्थों में धातु से लोट् भी होता है।
धातोः कृत्, लोट्	**१६३. प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च २८१७**	प्रैषा-षु १६५	प्रैष अतिसर्ग प्राप्तकाल अर्थों में धातु से कृत्य प्रत्यय होते हैं तथा लोट् भी होता है।
धातोः कृत्, प्रैषा-षु	**१६४. लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके २८१८।**	ऊ-के १६५	प्रैषादि गम्यमान रहने पर ऊर्ध्वमौहूर्तिक अर्थ में लिङ् होता है।
धातोः कृत्, प्रैषा-षु, ऊ-के	**१६५. स्मे लोट् २८१९।**	स्मे लोट् १६६	प्रैषादि गम्यमान रहने पर ऊर्ध्व मौहूर्त्तिक अर्थ में लोट् होता है, यदि उपपद में स्म हो।
धातोः कृत्, स्मे लोट्	**१६६. अधीष्टे च २८२०।**		स्म के उपपद में रहने पर यदि अधीष्ट गम्यमान हो तो धातु से लोट् होता है।
धातोः कृत्	**१६७. कालसमयवेलासु तुमुन् ३१७९।**	का-सु १६८	काल समय वेला उपपद में हो तो धातु से तुमुन् होता है।

धातोः कृत्, का-सु	**१६८. लिङ्यदि २८२१ ।**		कालादि अर्थों में यदि यत् शब्द उपपद में हो तो लिङ् होता है ।
धातोः कृत्	**१६९. अर्हे कृत्यतृचश्च २८२२ ।**		अर्ह यदि वाच्य या गम्यमान हो तो कृत्य तृच् तथा लिङ् होते हैं ।
धातोः कृत्	**१७०. आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ३३११ ।**	आव-योः १७१	यदि अवश्यभाव अथवा आधमर्ण्य वाच्य हो तो धातु से णिनि प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, आ-योः	**१७१. कृत्याश्च ३३१२ ।**	कृत्याः १७२	आवश्यक और आधमर्ण्य में ही धातु से कृत्य प्रत्यय होते हैं ।
धातोः कृत्, कृत्याः	**१७२. शकि लिङ् च २८२३ ।**		शक्नोति अर्थ को बताने के लिये यदि धातु का प्रयोग हो तो कृत्य-प्रत्यय और लिङ् प्रयुक्त होता है ।
धातोः कृत्	**१७३. आशिषि लिङ्लोटौ २१९५ ।**	आशिषि १७४	आशीः विशिष्ट अर्थ में विद्यमान धातु से लिङ् और लोट् होते हैं ।
धातोः कृत्, आशिषि	**१७४. क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम् ३३१३ ।**		आशीः अर्थ में यदि संज्ञा गम्यमान हो तो क्तिच् और क्त प्रत्यय होते हैं ।
धातोः कृत्	**१७५. माङि लुङ् २२१९**	माङि लुङ् १७६	माङ् उपपद रहने पर धातु से लुङ् होता है ।
धातोः कृत्, माङि लुङ्	**१७६. स्मोत्तरे लङ् च २२२० ।।**		उपपद में माङ् हो और इसके बाद स्म हो तो धातु से लङ् और लुङ् दोनों होते हैं ।

उणादय इङो निवासव्यधजपोरपघन इच्छा
हलश्च वोताप्योर्विधिषोडश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

लकारार्थनिर्देशः

धातोः कृत्	**१. धातुसंबन्धे प्रत्ययाः २८२४ ।**	धा-न्धे ६	धात्वर्थों के सम्बन्ध में अयथा-कालोक्त प्रत्यय भी साधु होते हैं ।
धातोः कृत्, धा-न्धे	**२. क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ वा च तध्वमोः २८२५ ।**	लोट्-मोः ३	समभिहार विशिष्ट क्रियावचन धातु से सभी कालों में लोट् होता है और उस लोट् में केवल हि और स्व होता है । लोट् के त और ध्वम् में यह नियम विकल्प से होता है ।

धातोः कृत्, धा-न्धे, **३. समुच्चयेऽन्यतरस्याम् २८२६ ।** लोट्-मोः

समुच्चीयमान क्रियाविशिष्ट धातु से सभी कालों में लोट् होता है और उस लोट् में केवल हि स्व होता है। यह भी नियम त ध्वम् के यहाँ विकल्प से होता है।

धातोः कृत्, धा-न्धे **४. यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् २८२७ ।** अनु-गः ५

पूर्वकृत लोट् के विधान में यथा-विधि अनुप्रयोग होता है।

धातोः कृत्, धा-न्धे, **५. समुच्चये सामान्यवचनस्य २८२८ ।** अनु-गः

समुच्चय वाले लोट् के विधान में सामान्यवचन धातु का अनुप्रयोग होता है।

धातोः कृत्, धा-न्धे **६. छन्दसि लुङ्लङ्लिटः ३४२३ ।** छन्दसि १७

वेद में धात्वर्थसम्बन्ध में सभी कालों में लुङ् लङ् लिट् होते हैं।

धातोः कृत्, छन्दसि **७. लिङर्थे लेट् ३४२४ ।** लेट् ८

वेद में लिङ् के अर्थ में लेट् भी होता है।

धातोः कृत्, छन्दसि, **८. उपसवादाशङ्कयोश्च ३४३१ ।** लेट्

उपसंवाद और आशङ्का गम्यमान हो तो वेद में लेट् होता है।

तुमर्थ प्रत्ययः

धातोः कृत्, छन्दसि **९. तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यै-कध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः ३४३६ ।** तुमर्थे १३

वेद में तुमुन् के अर्थ में धातु से से सेन् असे असेन् क्से कसेन् अध्यै अध्यैन् कध्यै कध्यैन् शध्यै शध्यैन् तवै तवेङ् तवेन् प्रत्यय होते हैं।

धातोः कृत्, छन्दसि, **१०. प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै ३४३७ ।** तुमर्थे

तुमर्थ के विषय में वेद में प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै शब्द निपातित होते हैं।

धातोः कृत्, छन्दसि, **११. दृशे विख्ये च ३४३८ ।** तुमर्थे

वेद में तुमर्थ में ही दृशे विख्ये निपातित होते हैं।

धातोः कृत्, छन्दसि, **१२. शकि णमुल्कमुलौ ३४३९ ।** तुमर्थे

शक्लृ धातु उपपद में हो तो तुमर्थ में वेद में णमुल् कमुल् होते हैं।

धातोः कृत्, छन्दसि, **१३. ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ३४४० ।** तुमर्थे

ईश्वरशब्द उपपद में हो तुमर्थ में वेद में तोसुन् कसुन् होते हैं।

धातोः कृत्, छन्दसि **१४. कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः ३४४१ ।** कृत्यार्थे १५

वेद में कृत्यार्थ (भावकर्म) में तवै केन् केन्य त्वन् प्रत्यय होते हैं।

धातोः कृत्, छन्दसि, **१५. अवचक्षे च ३४४२ ।** कृत्यार्थे

वेद में कृत्यार्थ में अवपूर्वक चक्षिङ् से एश् निपातित होता है।

धातोः कृत्, छन्दसि	**१६. भावलक्षणे स्थेण्कृञ्वदिचरिहुतमिजनिभ्यस्तोसुन् ३४४३ ।**	भा-णे १७	वेद में तुमर्थ में भावलक्षण में वर्तमान स्था इण् कृञ् वदि चरि हु तमि जनि धातुओं से तोसुन् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, छन्दसि, भा-णे	**१७. सृपितृदोः कसुन् ३४४४ ।**		तुमर्थ में वेद में भावलक्षण में वर्तमान सृप् तृद् धातु से कसुन् प्रत्यय होता है ।
	क्त्वाप्रत्ययः		
धातोः कृत्	**१८. अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा ३३१६ ।**	क्त्वा २४	प्राचीन आचार्यों के मत में प्रतिषेधार्थक अलं खलु का यदि प्रयोग हो तो धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, क्त्वा	**१९. उदीचां माङो व्यतीहारे ३३१७ ।**		व्यतिहार में माङ् धातु से क्त्वा होता है, उदीच्यों के मत में ।
धातोः कृत्, क्त्वा	**२०. परावरयोगे च ३३१९ ।। १ ।।**		पर से पूर्व का और अवर से पर का योग हो तो धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, क्त्वा	**२१. समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ३३२० ।**	स-ले २६	समानकर्तृक दो धात्वर्थों में पूर्वकाल में वर्तमान धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, क्त्वा, स-ले	**२२. आभीक्ष्ण्ये णमुल्च ३३४३ ।**	आ-ये २३ णमुल् २४	आभीक्ष्ण्य में णमुल् तथा क्त्वा दोनों होते हैं ।
धातोः कृत्, क्त्वा, स-ले, आ० णमुल्	**२३. न यद्यनाकाङ्क्षे ३३४४ ।**		यत् शब्द उपपद में हो और अनाकाङ्क्ष वाच्य हो तो क्त्वा णमुल् दोनों नहीं होते हैं ।
धातोः कृत्, क्त्वा, स-ले, णमुल्	**२४. विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु ३३४५ ।**		अग्रे प्रथम पूर्व उपपद में हों तो पूर्वकाल में वर्तमान धातु से क्त्वा णमुल विकल्प से होते हैं ।
धातोः कृत्, स-ले	**२५. कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ् ३३४६ ।**	कृञः २८	आक्रोश गम्यमान हो और कर्म उपपद में हो तो कृ धातु से खमुञ् होता है ।
	णमुल् प्रत्ययः		
धातोः कृत्, कृञः, स-ले	**२६. स्वादुमि णमुल् ३३४७ ।**	णमुल् ६४	स्वादु अर्थक उपपद में हो कृ धातु से णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, कृञः, णमुल्	**२७. अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत् ३३४८ ।**	सिद्ध-गः २८	अन्यथा एवं कथम् इत्थम् उपपद में हो और सिद्धाप्रयोग हो तो कृ धातु से णमुल् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कृञः, णमुल्, सिद्ध-गः **२८. यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ३३४९ ।**
असूयाप्रतिवचन गम्यमान हो और यथा तथा उपपद में हो तो कृ धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल् **२९. कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये ३३५० ।** कर्मणि ३६
कर्म उपपद में हो तो साकल्य विशिष्ट अर्थ में दृश् विद् धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि, णमुल् **३०. यावति विन्दजीवोः ३३५१ ।**
यावत् शब्द उपपद में हो तो विदि और जीव् धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि, णमुल् **३१. चर्मोदरयोः पूरेः ३३५२ ।** पूरेः ३२
चर्म और उदर कर्मोपपद हों तो पूरि से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि, णमुल्, पूरेः **३२. वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्यतरस्याम् ३३५३ ।** वर्ष-णे ३३
पूरि से णमुल् होता है और ऊ का विकल्प से लोप होता है, यदि समुदाय से वर्षा के प्रमाण की इयत्ता जानी जाय ।

धातोः कृत्, कर्मणि, णमुल्, वर्ष-णे **३३. चेले क्नोपेः ३३५४ ।**
वस्त्रार्थक कर्म उपपद में हो तो ण्यन्त क्नूयी धातु से णमुल् होता है यदि वर्षा के प्रमाण की इयत्ता हो ।

धातोः कृत्, कर्मणि, णमुल् **३४. निमूलसमूलयोः कषः ३३५५ ।**
निमूल समूल उपपद में हों तो कष् धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि, णमुल् **३५. शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ३३५६ ।**
कर्मवाची शुष्क चूर्ण रूक्ष उपपद में हों तो पिष् से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि, णमुल् **३६. समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः ३३५७ ।**
कर्मवाचक समूल अकृत जीव यदि उपपद में हों तो क्रमशः हन् कृञ् ग्रह धातु से णमुल् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, णमुल् **३७. करणे हनः ३३५८ ।** करणे ४०
करणोपपद में हन् धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल्, करणे **३८. स्नेहने पिषः ३३५९ ।**
स्नेहनवाची करण के उपपद में रहने पर पिष् से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल्, करणे **३९. हस्ते वर्तिग्रहोः ३३६० ।**
हस्तवाची करणोपपद में ण्यन्त वृत् तथा ग्रह से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल्, करणे **४०. स्वे पुषः ३३६१ ।** ।। २ ।।
स्ववाची करणोपपद में पुष् से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल् **४१. अधिकरणे बन्धः ३३६२ ।**	बन्धः ४२	अधिकरणवाची उपपद में हो तो बन्ध से णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, णमुल्, **४२. संज्ञायाम् ३३६३ ।** बन्धः		संज्ञा में बन्ध धातु से णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, णमुल् **४३. कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः ३३६४ ।**	कर्त्रोः ४५	कर्तृवाची जीव और पुरुष यदि उपपद में हो तो क्रमशः नश और वह धातु से णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, कर्त्रोः, **४४. ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ३३६५ ।** णमुल्		कर्तृवाची ऊर्ध्व उपपद में हो तो शुष् और पूर से णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, कर्त्रोः, **४५. उपमाने कर्मणि च ३३६६ ।** णमुल्		कर्ता अथवा उपमान कर्म उपपद में हो तो धातु से णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, णमुल् **४६. कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः ३३६७ ।**		३४वें से ४५वें सूत्र तक जिससे जैसें णमुल् कहा गया है वैसा ही होता है ।
धातोः कृत्, णमुल् **४७. उपदंशस्तृतीयायाम् ३३६८ ।**	तृतीयायां ५१	उपपूर्वक दंश धातु से णमुल् होता है, यदि तृतीयान्त उपपद हो ।
धातोः कृत्, तृ-यां, **४८. हिंसार्थानां च समानकर्मकाणाम् ३३६९** णमुल्		तृतीयान्त उपपद रहने पर अनु-प्रयोग धातु के समानकर्मक हिंसा-र्थक धातु से णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, तृ-यां, **४९. सप्तम्यां चोपपीडरुधकर्षः ३३७० ।** णमुल्	सप्तम्यां ५१	उपपूर्वक पीड रुध कर्ष धातुओं से सप्तम्यन्त उपपद रहने पर अथवा तृतीयान्त उपपद रहने पर णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, तृ-यां, **५०. समासत्तौ ३३७१ ।** णमुल्, सप्तम्यां		यदि समासत्ति गम्यमान हो तो तृतीया अथवा सप्तमी के उपपद में रहने पर धातु से णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, तृ-यां, **५१. प्रमाणे च ३३७२ ।** णमुल्, सप्तम्यां		प्रमाण गम्यमान हो उपपद में तृतीया सप्तमी हो तो णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, णमुल् **५२. अपादाने परीप्सायाम् ३३७३ ।**	परीप्सायां ५३	परीप्सा गम्यमान हो उपपद में अपादान हो तो णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, णमुल्, **५३. द्वितीयायां च ३३७४ ।** परीप्सायां	द्वि-यां ५८	द्वितीया उपपद में हो परीप्सा गम्यमान हो तो णमुल् होता है ।
धातोः कृत्, णमुल्, **५४. स्वाङ्गेऽध्रुवे ३३७६ ।** द्वितीयायां	स्वाङ्गे ५५	अध्रुव स्वाङ्गवाची द्वितीयान्त उपपद में हो तो धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, स्वाङ्गे, णमुल्, द्वितीयायां — **५५. परिक्लिश्यमाने च ३३७७ ।** — परिक्लिश्यमान स्वाङ्गवाची द्वितीयान्त उपपद में हो तो धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल्, द्वितीयायां — **५६. विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमानयोः ३३७८ ।** — यदि व्याप्यमान और आसेव्यमान अर्थ गम्यमान हो तो विश् पत् पद् और स्कदि धातु से णमुल् होता है, द्वितीयान्त उपपद में रहे तो ।

धातोः कृत्, णमुल्, द्वितीयायां — **५७. अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु ३३७९** — क्रियान्तर में वर्तमान अस् तृष् धातु से णमुल् होता है यदि द्वितीयान्त उपपद हो और वह कालवाची हो ।

धातोः कृत्, णमुल्, द्वितीयायां — **५८. नाम्न्यादिशिग्रहोः ३३८० ।** — द्वितीयान्त नाम उपपद में हो तो आदिश् और ग्रह से णमुल् होता है ।

क्त्वाणमुल् प्रत्ययः

धातोः कृत्, णमुल् — **५९. अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ ३३८१ ।** — कृञः ६० क्त्वा-लौ ६४ — अव्यय उपपद में हो अयथाभिप्रेताख्यान गम्यमान हो तो कृ धातु से क्त्वा और णमुल् दोनों होते हैं ।

धातोः कृत्, णमुल्, क्त्वा-लौ, कृञः — **६०. तिर्यच्यपवर्गे ३३८२** ।। ३ ।। — यदि अपवर्ग गम्यमान हो और तिर्यक् शब्द उपपद में हो तो कृ धातु से क्त्वा और णमुल् दोनों होते हैं ।

धातोः कृत्, णमुल्, क्त्वा-लौ — **६१. स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ३३८३ ।** — कृभ्वोः ६२ — स्वाङ्गवाची तस् प्रत्यय यदि उपपद में हो तो कृ और भू से क्त्वा और णमुल् दोनों होते हैं ।

धातोः कृत्, णमुल्, क्त्वा-लौ, कृभ्वोः — **६२. नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे ३३८४ ।** — च्व्यर्थविषयक नाधार्थ प्रत्ययान्त उपपद में हो तो कृ भू से क्त्वा णमुल् होते हैं ।

धातोः कृत्, णमुल्, क्त्वा-लौ — **६३. तूष्णीमि भुवः ३३८५ ।** — भुवः ६४ — तूष्णीम् उपपद में हो तो भू से क्त्वा णमुल् होते हैं ।

धातोः कृत्, णमुल्, क्त्वा-लौ, भुवः — **६४. अन्वच्यानुलोम्ये ३३८६ ।** — अन्वक् शब्द उपपद में हो तो भू से क्त्वा णमुल् होते है, यदि आनुलोम्य हो ।

	तुमुन् प्रत्ययः		
धातोः कृत्	**६५. शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन् ३१७७ ।**	तुमुन् ६६	शक् धृष ज्ञा ग्लै घट रभलभक्रम सह अर्ह उपपद में हों एवम् अस्त्यर्थ में भी धातुमात्र से तुमुन् होता है ।
धातोः कृत्, तुमुन्	**६६. पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु ३१७८ ।**		पर्याप्तिवचन अलमर्थ उपपद में हो तो धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है ।
	कृत्प्रत्ययार्थः		
धातोः कृत्	**६७. कर्तरि कृत् २८३२ ।**	कर्तरि ७०	कृत् संज्ञक प्रत्यय कर्ता कारक मे होते हैं ।
धातोः कृत्, कर्तरि	**६८. भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्लाव्यापात्या वा २८९४ ।**		भव्य गेय प्रवचनीय उपस्थानीय जन्य आप्लाव्य आपात्य कर्ता में विकल्प से निपातित होते हैं ।
धातोः कृत्, कर्तरि	**६९. लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः २१५२**		सकर्मक धातुओं से लकार कर्म और कर्ता में होते हैं तथा अकर्मक धातुओं से भाव और कर्ता में होते हैं ।
धातोः कृत्, कर्तरि	**७०. तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः २८३३ ।**		कृत्य क्त और खलर्थ प्रत्यय भाव और कर्म में होते हैं ।
धातोः कृत्	**७१. आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ३०५३ ।**	कर्तरि ७२ ।	आदि कर्म में जो क्त है वह कर्ता तथा भाव एवं कर्म में होता है ।
धातोः कृत्, कर्तरि	**७२. गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च ३०८६ ।**		गत्यर्थ अकर्मक श्लिष शीङ् स्था आस वस जन रुह तथा जॄ धातुओं से क्त कर्ता एवं भाव कर्म में होते हैं ।
धातोः कृत्	**७३. दाशगोघ्नौ संप्रदाने ३१७२ ।**		सम्प्रदान कारक में दाश और गोघ्न निपातित होते हैं ।
धातोः कृत्	**७४. भीमादयोऽपादाने ३१७३ ।**		भीम आदि शब्द अपादान में निपातित होते हैं ।
	(४४) भीम भीष्म भयानक वहचर (वह चर) प्रस्कन्दन प्रतपन (प्रपतन) समुद्र स्रुव स्रक् वृष्टि (दृष्टि) रक्षः संकसुक (शङ्कु सुक) मूर्ख खलति **—आकृतिगणोऽयम् ।। इति भीमादिः ।।**		
धातोः कृत्	**७५. ताभ्यामन्यत्रोणादयः ३१७४ ।**		सम्प्रदान और अपादान से अतिरिक्त कारकों में उणादि प्रत्यय होते हैं ।

धातोः कृत्	**७६. क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः ३०८७ ।**		ध्रौव्य गति प्रत्यवसानार्थक धातुओं से विहित क्त अधिकरण में तथा यथाप्राप्त भी होता है ।
	लादेशः		
धातोः कृत्	**७७. लस्य २१५३ ।**	लस्य ११७	'लस्य' का अधिकार अध्यायान्त तक होगा ।
धातोः, लस्य	**७८. तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ् २१५४ ।**		'ल' के स्थान में तिप् तस् झि, सिप् थस् थ, मिप् वस् मस् तथा त आताम् झ, थास् आथाम् ध्वम्, इट् वहि महिङ् आदेश होते हैं ।
	लकारादेशः		
धातोः, लस्य	**७९. टित आत्मनेपदानां टेरे २२३३ ।**	टितः ८०	आत्मनेपद में टित् लकार के टि का ए हो जाता है ।
धातोः, लस्य, टितः	**८०. थासः से २२३६** ॥ ४ ॥		टित् लकार के थास् को से आदेश हो जाता है ।
धातोः, लस्य	**८१. लिटस्तझयोरेशिरेच् २२४१ ।**	लिटः ८२	लिडादेश त को एश् और झ को इरेच् हो जाता है ।
धातोः, लस्य, लिटः	**८२. परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः २१७३ ।**	पर-नां ८४ ण-वमाः ८४	परस्मैपद में लिडादेश को क्रमशः णल् अतुस् उस् थल् अथुस् अ, णल् व म आदेश होते हैं ।
धातोः, लस्य, पर-नां, ण-वमाः	**८३. विदो लटो वा २४६४ ।**	लटः ८४	विद् धातु के लडादेश को विकल्प से णल् आदि होते हैं, परस्मैपद में ।
धातोः, लस्य, पर-नां, ण-वमाः, लटः	**८४. ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः २४५०**		परस्मैपद में ब्रू धातु के लट् के प्रथम पाँच को णल् आदि विकल्प से होते हैं तथा ब्रू को आह आदेश हो जाता है ।
धातोः, लस्य, लोटः	**८५. लोटो लङ्वत् २१९८ ।**	लोटः ९३	लोट् को लङ्वत् कार्य होता है ।
धातोः, लस्य, लोटः	**८६. एरुः २१९६ ।**		लोडादेश इकार को उकार आदेश होता है ।
धातोः, लस्य, लोटः	**८७. सेर्ह्यपिच्च २२०१ ।**	सेर्ह्यपिच्च ८८	लोट् के सि को हि होता है और वह अपित् होता है ।
धातोः, लस्य, लोटः सेर्ह्यपिच्च	**८८. वा छन्दसि ३५५२ ।**		वेद में यह हि विकल्प से अपित् होता है ।

धातोः, लस्य, लोटः	**८९. मेर्निः २२०३ ।**		लोट् के मि को नि होता है ।
धातोः, लस्य, लोटः	**९०. आमेतः २२५१ ।**	एतः ९१	लोट् के एकार को आम् होता है ।
धातोः, लस्य, लोटः, एतः	**९१. सवाभ्यां वामौ २२५२ ।**		स और व से परे लोट् के एकार को क्रमशः व और म होता है ।
धातोः, लस्य, लोटः	**९२. आडुत्तमस्य पिच्च २२०४ ।**	उत्तमस्य ९३	लोट् सम्बन्धी उत्तमपुरुष को आट् आगम होता है और वह पित् होता है
धातोः, लस्य, लोटः, उत्तमस्य	**९३. एत ऐ २२५३ ।**		लोट् सम्बन्धी उत्तम के ए को ऐ होता है ।
धातोः, लस्य	**९४. लेटोऽडाटौ ३४२७ ।**	लेटः ९८	लेट् में पर्यायेण अट् और आट् आगम होता है ।
धातोः, लस्य, लेटः	**९५. आत ऐ ३४२९ ।**	ऐ ९६	लेट् सम्बन्धी आकार को ऐकार आदेश होता है ।
धातोः, लस्य, लेटः, ऐ	**९६. वैतोऽन्यत्र ३४३० ।**	वा ९८	'आत ऐ' से अतिरिक्त स्थल पर लेट् सम्बन्धी एकार को ऐकार आदेश विकल्प से होता है ।
धातोः, लस्य, लेटः, वा	**९७. इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ३४२६ ।**	लोपः १००	परस्मैपद में लेट् सम्बन्धी इकार का विकल्प से लोप होता है ।
धातोः, लस्य, लेटः, वा, लोपः	**९८. स उत्तमस्य ३४२८ ।**	स-मस्य ९९	लेट् सम्बन्धी उत्तमपुरुष सम्बन्धी स का विकल्प से लोप होता है ।
धातोः, लस्य, स-मस्य, लोपः	**९९. नित्यं ङितः २२०० ।**	ङितः १०१ नित्यम् १००	ङित् लकार में उत्तमपुरुष सम्बन्धी स का नित्य लोप होता है ।
धातोः, लस्य, ङितः, नित्यः, लोपः	**१००. इतश्च २२०७ ॥ ५ ॥**		परस्मैपद में ङित् लकार सम्बन्धी इ का नित्य लोप होता है ।
धातोः, लस्य, ङितः	**१०१. तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः २१९९ ।**		ङित् लकार सम्बन्धी तस् थस् थ और मिप् को क्रमशः ताम् तम् त और अम् होते हैं ।
धातोः, लस्य	**१०२. लिङः सीयुट् २२५५ ।**	लिङः १०८	(आत्मनेपद में) लिङ् को सीयुट् का आगम होता है ।
धातोः, लस्य, लिङः	**१०३. यासुट्परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च २२०९**	या-त्तो १०४	परस्मैपद में लिङ् को यासुट् का आगम होता है, वह उदात्त और ङित् होता है ।
धातोः, लस्य, लिङः, या-त्तः	**१०४. किदाशिषि २२१६ ।**		आशीर्लिङ् में यासुट् होता है, वह उदात्त और कित् होता है ।

धातोः, लस्य, लिङः	**१०५. झस्य रन् २२५६ ।**		लिङ् के झ को रन् आदेश होता है।
धातोः, लस्य, लिङः	**१०६. इटोऽत् २२५७ ।**		लिङादेश इट् को अत् आदेश होता है।
धातोः, लस्य, लिङः	**१०७. सुट् तिथोः २२१० ।**		लिङ् के त थ को सुट् का आगम होता है।
धातोः, लस्य, लिङः	**१०८. झेर्जुस् २२१३ ।**	झेर्जुस् ११२	लिङ् के झि को जुस् आदेश होता है।
धातोः, लस्य, झेर्जुस्	**१०९. सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च २२२६ ।**		सिच्, अभ्यस्तसंज्ञक तथा विद् के उत्तरवर्ती ङित्सम्बन्धी झि को जुस् आदेश होता है।
धातोः, लस्य, झेर्जुस्	**११०. आतः २२२७ ।**	आतः १११	सिच् लुक् होने पर आदन्त के बाद ही झि को जुस् होता है।
धातोः, लस्य, झेर्जुस्, आतः	**१११. लङः शाकटायनस्यैव २४६३ ।**	लङः-स्य ११२	आदन्त से परे लङ् के झि को शाकटायन के मत में जुस् होता है।
धातोः, लस्य, झेर्जुस्, ल-स्य	**११२. द्विषश्च २४३५ ।**		द्विष् से परे लङ् के झि को विकल्प से जुस् होता है।
	लादेश संज्ञा		
धातोः, लस्य	**११३. तिङ्शित्सार्वधातुकम् २१६६ ।**		तिङ् शित् प्रत्यय सार्वधातुक कहलाते है।
धातोः, लस्य	**११४. आर्धधातुकं शेषः २१८७ ।**	आर्ध-कम् ११७	तिङ् शित् से भिन्न प्रत्यय आर्द्धधातुक कहलाते हैं।
धातोः, लस्य, आ-कम्	**११५. लिट् च २१७२ ।**		लिडादेश को भी आर्द्धधातुक संज्ञा होती है।
धातोः, लस्य, आ-कम्	**११६. लिङाशिषि २२१५ ।**		आशीर्लिङ् भी आर्द्धधातुकसंज्ञक होता है।
धातोः, लस्य, आ-कम्	**११७. छन्दस्युभयथा ३४३५ ।**		वेद में दोनों प्रकार की प्रवृत्ति है।

धातुसंबन्धे समानाधिकरणे स्वाङ्गे
लिटस्तस्थस्थमिपां सप्तदश ।।

इति-पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च ।

।। अथ चतुर्थोऽध्यायः ।।

प्रथमः पादः

सुप् प्रत्ययः

१. ङ्याप्प्रातिपदिकात् १८२ । — ङ्या-त् ५.४.- १६० — ङ्याप्प्रातिपदिकात् अधिकार सूत्र है ।

२. स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् १८३ । — ङी आप् और प्रातिपदिक से सु आदि प्रत्यय होते हैं ।

स्त्रीप्रत्ययः

ङ्या-त् — **३. स्त्रियाम् ४५३ ।** — स्त्रियाम् ८१ — स्त्रियाम् अधिकार सूत्र है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम् — **४. अजाद्यतष्टाप् ४५४ ।** — अजादि प्रातिपदिक तथा अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् होता है ।

(४) अजा एडका कोकिला चटका अश्वा मूषिका बाला होढा पाका वत्सा मन्दा बिलाता पूर्वापिहाणा (पूर्वापहाणा) अपरापहाणा । ('संभस्त्राजिनश[1]णपिण्डेभ्यः फलात्' ३७) ('सदच्काण्डप्रान्त[2]शतैकेभ्यः पुष्पात्' ३८) ('शूद्रा चामहत्पूर्वा जातिः' ३९) क्रुञ्चा उष्णिहा देवविशा[3] । ज्येष्ठा कनिष्ठा मध्यमा पुंयोगेऽपि । (मूलान्नञः' ४०) दंष्ट्रा । ('त्रिफला त्र्यनीका द्विगौ' ४१)—**एतेऽजादयः ।**

**** शूद्रा चामहत्पूर्वा जातिः ।***

स्त्रीप्रत्यये ङीप् प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम् — **५. ऋन्नेभ्यो ङीप् ३०६ ।** — ङीप् २४ — ऋकारात्त नकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ङीप् — **६. उगितश्च ४५५ ।** — उगिदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्वविवक्षा में ङीप् होता है ।

**** धातोरुगितः प्रतिषेधः ।***

**** अञ्चतेश्चोपसंख्यानम् ।***

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ङीप् — **७. वनो र च ४५६ ।** — वन्नन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्वविवक्षा में ङीप् होता है तथा रेफ अन्तादेश होता है ।

**** वनो न हश इति वक्तव्यम् ।***

**** बहुलं छन्दसि ।***

**** बहुव्रीहौ वा ।***

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ङीप् — **८. पादोऽन्यतरस्याम् ४५७ ।** — पादः ९ — पादन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्वविवक्षा में विकल्प से ङीप् होता है ।

१-२-३. 'अजादिषु पाठ इदानींतनः' इति 'पाककर्ण' (४.१.६४) सूत्रे कैयटः ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, डीप्, पादः	**९. टाबृचि ४५८ ।**		यदि ऋक् वाच्य हो तो पादन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में टाप् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, डीप्	**१०. न षट् स्वस्रादिभ्यः ३०८ ।** (४६) स्वसृदुहितृ ननान्दृ यातृ मातृ तिसृ[1] चतसृ **इति स्वस्रादिः ।।**	न १२	षट्संज्ञक और स्वसृ आदि से स्त्रीप्रत्यय नहीं होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, डीप्, न	**११. मनः ४५९ ।**	मनः १३	मन्नन्त प्रातिपदिक से डीप् प्रत्यय नहीं होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, डीप्, न, मनः	**१२. अनो बहुव्रीहेः ४६० ।**	अ-हेः १३	अन्नन्त बहुव्रीहि से स्त्रीलिङ्ग में डीप् नहीं होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, डीप्, अ-हेः, मनः	**१३. डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ४६१ ।**		मन्नन्त और अन्नन्त दोनों से वैकल्पिक डाप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, डीप्	**१४. अनुपसर्जनात् ४६९ ।**	अनुपसर्जनात्-८१	अनुपसर्जनात् यह अधिकार सूत्र है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, डीप्	**१५. टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः ४७० ।** * *नञ्स्नञीकक्ख्युंस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम् ।*		अनुपसर्जन टित् ढ अण् आदि अन्त वाले अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, डीप्	**१६. यञश्च ४७१ ।** * *आपत्यग्रहणं कर्तव्यम् ।*	यञः १८	यञन्त प्रातिपादिक से भी स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, डीप्, यञः	**१७. प्राचां ष्फ तद्धितः ४७३ ।** * *आसुरेरुपसंख्यानम् ।*	ष्फः १९	प्राच्य आचार्यों के मत में यञन्त से स्त्रीलिङ्ग में ष्फ प्रत्यय होता है और वह तद्धित होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, डीप्, यञः, ष्फः	**१८. सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ४७६ ।**		लोहितादि कतन्त यञन्त से नित्य ष्फ होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, डीप्, ष्फः	**१९. कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च ४७७ ।**		कौरव्य माण्डूक्य शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ष्फ होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, डीप्	**२०. वयसि प्रथमे ४७८ ।** ।।१।। * *वयस्यचरम इति वाच्यम् ।*		प्रथमवयोवाची अदन्त से स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, डीप्	**२१. द्विगोः ४७९ ।**	द्विगोः २४	द्विगु संज्ञक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, डीप्, द्विगोः	**२२. अपरिमाणविस्ताचितकम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि ४८० ।**	न-लुकि २४	अपरिमाणान्त द्विगु विस्त अचित कम्बल्यान्त से डीप् नहीं होता है यदि तद्धित लुक् हो ।

१. अनयोरत्र पाठोऽप्रामाणिकः ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, ङीप्, द्विगोः, न-लुकि	**२३. काण्डान्तात्क्षेत्रे ४८१ ।**		काण्डान्त द्विगु से तद्धित लुक् होने पर यदि क्षेत्र वाच्य हो तो ङीप् नहीं होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, ङीप्, द्विगोः, न-लुकि	**२४. पुरुषात्प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ४८२ ।**		प्रमाण में पुरुषान्त द्विगु से तद्धित लुक् होने पर विकल्प से ङीप् नहीं होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्	**२५. बहुव्रीहेरूधसो ङीष् ४८४ ।**	बहु-सो २९	ऊधस् शब्दान्त बहुव्रीहि से स्त्रीलिङ्ग में ङीष् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्, बहु-सो	**२६. संख्याव्ययादेर्ङीप् ४८५**	संख्यादेः २७ ङीप् ३९	संख्यादि अव्ययादि ऊधस् शब्दान्त बहुव्रीहि से ङीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनुप-त्,ङीप्, सं०, बहु-सो	**२७. दामहायनान्ताच्च ४८६ ।** ** वयोवाचकस्यैव हायनशब्दस्य ङीप् णत्वं चेष्यते ।*		संख्यादि दामान्त हायनान्त बहुव्रीहि से ङीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्, बहु-सो	**२८. अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ४६२ ।**	अन-नो २९	उपधालोपी अन्नन्त बहुव्रीहि से विकल्प से ङीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्, अ-नो, बहु-सो	**२९. नित्यं संज्ञाच्छन्दसोः ४८७ ।**	सं-सोः ३१	संज्ञा और छन्द में उपधालोपी अन्नन्त बहुव्रीहि से नित्य ङीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्, सं-सो	**३०. केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्य-कृतसुमङ्गलभेषजाच्च ४८८ ।**		संज्ञा और छन्द में केवल मामक आदि प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्, सं-सो	**३१. रात्रेश्चाजसौ ३४४५ ।** ** अजसादिष्विति वक्तव्यम् ।*		जस् से अन्यत्र संज्ञा और छन्द में रात्रि शब्द से ङीप् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्	**३२. अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ४८९ ।** ** अन्तर्वत्पतिवदिति गर्भभर्तृसंयोगे ।*		अन्तर्वत् और पतिवत् शब्द से ङीप् तथा नुक् आगम होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्	**३३. पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ४९० ।**	नः ३४	पति शब्द को स्त्रीलिङ्ग में यदि यज्ञसंयोग हो तो नकार आदेश होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्, नः	**३४. विभाषा सपूर्वस्य ४९१ ।**		अनुपसर्जन सपूर्व पतिशब्दान्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में नकारादेश होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्	**३५. नित्यं सपत्न्यादिषु ४९२ ।**		सपत्नी आदि शब्दों में पति को नित्य ही नकारादेश होता है ।

(४७) समान एक वीर पिण्ड श्व (शिरी) भ्रातृ भद्र पुत्र दासाच्छन्दसि ॥ **इति समानादिः ॥**

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्
३६. पूतक्रतोरै च ४९३ । ऐ ३७
पूतक्रतु से स्त्रीलिङ्ग में ऐकार अन्तादेश और ङीप् होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्, ऐ
३७. वृषाकप्यग्निकुसितकुसिदानामुदात्तः ४९४ उदात्तः ३८
वृषाकपि आदि शब्दों को स्त्रीलिङ्ग में उदात्त ऐकार अन्तादेश तथा ङीप् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्, उदात्तः
३८. मनोरौ वा ४९५ । वा ३९
मनु शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् होता है तथा विकल्प से ऐकार औकार उदात्त अन्तादेश होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीप्, वा
३९. वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः ४९६ । वर्ण-त्तात् ४०
असितपलितयोर्न ।
छन्दसि क्रमेके ।
पिशङ्गादुपसंख्यानम् ।
अनुदात्त तकारोपध वर्णवाची शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् तथा त को न होता है।

स्त्रीप्रत्ययेषु ङीष् प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, वर्ण-त्
४०. अन्यतो ङीष् ४९७ । ॥ २ ॥ ङीष् ६५
तोपध से अतिरिक्त अनुदात्त वर्णवाची शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ङीष् होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्
४१. षिद्गौरादिभ्यश्च ४९८ ।
षित् प्रातिपदिक तथा गौर आदि से स्त्रीलिङ्ग में ङीष् होता है।

(४८) गौर मत्स्य मनुष्य शृङ्ग पिङ्गल हय गवय मुकय ऋष्य [पुट तूण] द्रुण द्रोण हरिण कोकण (काकण) पटर उणक [आमाल] आमलक कुवल, बिम्ब बदर फर्करक (कर्कर) तर्कार शर्कार पुष्कर शिखण्ड सलद शष्कण्ड सनन्द सुषम सुषव अलिन्द गडुल षाण्डश आढक आनन्द आश्वत्थ सृपाट आखक (आपच्चिक) शष्कुल सूर्य (सूर्म) शूर्प सूच यूष (पूष) यूथ सूप मेथ वल्लक धातक सल्लक मालक मालत साल्वक वेतस वृक्ष (वृस) अतस [उभय] भृङ्ग मह मठ छेद पेश भेद श्वन् तक्षन् अनडुही अनड्वाही । 'एषणः करणे' ४२ । देह देहल काकादन गवादन तेजन रजन लवण औद्गाहमानि (आद्गाहमानि) गौतम (गोतम) [पारक] अयस्थूण (अयःस्थूण) भौरिकि भौलिकि भौलिङ्गि यान मेध आलम्बि आलजि आलब्धि आलक्षि केवाल आपक आरट नट टोट नोट

मूलाट शातन [पोतन] पातन पाठन (पानठ) आस्तरण अधिकरण अधिकार अग्रहायणी (आग्रहायणी) प्रत्यवरोहिणी [सेचन] 'सुमङ्गलात्संज्ञायाम्' ४३ । अण्डर सुन्दर मण्डल मन्थर मङ्गल पट पिण्ड [षण्ड] उर्द गुर्द शम सूद औड (आर्द्र) हृद (ह्लद) पाण्ड [भाण्डल] भाण्ड (लोहाण्ड) कदर कन्दर कदल तरुण तलुन कल्माष बृहत् महत् (सोम) सौधर्म । 'रोहिणी नक्षत्रे' ४४ । 'रेवती नक्षत्रे' ४५ । विकल निष्कल पुष्कल । 'कटाच्छ्रोणिवचने' ४६ । 'पिप्पल्यादयश्च' ४७ । पिप्पली हरितकी (हरीतकी) कोशातकी शमी वरी शरी पृथिवी क्रोष्टु मातामह पितामह—**इति गौरादिः ।।**

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्

४२. जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककबराद्वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु ५०० ।

**** नीलादोषधौ प्राणिनि च ।***

**** संज्ञायां वा ।***

जानपद कुण्ड गोण स्थल भाज नाग काल नील कुश कामुक कबर शब्दों से वृत्ति अमत्र आवपन अकृत्रिमा श्राणा स्थौल्य वर्ण अनाच्छादन अयोविकार मैथुनेच्छा केशवेष अर्थ में क्रमशः ङीष् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्

४३. शोणात्प्राचाम् ५०१ ।

प्राच्य आचार्यों के मत में शोण से ङीष् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्

४४. वोतो गुणवचनात् ५०२ । वा ४५

**** गुणवचनात् ङीबाद्युदात्तार्थम् ।***

**** खरुसंयोगोपधान्न ।***

उकारान्त गुणवचन प्रातिपदिक से वैकल्पिक ङीष् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्, वा

४५. बह्वादिभ्यश्च ५०३ । ब-च ४६

बहु आदि शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से ङीष् होता है ।

(४०) बहु पद्धति अञ्चति अङ्कति अंहति शकटि (शकति) । 'शक्तिः शस्त्रे' ४८ । शारि वारि राति राधि (शाधि) अहि कपि यष्टि मुनि । 'इतः । प्राण्यङ्गात्' ४९ । 'कृदिकारादक्तिनः' ५० । 'सर्वतोऽक्तिन्नर्था-दित्येके' ५१ । चण्ड अराल कृपण कमल विकट विशाल विशङ्कट भरुज ध्वज । 'चन्द्रभागान्नद्याम्' ५२ । (चन्द्रभागा नद्याम् । कल्याण उदार पुराण अहन् क्रोड नख खुर शिखा बाल

	शफ गुद—**आकृतिगणोऽयम्** ।। तेन । भग गल राग इत्यादि । **इति बह्वादयः** ।।		
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्, ब-च	**४६. नित्यं छन्दसि ३४४६ ।**	छन्दसि ४७	बहु आदि शब्दों से वेद में नित्य ङीष् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्, छन्दसि	**४७. भुवश्च ३४४७ ।**		वेद में भू से नित्य ङीष् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्	**४८. पुंयोगादाख्यायाम् ५०४ ।** * ***पालकान्तान्न ।*** * ***सूर्याद्देवतायां चाप् ।***	पुं-त् ४९	पुरुषयोग के कारण जो शब्द स्त्रीलिङ्ग में आते हैं उनसे ङीष् होता है, यदि आख्या हो ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्, पुं-त्	**४९. इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक् ५०५ ।।** * ***हिमारण्ययोर्महत्त्वे ।*** * ***यवाद्दोषे ।*** * ***यवनाल्लिप्याम् ।*** * ***मातुलोपाध्याययोरानुग्वा ।*** * ***मुद्गलाच्छन्दसि लिच्च ।*** * ***आचार्यादणत्वं च ।*** * ***अर्यक्षत्रियाभ्यां वा ।***		इन्द्र आदि शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में ङीष् और आनुक् आगम होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्	**५०. क्रीतात्करणपूर्वात् ५०६ ।**	कर-त् ५१	करणपूर्व क्रीतशब्दान्त प्रातिपदिक से ङीष् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्, कर-त्	**५१. क्तादल्पाख्यायाम् ५०७ ।**	क्तात् ५३	अल्पाख्या में करणपूर्व क्तान्त प्रातिपदिक से ङीष् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्, क्तात्	**५२. बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् ५०८ ।** * ***जातान्तान्न ।*** * ***पाणिगृहीती भार्यायाम् ।*** * ***बहुलं संज्ञाच्छन्दसोः ।*** * ***अन्तोदात्तादबहुनञ्सुकालसुखादिपूर्वात् ।*** * ***जातिपूर्वादिति वक्तव्यम् ।***	बहु-त् ५३	अन्तोदात्त बहुव्रीहि से स्त्रीलिङ्ग में ङीष् होता है ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, अनु०-त्, ङीष्, क्तात्, बहु-त्	**५३. अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा ५०९ ।**	वा ५५	अस्वाङ्ग पूर्वपद वाले क्तान्त अन्तोदात्त बहुव्रीहि से स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से ङीष् होता है ।

ङ्यात, स्त्रियाम्, **५४. स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् ५१०** स्व-नात् ६०
अनु०-त्, ङीष्, वा

असंयोगोपध उपसर्जन स्वाङ्ग अन्तवाले अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से ङीष् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **५५. नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च ५११**
अनु०-त्, ङीष्, वा, **** पुच्छाच्च ।***
स्व-नात् **** कबरमणिविषशरेभ्यो नित्यम् ।***
**** उपमानात्पक्षाच्च पुच्छाच्च ।***

नासिका आदि अन्तवाले प्रातिपदिक से विकल्प से ङीष् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **५६. न क्रोडादिबह्वचः ५१२ ।** न ५८
अनु०-त्, ङीष्,
स्व-नात्

(५०) क्रोड नख खुर गोखा उखा शिखा बाल शप गुद—**आकृतिगणोऽयम् ।। इति क्रोडादयः ।।**

क्रोड आदि अन्त वाले बह्वजन्त प्रातिपदिक से ङीष् नहीं होता है

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **५७. सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च ५१३ ।**
अनु०-त्, ङीष्, न,
स्व-नात्

सह नञ् विद्यमान पूर्वक प्रातिपदिक से ङीष् नहीं होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **५८. नखमुखात्संज्ञायाम् ५१४ ।**
अनु०-त्, ङीष्, न,
स्व-नात्

संज्ञा में नखमुखान्त प्रातिपदिक से ङीष् नहीं होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **५९. दीर्घजिह्वी च च्छन्दसि ३४४८ ।**
अनु०-त्, ङीष्,
स्व-नात्

वेद में दीर्घजिह्वी निपातित होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६०. दिक्पूर्वपदान्ङीप् ५१५ ।** ।। ३ ।।
अनु०-त्, ङीष्,
स्व-नात्

दिक्पूर्वपद प्रातिपदिक से ङीप् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६१. वाहः ५१६ ।**
अनु०-त्, ङीष्

वाहन्त प्रातिपदिक से ङीष् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६२. सख्यशिश्वीति भाषायाम् ५१७ ।**
अनु०-त्, ङीष्

ङीषन्त सखी और अशिश्वी शब्द भाषा में निपातित होते हैं ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६३. जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ५१८ ।** जातेः ६४
अनु०-त्, ङीष् **** योपधप्रतिषेधे गवयहयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः ।***

जातिवाची वे प्रातिपदिक जो स्त्रीलिङ्ग में ही नियत नहीं हैं तथा अयोपध हैं उनसे स्त्रीलिङ्ग में ङीष् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६४. पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवालोत्तरपदाच्च**
अनु०-त्, ङीष्, **५१९ ।**
जातेः ** सदच्काण्डप्रान्तशतैकेभ्यः पुष्पात्प्रतिषेधः ।*
** संभस्त्राजिनशणपिण्डेभ्यः फलात् ।*
** मूलान्नञः ।*
** श्वेताच्च ।*

पाक कर्ण आदि उत्तर पद वाले जातिवाची प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ङीष् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६५. इतो मनुष्यजातेः ५२० ।** मनु-तेः ६६
अनु०-त्, ङीष्

मनुष्यजातिवाची इकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ङीष् प्रत्यय होता है।

स्त्री प्रत्ययेषु ऊङ् प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६६. ऊङुतः ५२१ ।** ऊङ् ७२
अनु०-त्, मनु-तेः ** अप्राणिजातेश्चारज्ज्वादीनामुपसंख्यानम् ।*

मनुष्यजातिवाची उकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् होता है, यदि वे अयोपध हों।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६७. बाह्वन्तात्संज्ञायाम् ५२२ ।**
अनु०-त्, ऊङ्

संज्ञा में बाहुशब्दान्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६८. पङ्गोश्च ५२३ ।**
अनु०-त्, ऊङ् ** श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च[1] ।*

पङ्गु शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **६९. ऊरूत्तरपदादौपम्ये ५२४ ।** ऊरू-दात् ७०
अनु०-त्, ऊङ्

औपम्य गम्यमान होने पर पर उरूत्तर पद प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७०. संहितशफलक्षणवामादेश्च ५२५ ।**
अनु०-त्, ऊङ्, ** सहितसहाभ्यां चेति वक्तव्यम् ।*
उरू-त्

संहित शफ आदि शब्द पूर्व में हों तथा उरू उत्तरपद में हों तो ऊङ् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७१. कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि ३४४९ ।** कद्रु-ल्वो ७२
अनु०-त्, ऊङ् ** गुग्गुलुमधुजतुपतयालूनामिति वक्तव्यम् ।*

कद्रु और कमण्डलु शब्द से स्त्रीलिङ्ग में वेद में ऊङ् होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७२. संज्ञायाम् ५२६ ।**
अनु०-त्, ऊङ्,
कद्रु-ल्वोः

संज्ञा में कद्रु कमण्डलु शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् प्रत्यय होता है।

स्त्रीप्रत्यययेषु ङीन्प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७३. शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् ५२७ ।**
अनु०-त्

शार्ङ्गरव आदि शब्दों से तथा अञ्-सम्बन्धी अजन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ङीन् प्रत्यय होता है।

(५१) शार्ङ्गरव कापटव गौग्गुलव ब्राह्मण वैद गौतम कामण्डलेय ब्राह्मणकृतेय (आनिचेय) आनिधेय आशोकेय वात्स्यायन मौञ्जायन कैकस

---

१. इदमप्रामाणिकम्।

काप्य (काव्य) शैव्य एहि पर्येहि आश्मरथ्य औदपान अराल चण्डाल वतण्ड 'भोगवद्गौरिमतोः संज्ञायां घादिषु नित्यं ह्रस्वार्थम्' ५३। 'नृनरयोर्वृद्धिश्च' ५४। **इति शार्ङ्गरवादिः ।।**

स्त्रीप्रत्ययेषु चाप् प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७४. यङश्चाप् ५२८ ।** चाप् ७५
अनु०-त् *** षाद्यञश्चाप् वक्तव्यः ।**

यङन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में चाप् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७५. आवट्याच्च ५२९ ।**
अनु०-त्, चाप्

आवट्य शब्द से स्त्रीलिङ्ग में चाप् प्रत्यय होता है।

तद्धिताधिकारः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७६. तद्धिताः ५३० ।** तद्धिताः ५/४/१६०
अनु०-त्

यह अधिकार सूत्र है।

स्त्रीप्रत्ययेषु तिप्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७७. यूनस्तिः ५३१ ।**
अनु०-त्, तद्धिताः

युवन् इस प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ति प्रत्यय होता है और वह तद्धित संज्ञक होता है।

स्त्रीप्रत्ययेषु ष्यङ्प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७८. अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तमयोः ष्यङ्गोत्रे ११९८ ।** ष्यङ् ८१ गोत्रे ८० अणिञोः ७९
अनु०-त्, तद्धिताः

गोत्र में गुरूपोत्तम अनार्ष अण् इञ् अन्त वाले प्रातिपदिकों से स्त्रीलिङ्ग में ष्यङ् आदेश होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **७९. गोत्रावयवात् ११९९ ।**
अनु०-त्, तद्धिताः,
ष्यङ् गोत्रे अणि, ञोः

गोत्रावयव (कुलाख्य) शब्दों से गोत्र में विहित अण् इञ् अन्त वाले शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में ष्यङ् आदेश होता है।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **८०. क्रौड्यादिभ्यश्च १२०० ।। ४ ।।**
अनु०-त्, तद्धिताः,
ष्यङ् गोत्रे

क्रौडि आदि शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में ष्यङ् होता है।

(५२) क्रौडि लाडि व्याडि आपिशलि आपक्षिति चौपयत चैटयत (नैटयत) सैकयत वैल्वयत सौधातकि 'सूत युवत्याम्' ५५। 'भोज क्षत्रिये' ५६। यौतकि कौटि भौरिकि भौलिकि [शाल्मलि] शालास्थलि कापिष्ठलि गौकक्ष्य—**इति क्रौ-ड्यादिः ।।**

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, **८१. दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रिकाण्डेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम् १२०१ ।**
अनु०-त्, तद्धिताः,
ष्यङ्

दैवयज्ञि शौचिवृक्षि सात्यमुग्रि काण्डेविद्धि शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से ष्यङ् आदेश होता है।

तद्धितेष्वपत्याधिकारः

ङ्या-त्, तद्धिताः ८२. **समर्थानां प्रथमाद्वा १०७२ ।** सम-वा ५/२/ यह अधिकार सूत्र है। १४४

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८३. **प्राग्दीव्यतोऽण् १०७३ ।** प्राग्—तः ९१ ४/४/२ तक सामान्यतः अण् का अधिकार होगा अर्थात् अपवाद को छोड़कर अण् होगा।
सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८४. **अश्वपत्यादिभ्यश्च १०७४ ।** ४/४/२ तक होने वाले सभी अर्थों में अश्वपति आदि शब्दों से अण् प्रत्यय होता है।
सम-वा, प्रा-तः

(५३) अश्वपति (ज्ञानपति) शतपति धनपति गणपति [स्थानपति यज्ञपति] राष्ट्रपति कुलपति गृहपति (पशुपति) धान्यपति धन्वपति (बन्धुपति धर्मपति) सभापति प्राणपति क्षेत्रपति—**इत्यश्वपत्यादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८५. **दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः १०७७** दिति अदिति आदित्य तथा पत्युत्तर शब्दों से प्राग्दीव्यतीय (४/४/२) अर्थों में ण्य प्रत्यय होता है।
सम-वा, प्रा-तः

* ***वाङ्मतिपितृमतां छन्दस्युपसंख्यानम् ।***
* ***यमाच्चेति काशिकायाम् ।***
* ***पृथिव्या ञाञौ ।***
* ***देवाद्यञञौ ।***
* ***बहिषष्टिलोपो यञ्च ईकक् च ।***
* ***ईकञ् छन्दसि ।***
* ***स्थाम्नोऽकारः ।***
* ***लोम्नोऽपत्येषु बहुष्वकारो वक्तव्यः ।***
* ***गोरजादिप्रसङ्गे यत् ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८६. **उत्सादिभ्योऽञ् १०७८ ।** प्राग्दीव्यतीय अर्थों में उत्स आदि शब्दों से अञ् प्रत्यय होता है।
सम-वा, प्रा-तः

(५४) उत्स उदपान विकर विनद महानद महानस महाप्राण तरुण तलुन। बष्कयासे। पृथिवी (धेनु) पङ्क्ति जगती त्रिष्टुप् अनुष्टुप् जनपद भरत उशीनर ग्रीष्म पीलकुण। 'उदस्थान देशे' ५७। पृषदंश भल्लकीय रथन्तर मध्यंदिन बृहत् महत् सत्त्वत् कुरु पञ्चाल इन्द्रावसान उष्णिह कैकुभ् सुवर्ण देव। 'ग्रीष्मादच्छन्दसि' ५८—**इत्युत्सादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८७. **स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् १०७९** धान्यानां भवने क्षेत्रे ५/२/१ सूत्र तक जितने भी अर्थ हैं, उन सभी अर्थों में स्त्रीपुंस शब्द से यथाक्रम नञ् और स्नञ् प्रत्यय होते हैं।
सम-वा, प्रा-तः

तद्धित लुक्

ङ्या-त्, तद्धिताः, समर्थ-वा, प्रा-तः	**८८. द्विगोर्लुगनपत्ये १०८० ।**		द्विगुनिमित्तक (तद्धित) शब्दों से अपत्य अर्थ को छोड़कर सभी प्राग्दीव्यतीय अर्थों में होने वाले प्रत्ययों का लुक् होता है, (यदि वे प्रत्यय अजादि हों) ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, प्रा-तः	**८९. गोत्रेऽलुगचि १०८१ ।**	अचि ९१	अजादि विषयक प्राग्दीव्यतीय की विवक्षा में गोत्रप्रत्यय का अलुक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, प्रा-तः, अचि	**९०. यूनि लुक् १०८३ ।**	यू-क् ९१	अजादि प्राग्दीव्यतीय प्रत्यय की विवक्षा में युवप्रत्यय का लुक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, प्रा-तः, अचि, यू-क्	**९१. फक्फिञोरन्यतरस्याम् १०८७ ।**		अजादि प्राग्दीव्यतीय प्रत्यय की विवक्षा में फक् फिञ् इन युव प्रत्ययों का विकल्प से लुक् होता है ।

अपत्याधिकारः

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**९२. तस्यापत्यम् १०८८ ।**	त-म् ४.१.१७६	षष्ठ्यन्त कृतसन्धि समर्थ शब्द से अपत्य अर्थ में कहे गये तथा कहे जाने वाले प्रत्यय विकल्प से होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्	**९३. एको गोत्रे १०९३ ।**		गोत्र में एक ही अपत्य प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्	**९४. गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् १०९४ ।**		स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर युवापत्य अर्थ में गोत्रप्रत्ययान्त से ही अपत्य प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्	**९५. अत इञ् १०९५ ।**	इञ् ९७	अकारान्त प्रातिपदिक से अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, इञ्	**९६. बाह्वादिभ्यश्च १०९६ ।**		बाहु आदि शब्दों से अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है ।

(५५) बाहु उपबाहु उपवाकु निवाकु शिवाकु वटाकु उपनिन्दु (उपविन्दु) वृषली वृकला चूडा बलाका मूषिका कुशला भगला (छगला) ध्रुवका [धुवका] सुमित्रा दुर्मित्रा पुष्करसद् अनुहरत् देवशर्मन् अग्निशर्मन् [भद्रशर्मन् सुशर्मन्] कुना-

मन् (सुनामन्) पञ्चन् सप्तन् अष्टन् । 'अमितौजसः सलोपश्च' ५९ । सुधावत् उदञ्चु शिरस् माष शराविन् मरीची क्षेमवृद्धिन् शृङ्खलतोदिन् खरनादिन् नगरमर्दिन् प्राकारमर्दिन् लोमन् अजीगर्त कृष्ण युधिष्ठिर अर्जुन साम्ब गद प्रद्युम्न राम [उदङ्क] । 'उदकः संज्ञायाम्' ६० । 'संभूयोऽम्भसोः सलोपश्च' ६१—**आकृतिगणोऽयम्** ।। तेन । सात्वकिः जाङ्घिः ऐन्दशर्मिः आजधेनविः इत्यादि । **इति बाह्वादयः** ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, इञ्

९७. सुधातुरकङ् च १०९७ ।

सुधातृ शब्द से अपत्यार्थ में इञ् प्रत्यय तथा अकङ् आदेश होता है ।

* ***व्यासवरुडनिषादचण्डालबिम्बानां चेति वक्तव्यम् ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्

९८. गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्च्फञ् १०९९ । गोत्रे १११

गोत्रसंज्ञक अपत्यार्थ में कुञ्ज आदि शब्दों से च्फञ् प्रत्यय होता है ।

(५६) कुञ्ज ब्रध्न शङ्ख भस्मन् गण लोमन् शठ शाक शुण्डा शुभ विपाश स्कन्द स्कम्भ—**इति कुञ्जादिः** ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, गोत्रे

९९. नडादिभ्यः फक् ११०१ । फक् १०३

नड आदि प्रातिपदिकों से गोत्रापत्य अर्थ में फक् प्रत्यय होता है ।

(५७) नड चर (वर) बक मुञ्ज इतिक इतिश उपक (एक) लमक । 'शलङ्कु शलङ्कं च' ६२ । सप्तल वाजप्य तिक । 'अग्निशर्मन्वृषगणे' ६३ । प्राण नर सायक दास मित्र द्वीप पिङ्गर किङ्कर किङ्कल (कातर) कातल काश्यप (कुश्यप) काश्य काव्य (काल्य) अज अमुष्य (अमुष्म) । कृष्णरणौ ब्राह्मणवसिष्ठे' ६४ । अमित्र लिगु चित्र कुमार । 'क्रोष्टु क्रोष्टं च' ६५ । लोह दुर्ग स्तम्भ शिंशपा अग्र तृण शकट सुमनस् सुमत मिमत ऋच् जलंधर अध्वर युगंधर हंसक दण्डिन् हस्तिन् [पिण्ड] पञ्चाल चमसिन् सुकृत्य स्थिरक ब्राह्मण चटक बदर अश्वल खरप लङ्क इन्ध अस्त्र कामुक ब्रह्मदत्त उदुम्बर शोण अलोह दण्डप—**इति नडादिः** ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, गोत्रे, फक्

१००. हरितादिभ्योऽञः ११०२ ।। ५ ।।

हरित आदि शब्दों से तथा अञन्त शब्दों से गोत्रापत्य अर्थ में फक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१०१. यञिञोश्च ११०३ ।**
सम-वा, त-म्, गोत्रे,
फक्

गोत्र में यञन्त इञन्त शब्द से फक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१०२. शरद्वच्छुनकदर्भाद्भृगुवत्साग्रायणेषु ११०४**
सम-वा, त-म्, गोत्रे,
फक्

भृगु वत्स आग्रायण से सम्बद्ध शरद्वत् शुनक दर्भ शब्दों से गोत्रापत्य में फक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१०३. द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतरस्याम् ११०५**
सम-वा, त-म्, गोत्रे,
फक्

द्रोण पर्वत जीवन्त से गोत्रापत्य में विकल्प से फक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१०४. अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् ११०६**
सम-वा, त-म्, गोत्रे

विदादि शब्दों से गोत्रापत्य अर्थ में अञ् होता है और जो अनृष्य पुत्र दुहितृ ननान्दृ शब्द हैं, उनसे अनन्तरापत्य अर्थ में ।

(५८) बिद उर्व कश्यप कुशिक भरद्वाज उपमन्यु किलात कन्दर्प (किंदर्भ) विश्वानर ऋषिषेण (ऋष्टिषेण) ऋतभाग हर्यश्व प्रियक आपस्तम्ब कूचवार शरद्वत् शुनक (शुनक्) धेनु गोपवन शिग्रु बिन्दु [भोगक] भाजन [शमिक] अश्वावतान श्यामाक श्यामक [श्यावलि] श्यापर्ण हरित किंदास बह्यस्क अर्कजूष (अर्कलूष) बध्योग विष्णु वृद्ध प्रतिबोध रचित रथीतर (रथन्तर) गविष्ठिर निषाद [शबर अलस] मठर (मृडाकु) सृपाकु मृदु पुनर्भू पुत्र दुहितृ ननान्दृ। 'परस्त्री परशुं च' ६६ । **इति बिदादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१०५. गर्गादिभ्यो यञ् ११०७ ।** यञ् १०९
सम-वा, त-म्, गोत्रे

गर्गादि शब्दों से गोत्रापत्य अर्थ में यञ् प्रत्यय होता है ।

(५९) गर्ग वत्स । 'वाजासे' ६७ । संकृति अज व्याघ्रपात् विदभृत् प्राचीनयोग [अगस्ति] पुलस्ति चमस रेभ अग्निवेश शङ्ख शट शक एक धूम अवट मनस् धनञ्जय वृक्ष विश्वावसु जरमाण लोहित शंसित बभ्रु वल्गु मण्डु गण्डु शङ्कु लिगु गुहलु मङ्क्षु अलिगु जिगीषु मनु तन्तु मनायी सूनु कथक कन्थक ऋक्ष तृक्ष (वृक्ष) [तनु] तरुक्ष तलुक्ष तण्ड वतण्ड कपिकत (कपि कत) कुरुकत अनडुह कण्व शकल गोकक्ष अगस्त्य कण्डिनी यज्ञवल्क

पर्णवल्क अभयजात विरोहित वृषगण रहूगण शण्डिल वर्णक (चणक) चुलुक मुद्गल मुसल जमदग्नि पराशर जतूकर्ण (जातूकर्ण) महित मन्त्रित अश्मरथ शर्कराक्ष पूतिमाष स्थूरा अदरक (अररक) एलाक पिङ्गल कृष्ण (लो) गोलन्द उलूक तितिक्ष भिषज (भिषज्) [भिष्णज] भडित भण्डित दल्भ चेकित चिकित्सित देवहू इन्द्रहू एकलू पिप्पलू बृहदग्नि [सुलोहिन्] सुलाभिन् उक्थ कुटीगु—**इति गर्गादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, गोत्रे, यञ् — **१०६. मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मणकौशिकयोः ११०९।** — यथासंख्यतः ब्राह्मण और कौशिक वाच्य हो तो मधु और बभ्रु शब्द से गोत्रापत्य में यञ् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, गोत्रे, यञ् — **१०७. कपिबोधादाङ्गिरसे १११० ।** — आ-से १०९ — कपि और बोध शब्द यदि आङ्गिरस हों तो गोत्रापत्य में यञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, गोत्रे, यञ्, आ-से — **१०८. वतण्डाच्च ११११ ।** — व-त् १०९ — आङ्गिरस में वतण्ड शब्द से गोत्र में यञ् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, गोत्रे, यञ्, आ-से, वत-त् — **१०९. लुक्स्त्रियाम् १११२ ।** — आङ्गिरस स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त वतण्ड के यञ् का लुक् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, गोत्रे — **११०. अश्वादिभ्यः फञ् १११३ ।** — फञ् १११ — अश्व आदि शब्दों से गोत्रापत्य में फञ् होता है।

(६०) अश्व अश्मन् शङ्ख शूद्रक विद पुट रोहिण खर्जूर (खजूर) [खञ्जार वस्त] पिजूल भडिल भण्डिल भडित भण्डित [प्रकृत रामोद] क्षान्त [काश तीक्ष्ण गोलाङ्क अर्क स्वर स्फुट चक्र श्रविष्ठ] पविन्द पवित्र गोमिन् श्याम धूम। धूम्र वाग्मिन् विश्वानर कुट । 'शप आत्रेये' ६८ । जन जड खड ग्रीष्म अर्ह कित विशम्प विशाल गिरि चपल चुप दासक वैल्व (बैल्य) प्राच्य [धर्म्य] आनडुह्य । 'पुंसि जाते' ६९ । अर्जुन [प्रहृत] सुमनस् दुर्मनस् मन (मनस्) (प्रान्त) ध्वन। 'आत्रेय भरद्वाजे' ७० । 'भरद्वाज आत्रेये' ७१ । उत्स आतव कितव

[वद धान्य पाद] शिव खदिर—**इत्यश्वादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१११. भर्गात्त्रैगर्ते १११४ ।**
सम-वा, त-म्, गोत्रे,
फञ्

भर्ग शब्द से त्रैगर्त गोत्र में फञ् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११२. शिवादिभ्योऽण् १११५ ।** अण् ११९
सम-वा, त-म्

शिवादि से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है ।

(६१) शिव प्रोष्ठ प्रोष्ठिक चण्ड जम्भ भूरि दण्ड कुठार ककुभ् (ककुभा) अनभिम्लान कोहित सुख सन्धि मुनि ककुत्स्थ कहोड कोहड कहूय कहय रोध कपिञ्जल (कुपिञ्जल) खञ्जन वतण्ड तृणकर्ण क्षीरह्रद जलह्रद परिल [पथिक] पिष्ट हैहय (पार्षिका) गोपिका कपिलिका जटिलिका बधिरिका मञ्जीरक (मजिरक) वृष्णिक खञ्जार खञ्जाल (कर्मार) रेख लेख आलेखन विश्रवण रवण वर्तनाक्ष ग्रीवाक्ष (विटप पिटक) पिटाक तृक्षाक नभाक ऊर्णनाभ जरत्कारु (पृथा उत्क्षेप) पुरोहितिका सुरोहितिका सुरोहिका आर्यश्वेत (अर्यश्वेत) सुपिष्ट मसुरकर्ण मयूरकर्ण (खर्जुरकर्ण) कदूरक तक्षन् ऋष्टिषेण गङ्गा विपाश यस्क लह्य द्रुह्य अयस्थूण तृणकर्ण (तृण कर्ण) पर्ण भलन्दन विरूपाक्ष भूमि इला सपत्नी । 'द्व्यचो नद्याः' ७२ । 'त्रिवेणी त्रिवणं च' ७३ । **इति शिवादिः ।। आकृतिगणः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११३. अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्तन्नामिकाभ्यः १११६ ।**
सम-वा, त-म्, अण्

वृद्धसंज्ञाविहीन नदी नामक तथा मानुषी नामक शब्दों से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है यदि वे शब्द नाम बन चुके हों ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११४. ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च १११७ ।**
सम-वा, त-म्, अण्

प्रसिद्ध ऋषि वाचक शब्दों तथा अन्धक वृष्णि और कुरुवंश में उत्पन्न व्यक्ति वाचक शब्दों से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११५. मातुरुत्संख्यासंभद्रपूर्वायाः १११८ ।**
सम-वा, त-म्, अण्

संख्या सम् तथा भद्र पूर्ववाले मातृ शब्द से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है तथा उकार अन्तादेश होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११६. कन्यायाः कनीन च ११११ ।**
सम-वा, त-म्, अण्

कन्या शब्द से अपत्य अर्थ में अण् होता है तथा कन्या को कनीन आदेश होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११७. विकर्णशुङ्गच्छगलाद्वत्सभरद्वाजात्रिषु ११२० ।**
सम-वा, त-म्, अण्

वत्स भरद्वाज और अत्रि के वंश के यथासंख्य व्यक्ति विकर्ण शुङ्ग छगल से अपत्यार्थ में अण् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११८. पीलाया वा ११२१ ।**
सम-वा, त-म्, अण्

पीला शब्द से अपत्य अर्थ में वैकल्पिक अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११९. ढक्च मण्डूकात् ११२२ ।**
सम-वा, त-म्, अण्

मण्डूक शब्द से अपत्यार्थ में ढक् और वैकल्पिक अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२०. स्त्रीभ्यो ढक् ११२३** ।। ६ ।। स्त्रीभ्यः १२१ ढक् १२७
सम-वा, त-म्

स्त्रीवाचक शब्दों से अपत्य अर्थ में ढक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२१. द्व्यचः ११२४ ।** द्वयचः १२२
सम-वा, त-म्,
स्त्रीभ्यः, ढक्

स्त्रीवाचक दो अच् वाले शब्दों से अपत्यार्थ में ढक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२२. इतश्चानिञः ११२५ ।**
सम-वा, त-म्,
द्वयचः, ढक्

इकारान्त दो अच् वाले शब्दों से अपत्यार्थ में ढक् होता है परन्तु इकारान्त होने में इञ् प्रत्यय कारण न हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२३. शुभ्रादिभ्यश्च ११२६ ।**
सम-वा, त-म्, ढक्

शुभ्र आदि शब्दों से ढक् प्रत्यय होता है ।

(६२) शुभ्र विष्ट पुर (विष्टपुर) ब्रह्मकृत शतद्वार शलाथल शलाकाभ्रू लेखाभ्रू (लेखाभ्र) विकसा (विकास) रोहिणी रुक्मिणी धर्मिणी दिश् शालूक अजबस्ति शकंधि विमातृ विधवा शुक विश देवतर शकुनि शुक्र उग्र ज्ञातल (शतल) बन्धकी सृकण्डु विस्त्रि अतिथि गोदन्त कुशाम्ब मकष्टु शाताहर पवष्टुरिक सुनामन् । 'लक्ष्मणश्यामयोर्वासिष्ठे' ७४ । गोधा कृकलास अणीब प्रवाहण भरत (भारत) भरम भृकण्डु कर्पूर इतर अन्यतर आलीढ मुदन्त सुदक्ष सुवक्षस् सुदामन् कद्रु तुद अकशाय कुमारिका कुठारिका किशोरिका अम्बिका जिह्माशिन् परिधि वायुदत्त शकल शलाका खडूर कुबेरिका अशोका गन्धपिङ्गला खडोन्मत्ता अनुदृष्टिन् (अनुदृष्टि)

	जरतिन् बलीवर्दिन् विग्र वीज जीव श्वन् अश्मन् अश्व अजिर ॥ **इति शुभ्रादिः ।। आकृतिगणः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ढक्	**१२४. विकर्णकुषीतकात्काश्यपे ११२७ ।**		कश्यपवंश्य विकर्ण और कुषीतक शब्दों से अपत्यार्थ में ढक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ढक्	**१२५. भ्रुवो वुक्च ११२८ ।**		भ्रू शब्द से अपत्य अर्थ में ढक् प्रत्यय तथा वुक् का आगम होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ढक्	**१२६. कल्याण्यादीनामिनङ् च ११३१ ।** (६३) कल्याणी सुभगा दुर्भगा बन्धकी अनुदृष्टि अनुसृति (अनुसृष्टि) जरती बलीवर्दी ज्येष्ठा कनिष्ठा मध्यमा परस्त्री—**इति कल्याण्यादिः ।।**	इनङ् १२७	कल्याणी आदि शब्दों से ढक् प्रत्यय तथा इनङ् आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ढक्, इनङ्	**१२७. कुलटाया वा ११३२ ।**		कुलटा शब्द से अपत्य अर्थ में ढक् प्रत्यय होता है । विकल्प से इनङ् आदेश भी होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्	**१२८. चटकाया ऐरक् ११३४ ।** ** चटकस्येति वाच्यम् ।* ** स्त्रियामपत्ये लुक् ।*		चटका से अपत्य अर्थ में ऐरक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्	**१२९. गोधाया ढ्रक् ११३५ ।**	गोधायाः १३० ढ्रक् १३१	गोधा से अपत्य में ढ्रक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ढ्रक्, गोधायाः	**१३०. आरगुदीचाम् ११३६ ।**		औदीच्य आचार्यों के मत से गोधा से अपत्यार्थ में आरक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ढ्रक्	**१३१. क्षुद्राभ्यो वा ११३७ ।**		क्षुद्रार्थवाची शब्दों से अपत्य अर्थ में विकल्प से ढ्रक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्	**१३२. पितृष्वसुश्छण् ११३८ ।**	पि-सुः १३४	पितृस्वसृ से अपत्यार्थ में छण् होता है ।
ङ्या-त्,तद्धिताः,सम-वा, त-म्, पि-सुः	**१३३. ढकि लोपः ११३९ ।**	ढ-पः १३४	ढक् परे रहने पर पितृस्वसृ का लोप होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, पि-सुः, ढ-पः	**१३४. मातृष्वसुश्च ११४० ।**		मातृस्वसृ शब्द से पितृस्वसृवत् कार्य होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्	**१३५. चतुष्पाद्भ्यो ढञ् ११४१ ।**	ढञ् १३६	पशुविशेष वाची शब्दों से अपत्यार्थ में ढञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१३६. गृष्ट्यादिभ्यश्च ११४३ ।** गृष्टि आदि शब्दों से अपत्यार्थ में ढञ् होता है।
सम-वा, त-म्, ढञ्

(६४) गृष्टि हृष्टि बलि हलि विश्रि कुद्रि अजवस्ति मित्रयु—**इति गृष्ट्यादि: ।।**

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१३७. राजश्वशुराद्यत् ११५३ ।** राजन् और श्वशुर शब्द से अपत्यार्थ में यत् होता है।
सम-वा, त-म् **** राज्ञो जातावेवेति वाच्यम् ।***

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१३८. क्षत्राद्घ: ११६१ ।** क्षत्र शब्द से अपत्य अर्थ में घ होता है।
सम-वा, त-म्

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१३९. कुलात्खः ११६२ ।** कुलात् १४० कुल और कुलान्त शब्दों से अपत्यार्थ में ख होता है।
सम-वा, त-म्

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१४०. अपूर्वपदादन्यतरस्यां यड्ढकञौ ११६३ ।। ७ ।।** अ-स्यां १४२ अपूर्वपद कुल शब्द से अपत्यार्थ में विकल्प से यत् और ढकञ् प्रत्यय भी होते हैं।
सम-वा, त-म्, कुलात्

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१४१. महाकुलादञ्खञौ ११६४ ।** महाकुल शब्द से अपत्य अर्थ में अञ् खञ् और ख होते हैं।
सम-वा, त-म्, अ-स्यां

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१४२. दुष्कुलाड्ढक् ११६५ ।** दुष्कुल शब्द से अपत्यार्थ में विकल्प से ढक् होता है।
सम-वा, त-म्, अ-स्यां

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१४३. स्वसुश्छः ११६६ ।** छ: १४४ स्वसृ शब्द से अपत्यार्थ में छ प्रत्यय होता है।
सम-वा, त-म्

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१४४. भ्रातुर्व्यच्च ११६७ ।** भ्रातु: १४५ भ्रातृ शब्द से अपत्य अर्थ में व्यत् और छ होते हैं।
सम-वा, त-म्, छ:

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१४५. व्यन्सपत्ने ११६८ ।** यदि शत्रुवाच्य हो तो भ्रातृ से व्यन् होता है।
सम-वा, त-म्, भ्रातु:

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१४६. रेवत्यादिभ्यष्ठक् ११६९ ।** ठक् १४७ रेवती आदि शब्दों से अपत्यार्थ में ठक् होता है।
सम-वा, त-म्

(६५) रेवती अश्वपाली मणिपाली द्वारपाली वृकवञ्चिन् वृकबन्धु वृकग्राह कर्णग्राह दण्डग्राह कुक्कुटाक्ष (ककुदाक्ष) [चामरग्राह]—**इति रेवत्यादि: ।।**

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१४७. गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च ११७१ ।** कुत्सने १४९ गोत्र में स्त्रीवाची शब्दों से ण और और ठक् होते हैं यदि कुत्सा हो।
सम-वा, त-म्, ठक्

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१४८. वृद्धाट्ठक्सौवीरेषु बहुलम् ११७२ ।** ठक् १४९ सौ-लम् १५० वृद्ध सौवीरगोत्र शब्दों से अपत्यार्थ में बहुलतः ठक् होता है कुत्सा में।
सम-वा, त-म्, कुत्सने

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, कुत्सने, ठक्, सौ-लं **१४९. फेश्छ च ११७३ ।**

फिञन्त सौवीरगोत्र शब्दों से छ और ठक् होते हैं कुत्सा में।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, सौ-लं **१५०. फाण्टाहृतिमिमताभ्यां णफिञौ ११७४**

सौवीरगोत्र में फाण्टाहृति और मिमत शब्दों से अपत्यार्थ में ण और फिञ् होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१५१. कुर्वादिभ्यो ण्यः ११७५ ।** ण्यः १५२

कुरु आदि शब्दों से अपत्यार्थ में ण्य होता है।

(६६) कुरु गर्गर मङ्गुष अजमार रथकार वावदूक। 'सम्राज क्षत्रिये' ७५। कवि मति (विमति) कापिञ्जलादि वाक् वामरथ पितृमत् इन्द्रजाली [इन्द्रलाजी] एजि वातकि दामोष्णीषि गणकारि कैशोरि कुट शालाका (शलाका) मुर पुर एरका शुभ्र दर्भ केशिनी। 'वेनाच्छन्दसि' ७६। शूर्पणाय श्यावनाय श्यावरथ शावपुत्र सत्यंकार वडभीकार पथिकार मूढ शकन्धु शङ्कु शाक शालिन् शालीन कर्तृ हर्तृ इन पिण्डी तक्षन्। वामरथस्य कण्वादिवत्स्वरवर्जम्॥ **इति कुर्वादिः॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ण्यः **१५२. सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च ११७६ ।** से-भ्यः १५३

सेनान्त लक्षण तथा कारिवाचक शब्दों से अपत्य अर्थ में ण्य प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, से-भ्यः **१५३. उदीचामिञ् ११७७ ।**

** तक्ष्णोऽण उपसंख्यानम् ।*

औदीच्य मत में सेनान्त लक्षण तथा कारिवाचक शब्दों से इञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१५४. तिकादिभ्यः फिञ् ११७८ ।** फिञ् १५९

तिक आदि शब्दों से अपत्यार्थ में फिञ् होता है।

(६७) तिक कितक (कितव) संज्ञाबालशिख (संज्ञा बाला शिखा) उरश (उरस्) शाट्य सैन्धव यमुन्द रूप्य ग्राम्य नील अमित्र गौकुक्ष्य [गौकक्ष्य] कुरु देवरथ तैतल औरश (औरस) कौरव्य भौरिकि भौलिकि चौपयत चैटयत शीकयत क्षैतयत वाजवत चन्द्रमस् शुभ गङ्गा वरेण्य सुपामन् आरटव [आरब्ध] वह्यका खल्या [खल्यका] वृष लोमक उदन्य यज्ञ॥ **इति तिकादिः॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, फिञ् **१५५. कौसल्यकार्मार्याभ्यां च ११७९ ।** ** वदगुकोसलकर्मारछागवृषाणां युक्चादिष्टस्य ।*
कौसल्य कार्मार्य शब्द से फिञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, फिञ् **१५६. अणो द्व्यचः ११८० ।**
अण् प्रत्ययान्त द्व्यच् प्रातिपदिक से फिञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, फिञ् **१५७. उदीचां वृद्धादगोत्रात् ११८१ ।** उ-त्रात् १५९
औदीच्य मत में अगोत्र वृद्ध शब्दों से अपत्यार्थ में फिञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, फिञ्, उ-त्रात् **१५८. वाकिनादीनां कुक्च ११८२ ।** कुक् १५९
वाकिन आदि शब्दों से अपत्यार्थ में फिञ् प्रत्यय होता है तथा कुक् का आगम होता है ।

(६८) वाकिन गौधेर कार्कष काक लङ्का । 'चर्मिवर्मिणोर्नलोपश्च' ७७ । **इति वाकिनादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, फिञ्, उ-त्रात्, कुक् **१५९. पुत्रान्तादन्यतरस्याम् ११८३ ।**
औदीच्य मत में पुत्रान्त वृद्ध शब्दों से अपत्यार्थ में फिञ् प्रत्यय होता है तथा विकल्प से कुक् का आगम होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१६०. प्राचामवृद्धात्फिन्बहुलम् ११८४ ।** ।।८।।
प्राच्य मत में अवृद्ध शब्दों से बाहुल्येन फिन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१६१. मनोर्जातावञ्यतौ षुक्च ११८५ ।**
मनु शब्द से जाति अर्थ में अञ् और यत् प्रत्यय होते हैं तथा षुक् का आगम होता है ।

गोत्र संज्ञा

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१६२. अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् १०८९ ।** अप-ति १६५ ** यूनश्च कुत्सायां गोत्रसंज्ञेति वाच्यम् ।*
पौत्र प्रभृति अपत्य को गोत्र संज्ञा होती है ।

युव संज्ञा

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, अप-ति **१६३. जीवति तु वंश्ये युवा १०९० ।** जीवति १६४ युवा १६५ ** वृद्धस्य च पूजायाम् ।*
वंश्य के जीवित रहने पर पौत्र प्रभृति अपत्य को युव संज्ञा होती है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, अप-ति, जीवति युवा **१६४. भ्रातरि च ज्यायसि १०९१ ।**
वंश्य के जीवित न रहने पर भी ज्येष्ठ भ्राता के जीवित रहने पर पौत्र प्रभृति अपत्य को युव संज्ञा होती है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, अप-ति, युवा **१६५. वाऽन्यस्मिन्सपिण्डे स्थविरतरे जीवति १०९२ ।**
दूसरे भी सपिण्ड या स्थविरतर के जीवित रहने पर पौत्र प्रभृति जीवित अपत्य को विकल्प से युव संज्ञा होती है ।

तद्राजसंज्ञक प्रत्यय

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् — **१६६. जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ् ११८६ ।** — ज-यात् १७६ — जनपद क्षत्रिय वाची शब्दों से अपत्यार्थ में अञ् प्रत्यय होता है ।

** क्षत्रियसमानशब्दाज्जनपदात्तस्य राजन्यपत्यवत् ।* — अञ् १६७

** पूरोरण् वक्तव्यः ।*

** पाण्डोर्ड्यण् ।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात्, अञ् — **१६७. साल्वेयगान्धारिभ्यां च ११८७ ।** — साल्वेय और गान्धारि शब्दों से अपत्यार्थ में अञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात् — **१६८. द्व्यञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण् ११८८ ।** — क्षत्रियवाची जनपदशब्द मगध कलिङ्ग सूरमस तथा द्व्यच् से अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात् — **१६९. वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ् ११८९ ।** — जनपद क्षत्रियवाची वृद्ध इकारान्त तथा कोसल और अजादि शंब्द से ञ्यङ् प्रत्यय होता है अपत्यार्थ में ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात् — **१७०. कुरुनादिभ्यो ण्यः ११९० ।** — क्षत्रियवाची जनपद कुरु और नादि शब्दों से ण्य होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात् — **१७१. साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादिञ् ११९१ ।** — साल्वावयव प्रत्यग्रथ कलकूट तथा अश्मक से अपत्यार्थ में इञ् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात् — **१७२. ते तद्राजाः ११९२ ।** — तद्राजाः १७६ — जनपदवाची क्षत्रिय शब्दों से होने वाले अञ् आदि प्रत्यय तद्राज संज्ञक होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात्, तद्राजाः — **१७३. कम्बोजाल्लुक् ११९४ ।** — लुक् १७६ — जनपद क्षत्रियवाची प्रत्यय यदि कम्बोज से हों तो उनका लुक् होता है ।

** कम्बोजादिभ्य इति वक्तव्यम् ।*

(६९) कम्बोज चोल केरल शक यवन ॥ **इति कम्बोजदिः ॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात्, तद्राजाः, लुक् — **१७४. स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च ११९५ ।** — स्त्रियाम् १७५ — अवन्ति कुन्ति कुरु शब्दों से होने वाले तद्राज प्रत्ययों का लुक् होता है यदि अभिधेय स्त्रीलिङ्ग हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात्, तद्राजाः, लुक्, स्त्रियाम् — **१७५. अतश्च ११९६ ।** — स्त्रीलिङ्ग अभिधेय हो तो तद्राज अकारान्त का लुक् हो जाता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, ज-यात्, तद्राजाः, लुक्, **१७६. न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः ११९७** — प्राच्य क्षत्रियवाची शब्द भर्गादि शब्द तथा यौधेयादि शब्दों से तद्राज का लुक् नहीं होता है।

(७१) भर्ग करूश केकय कश्मीर साल्व सुस्थाल उरश (उरस्) कौरव्य ॥ **इति भर्गादिः ॥**

(७१) यौधेय शौकेय शौभ्रेय ज्यावाणेय धार्तेय (धौर्तेय) त्रिगर्त भरत उशीनर ॥ **इति यौधेयादिः ॥**

ङ्याब्द्विगोः षिद्गौरादिवाहो दैवयज्ञियञिञो-र्व्द्यचो महाकुलान्मनोर्जातौ षोडश ॥

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य प्रथमः पादः।

द्वितीयः पादः।

तद्धिते चातुरार्थिक प्रत्ययः

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — **१. तेन रक्तं रागात् १२०२।** — तेन १३, र-गात् २ — रंगवाची शब्दों से रंगे गये इस अर्थ में उन शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

ङ्यात्, तद्धिताः, सम-वा, तेन, र-गात् — **२. लाक्षारोचनाट्ठक् १२०३।** — 'लाक्षा रोचना से रंगे गये' इस अर्थ में ठक् होता है।

* *शकलकर्दमाभ्यामुपसंख्यानम्।*
* *(शकलकर्दमाभ्यामणपीति काशिका।)*
* *नील्या अन्वक्तव्यः।*
* *पीतात्कन्वक्तव्यः।*
* *हरिद्रामहारजनाभ्यामञ्।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन — **३. नक्षत्रेण युक्तः कालः १२०४।** — न-लः ५ — 'नक्षत्र विशेषवाची शब्दों से युक्त' इस अर्थ में यथा—विहित प्रत्यय होते हैं पर युक्त काल होगा।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन, न-लः — **४. लुबविशेषे १२०५।** — लुप् ५ — नक्षत्र युक्त काल से यदि विशेष न बताया जा रहा हो तो होने वाले प्रत्ययों का लुप् हो जाता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन, न-लः, लुप् — **५. संज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम् १२०६।** — संज्ञा के विषय में श्रवण और अश्वत्थ से उत्पन्न प्रत्ययों का लुप् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६. द्वन्द्वाच्छः १२०७ ।** सम-वा, तेन		नक्षत्र द्वन्द्व से युक्त काल में छ प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **७. दृष्टं साम १२०८ ।** सम-वा, तेन	दृ-म ९	जो साम जिससे देखा जाय उससे यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **८. कलेर्ढक् १२०९ ।** सम-वा, तेन, दृ-म **** सर्वत्राग्निकलिभ्यां ढग्वक्तव्यः ।*** **** अस्मिन्नर्थेऽण् डिद्वा वक्तव्यः ।*** **** जातार्थे प्रतिप्रसूतोऽण्वा डिद्वक्तव्यः ।*** **** तीयादीकक् स्वार्थे वाच्यः ।*** **** न विद्यायाः ।*** **** गोत्रादङ्कवत् ।***		कलि से देखा गया इस अर्थ में ढक् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९. वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ १२१० ।** सम-वा, तेन, दृ-म		वामदेव से देखा गया साम इस अर्थ में ड्यत् और ड्य होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **१०. परिवृतो रथः १२११ ।** सम-वा, तेन	प-थः १२	जिससे ढंका जाय रथ इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **११. पाण्डुकम्बलादिनिः १२१२ ।** सम-वा, तेन, प-थः		पाण्डु कम्बल से ढंका गया रथ इस अर्थ में इनि होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२. द्वैपवैयाघ्रादञ् १२१३ ।** सम-वा, तेन, प-थः		द्वैप और वैयाघ्र से ढंका गया रथ इस अर्थ में अञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **१३. कौमारापूर्ववचने १२१४ ।** सम-वा, तेन		अपूर्ववचन में कौमार शब्द से यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४. तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः १२१५ ।** सम-वा	तत्र २०	अमत्रवाची शब्दों से उद्धृत इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५. स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते १२१६ ।** सम-वा, तत्र		यदि व्रत हो तो स्थण्डिल पर सोने वाला इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **१६. संस्कृतं भक्षाः १२१७ ।** सम-वा, तत्र	सं-क्षा २०	इसमें संस्कृत भक्ष इस अर्थ में इसमें वाले शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **१७. शूलोखाद्यत् १२१८ ।** स-म-वा, तत्र, सं-क्षाः		संस्कृतं भक्षाः इस अर्थ में शूल और उख शब्द से यत् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **१८. दध्नष्ठक् १२१९ ।** सम-वा तत्र सं-क्षाः	ठक् १९	संस्कृतं भक्षाः इस अर्थ में दधि से ठक् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-म-वा, तत्र, सं-क्षाः, ठक्	**१९. उदश्वितोऽन्यतरस्याम् १२२० ।**		संस्कृतं भक्षाः इस अर्थ में उदश्वित् शब्द से विकल्प से ठक् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-म-वा तत्र सं-क्षाः	**२०. क्षीराड्ढञ् १२२२ ।** ।। १ ।।		संस्कृतं भक्षाः इस अर्थ में क्षीर से ढञ् होता है ।
ङ्यात्, तद्धिताः, सम-वा	**२१. साऽस्मिन्पौर्णमासीति १२२३ ।**	स-ति २३	संज्ञा में यह पौर्णमासी इसमें है इस अर्थ में तत्तद् शब्दों से यथा-विहित प्रत्यय होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ति	**२२. आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् १२२४ ।**	ठक् २३	आग्रहायणी और अश्वत्थ से ठक् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ति, ठक्	**२३. विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्तिकीचैत्रीभ्यः १२२५ ।**		फाल्गुनी आदि पौर्णमासी शब्दों से विकल्प से ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**२४. साऽस्य देवता १२२६ ।**	सास्यदेवता ३५	सा अस्य इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है, यदि सा देवता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ता	**२५. कस्येत् १२२७ ।**		क देवता जिसके इस अर्थ में अण् होता है तथा क को इकार आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ता	**२६. शुक्राद्घन् १२२८ ।**		सास्य देवता इस अर्थ में शुक्र से घन् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ता	**२७. अपोनप्त्रपांनप्तृभ्यां घः १२२९ ।**	अ-भ्यां २८	अपोनप्तृ अपांनप्तृ से घ होता है, सास्य देवता अर्थ में ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ता, अ-भ्यां	**२८. छ च १२३० ।** **** छप्रकरणे पैङ्गाक्षिपुत्रादिभ्य उपसंख्यानम् ।*** **** शतरुद्राद्घ च ।***	छ २९	इन्हीं शब्दों से छ प्रत्यय भी होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ता, छ	**२९. महेन्द्राद्घाणौ च १२३१ ।**		सास्य देवता अर्थ में ही महेन्द्र से घ और अण् भी होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ता	**३०. सोमाट्ट्यण् १२३२ ।**		सास्य देवता अर्थ में सोम से ट्यण् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ता	**३१. वाय्वृतुपित्रुषसो यत् १२३३ ।**	यत् ३२	वायु ऋतु पितृ उषस् से यत् होता है सास्य देवता अर्थ में ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सा-ता, यत्	**३२. द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च १२३५ ।**		द्यावापृथिवी शुनासीर मरुत्वत् अग्नीषोम वास्तोष्पति गृहमेध से सास्य देवता अर्थ में छ और यत् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **३३. अग्नेर्ढक् १२३६ ।**
सम-वा, सा-ता

सास्य देवता अर्थ में अग्नि से ढक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **३४. कालेभ्यो भववत् १२३७ ।**
सम-वा, सा-ता

कालवाची शब्दों से भव अर्थ में होने वाले प्रत्यय होंगे सास्य देवता इस अर्थ में भी ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **३५. महाराजप्रोष्ठपदाट्ठञ् १२३८ ।**
सम-वा, सा-ता	** तदस्मिन्वर्तत इति नवयज्ञादिभ्य उपसंख्यानम् ।*
** पूर्णमासादण्वक्तव्यः ।*

इसी अर्थ में महाराज प्रोष्ठपद से ठञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **३६. पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः १२४२**
सम-वा	** पितुर्भ्रातरि व्यन् ।*
** मातुर्डुलच् ।*
** मातृपितृभ्यां पितरि डामहच् ।*
** मातरि षिच्च ।*
** अवेर्दुग्धे सोढदूसमरीसचो वक्तव्याः ।*
** तिलान्निष्फलात्पिञ्जपेजौ ।*
** पिञ्जश्छन्दसि डिच्च ।*

पितृव्य मातुल मातामह पितामह शब्द निपातित होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **३७. तस्य समूहः १२४३ ।**	तस्य ५४
सम-वा	समूहः ५१

तस्य इस षष्ठी समर्थ से समूह अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **३८. भिक्षादिभ्योऽण् १२४४ ।**
सम-वा, तस्य,
समूहः

तस्य समूह अर्थ में भिक्षा आदि शब्दों से अण् होता है ।

(७२) भिक्षा गर्भिणी क्षेत्र करीष अङ्कार (अङ्गार) चर्मिन् (चर्मन्) धर्मिन् सहस्र युवति पदाति पद्धति अर्थवन् दक्षिणा (भूत विषय श्रोत्र)।।
इति भिक्षादिः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **३९. गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराजपुत्रवत्समनुष्याजाद्वुञ् १२४६ ।**	वुञ् ४०
सम-वा, तस्य,
समूहः	** वृद्धाच्चेति वक्तव्यम् ।*

गोत्र उक्षा उष्ट्र उरभ्र राजन् राजन्य राजपुत्र वत्स मनुष्य अज शब्दों से तस्य समूह अर्थ में वुञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **४०. केदाराद्यञ्च १२४८ ।**	।। २ ।।	के-त् ४१
सम-वा, तस्य, ** गणिकाया यञिति वक्तव्यम् ।*
समूहः, वुञ्

तस्य समूह अर्थ में केदार से यञ् और वुञ् होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **४१. ठञ्कवचिनश्च १२४९ ।**
सम-वा, तस्य,
समूहः, के-त्

कवचिन् से तस्य समूह अर्थ में ठञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तस्य, समूहः

४२. ब्राह्मणमाणवबाडवाद्यन् १२५० ।
* *पृष्ठादुपसंख्यानम् ।*
* *वातादूलो वा ।*

ब्राह्मण माणव बाडव से तस्य समूह अर्थ में यन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तस्य, समूहः

४३. ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् १२५१ ।
* *गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम् ।*
* *अह्नः खः क्रतौ ।*
* *पर्श्वा णस् वक्तव्यः ।*

ग्राम जन बन्धु से तस्य समूह अर्थ में तल् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा तस्य, समूहः

४४. अनुदात्तादेरञ् १२५३ । अञ् ४५

अनुदात्तादि शब्दों से तस्य समूहः अर्थ में अञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तस्य, समूहः, अञ्

४५. खण्डिकादिभ्यश्च १२५४ ।

तस्य समूहः अर्थ में खण्डिका आदि शब्दों से अञ् होता है ।

(७३) खण्डिक वडवा । 'क्षुद्रकडालवात् (क्षुद्रकमालवात्) सेना संज्ञायाम्' ७८ । भिक्षुक शुक ऊलूक श्वन् अहन् युगवरत्रा (युगवरत्र) हलबन्धा (हलबन्ध) **इति खण्डिकादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा तस्य, समूहः

४६. चरणेभ्यो धर्मवत् १२५५ ।

समूह अर्थ में चरणवाची शब्दों से धर्मवत् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा तस्य, समूहः

४७. अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् १२५६ ।
* *धेनोरनञ इति वक्तव्यन् ।*

अचित्तार्थक तथा हस्ति धेनु शब्द से समूहार्थ में ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा तस्य, समूहः

४८. केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम् १२५७

समूह अर्थ में केश और अश्व शब्दों से क्रमशः यञ् और छ प्रत्यय विकल्पेन होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा तस्य, समूहः

४९. पाशादिभ्यो यः १२५८ । यः ५०

समूह अर्थ में पाश आदि शब्दों से य प्रत्यय होता है ।

(७४) पाश तृण धूम वात अङ्गार (पाटल) पोत गल पिटक पिटाक शकट हल [नट] वन ।। **इति पाशादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तस्य, समूहः, यः

५०. खलगोरथात् १२५९ ।

तस्य समूहः अर्थ में खल गो रथ से य होता है ।

ङ्यात्, तद्धिताः, सम-वा, तस्य, समूहः

५१. इनित्रकट्यचश्च १२६० ।
* *खलादिभ्य इनिः ।*

समूह अर्थ में खल गो रथ से इनि त्र कट्यच् होते हैं ।

(७५) खलिनी डूकिनी (डाकिनी) कुदुम्बिनी (कुटुम्बिनी) द्रुमिणी अङ्किनी गविनी रथिनी कुण्डलिनी ।। **इति खलादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **५२. विषयो देशे १२६१ ।** वि-शे ५४
सम-वा, तस्य

देशवाची विषय हो तो षष्ठ्यन्त से यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **५३. राजन्यादिभ्यो वुञ् १२६२ ।**
सम-वा, तस्य,
वि०-शे

देश अर्थ में राजन्य आदि शब्दों से वुञ् होता है ।

(७६) राजन्य आनृत बाभ्रव्य शालङ्कायन दैवयातव (दैवयात) (अव्रीड वरत्रा) जालंधरायण (राजायन) तेलु आत्मकामेयु अम्बरीषपुत्र वसाति बैल्ववन शैलुष उदुम्बर तीव्र बैल्वज आर्जुनायन संप्रिय दाक्षि ऊर्णनाभ ॥ **इति राजन्यादिः ।। आकृतिगणः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **५४. भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ १२६३ ।**
सम-वा, तस्य,
वि०-शे

भौरिकी आदि तथा ऐषुकारि आदि शब्दों से क्रमशः विधल् और भक्तल् प्रत्यय होते हैं, यदि देश अर्थ हो ।

(७७) भौरिकी भौलिकी चौपयत चौटयत (चेटयत) काणेय वाणिजक वाणिकाज्य (वालिकाज्य) सैकयत वैकयत ॥ **इति भौरिक्यादिः ।।**

(७८) ऐषुकारि सारस्यायन (सारसायन) चान्द्रायण द्व्याक्षायण त्र्याक्षायण औडायन जौलायन खाडायन दारामित्रि दासमित्रायण शौद्रायण दाक्षायण शापण्डायन (शायण्डायन) तार्क्ष्यायण शौभ्रायण सौवीर (सौवीरायण) शपण्ड (शयण्ड) शौण्ड शयाण्डि (शयान्ड) वैश्वमानव वैश्वध्येनव (वैश्वधेनव) नड तुण्डदेव विश्वदेव (सापिण्डि) **इत्यैषुकार्यादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **५५. सोऽस्यादिरिति छन्दसः प्रगाथेषु १२६४** सोऽस्य ५६
सम-वा *** *स्वार्थ उपसंख्यानम् ।***

वेद के प्रगाथ में 'यह इसका' इस अर्थ में यथा-विहित प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **५६. संग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः १२६५ ।**
सम-वा, सोऽस्य

प्रयोजनवाची और योद्धृवाची शब्दों से 'यह इसका' इस अर्थ में यथा-विहित प्रत्यय होता है, यदि वाच्य संग्राम हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **५७. तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायांणः १२६६**
सम-वा

यह इसमें प्रहरण है इस अर्थ में प्रहरण से ण प्रत्यय होता है, यदि क्रीडा हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा **५८. घञः साऽस्यां क्रियेति ञः १२६७ ।** घञन्त क्रियावाची शब्दों से ञ प्रत्यय होता है, यदि 'यह इसमें' ऐसा अर्थ हो।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा **५९. तदधीते तद्वेद १२६९ ।** तद्वेद ६६ जिसको पढ़ा जाय या जाना जाय इस अर्थ में उससे यथाविहित प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तद्वेद **६०. क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट्ठक् १२७० ।।।३।।** क्रतु विशेषवाची, उक्थ आदि शब्द तथा सूत्रान्त शब्दों से ठक् होता है 'तदधीते तद्वेद' इस अर्थ में।

(७९) उक्थ लोकायत न्याय न्यास पुनरुक्त निरुक्त निमित्त द्विपदा ज्योतिष अनुपद अनुकल्प यज्ञ (धर्म) चर्चा क्रमेतर श्लक्ष (श्लक्ष्ण) संहिता पदक्रम संघट सङ्घट्ट वृत्ति परिषद् संग्रह गण (गुण) आयुर्देव (आयुर्वेद) ॥ **इत्युक्थादिः ।।**

* ***मुख्यार्थात्तूक्थशब्दाट्ठगणौ नेष्यते ।***
* ***विद्यालक्षणकल्पान्ताच्चेति वक्तव्यम् ।***
* ***सूत्रान्तात्त्वकल्पादेरेवेष्यते ।***
* ***अङ्गक्षत्रधर्मत्रिपूर्वाद्विद्यान्तान्नेति वक्तव्यम् ।***
* ***आख्यानाख्यायिकेतिहासपुराणेभ्यश्च ।***
* ***सर्वादेः सादेश्च लुक् ।***
* ***द्विगोश्च ।***
* ***अनुसूर्लक्ष्यलक्षणे ।***
* ***इकन्पदोत्तरपदात् ।***
* ***शतषष्टेष्पिकन् पथः ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तद्वेद **६१. क्रमादिभ्यो वुन् १२७१ ।** 'तदधीते तद्वेद' अर्थ में क्रम आदि शब्दों से वुन् होता है।

(८०) क्रम पद शिक्षा मीमांसा सामन्—**इति क्रमादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तद्वेद **६२. अनुब्राह्मणादिनिः १२७२ ।** 'तदधीते तद्वेद' अर्थ में अनुब्राह्मण से इनि होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तद्वेद **६३. वसन्तादिभ्यष्ठक् १२७३ ।** 'तदधीते तद्वेद' अर्थ में वसन्त आदि से ठक् होता है।

(८१) वसन्त (ग्रीष्म) वर्षा शरद (शरत्) हेमन्त शिशिर प्रथम गुण चरम अनुगुण अथर्वन् आथर्वण ॥ **इति वसन्तादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६४. प्रोक्ताल्लुक् १२७४ ।** समं-वा, तद्वेद	लुक् ६६	तदधीते तद्वेद अर्थ में प्रोक्तप्रत्ययान्त शब्दों से हुये प्रत्ययों का लोप हो जाता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **६५. सूत्राच्च कोपधात् १२७७ ।** सम-वा, तद्वेद, लुक्		'तदधीते तद्वेद' अर्थ में सूत्रवाची कोपध शब्दों से प्रत्यय का लुक् हो जाता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **६६. छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि १२७८ ।** सम-वा, तद्वेद, लुक्		प्रोक्त प्रत्ययान्त छन्दस् एवं ब्राह्मण से प्रत्ययों का लुक् होता है यदि तदधीते तद्वेद विषय हो।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **६७. तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि १२७९ ।** सम-वा	दे-म्नि ७०	'तदस्मिन् अस्ति' इस अर्थ में तत् पद से अण् आदि प्रत्यय होते हैं, यदि प्रत्ययान्त से देश वाच्य हो।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **६८. तेन निर्वृत्तम् १२८० ।** सम-वा, दे-म्नि		तेन निर्वृत्तम् इस अर्थ में तेनवाची शब्द से यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **६९. तस्य निवासः १२८१ ।** सम-वा, दे-म्नि	तस्य ७०	तस्य निवासः इस अर्थ में तस्य वाची शब्द से यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **७०. अदूरभवश्च १२८२ ।** सम-वा, दे-म्नि, तस्य		तस्य अदूरभवः इस अर्थ में तस्यवाची से यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **७१. ओरञ् १२८३ ।** सम-वा	अञ् ७६	सूत्र ६७ से ७० तक के अर्थों में उवर्णान्त प्रातिपदिक से अञ् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **७२. मतोश्च बह्वजङ्गात् १२८४ ।** सम-वा, अञ्		(बहुत अच् वाले) मतुप् अन्त शब्दों से चारों अर्थों में अञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **७३. बह्वचः कूपेषु १२८५ ।** सम-वा, अञ्	कूपेषु ७४	बह्वच् प्रातिपदिक से चातुरार्थिक अञ् होता है, यदि अभिधेय कूप हो।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **७४. उदक्च विपाशः १२८६ ।** सम-वा, अञ्, कूपेषु		विपाशा के उत्तर कूल में होने वाला कूप यदि अभिधेय हो तो चातुरार्थिक अञ् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **७५. संकलादिभ्यश्च १२८७ ।** सम-वा, अञ्		सङ्कल आदि शब्दों से चातुरार्थिक अञ् प्रत्यय होता है।

(८२) सङ्कल पुष्कल उत्तम उडुप उद्वेप उत्पुट कुम्भ निधान सुदक्ष सुदत्त सुभूत सुपूत सुनेत्र सुमङ्गल सुपिङ्गल सूत सिकत पूतिका (पूतिक) पूलास कूलास पलाश निवेश गवेश (गवेष) गम्भीर इतर आन् अहन् लोमन् वेमन् चरण (वरुण) बहुल सद्योज अभिषिक्त गोभृत् राजभृत् भल्ल मल्ल माल ।। **इति सङ्कलादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७६. स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु १२८८ ।**
सम-वा; अञ्

यदि स्त्रीलिङ्ग वाच्य हो तो सौवीर साल्व प्राच् देश में प्रातिपदिक से अञ् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७७. सुवास्त्वादिभ्योऽण् १२८९ ।** अण् ७९
सम-वा

सुवास्तु आदि शब्दों से चातुरार्थिक अण् प्रत्यय होता है।

(८३) सुवास्तु (सुवस्तु) वर्णु भण्डु खण्डु सेवालिन् कर्पूरिन् शिखण्डिन् गर्त कर्कश शकटीकर्ण कृष्णकर्ण (कर्क) कर्कन्धुमती गोह अहिसक्थ ।। **इति सुवास्त्वादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७८. रोणी १२९० ।**
सम-वा, अण्

रोणी शब्द से चातुरर्थिक अण् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७९. कोपधाच्च १२९१ ।**
सम-वा, अण्

ककारोपध शब्द से चातुरर्थिक अण् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८०. वुञ्छण्कठजिलसेनिरढञ्ण्ययफक्फिञिञ्ञ्यकक्ठकोऽरीहणकृशाश्वर्श्यकुमुदकाशतृणप्रेक्षाश्मसखिसंकाशबलपक्षकर्णसुतङ्गमप्रगदिन्वराहकुमुदादिभ्यः १२९२ ।। ४ ।।**
सम-वा

अरीहणादि कृशाश्वादि ऋश्यादि कुमुदादि काशादि तृणादि प्रेक्षादि अश्मादि सख्यादि संकाशादि बलादि पक्षादि कर्णादि सुतङ्गमादि प्रगद्यादि वराहादि कुमुदादि शब्दों से क्रमशः चातुरर्थिक वुञ् छण् क ठच् इल श इनि र ढञ् ण्य य फक् फिञ् इञ् ञ्य कक् ठक् प्रत्यय होते हैं।

(८४) अरीहण (अहीरण) द्रुगण द्रुहण भलग (भगल) उलन्द किरण सांपरायण क्रौष्टायन (क्रौष्ट्रायण) औष्ट्रायण त्रैगर्तायन मैत्रायण भास्त्रायण वैमत्तायन (वैमतायन) गौमतायन सौमतायन सौसायन धौमतायन सौमायन ऐन्द्रायण कौद्रायण (कौन्द्रायण) खाडायन शाण्डिल्यायन रायस्पोष विपथ विपाश उद्दण्ड (उदञ्चन) खाण्डवीरण वीरण

काशकृत्स्न कृत्स्न (कशकृत्स्न) जाम्बवत शिंशपा रैवत (रेवत) बिल्व सुयज्ञ शिरीष बधिर जम्बु खदिर सुशर्मन् (सशर्मन्) दलतृ भलन्दन खण्डु कलन (कनल) यज्ञदत्त—**इत्यरीहणादिः ।।**

(८५) कृशाश्व अरिष्ट अरिश्म वेश्मन् विशाल लोमश रोमश रोमक लोमक शबल कूट वर्चल कुवर्चल सुकर सूकर प्रातर (प्रतर) सदृश पुरग पुराग सुख धूम अजिन विनत अवनत कुविद्यास [विकुट्यास] पराशर अरुस् अयस् मौद्गल्याकर (मौद्गल्य युकर)—**इति कृशाश्वादिः ।।**

(८६) ऋश्य [ऋष्य] न्यग्रोध शर निलीन (निवास निवात) निधान निबन्धन (निबन्ध) (विबद्ध) परिगूढ (उपगूढ) असनि सित मत वेश्मन् उत्तराश्मन् अश्मन् स्थूल बाहु खदिर शर्करा अनडुह (अनडुह्) अरडु परिवंश वेणु वीरण खण्ड दण्ड परिवृत्त कर्दम अंशु—**इति ऋश्यादिः ।।**

(८७) कुमुद शर्करा न्यग्रोध इक्कट संकट कङ्कट गर्त बीज परिवाप निर्यास शकट कच मधु शिरीष अश्व अश्वत्थ बल्बज यवाष कूप विकङ्कत दशग्राम—**इति कुमुदादिः ।।**

(८८) काश पाश अश्वत्थ पलाश पीयूक्षा चरण वास नड वन कर्दम कच्छूल कङ्कट गुहा विस तृण कर्पूर बर्बर मधुर ग्रह कपित्थ जतु सीपाल—**इति काशादिः ।।**

(८९) तृण नड मूल वन पर्ण वर्ण वराण बिल पुल फल अर्जुन अर्ण सुवर्ण बल चरण बुस—**इति तृणादिः ।।**

(९०) प्रेक्षा फलका (हलका) बन्धुका ध्रुवका क्षिपका न्यग्रोध इक्कट कङ्कट (संकट) कट कूप बुक पुक पुट मह परिवाप यवाष ध्रुवका गर्त कूपक हिरण्य—**इति प्रेक्षादिः ।।**

(९१) अश्मन् यूथ ऊष मीन नद दर्भ बृन्द गुद खण्ड नग शिखा कोट पाम कन्द कान्द कुल गह्व गुड कुण्डल पीन गुह—**इत्यश्मादिः ।।**

(९२) सखि अग्निदत्त वायुदत्त सखिदत्त (गोपिल) भल्लपाल (भल्ल पाल) चक्र चक्रवाक छगल अशोक करवीर वासव वीर पूर वज्र कुशीरक शीहर (सीहर) सरक सरस समर समल सुरस रोह तमाल कदल सप्तल—**इति सख्यादिः ।।**
(९३) संकाश कपिल कश्मीर (समीर) सूरसेन सरक सूर । 'सुपन्थिन्पन्थ च' । यूप (यूथ) (अंश) अङ्ग नासा पलित अनुनाश अश्मन् कूट मलिन दश कुम्भ शीर्ष चिरन्त (विरत) समल सीर पञ्जर पन्थ नल रोमन् लोमन् पुलिन सुपरि कटिप सकर्णक वृष्टि तीर्थ अगस्ति विकर नासिका—**इति संकाशादिः ।।**
(९४) बल चुल नल दल वट लकुल उरल पुख (पुल) मूल उलडुल (उल डुल) वन कुल—**इति बलादिः ।।**
(९५) पक्ष तुक्ष तुष कुण्ड अण्ड कम्बलिका वलिक चित्र अस्ति । 'पथिन्पन्थ च' ७९ । कुम्भ सीरक सरक सकल सरस समल अतिश्वन् रोमन् लोमन् हस्तिन् मकर लोमक शीर्ष निवात पाक सहक (सिंहक) अङ्कुश सुवर्णक हंसक हिंसक कुत्स बिल खिल यमल हस्त कला सकर्णक—**इति पक्षादिः ।।**
(९६) कर्ण वसिष्ठ अर्क अर्कलूष द्रुपद आनडुह्य पाञ्चजन्य स्फिग (स्फिज्) कुम्भी कुन्ती जित्वन् जीवन्त कुलिश आण्डीवत् (आण्डीवत) जव जैत्र आकन (आनक)—**इति कर्णादिः ।।**
(९७) सुतङ्गम मुनिचित विप्रचित्त महाचित्त महापुत्र स्वन श्वेत गडिक (खडिक) शुक्र विग्र बीजावापिन् (बीज वापिन्) अर्जुन श्वन् अजिर जीव खण्डित कर्ण विग्रह ।। **इति सुतङ्गमादिः ।।**
(९८) प्रगदिन् मगदिन् मददिन् कविल खण्डित गदित चूडार मडार मन्दार कोविदार—**इति प्रगद्यादिः ।।**
(९९) वराह पलाशा (पलाश) शेरीष (शिरीष) पिनद्ध निबद्ध बलाह स्थूल विदग्ध (विजग्ध) विभग्न

(निमग्न) बाहु खदिर शर्करा ॥ **इति वराहादिः ।।**
(१००) कुमुद गोमथ रथकार दशग्राम अश्वत्थ शाल्मलि (शिरीष) मुनिस्थल कुण्डल कूट मधुकर्ण घासकुन्द शुचिकर्ण—**इति कुमुदादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, समवा — **८१. जनपदे लुप् १२९३ ।** — लुप् ८३ — यदि जनपद अभिधेय हो तो देशे तन्नाम्नि अर्थ में होने वाले चातुरर्थिक प्रत्यय का लुप् हो जाता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, लुप् — **८२. वरणादिभ्यश्च १३०१ ।** — वरण आदि शब्दों से उत्पन्न चातुरर्थिक प्रत्यय का लुप् हो जाता है ।

(१०१) वरण शृङ्गी शाल्मलि शुण्डी शयाण्डी पर्णी ताम्रपर्णी गोद आलिङ्ग्यायन जालपदी (जानपदी) जम्बू पुष्कर चम्पा पम्पा वल्गु उज्जयनी गया मथुरा तक्षशिला उरसा गोमती वलभी—**इति वरणादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, लुप् — **८३. शर्कराया वा १३०२ ।** — श-याः ८४ — शर्करा शब्द से उत्पन्न चातुरर्थिक प्रत्यय का विकल्प से लुप् हो जाता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, श-याः — **८४. ठक्छौ च १३०३ ।** — शर्कराशब्द से ठक् और छ चातुरर्थिक प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — **८५. नद्यां मतुप् १३०४ ।** — मतुप् ८६ — यदि नदी अभिधेय हो तो चातुरर्थिक मतुप् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, मतुप् — **८६. मध्वादिभ्यश्च १३०५ ।** — मधु आदि शब्दों से चातुरर्थिक मतुप् प्रत्यय होता है ।

(१०२) मधु विस स्थाणु वेणु कर्कन्धु शमी करीर हिम किशरा शर्याण मरुत् वार्दाली शूर इष्टका आसुति शक्ति आसन्दी शकल शलाका आमिषी इक्षु रोमन् रुष्टि रुष्य तक्षशिला खड वट वेट—**इति मध्वादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — **८७. कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप् १३०६ ।** — कुमुद नड वेतस शब्दों से चातुरर्थिक ड्मतुप् प्रत्यय होता है ।
**** महिषाच्चेति वक्तव्यम् ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — **८८. नडशादाड्ड्वलच् १३०७ ।** — नड और शाद शब्द से चातुरर्थिक ड्वलच् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — **८९. शिकाया वलच् १३०८ ।** — शिखा से चातुरर्थिक वलच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा — ९०. **उत्करादिभ्यश्छः १३०९ ।** छः ९१

उत्कर आदि शब्दों से चातुरर्थिक छ होता है।

(१०३) उत्कर संफल शफर पिप्पल पिप्पलीमूल अश्मन् सुवर्ण खलाजिन तिक कितव अणक त्रैवण पिचुक अश्वत्थ काश क्षुद्र भस्त्रा शाल जन्या अजिर चर्मन् उत्क्रोश क्षान्त खदिर शूर्पणाय श्यावनाय नैवाकव तृण वृक्ष शाक पलाश विजिगीषा अनेक आतप फल संपर अर्क गर्त अग्नि वैराणक इडा अरण्य निशान्त पर्ण नीचायक शङ्कर अवरोहित क्षार विशाल वेत्र अरीहण खण्ड वातागर मन्त्रणार्ह इन्द्रवृक्ष नितान्तवृक्ष (नितान्तावृक्ष) आर्द्रवृक्ष— **इत्युत्करादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, छ — ९१. **नडादीनां कुक्च १३१० ।**

नड आदि से चातुरर्थिक छ प्रत्यय तथा कुक् का आगम होता है।

(१०४) नड प्लक्ष बिल्व वेणु वेत्र वेतस इक्षु काष्ठ कपोत तृण। 'क्रुञ्चा ह्रस्तत्वं च' ८०। 'तक्षन्नलोपश्च' ८१ । **इति नडादिः ।।**

तद्धिते शैषिकप्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — ९२. **शेषे १३१२ ।**

यहाँ से होने वाले प्रत्यय शेष में होंगे। शेष का तात्पर्य अपत्याधिकार तथा चातुरर्थिक से भिन्न है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — ९३. **राष्ट्रावारपाराद्घखौ १३१३ ।**

*** अवारपाराद्विगृहीतादपि विपरीताच्चेति वक्तव्यम् ।**

राष्ट्र और अवारपार से क्रमशः घ और ख होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — ९४. **ग्रामाद्यखञौ १३१४ ।**

ग्राम से य और ख होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — ९५. **कत्त्र्यादिभ्यो ढकञ् १३१५ ।** ढकञ् ९६

कत्रि आदि शब्दों से ढकञ् होते है।

(१०५) कत्रि उम्भि पुष्कर पुष्कल मोदन कुम्भी कुण्डिन नगरी माहिष्मती वर्मती उख्या ग्राम। 'कुट्यायां यलोपश्च' ८२ । **इति कत्त्र्यादिः ।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ढकञ् — ९६. **कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलंकारेषु १३१६**

श्वा असि अलङ्कार अर्थों में तथा जातादि अर्थों में क्रमशः कुल कुक्षि ग्रीवा शब्दों से ढकञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा — ९७. **नद्यादिभ्यो ढक् १३१७ ।**

नदी आदि शब्दों से ढक् प्रत्यय होता है।

(१०६) नदी मही वाराणसी श्रावस्ती कौशाम्बी वनकौशाम्बी (वनकोशाम्बी) काश[1]परी काशफारी (काशफरी) खादिरी पूर्वनगरी पाठा माया शाल्वा दार्वा सेतकी 'बडबाया वृषे' ८३ । **इति नद्यादिः ।।**

ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	९८. **दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् १३१८ ।**		दक्षिणा पश्चात् पुरस् से शैषिक त्यक् प्रत्यय होते हैं ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	९९. **कापिश्याः ष्फक् १३१९ ।** ** बाह्व्युर्दिपर्दिभ्यश्चेति वक्तव्यम् ।*	ष्फक् १००	कापिशी से शैषिक ष्फक् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ष्फक्	१००. **रङ्कोरमनुष्येऽण्च १३२० ।। ५ ।।**		अमनुष्याभिवाची रङ्कु से शैषिक अण् होता है और ष्फक् भी ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	१०१. **द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत् १३२१ ।**		द्यु प्राच् अपाच् उदच् प्रत्यच् से शैषिक यत् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	१०२. **कन्थायाष्ठक् १३२२ ।**	कन्थायाः १०३	कन्था से शैषिक ठक् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कन्थायाः	१०३. **वर्णौ वुक् १३२३ ।**		वर्णुदेश में होने वाली कन्था से शैषिक ठक् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	१०४. **अव्ययात्त्यप् १३२४ ।** ** अमेहक्वतसित्रेभ्य एव ।* ** त्यब्नेर्ध्रुवे ।* ** निसो गते ।* ** अरण्याण्णः ।* ** दूरादेत्यः ।* ** उत्तरादाहञ् ।* ** आविष्ट्यस्योपसंख्यानं छन्दसि ।*	त्यप् १०५	अव्यय से शैषिक् त्यप् प्रत्यय होते हैं ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त्यप्	१०५. **ऐषमोह्यःश्वसोऽन्यतरस्याम् १३२६ ।**		ऐषमस् ह्यस् श्वस् से वैकल्पिक त्यप् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	१०६. **तीररू[2]पोत्तरपदादञ्ञ्यौ[3] १३२७ ।**		तीरोत्तर रूपोत्तर से क्रमशः अञ् ञ्य होते हैं ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	१०७. **दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः १३२८ ।**	दि-दात् १०८	असंज्ञा में दिक्पूर्वपद से शैषिक ञ होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, दि-दात्	१०८. **मद्रेभ्योऽञ् १३२९ ।**	अञ् १०९	दिक्पूर्वपद मद्र शब्द से अञ् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, अञ्	१०९. **उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तोदात्तात् १३३० ।**		बह्वच् अन्तोदात्त उदीच्य ग्रामवाची शब्द से शैषिक अञ् प्रत्यय होता है ।

---

१. पावा (का०) २. 'रूप्य' ३. 'अञ्ञौ' इति च क्वचित्पाठः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**११०. प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण् १३३१**	अण् ११३	प्रस्थोत्तरपद, पलदी आदि तथा कोपध प्रातिपदिक से शैषिक अण् प्रत्यय होता है।

(१०७) पलदी परिषद् रोमक वाहीक कलकीट बहुकीट जालकीट कमलकीट कमलकीकर कमलभिदा गौष्ठी नैकती परिखा शूरसेन गोमती पटच्चर उदपान यकृल्लोम—**इति पलद्यादिः ।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, अण्	**१११. कण्वादिभ्यो गोत्रे १३३२ ।**	गोत्रे ११३	कण्वादि शब्दों से विहित गोत्र प्रत्ययान्त शब्दों से शैषिक अण् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, अण्, गोत्रे	**११२. इञश्च १३३३ ।**	इञः ११३	गोत्र में विहित इञ् प्रत्ययान्त से शैषिक अण् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, अण्, गोत्रे, इञः	**११३. न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु १३३४ ।**		प्राच्य भरत गोत्र में द्व्यच् इञन्त प्रातिपदिक से अण् नहीं होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**११४. वृद्धाच्छः १३३७ ।**	वृद्धात् ११८	वृद्ध प्रातिपदिक से शैषिक छ प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वृद्धात्	**११५. भवतष्ठक्छसौ १३३९ ।**		वृद्ध भवत् शब्द से शैषिक ठक् छस् प्रत्यय होते हैं।
ङ्यात्, तद्धिताः, सम-वा, वृद्धात्	**११६. काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ १३४० ।**	ठ-ठौ ११८	काशि आदि से शैषिक ठञ् ञिठ् प्रत्यय होते हैं।

(१०८) काशि चेदि (वेदि) सांयाति संवाह अच्युत मोदमान शकुलाद हस्तिकर्षू कुनामन् हिरण्य करण गोवासन भारङ्गी अरिन्दम अरित्र देवदत्त दशग्राम शौवावतान युवराज उपराज देवराज मोदन सिन्धुमित्र दासमित्र सुधामित्र सोममित्र छागमित्र साधमित्र (सधमित्र) 'आपदादिपूर्वपदात्कालान्तात्' ८४। आपद् ऊर्ध्व तत्—**इति काश्यादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा वृद्धात् ठ-ठौ	**११७. वाहीकग्रामेभ्यश्च १३४१ ।**	वा-भ्यः ११८	वाहीक ग्राम वाची वृद्ध शब्दों से ठञ् और ञिठ् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वृद्धात्, ठ-ठौ, वा-भ्यः	**११८. विभाषोशीनरेषु १३४२ ।**		उशीनर स्थित वाहीक ग्राम वाची वृद्ध शब्दों से विकल्प से ठञ् ञिठ् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**११९. ओर्देशे ठञ् १३४३ ।**	ओः, ठञ् १२० देशे १४५	उवर्णान्त देशवाची शब्दों से शैषिक ठञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ओः, ठञ्, देशे	**१२०. वृद्धात्प्राचाम् १३४४** ।। ६ ।।	वृद्धात् १२६	उवर्णान्त प्राग्देशवाची वृद्ध शब्दों से ही शैषिक ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, देशे, वृद्धात्	**१२१. धन्वयोपधाद्वुञ् १३४५** ।	वुञ् १३०	धन्ववाची यकारोपध देशाभिधायी वृद्ध प्रातिपदिक से शैषिक वुञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वुञ्, देशे, वृद्धात्	**१२२. प्रस्थपुरवहान्ताच्च १३४६** ।		प्रस्थान्त पुरान्त वहान्त देशवाची वृद्ध प्रातिपदिक से शैषिक वुञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वुञ्, देशे, वृद्धात्	**१२३. रोपधेतोः प्राचाम् १३४७** ।		रोपध ईकारान्त प्राग्देशवाची वृद्ध शब्द से शैषिक वुञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वुञ्, देशे, वृद्धात्	**१२४. जनपदतदवध्योश्च १३४८** ।	ज-ध्योः १२५	जनपद तथा तदवधि वाची वृद्ध शब्द से शैषिक वुञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वुञ्, देशे, वृद्धात्, ज-ध्योः	**१२५. अवृद्धादपि बहुवचनविषयात् १३४९**	अ-द्धात् १२६	अवृद्ध अथवा वृद्ध जनपद तथा तदवधि वाची बहुवचन वाची प्रातिपदिक से शैषिक वुञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वुञ्, देशे, वृद्धात्, अ-त्	**१२६. कच्छाग्निवक्त्रवर्तोत्तरपदात् १३५०** ।		कच्छादि उत्तरपद वाले वृद्धावृद्ध देशवाची शब्दों से शैषिक वुञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वुञ्, देशे	**१२७. धूमादिभ्यश्च १३५१** ।		धूम आदि देशवाची प्रातिपादिक से शैषिक वुञ् होता है।

(१०९) धूम षडण्ड शशादन अर्जुनाव माहकस्थली आनकस्थली माहिषस्थली मानस्थली अट्टस्थली मद्रुकस्थली समुद्रस्थली दाण्डायनस्थली राजस्थली विदेह राजगृह सात्रासाह शष्प मित्रवर्ध्र (मित्रवर्ध) भक्षाली मद्रकूल आजीकूल द्व्यहव (द्व्याहाव) त्र्यहव (त्र्याहाव) संस्फीय बर्बर वर्ज्य गर्त आनत माठर पाथेय घोष पल्ली आराज्ञी धार्तराज्ञी आवय तीर्थ। 'कूलात्सौवीरेषु' ८५। 'समुद्रान्नावि मनुष्ये च' ८६। कुक्षि अन्तरीप द्वीप अरुण उज्जयनी पट्टार दक्षिणापथ साकेत—**इति धूमादिः** ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वुञ्, देशे	**१२८. नगरात्कुत्सनप्रावीण्ययोः १३५२** ।		यदि कुत्सन और प्रावीण्य गम्यमान हो तो नगर शब्द से शैषिक वुञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वुञ्, देशे	**१२९. अरण्यान्मनुष्ये १३५३ ।** ** पथ्यध्यायन्यायविहारमनुष्यहस्तिष्विति वक्तव्यम् ।* ** वा गोमयेषु ।*		यदि मनुष्य अभिधेय हो तो अरण्य से शैषिक वुञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, वुञ्, देशे	**१३०. विभाषा कुरुयुगंधराभ्याम् १३५४ ।**		कुरु युगंधर शब्दों से शैषिक वुञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, देशे	**१३१. मद्रवृज्योः कन् १३५५ ।**		मद्र वृजि शब्दों से शैषिक कन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, देशे	**१३२. कोपधादण् १३५६ ।**	अण् १३३	कोपध प्रातिपदिक से शैषिक अण् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, देशे, अण्	**१३३. कच्छादिभ्यश्च १३५७ ।**	क-भ्यः १३४	कच्छ आदि देशवाची शब्दों से शैषिक अण् होता है ।

(११०) कच्छ सिन्धु वर्णु गन्धार मधुमत् कम्बोज कश्मीर साल्व कुरु अनुषण्ड द्वीप अनूप अजवाह विजापक कलूतर रङ्कु—**इति कच्छादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, देशे, क-भ्यः	**१३४. मनुष्यतत्स्थयोर्वुञ् १३५८ ।**	म-योः १३५ वुञ् १३६	मनुष्य और मनुष्यस्थ (जात आदि) प्रत्ययार्थ रहने पर कच्छ आदि शब्दों से शैषिक वुञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, देशे, वुञ्, म-योः	**१३५. अपदातौ साल्वात् १३५९ ।**	साल्वात् १३६	यदि पदाति का प्रयोग न हो तो मनुष्य और मनुष्यस्थ अर्थ में साल्व शब्द से वुञ् हो ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, देशे, वुञ्, साल्वात्	**१३६. गोयवाग्वोश्च १३६० ।**		यदि गो और यवागू विवक्षित हो तो जातादि में साल्व से वुञ् हो ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, देशे	**१३७. गर्तोत्तरपदाच्छः १३६१ ।**	छः ४/३/१	गर्तोत्तर देशवाची शब्दों से शैषिक छ प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, देशे, छः	**१३८. गहादिभ्यश्च १३६२ ।**		गह आदि शब्दों से शैषिक छ प्रत्यय होता है ।

(१११) गह अन्तस्थ सम विषय । 'मध्य मध्यमं चाण्चरणे' ८७ । उत्तम अङ्ग वङ्ग मगध पूर्वपक्ष अपरपक्ष अधमशाख उत्तमशाख एकशाख समान-शाख समानग्राम एकग्राम एकवृक्ष एकपलाश इष्वग्र इष्वनीक अवस्यनन्दन कामप्रस्थ शाडिकाडायनि (खाडायन) काठेरणि लावेरणि सौमित्रि शैशिरि आसुत् दैवशर्मि श्रौति आहिंसि आमित्रि व्याडि

वैजि आध्यश्वि आनृशसि (आनृशंसि) शौङ्गि आग्निशर्मि भौजि वाराटकि वाल्मिकि (वाल्मीकि) क्षैमवृद्धि आश्वत्थि औद्गाहमानि ऐक बिन्दवि दन्ताग्र हंस तत्वग्र (तन्त्वग्र) उत्तर अन्तर (अनन्तर) 'मुखपार्श्वतसोर्लोपः' ८८ । 'जनपरयोः कुक्च' ८९ । 'देवस्य च' ९० । 'वेणुकादिभ्यश्छण्' ९१ । **इति गहादिः ।। आकृतिगणः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१३९. प्राचां कटादेः १३६३ ।**
सम-वा, देशे. छः
प्राग्देशवाची कट आदि वाले शब्दों से शैषिक छ प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४०. राज्ञः क च १३६४ । ।। ७ ।।**
सम-वा, देशे, छः
राजन् शब्द से ककारान्तादेश तथा छ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४१. वृद्धादकेकान्तखोपधात् १३६५ ।** वृद्धात् १४२
सम-वा, देशे, छः ***अकेकान्तग्रहणे कोपधग्रहणं सौसुकाद्यर्थम् ।***
अक इक अन्तवाले खकारोपध वृद्ध देश वाची शब्दों से शैषिक छ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४२. कन्थापलदनगरग्रामह्रदोत्तरपदात् १३६६ ।**
सम-वा, देशे, छः,
वृद्धात्
कन्था पलद नगर ग्राम ह्रद यदि उत्तर पद में हों तो वृद्ध प्रातिपदिक से शैषिक छ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४३. पर्वताच्च १३६७ ।** पर्वतात् १४४
सम-वा, देशे, छः
पर्वत शब्द से शैषिक छ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४४. विभाषाऽमनुष्ये १३६८ ।**
सम-वा, देशे, छः,
पर्वतात्
यदि अमनुष्य वाच्य हो तो पर्वत से वैकल्पिक छ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४५. कृकणपर्णाद्भारद्वाजे १३६९ ।**
सम-वा, देशे, छः
भारद्वाज देशवाची कृकण और पर्ण शब्द से शैषिक छ होता है

तेन सास्मिन्ठञ्क्रमादिभ्यो जनपदे
द्युप्रागपाग्धन्ववृद्धात्पञ्च ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१. युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च १३७० ।** यु-दोः ३
सम-वा, छः
युष्मद् और अस्मद् शब्द से शैषिक खञ् और छ तथा अण् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२. तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ १३७१ ।** त-णि ३
सम-वा, यु-दोः
युष्मद् और अस्मद् से यदि खञ् और अण् हों तो उन्हें युष्माक और अस्माक आदेश हो जाते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यु-दोः, त-णि	३. **तवकममकावेकवचने १३७२ ।**		खञ् तथा अण् के यहाँ ही उन्हीं शब्दों को एकवचन में तवक ममक आदेश हो जाते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	४. **अर्धाद्यत् १३७४ ।**	अर्धात् ७ यत् ६	अर्ध शब्द से शैषिक यत् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, अर्धात् यत्	५. **परावराधमोत्तमपूर्वाच्च १३७५ ।**		पर अवर अधम उत्तम पूर्ववाले अर्ध शब्द से शैषिक यत् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, अर्धात् यत्	६. **दिक्पूर्वपदाट्ठञ्च १३७६ ।**	दि-त् ७	दिक्पूर्व अर्ध शब्द से शैषिक ठञ् और यत् होते है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, अर्धात्, दि-त्	७. **ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ १३७७ ।**		ग्राम जनपदैक देशवाची दिक्पूर्व अर्ध शब्द से अञ् और ठञ् प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	८. **मध्यान्मः १३७८ ।** *(आदेश्चेति वक्तव्यम्)* *(अवोधसोर्लोपश्च)*	मध्यात् ९	मध्य शब्द से शैषिक म प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, म-त्	९. **अ सांप्रतिके १३७९ ।**		साम्प्रतिक अर्थ में मध्य शब्द से अ प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	१०. **द्वीपादनुसमुद्रं यञ् १३८० ।**		समुद्र समीपस्थ द्वीप शब्द से शैषिक यञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	११. **कालाट्ठञ् १३८१ ।**	कालात् २४ ठञ् १५	काल विशेषवाची प्रातिपदिक से शैषिक ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, ठञ्	१२. **श्राद्धे शरदः १३८२ ।**	शरदः १३	यदि श्राद्ध अभिधेय हो तो शरद् से ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, ठञ्, शरदः	१३. **विभाषा रोगातपयोः १३८३ ।**	विभाषा १५	यदि रोग और आतप अभिधेय हो तो शरद् से वैकल्पिक ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, ठञ्, विभाषा	१४. **निशाप्रदोषाभ्यां च १३८४ ।**		निशा और प्रदोष से विकल्पेन शैषिक ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, ठञ्, विभाषा	१५. **श्वसस्तुट् च १३८५ ।**		श्वः शब्द से विकल्पेन ठञ् होता है और तुट् का आगम होता है।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१६. संधिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण् १३८७ ।**
सम-वा, कालात्

सन्धि वेला आदि शब्दों से एवं कालवृत्ति ऋतु और नक्षत्र वाची शब्दों से शैषिक अण् होता है।

(११२) सन्धिवेला सन्ध्या अमावास्या त्रयोदशी चतुर्दशी पञ्चदशी पौर्णमासी प्रतिपत्। 'संवत्सरात्फलपर्वणो:' ९२। **इति सन्धिवेलादि:** ।।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१७. प्रावृष एण्य: १३८८ ।**
सम-वा, कालात्

प्रावृष् शब्द से शैषिक एण्य प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१८. वर्षाभ्यष्ठक् १३८९ ।** व-भ्य: १९
सम-वा, कालात्

वर्षा शब्द से शैषिक ठक् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **१९. छन्दसि ठञ् ३४५० ।** छ-ञ् २१
सम-वा, कालात्,
व-भ्य:

वर्षा शब्द से वेद में शैषिक ठञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **२०. वसन्ताच्च ३४५१ ।** ।। १ ।।
सम-वा, कालात्,
छ-ञ्

वसन्त शब्द से वेद में शैषिक ठञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **२१. हेमन्ताच्च ३४५२ ।** हे-त् २२
सम-वा, कालात्,
छ-ञ्

हेमन्त शब्द से वेद में शैषिक ठञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **२२. सर्वत्राण्च तलोपश्च १३९० ।**
सम-वा, कालात्,
हे-त्

भाषा और छन्द में भी हेमन्त से अण् और त लोप होता है।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **२३. सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च १३९१ ।** ट्यु तुट् २४
सम-वा, कालात्

**** चिरपरुत्परारिभ्यस्त्नो वक्तव्य: ।***
**** अग्रादिपश्चाड्डिमच् ।***
**** अन्ताच्च ।***

सायं चिरं प्राह्णे प्रगे इन से तथा अव्ययों से ट्यु और ट्युल् होते हैं तथा तुट् का आगम भी होता है।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **२४. विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम् १३९२ ।**
सम-वा, कालात्,
ट्यु-तुट्

पूर्वाह्ण और अपराह्ण से विकल्पेन ट्यु और ट्युल् प्रत्यय होते हैं तथा तुट् का आगम होता है।

शैषिकप्रत्ययार्थनिर्देश:

ङ्या-त्, तद्धिता:, **२५. तत्र जात: १३९३** तत्र ५१
"सम-वा" जात: ३७

सप्तमीसमर्थ शब्दों से जात अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिता:, **२६. प्रावृषष्ठप् १३९४ ।**
सम-वा, कालात्,
तत्र, जात:

सप्तम्यर्थ प्रावृष् से ठप् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, समर्था, कालात्, तत्र, जातः	**२७. संज्ञायां शरदो वुञ् १३९५ ।**	सं-यां २८	यदि संज्ञा गम्यमान हो तो (स०) शरद् से वुञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, तत्र, जातः, सं-यां	**२८. पूर्वाह्णापराह्णार्द्रामूलप्रदोषावस्कराद्वुन् १४०१ ।**	वुन् ३०	संज्ञा एवं तत्र जातः अर्थ में पूर्वाह्ण आदि से वुन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, तत्र, जातः, वुन्	**२९. पथः पन्थ च १४०२ ।**		पथि शब्द से तत्र जातः अर्थ में वुन् होता है तथा पथ को पन्थ आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, तत्र, जातः, वुन्	**३०. अमावास्याया वा १४०३ ।**	अ-याः ३१	अमावास्या से वुन् विकल्प से होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, तत्र, जातः, अ-याः	**३१. अ च १४०४ ।**		अमावास्या से ही तत्र जातः अर्थ में अ भी होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, तत्र, जातः	**३२. सिन्ध्वपकराभ्यां कन् १४०५ ।**	सि-यां ३३	सिन्धु और अपकर से तत्र जातः अर्थ में कन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, तत्र, जातः, सि-यां	**३३. अणञौ च १४०६ ।**		सिन्धु और अपकर से ही अण् अञ् भी होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, कालात्, तत्र, जातः	**३४. श्रविष्ठाफल्गुन्यनूराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाऽषाढाबहुलाल्लुक् १४०७** ** चित्रारेवतीरोहिणीभ्यः स्त्रियामुपसंख्यानम् ।* ** फल्गुन्यषाढाभ्यां टानौ वक्तव्यौ ।* ** श्रविष्ठाऽषाढाभ्यां छण्वक्तव्यः ।*	लुक् ३७	श्रविष्ठा आदि शब्दों से तत्र जातः अर्थ में विहित प्रत्ययों का बाहुलकात् लुक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, जातः, लुक्	**३५. स्थानान्तगोशालखरशालाच्च १४१० ।**		स्थानान्त गोशाल खरशाल शब्दों से जातार्थ में विहित प्रत्यय का लुक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, जातः, लुक्	**३६. वत्सशालाभिजिदश्वयुक्छतभिषजो वा १४११ ।**		वत्सशाल अभिजित् अश्वयुक् शतभिषज् शब्दों से जातार्थ में विहित प्रत्यय का विकल्प से लुक् होता है ।
ङ्या-त् तद्धिताः सम-वा तत्र जातः लुक्	**३७. नक्षत्रेभ्यो बहुलम् १४१२ ।**		नक्षत्रवाची शब्दों से जातार्थ में प्रत्यय का बहुलतया लुक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र	**३८. कृतलब्धक्रीतकुशलाः १४१३ ।**		सप्तमी समर्थ शब्दों से कृत लब्ध क्रीत कुशल अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र	**३९. प्रायभवः १४१४ ।**	प्रा-वः ४०	सप्तमी समर्थ से प्रायभव अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, प्रा-वः	**४०. उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक् १४१५ ।।२।।**		उपजानु उपकर्ण उपनीवि (सप्तमी समर्थ) से प्रायभव अर्थ में ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र	**४१. संभूते १४१६ ।**	सं-ते ४३	सप्तमीसमर्थ से संभूत अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, सं-ते	**४२. कोशाड्ढञ् १४१७ ।**		सम्भूत अर्थ में कोश शब्द से ढञ् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, सं-ते	**४३. कालात्साधुपुष्प्यत्पच्यमानेषु १४१८ ।**	कालात् ५२	कालविशेषवाची सप्तमीसमर्थ शब्दों से साधु पुष्प्यत् पच्यमान अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, कालात्	**४४. उप्ते च १४१९ ।**	उप्ते ४६	सप्तमीसमर्थ कालविशेषवाची शब्दो से उप्त अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, कालात्, उप्ते	**४५. आश्वयुज्या वुञ् १४२० ।**		आश्वयुजी शब्द से उप्त अर्थ में वुञ् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, कालात्, उप्ते	**४६. ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम् १४२१ ।**		उप्त अर्थ में ग्रीष्म वसन्त शब्द से वैकल्पिक वुञ् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, कालात्	**४७. देयमृणे १४२२ ।**	दे-णे ५०	सप्तमीसमर्थ कालवाची शब्दों से देय अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है, यदि देय ऋण हो ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, कालात्, दे-णे	**४८. कलाप्यश्वत्थयवबुसाद्वुन् १४२३ ।**		कालार्थ में कलापि अश्वत्थ यवबुस शब्दों से देयम् ऋणम् अर्थ में वुन् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, कालात्, दे-णे	**४९. ग्रीष्मावरसमाद्वुञ् १४२४ ।**	वुञ् ५०	देयम् ऋणम् अर्थ में ग्रीष्म अवरसम शब्दों से वुञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, कालात्, दे-णे, वुञ्	**५०. संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ्च १४२५ ।**		देयम् ऋणम् अर्थ में संवत्सर आग्रहायणी शब्दों से ठञ् वुञ् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत्र, का-लात्	**५१. व्याहरति मृगः १४२६ ।**		व्याहरति मृगः इस अर्थ में कालवाची शब्द से यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, का-लात्	**५२. तदस्य सोढम् १४२७ ।**		तदस्य सोढम् इस अर्थ में कालवाची शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**५३. तत्र भवः १४२८ ।**	त-वः ७३.	तत्र भवः इस अर्थ में सप्तमीसमर्थ शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः	**५४. दिगादिभ्यो यत् १४२९ ।** (**११३**) दिश् वर्ग पूग गण पक्ष धाय्य मित्र मेधा अन्तर पथिन् रहस् अलीक उखा साक्षिन् देश आदि अन्त मुख जघन मेघ यूथ। 'उदकात्संज्ञायाम्' ९३ । ज्ञाय (न्याय) वंश केश काल आकाश—**इति दिगादिः ।।**	यत् ५५	दिगादि शब्दों से तत्र भवः अर्थ में यत् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, यत्	**५५. शरीरावयवाच्च १४३० ।**		तत्र भवः अर्थ में शरीरावयववाची शब्दों से यत् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः	**५६. दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ् १४३३ ।**	ढञ् ५७	दृति कुक्षि कलशि वस्ति अस्ति शब्दों से तत्रभवः अर्थ में ढञ् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, ढञ्	**५७. ग्रीवाभ्योऽण्च १४३४ ।**		तत्रभवः अर्थ में ग्रीवा से अण् और ढञ् होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः	**५८. गम्भीराञ्ञ्यः १४३५ ।** ***बहिर्देवपञ्चजनेभ्यश्च ।***	ञ्यः ५९	गम्भीर से तत्रभवः अर्थ में ञ्य प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः ञ्यः	**५९. अव्ययीभावाच्च १४३६ ।** ***परिमुखादिभ्य एवेष्यते ।*** (**११४**) (**वा० ग०**) । परिमुख परिहनु पर्योष्ठ पर्युलूखल परिसीर उपसीर उपस्थूण उपकलाप अनुपथ अनुपद अनुगङ्ग अनुतिल अनुसीत अनुसाय अनुसीर अनुमाष अनुयव अनुयूप अनुवंश प्रतिशाख—**इति परिमुखादिः ।।**	अ-त् ६१	तत्र भवः अर्थ में अव्ययीभाव संज्ञक शब्दों से ञ्य होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, अ-त्	**६०. अन्तःपूर्वपदाट्ठञ् १४३७ ।। ३ ।।** ***अध्यात्मादेष्ठञिष्यते ।***	ठञ् ६१	अन्तःपूर्व पद अव्ययीभाव से तत्र भवः अर्थ में ठञ् होता है ।

(११५) (वा० ग०)। अध्यात्म अधिदेव अधिभूत—**इत्यध्यात्मादिः** ।।

** मुखपार्श्वतसोरीयः ।*

** कुग्जनस्य परस्य च ।*

** भवार्थे तु लुग्वक्तव्यः ।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, अ-त्, ठञ्	**६१. ग्रामात्पर्यनुपूर्वात् १४४० ।**		परि अनुपूर्वक ग्रामान्त अव्ययीभाव से तत्र भवः अर्थ में ठञ् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः	**६२. जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः १४४१ ।**	छः ६३	तत्र भवः अर्थ में जिह्वामूल और अङ्गुलि शब्द से छ प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, छः	**६३. वर्गान्ताच्च १४४२ ।**	व-त् ६४	वर्गान्त शब्द से तत्र भवः अर्थ में छ प्रत्यय होता है।
ङ्यात्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, व-त्	**६४. अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम् १४४३ ।**		वर्गान्त शब्द से तत्र भवः अर्थ में यत् ख छ प्रत्यय विकल्प से होते हैं, यदि वर्गार्थ वर्णविषयक न हो।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः	**६५. कर्णललाटात्कनलंकारे १४४४ ।**		अलंकार वाच्य होने पर कर्ण ललाट शब्द से कन् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः	**६६. तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्यनाम्नः १४४५ ।**	तस्य-नः ७३ व्या-म्नः ७३	व्याखातव्य ग्रन्थ प्रतिपादक षष्ठ्यन्त से तत्र भवः तथा व्याख्यान अर्थ में यथाविहित होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, त-म्नः	**६७. बह्वचोऽन्तोदात्ताट्ठञ् १४४६ ।**	ठञ् ६९	व्याख्यातव्य अन्तोदात्त बह्वच् प्रातिपदिक से भव व्याख्यान में ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, त-म्नः, ठञ्	**६८. क्रतुयज्ञेभ्यश्च १४४७ ।**		व्याख्यातव्य क्रतु यज्ञ शब्द से भव और व्याख्यान अर्थ में ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, त-म्नः, ठञ्	**६९. अध्यायेष्वेवर्षेः १४४८ ।**		प्रवरवाची ऋषि शब्द से भव व्याख्यान अर्थ में ठञ् होता है। (प्रत्ययार्थ विशेषण में ही)
ङ्या-त् तद्धिताः सम-वा, त-वः त-म्नः	**७०. पौरोडाशपुरोडाशात्ष्ठन् १४४९ ।**		पौरोडाश पुरोडाश से भव व्याख्यान अर्थ में ष्ठन् होता है।
ङ्या-त् तद्धिताः सम-वा, त-वः, त-म्नः	**७१. छन्दसो यदणौ १४५० ।**		भव व्याख्यान अर्थ में छन्दस् से यत् और अण् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, त-म्नः	**७२. द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमाध्वरपुरश्चरणनामाख्याताट्ठक् १४५१ ।** ** नामाख्यातग्रहणं संघातविगृहीतार्थम् ।*		द्व्यच् ऋत् ब्राह्मण ऋच् प्रथम अध्वर पुरश्चरण नाम और आख्यात से भव व्याख्यान अर्थ में ठक् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-वः, त-म्नः	**७३. अणृगयनादिभ्यः १४५२ ।**		ऋगयन आदि शब्दों से भवव्याख्यान अर्थ में अण् प्रत्यय होता है ।
	(११६) ऋगयन पदव्याख्यान छन्दोमान छन्दोभाषा छन्दोविचिति न्याय पुनरुक्त निरुक्त व्याकरण निगम वास्तुविद्या क्षत्रविद्या अङ्गविद्या विद्या उत्पात उत्पाद उद्याव संवत्सर मुहूर्त उपनिषद् निमित्त शिक्षा भिक्षा—**इत्यृगयनादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**७४. तत आगतः १४५३ ।**	तत-तः ८२	तत आगतः इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत-तः	**७५. ठगायस्थानेभ्यः १४५४ ।**		आयस्थानवाची शब्दों से तत आगतः अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत-तः	**७६. शुण्डिकादिभ्योऽण् १४५५ ।**		शुण्डिक आदि शब्दों से तत आगतः अर्थ में अण् होता है ।
	(११६) शुण्डिक कृकण स्थण्डिल उदपान उपल तीर्थ भूमि तृण पर्ण—**इति शुण्डिकादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत-तः	**७७. विद्यायोनिसंबन्धेभ्यो वुञ् १४५६ ।**	वि-भ्यः ७८	विद्या योनि सम्बन्ध वाची शब्दों से तत आगतः में वुञ् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत-तः, वि-भ्यः	**७८. ऋतष्ठञ् १४५७ ।**	ठञ् ७९	ऋकारान्त विद्यायोनिवाची शब्दों से ठञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत-तः, ठञ्	**७९. पितुर्यच्च १४५८ ।**		तत आगतः अर्थ में पितृ शब्द से यत् और ठञ् होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत-तः	**८०. गोत्रादङ्कवत् १४५९ । ।। ४ ।।**		गोत्रप्रत्ययान्त शब्दों से तत आगतः अर्थ में अङ्कवत् प्रत्ययविधि होती है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत-तः	**८१. हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः १४६१**	हे-भ्यः ८२	हेतु और मनुष्य से वैकल्पिक रूप्य प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तत-तः, हे-भ्यः	**८२. मयट् च १४६२ ।**		तत आगतः अर्थ में ही हेतु मनुष्य से मयट् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**८३. प्रभवति १४६३ ।**	प्र-ति ८४	ततः प्रभवति अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८४. विदूराञ्ञ्यः १४६४ ।** विदूर शब्द से ञ्य होता है ततः प्रभवति अर्थ में।
सम-वा, प्र-ति

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८५. तद्गच्छति पथिदूतयोः १४६५ ।** तद् ८८ तद्गच्छति अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है, यदि विषय पन्था या दूत का हो।
सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८६. अभिनिष्क्रामति द्वारम् १४६६ ।** तत् अभिनिष्क्रामति इस अर्थ में यथाविधि प्रत्यय होते हैं, यदि द्वार तत् से गृहीत हो।
सम-वा, तद्

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८७. अधिकृत्य कृते ग्रन्थे १४६७ ।** अ-थे ८८ अधिकृत्य कृते ग्रन्थे अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
सम-वा, तद् **** लुबाख्यायिकाभ्यो बहुलम् ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८८. शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः १४६८ ।** द्वितीयासमर्थ शिशुक्रन्द आदि शब्दों से 'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' अर्थ में छ प्रत्यय होता है।
सम-वा, तद्, अ-थे **** द्वन्द्वे देवासुरादिभ्यः प्रतिषेधो वक्तव्यः ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८९. सोऽस्य निवासः १४६९ ।** सोस्य १०० सोऽस्य निवासः इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, **९०. अभिजनश्च १४७० ।** अ-नः ९४ सोऽस्य निवासः इस अर्थ में अभिजन विषयक शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होता है।
सम-वा, सोस्य

ङ्या-त्, तद्धिताः, **९१. आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते १४७१ ।** पर्वतवाची प्रथमान्त शब्द से आयुधजीवी के लिये छ प्रत्यय होता है।
सम-वा, सोस्य, अ-नः

ङ्या-त्, तद्धिताः, **९२. शण्डिकादिभ्यो ञ्यः १४७२ ।** अभिजन अर्थ में शण्डिक आदि से ञ्य प्रत्यय होता है।
सम-वा, सोस्य, अ-नः

(११८) शण्डिक सर्वसेन सर्वकेश शक शट रक शङ्ख बोध। **इति शण्डिकादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **९३. सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ १४७३ ।** सोऽस्य अभिजनः अर्थ में सिन्धु आदि शब्दों से अण् तथा तक्षशिला आदि से अञ् होता है।
सम-वा, सोस्य, अ-नः

(११९) सिन्धु वर्णु मधुमत् कम्बोज साल्व कश्मीर गन्धार किष्किन्धा उरसा दरद (दरद्) गन्दिका। **इति सिन्ध्वादिः ।।**

(१२०) तक्षशिला वत्सोद्धरण कैर्मेदुर ग्रामणी छगल क्रोष्टुकर्ण सिंहकर्ण संकुचित किंनर काण्डधार पर्वत अवसान बर्बर कंस। **इति तक्षशिलादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सोस्य, अ-नः	९४. **तूदीसलातुरवर्मतीकूचवाराड्ढक्छण्ढञ्य-कः १४७४ ।**		तूदी सलातुर वर्मती कूचवार शब्दों से अभिजन अर्थ में क्रमशः ढक् छण् ढञ् यक् प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सोस्य	९५. **भक्तिः १४७५ ।**	भक्तिः १००	सोऽस्य भक्तिः इस अर्थ में प्रथमान्त से यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सोस्य, भक्तिः	९६. **अचित्तादेदेशकालाट्ठक् १४७६ ।**		देशकालभिन्न अचित्त वाची शब्दों से भक्ति अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सोस्य, भक्तिः	९७. **महाराजाट्ठञ् १४७७ ।**		सोस्य भक्तिः अर्थ में महाराज से ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सोस्य, भक्तिः	९८. **वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् १४७८ ।**		भक्ति अर्थ में वासुदेव अर्जुन से वुन् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सोस्य, भक्तिः	९९. **गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ् १४७९ ।**		गोत्राख्य क्षत्रियाख्य शब्दों से भक्ति अर्थ में विकल्प से वुञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, सोस्य, भक्तिः	१००. **जनपदिनां जनपदवत्सर्वं जनपदेन समानशब्दानां बहुवचने १४८० ।।५।।**		जनपद समान शब्दों तथा जनपद-वालों से बहुवचन में भक्ति अर्थ में जनपदवत् प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	१०१. **तेन प्रोक्तम् १४८१ ।**	ते-म् १११	तेन प्रोक्तम् अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ते-म्	१०२. **तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्छण् १४८२ ।**		तित्तिर वरतन्तु खण्डिक उख से तेन प्रोक्तम् अर्थ में छण् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ते-म्	१०३. **काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः १४८३ ।**	णिनिः १०६	ऋषिवाची काश्यप कौशिक से तेन प्रोक्तम् अर्थ में णिनि होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ते-म्, णिनिः	१०४. **कलापिवैशम्पायनान्तेवासिभ्यश्च १४८४**		कलापि-अन्तेवासी तथा वैशम्पायन-अन्तेवासी वाचक शब्दों से तेन प्रोक्तम् अर्थ में णिनि होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ते-म्, णिनिः	१०५. **पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु १४८५ ।**		पुराणप्रोक्त ब्राह्मण कल्पों में तेन प्रोक्तम् अर्थ में तृतीयासमर्थ से णिनि होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-म-वा, ते-म्, णिनिः	१०६. **शौनकादिभ्यश्छन्दसि १४८६ ।**		छन्द में शौनक आदि शब्दों से तेन प्रोक्तम् अर्थ में णिनि प्रत्यय होता है।

(१२१) शौनक वाजसनेय शार्ङ्गरव शापेय शाष्पेय खाडायन स्तम्भ स्कन्ध देवदर्शन रज्जुभार रज्जुकण्ठ कठशाठ कषाय तल दण्ड पुरुषांसक (अश्वपेज) ।
इति शौनकादिः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ते-म्	**१०७. कठचरकाल्लुक १४८७ ।**		कठ चरक शब्द से प्रोक्त प्रत्यय का लुक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ते-म्	**१०८. कलापिनोऽण् १४८८ ।**		कलापिन् से तेन प्रोक्तम् अर्थ में अण् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ते-म्	**१०९. छगलिनो ढिनुक् १४८९ ।**		तेन प्रोक्तम् अर्थ में छगलिन् से ढिनुक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ते-म्	**११०. पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः १४९० ।**	भि-योः १११	भिक्षु नट सूत्र में क्रमशः पाराशर्य तथा शिलालिन् से णिनि होता है तेन प्रोक्तम् अर्थ में ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ते-म्, भि-योः	**१११. कर्मन्दकृशाश्वादिनिः १४९१ ।**		भिक्षु नटसूत्र अभिधेय हो तो तेन प्रोक्तम् अर्थ में कर्मन्द और कृशाश्व से इनि होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**११२. तेनैकदिक् १४९२ ।**	तेन ११९ एकदिक् ११४	तृतीया समर्थ से एकदिक् अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन, ए-क्	**११३. तसिश्च १४९३ ।**	तसिः ११४	एक दिक् अर्थ में तसि प्रत्यय भी होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन, ए-क्, तसिः	**११४. उरसो यच्च १४९४ ।**		एकदिक् अर्थ में उरस् से यत् और तसि होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन	**११५. उपज्ञाते १४९५ ।**		तृतीयासमर्थ से उपज्ञात अर्थ में ययाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन	**११६. कृते ग्रन्थे १४९६ ।**	कृते ११९	तृतीया समर्थ से कृते ग्रन्थे अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन, कृते	**११७. संज्ञायाम् १४९७ ।**	सं-म् ११९	यदि समुदाय से संज्ञा ज्ञात होती हो तो तृतीयासमर्थ से कृत अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन, कृते, सं-म्	**११८. कुलालादिभ्यो वुञ् १४९८ ।**		कुलाल आदि से वुञ् होता है तेन कृते संज्ञायाम् अर्थ में ।

(१२२) कुलाल वरुड चण्डाल निषाद कर्मार सेना सिरिन्ध्र (सिरिध्र) सैरिन्ध्र देवराज पर्षत्

(परिषत्) वधू मधु रुरु रुद्र अनडुह (अनडुह्)
ब्रह्मन् कुम्भकार श्वपाक । **इति कुलालादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, तेन, कृते, सं-म् **११९. क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् १४९९ ।**

क्षुद्रा भ्रमर वटर पादप से तेन कृतं संज्ञायाम् अर्थ में अञ् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा **१२०. तस्येदम् १५००** ।। ६ ।। त-म् १३३

** पत्राद्वाह्ये ।*
** वहेस्तुरणिट् च ।*
** अग्नीधः शरणे रण् भत्वं च ।*
** समिधामाधाने षेण्यण् ।*
** चरणाद्धर्माम्नाययोः ।*

षष्ठी समर्थ से तस्य इदं के विषय में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१२१. रथाद्यत् १५०१ ।** र-त् १२२

तस्येदं के विषय में रथ से यत् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, र-त् **१२२. पत्रपूर्वादञ् १५०२ ।** अञ् १२३

वाहनवाचक शब्द के पूर्व में रहने पर रथ शब्द से अञ् होता है तस्येदं के विषय में ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, अञ् **१२३. पत्राध्वर्युपरिषदश्च १५०३ ।**

तस्येदं के विषय में वाहनवाची शब्दों तथा अध्वर्यु और परिषद् शब्द से अञ् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१२४. हलसीराट्ठक् १५०४ ।**

हलसीर शब्दों से तस्येदं के विषय में ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१२५. द्वन्द्वाद्वुन्वैरमैथुनिकयोः १५०५ ।**

** वैरे देवासुरादिभ्यः प्रतिषेधः ।*

षष्ठ्यन्त द्वन्द्व से तस्येदं के अर्थ में वुन् होता है यदि वुन् वैर और मैथुनिक में प्रयुक्त हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१२६. गोत्रचरणाद्वुञ् १५०६ ।**

गोत्रप्रत्ययान्त तथा शाखाध्येतृ वाची शब्दों से तस्येदं के अर्थ में वुञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१२७. सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञ्यञिञामण् १५०७** स-षु १२८

** घोषग्रहणमपि कर्तव्यम् ।*

सङ्घ अङ्क लक्षण यदि प्रत्ययार्थ विशेषण हों तो तस्येदं के विषय में अञन्त यञन्त इञन्त शब्दों से अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म्, स-सु **१२८. शाकलाद्वा १५०८ ।**

सङ्घादि विशेषण में तस्येदं के विषय में शाकल शब्द से विकल्पेन अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१२९. छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबह्वृचनटाञ्ञ्यः १५०९ ।** — छन्दोग औक्थिक याज्ञिक वह्वृच नट शब्दों से ञ्य होता है तस्येदं के विषय में।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१३०. न दण्डमाणवान्तेवासिषु १५१० ।** — दण्डप्रधान माणव अन्तेवासिन् शब्द से वुञ् नहीं होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१३१. रैवतिकादिभ्यश्छः १५११ ।** — रैवतिक आदि शब्दों से छ होता है तस्येदं के विषय में।

(१२३) रैवतिक स्वापिशि क्षैमवृद्धि गौरग्रीव (गौरग्रीवि) औदमेघि औदवापि वैजवापि। **इति रैवतिकादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१३२. कौपिञ्जलहास्तिपदादण्[1] १५१२ ।** — कौपिञ्जल हास्तिपद से अण् होता है तस्येदं के अर्थ में।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-म् **१३३. आथर्वणिकस्येकलोपश्च[2] १५१३ ।** — तस्येदं के विषय में आथर्वणिक से अण् होता है तथा इक का लोप होता है।

तद्धितेषु प्राग्दीव्यतीयप्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा **१३४. तस्य विकारः १५१४ ।** त-रः १६८ — षष्ठीसमर्थ से विकार अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः **१३५. अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः १५१५** अ-ये १६८ — प्राणी ओषधि वृक्ष वाची शब्दों से अवयव और विकार में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये **१३६. बिल्वादिभ्योऽण् १५१६ ।** — बिल्व आदि शब्दों से अवयव और विकार अर्थ में अण् प्रत्यय होता है।

(१२४) बिल्व व्रीहि काण्ड मुद्ग मसूर गोधूम इक्षु वेणु गवेधुका कर्पासी पाटली कर्कन्धु कुटीर। **इति बिल्वादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये **१३७. कोपधाच्च १५१७ ।** — ककारोपध शब्दों से विकार अवयव अर्थों में अण् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये **१३८. त्रपुजतुनोः षुक् १५१८ ।** — त्रपु और जतु से विकार में अण् एवं षुक् का आगम होता है।

१-२. इदं द्वयं वार्तिकमिति प्रामाणिकाः। विशेषस्तु बालमनोरमायां द्रष्टव्यः।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये	**१३९. ओरञ् १५१९ ।**	अञ् १४१	उवर्णान्त से विकारावयव में अञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, अञ्	**१४०. अनुदात्तादेश्च १५२०** ।। ७ ।।		अनुदात्तादि प्रातिपदिक से विकारावयव में अञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, अञ्	**१४१. पलाशादिभ्यो वा १५२१ ।**		पलाश आदि से विकारावयव में विकल्प से अञ् होता है ।
	(१२५) पलाश खदिर शिंशपा स्पन्दन पूलाक करीर शिरीष यवास विकङ्कत । **इति पलाशादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये	**१४२. शम्याः[1] ष्लञ् १५२२ ।**		शमी से विकारावयव में ष्लञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये	**१४३. मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः** मयट् १५१ १५२३ । भा-यो: १४४		भाषा में भक्ष्याच्छादन वर्जित विकारावयव में प्रकृति मात्र से विकल्पेन मयट् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, मयट्, भा-यो:	**१४४. नित्यं वृद्धशरादिभ्यः १५२४ ।**		वृद्ध एवं शरादि से भक्ष्याच्छादन-वर्जित विकारावयव में नित्य मयट् होता है ।
	(१२६) शर दर्भ मृद् (मृत्) कुटी तृण सोम बल्बज । **इति शरादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, मयट्	**१४५. गोश्च पुरीषे १५२५ ।**		गो शब्द से पुरीष अर्थ में मयट् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, मयट्	**१४६. पिष्टाच्च १५२६ ।**	पिष्टात् १४७	तस्य विकारः अर्थ में पिष्ट से नित्य मयट् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, मयट्, पिष्टात्	**१४७. संज्ञायां कन् १५२७ ।**		विकार तथा संज्ञा में पिष्ट से कन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, मयट्	**१४८. व्रीहेः पुरोडाशे १५२८ ।**		यदि विकार पुरोडाश हो तो व्रीहि से मयट् होता है ।

१. 'शम्याष्टलञ्' इति भाष्यविदः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, मयट् **१४९. असंज्ञायां तिलयवाभ्याम् १५२९ ।** विकारावयव में असंज्ञा रहने पर तिल यव शब्द से मयट् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, मयट् **१५०. द्व्यचश्छन्दसि ३४५३ ।** द्व्य-सि १५१ छन्द में द्व्यच् शब्द से विकारावयव में मयट् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, मयट्, द्व्य-सि **१५१. नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात् ३४५४ ।** उत्वत् वर्ध्र बिल्व से मयट् नहीं होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, त-रः, अ-ये **१५२. तालादिभ्योऽण् १५३० ।** अण् १५३ ताल आदि से विकारवयव में अण् होता है ।

(१२७) 'तालाद्धनुषि' ९४ । बर्हिण इन्द्रालिश (इन्द्रासिष) इन्द्रादृश इन्द्रायुध चय श्यामाक पीयूक्षा । **इति तालादिः ।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, अण् **१५३. जातरूपेभ्यः परिमाणे १५३१ ।** जातरूपवाची प्रातिपदिकों से परिमाण में अण् होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, त-रः, अ-ये **१५४. प्राणिरजतादिभ्योऽञ् १५३२ ।** अञ् १५५ प्राणिवाची एवं रजत आदि से विकारावयव में अञ् होता है ।

(१२८) रजत सीस लोह उदुम्बर नीप दारु रोहितक विभीतक पीतदारु तीव्रदारु त्रिकण्टक कण्टकार । **इति रजतादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, अञ् **१५५. ञितश्च तत्प्रत्ययात् १५३३ ।** विकारावयव प्रत्ययान्त ञित् वाले शब्दों से अञ् प्रत्यय होता है विकारावयव में ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, त-रः, अ-ये **१५६. क्रीतवत्परिमाणात् १५३४ ।** विकारार्थ में परिमाण से क्रीतवत् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, त-रः, अ-ये **१५७. उष्ट्राद्वुञ् १५३५ ।** वुञ् १५८ उष्ट्र से विकारावयव में वुञ् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, वुञ् **१५८. उमोर्णयोर्वा १५३६ ।** विकारावयव अर्थ में उमा ऊर्णा शब्द से विकल्पेन वुञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये **१५९. एण्या ढञ् १५३७ ।** एणी शब्द से विकारावयव में ढञ् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, त-रः, अ-ये	**१६०. गोपयसोर्यत् १५३८** ।। ८ ।।	यत् १६१	विकारावयव में गो और पयस् से यत् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, यत्	**१६१. द्रोश्च १५३९** ।	द्रोः १६२	द्रु शब्द से विकारावयव में यत् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, द्रोः	**१६२. माने वयः १५४०** ।		विकारविशेष मान में द्रु से वय प्रत्यय होता है।
ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, त-रः, अ-ये	**१६३. फले लुक् १५४१** ।	फले १६७	विकारावयवोत्पन्न फल विशेष में लुक् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, फले	**१६४. प्लक्षादिभ्योऽण् १५४२** ।	अण् १६५	विकारावयव रूप में फल विवक्षित होने पर प्लक्ष आदि से अण् होता है।
	(१२९) प्लक्ष न्यग्रोध अश्वत्थ इङ्गुदी शिग्रु (रुरु) कक्षतु बृहती। **इति प्लक्षादिः** ।।		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, फले, अण्	**१६५. जम्ब्वा वा १५४४** ।	ज-वा-वा १६६	फल धान्य होने पर जम्बू से विकल्पेन अण् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, फले, ज-वा	**१६६. लुप् च १५४५** । * ***फलपाकशुषामुपसंख्यानम्*** ।	लुप् १६७	फल वाच्य रहने पर जम्बू से प्रत्यय का विकल्पेन लुप् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये, फले, लुप्	**१६७. हरीतक्यादिभ्यश्च १५४६** ।		फल वाच्य रहने पर हरीतकी आदि से प्रत्यय का लुप् होता है।
	(१३०) हरीतकी कोशातकी नखरजनी शष्कण्डी दाडी दोडी श्वेतपाकी अर्जुनपाकी द्राक्षा काला ध्वाक्षा गभीका कण्टकारिकी पिप्पली चिम्पा (चिञ्चा) शेफालिका **इति हरीतक्यादिः** ।।		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, त-रः, अ-ये	**१६८. कंसीयपरशव्ययोर्यञञौ लुक्च १५४७**		कंसीय परशव्य शब्दों से विकार अर्थ में क्रमशः यञ् अञ् होते हैं तथा छ यत् का लुक् होता है।

युष्मद्धेमन्तात्संभूते ग्रामाद्धेतुतेन रथा-
त्पलाशादिभ्यो द्रोश्चाष्टौ ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

तद्धितेषु ठक् प्रत्ययः

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा	**१. प्राग्वहतेष्ठक् १५४८ ।** ** पुष्पमूलेषु बहुलम् ।* ** तदाहेति माशब्दादिभ्य उपसंख्यानम् ।* **(१३१) (वा० ग०)** । माशब्दः । नित्यशब्दः । कार्यशब्दः ।। **इति माशब्दादिः ।।** ** आहौ प्रभूतादिभ्यः ।* **(१३२) (वा० ग०)** प्रभूत पर्याप्त । **इति प्रभूतादिः ।** ** पृच्छतौ सुस्नातादिभ्यः ।* **(१३३) (वा० ग०)** । सुस्नात सुखरात्रि सुखशयन । **इति सुस्नातादिः ।।** ** गच्छतौ परदारादिभ्यः ।* **(१३४) (वा० ग०)** परदार गुरुतल्प । **इति परदारादिः ।।**	ठक् ७५	'तद्वहतिरथ युग प्रासङ्गम्' तक ठक् का अधिकार है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्	**२. तेन दीव्यति खनति जयति जितम् १५५०**	तेन २७	तृतीयासमर्थ से दीव्यति खनति जयति जितम् अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन	**३. संस्कृतम् १५५१ ।**	सं-म् ४	तेन संस्कृतम् अर्थ में ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, सं-म्	**४. कुलुत्थकोपधादण् १५५२ ।**		संस्कृतम् अर्थ में कुलत्थ तथा कोपध से अण् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन	**५. तरति १५५३ ।**	तरति ७	तेन तरति अर्थ में ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, तरति	**६. गोपुच्छाट्ठञ् १५५४ ।**		तरति अर्थ में पोपुच्छ से ठञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, तरति	**७. नौद्व्यचष्ठन् १५५५ ।**		नौ और द्व्यच् शब्द से तरति अर्थ में ठन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन	**८. चरति १५५६ ।**	चरति ११	तेन चरति अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, चरति	**९. आकर्षात्ष्ठल् १५५७ ।**		चरति अर्थ में आकर्ष से ष्ठल् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, चरति	**१०. पर्पादिभ्यः ष्ठन् १५५८ ।**	ष्ठन् ११	पर्प आदि शब्दों से चरति अर्थ में ष्ठन् होता है।
	(१३५) पर्प अश्व अश्वत्थ रथ जाल न्यास व्याल पाद। **इति पर्पादिः ।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, चरति, ष्ठन्	**११. श्वगणाट्ठञ्च १५५९ ।**		श्वगण से चरति अर्थ में ठञ् ष्ठन् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन	**१२. वेतनादिभ्यो जीवति १५६२ ।**	जीवति १४	तेन जीवति अर्थ में वेतन आदि शब्दों से ठक् होता है।
	(१३६) वेतन वाहन अर्धवाहन धनुर्दण्ड जाल वेश उपवेश प्रेषण उपवस्ति सुख शय्या शक्ति उपनिषद् उपदेश स्फिज् (स्फिज) पाद (उपस्थ) उपस्थान उपहस्त। **इति वेतनादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, जीवति	**१३. वस्नक्रयविक्रयाट्ठन् १५६३ ।** * ***क्रयविक्रयग्रहणं संघातविगृहीतार्थम् ।***	ठन् १४	वस्न क्रय विक्रय शब्दों से जीवति अर्थ में ठन् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, जीवति, ठन्	**१४. आयुधाच्छ च १५६४ ।**		जीवति अर्थ में आयुध से छ तथा ठन् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन	**१५. हरत्युत्सङ्गादिभ्यः १५६५ ।**	हरति १८	तेन हरति अर्थ में उत्सङ्ग आदि शब्दों से ठक् होता है।
	(१३७) उत्सङ्ग (उडुप) उत्पुत (उत्पन्न) उत्पुट पिटक पिटाक। **इत्युत्सङ्गादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, हरति	**१६. भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् १५६६ ।**	ष्ठन् १७	हरति अर्थ में भस्त्रा आदि शब्दों से ष्ठन् होता है।
	(१३८) भस्त्रा भरट भरण शीर्षभार शीर्षेभार अंसभार अंसेभार। **इति भस्त्रादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तेन, ष्ठन्, हरति	**१७. विभाषा विवधात् १५६७ ।** * ***वीवधादपि ।***		विविध वीवध शब्द से हरति अर्थ में विकल्प से ष्ठन् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१८. अण्कुटिलिकायाः १५६८ ।**
सम-वा, ठक्, तेन,
हरति

हरति अर्थ में कुटिलिका से अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१९. निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः १५६९ ।** निर्वृत्ते २१
सम-वा, ठक्, तेन

(१३९) अक्षद्यूत (जानुप्रहृत) जङ्घाप्रहृत जङ्घाप्रहत पादस्वेदन कण्टकमर्दन गतानुगत गतागत यातोपयात अनुगत । **इत्यक्षद्यूतादिः ।।**

तेन निर्वृत्तम् अर्थ में अक्षद्यूत आदि शब्दों से ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२०. क्त्रेर्मम्नित्यम् १५७० ।** ।। १ ।।
सम-वा, ठक्, तेन, ** भावप्रत्ययान्तादिमब्वक्तव्यः ।*
निर्वृत्ते

क्त्रि प्रत्ययान्त शब्दों से निर्वृत्त अर्थ में नित्य मप् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२१. अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ १५७१ ।**
सम-वा, ठक्, तेन,
निर्वृत्ते

निर्वृत्त अर्थ में अपमिति अयाचित शब्दों से क्रमशः कक् कन् होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२२. संसृष्टे १५७२ ।** संसृष्टे २५
सम-वा, ठक्, तेन

तेन संसृष्टे अर्थ में ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२३. चूर्णादिनिः १५७३ ।**
सम-वा, ठक्, तेन,
संसृष्टे

संसृष्ट अर्थ में चूर्ण से इनि होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२४. लवणाल्लुक् १५७४ ।**
सम-वा, ठक्, तेन,
संसृष्टे

लवण से संसृष्ट अर्थ में प्रत्यय का लुक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२५. मुद्गादण् १५७५ ।**
सम-वा, ठक्, तेन,
संसृष्टे

संसृष्ट अर्थ में मुद्ग से अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२६. व्यञ्जनैरुपसिक्ते १५७६ ।**
सम-वा, ठक्, तेन

तेन उपसिक्तम् अर्थ में व्यञ्जनवाची शब्दों से ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२७. ओजःसहोऽम्भसा वर्तते १५७७ ।** वर्तते २९
सम-वा, ठक्, तेन

तेन वर्तते अर्थ में ओजस् सहस् अम्भस् से ठक् होता है ।

ङ्यात्, तद्धिताः, **२८. तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् १५७८ ।** तत् ४६
सम-वा, ठक्, वर्तते

द्वितीया समर्थ प्रति अनुपूर्वक ईप लोम कूल शब्दों से वर्तते अर्थ में ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२९. परिमुखं च १५७९ ।**
सम-वा, ठक्, तत्,
वर्तते

तद्वर्तते अर्थ में परिमुख से ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**३०. प्रयच्छति गर्ह्यम् १५८० ।** ** वृद्धेर्वृधुषिभावो वक्तव्यः ।*	प्र-यम् ३१	तत् प्रयच्छति अर्थ में ठक् होता है, यदि तद्वाच्य गर्ह्य हो ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, प्र-यम्, तत्	**३१. कुसीददशैकादशात्ष्ठन्ष्ठचौ १५८१ ।**		प्रयच्छति गर्ह्यम् अर्थ में कुसीद दशैकादश से क्रमशः ष्ठन् ष्ठच् प्रत्यय होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**३२. उञ्छति १५८२ ।**		तत् उञ्छति अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**३३. रक्षति १५८३ ।**		तत् रक्षति अर्थ में ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**३४. शब्ददर्दुरं करोति १५८४ ।**		तत् करोति अर्थ में शब्द दर्दुर शब्द से ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**३५. पक्षिमत्स्यमृगान्हन्ति १५८५ ।**		तत् हन्ति अर्थ में पक्षिन् मत्स्य मृग से ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**३६. परिपन्थं च तिष्ठति १५८६ ।**		तत् तिष्ठति अर्थ में परिपन्थ से ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**३७. माथोत्तरपदपदव्यनुपदं धावति १५८७ ।**	धावति ३८	तद् धावति अर्थ में माथोत्तरपद तथा पदवी एवम् अनुपद शब्द से ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्, धावति	**३८. आक्रन्दाट्ठञ्च १५८८ ।**		आक्रन्द शब्द से तद् धावति अर्थ में ठञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**३९. पदोत्तरपदं गृह्णाति १५८९ ।**	गृह्णाति ४०	तद् गृह्णाति अर्थ में पदोत्तर पद से ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्, गृह्णाति	**४०. प्रतिकण्ठार्थललामं च १५९० ।।२।।**		तद् गृह्णाति अर्थ में प्रतिकण्ठ अर्थ ललाम शब्दों से ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**४१. धर्मं चरति १५९१ ।** ** अधर्माच्चेति वक्तव्यम् ।*		तत् चरति अर्थ में धर्म से ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**४२. प्रतिपथमेति ठंश्च १५९२ ।**		तत् एति अर्थ में प्रतिपथ से ठन् होता है !
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्	**४३. समवायान्समवैति १५९३ ।**	समवैति ४५	तत् समवैति अर्थ में समवायवाची शब्दों से ठक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्, स-ति	**४४. परिषदो ण्यः १५९४ ।**	ण्यः ४५	समवायान् समवैति अर्थ में परिषद् में ण्य होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्, स-ति, ण्यः — **४५. सेनाया वा १५९५ ।** — समवायान् समवैति अर्थ में सेना-शब्द से विकल्प से ण्य होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक् — **४६. संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति १५९६** — तत् पश्यति अर्थ में ललाट कुक्कुटी शब्द से ठक् होता है, यदि संज्ञा हो।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक् — **४७. तस्य धर्म्यम् १५९७ ।** — त ५० ध ४९ — तस्य धर्म्यम् अर्थ में ठक् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तस्य, धर्म्यम् — **४८. अण्महिष्यादिभ्यः १५९८ ।** — महिषी आदि शब्दों से तस्य धर्म्यम् अर्थ में अण् होता है।

(१४०) महिषी प्रजापति प्रजावती प्रलेपिका विलेपिका अनुलपिका पुरोहिता मणिपाली अनुवारक (अनुचारक) होतृ यजमान। **इति महिष्यादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तस्य, धर्म्यम् — **४९. ॠतोऽञ् १५९९ ।** — तस्य धर्म्यम् अर्थ में ॠकारान्त शब्दों से अञ् होता है।

**** नराच्चेति वक्तव्यम् ।***
**** विशसितुरिड्लोपश्चाञ्च वक्तव्यः ।***
**** विभाजयितुर्णिलोपश्चाञ्च वक्तव्यः ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तस्य — **५०. अवक्रयः १६०० ।** — तस्य अवक्रयः अर्थ में ठक् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक् — **५१. तदस्य पण्यम् १६०१ ।** — त-य ६५, प-म् ५४ — तत् अस्य इस अर्थ में अस्यवाची शब्दों से ठक् होता है, यदि तद्वाची पण्य हो।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, त-य, प-म् — **५२. लवणाट्ठञ् १६०२ ।** — तदस्य पण्यम् अर्थ में लवण से ठञ् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः सम-वा, ठक्, प-म्, त-य — **५३. किसरादिभ्यः ष्ठन् १६०३ ।** — ष्ठन् ५४ — किसर आदि शब्दों से तदस्य पण्यम् अर्थ में ष्ठन् होता है।

(१४१) किसर नरद नलद स्थागल तगर गुग्गुल उशीर हरिद्रा हरिद्रु पर्गी (पर्णी)। **इति किसरादिः ।**

ङ्या-त् तद्धिताः सम-वा, ठक्, त-य, प-म्, ष्ठन् — **५४. शलालुनोऽन्यतरस्याम् १६०४ ।** — तदस्य पण्यम् अर्थ में शलालु से विकल्पेन ष्ठन् होता है

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य, शिल्पम्
५५. शिल्पम् १६०५ ।
शिल्पं ५६
तत् अस्य इस अर्थ में अस्यवाची शब्दों से ठक् होता है, यदि तद्वाची शिल्प होता हो।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य, शिल्पम्
५६. मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम् १६०६ ।
तदस्य शिल्पम् अर्थ में मड्डुक झर्झर से विकल्पेन अण् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य
५७. प्रहरणम् १६०७ ।
प्र-म् ५८
तत् अस्य अर्थ में अस्यवाची से ठक् होता है यदि तद्वाची प्रहरण हो।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य, प्रहरणम्
५८. परश्वधाट्ठञ्च १६०८ ।
प्रहरणम् अर्थ में परश्वध से ठञ् ठक् दोनों होते हैं।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य
५९. शक्तियष्ट्योरीकक् १६०९ ।
तदस्य प्रहरणम् अर्थ में शक्ति यष्टि से ईकक् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य
६०. अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः १६१० ।
।। ३ ।।
तत् अस्य इस अर्थ में अस्यवाची के साथ प्रयुक्त अस्ति नास्ति दिष्ट शब्दों से ठक् होता है, यदि तद्वाची मति हो।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य
६१. शीलम् १६११
शीलं ६२
अस्य शीलम् अर्थ में अस्यवाची शब्दों से ठक् होता यदि तद्वाची शील हो।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य, शीलम्
६२. छत्रादिभ्यो णः १६१२ ।
तदस्य शीलम् अर्थ में छत्र आदि शब्दों से ण होता है।

(१४२) छत्र शिक्षा प्ररोह स्था बुभुक्षा चुरा तितिक्षा उपस्थान कृषि कर्मन् विश्वधा तपस् सत्य अनृत विशिखा विशिका भक्षा उदस्थान पुरोडा विक्षा चुक्षा मन्द्र। **इति छत्रादिः ।।**

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य
६३. कर्माध्ययने वृत्तम् १६१४ ।
कर्म-म् ६४
तत् अस्य अर्थ में षष्ठ्यर्थ से ठक् होता है, यदि प्रथमार्थ कर्म हो तथा विषय अध्ययन हो।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य, कर्म-म्
६४. बह्वच्पूर्वपदाट्ठच् १६१५ ।
बह्वच्पूर्व प्रातिपदिक से ठच् होता है तदस्य कर्माध्ययने वृत्तम् अर्थ में।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-य
६५. हितं भक्षाः १६१६ ।
षष्ठ्यर्थ में ठक् होता है, यदि प्रथमार्थ हित एवं भक्ष हो।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६६. तदस्मै दीयते नियत (नियुक्त) म् १६१७** त-म् ६८
सम-वा, ठक्

तदस्मै दीयते विग्रह में अस्मै के अर्थ में ठक् होता है यदि तद्वाची नियत दिया जाता हो ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-म् **६७. श्राणामांसौदनाट्टिठन् १६१८ ।**
** मांसौदनग्रहणं संघातविगृहीतार्थम् ।*

तदस्मै दीयते नियतम् अर्थ में श्राणा मांसौदन शब्द से टिठन् होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक्, त-म् **६८. भक्तादणन्यतरस्याम् १६१९ ।**

तदस्मै दीयते नियतम् अर्थ में भक्त से अण् होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, ठक् **६९. तत्र नियुक्तः १६२० ।** तत्र ७४ नि-त ७०

तत्र नियुक्तः इस अर्थ में तत्रवाची शब्द से ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्र, नियुक्तः **७०. अगारान्ताट्ठन् १६२१ ।**

अगारान्त शब्दों से तत्रनियुक्तः अर्थ में ठन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्र **७१. अध्यायिन्यदेशकालात् १६२२ ।**

सप्तमीसमर्थ देशकाल वाची शब्दों से ठक् होता है, यदि वाच्य अध्यायी हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्र **७२. कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु व्यवहरति १६२३ ।**

कठिनान्त प्रस्तार संस्थान शब्दों से तत्र व्यवहरति अर्थ में ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्र **७३. निकटे वसति १६२४ ।** वसति ७४

तत्र वसति अर्थ में निकट शब्द से ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, तत्र, वसति **७४. आवसथात्ष्ठल् १६२५ ।**

आवसथ से तत्र वसति अर्थ में ष्ठल् होता है ।

तद्धितेषु प्राग्घितीय प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा **७५. प्राग्घिताद्यत् १६२६ ।** यत् ५/१/४

तस्मै हितम् सूत्र तक यत् का अधिकार है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत् **७६. तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम् १६२७ ।** तत् ८६ वहति ८२

तद् वहति अर्थ में रथ युग प्रासङ्ग शब्द से यत् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्, वहति **७७. धुरो यड्ढकौ १६२८ ।**

धुर शब्द से तद्वहति अर्थ में यत् ढक् होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्, वहति **७८. खः सर्वधुरात् १६३० ।** खः ७९

सर्वधुरा शब्द से वहति अर्थ में ख होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्, वहति, खः **७९. एकधुराल्लुक्च १६३१ ।**

एकधुरा शब्द से वहति अर्थ में ख होता है और लुक् हो जाता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्, वहति
८०. शकटादण् १६३२ ।। ४ ।।
वहति अर्थ में शकट से अण् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्, वहति
८१. हलसीराट्ठक् १६३३ ।
हल सीर शब्द से वहति अर्थ में ठक् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्, वहति
८२. संज्ञायां जन्याः १६३४ ।
जनीशब्द से वहति अर्थ में यत् होता है यदि संज्ञा हो।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्
८३. विध्यत्यधनुषा १६३५ ।
विध्यति अर्थ में यत् होता है यदि साधन धनु न हो।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्
८४. धनगणं लब्धा १६३६ । लब्धा ८५
धन गण शब्दों से लब्धा अर्थ में यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठक्, यत्, तत्, लब्धा
८५. अन्नाण्णः १६३७ ।
लब्धा अर्थ में अन्न से ण होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्
८६. वशं गतः १६३८ ।
गतः अर्थ में वश से यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्
८७. पदमस्मिन्दृश्यम् १६३९ ।
अस्मिन् दृश्यम् इस अर्थ पद से यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्
८८. मूलमस्याबर्हि १६४० ।
आबर्हि अस्य इस अर्थ में मूल से यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्
८९. संज्ञायां धेनुष्या १६४१ ।
संज्ञा में धेनुष्या निपातित होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्
९०. गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः १६४२ ।
तेन संयुक्ते इस अर्थ में गृहपति से ञ्य होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्
९१. नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसंमितेषु १६४३ ।
तृतीया समर्थ नौ वयस् धर्म विष मूल मूल सीता तुला शब्दों से क्रमशः तार्य तुल्य प्राप्य वध्य आनाम्य सम समित सम्मित अर्थों में यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्
९२. धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते १६४४ ।
पञ्चमीसमर्थ धर्म पथि अर्थ न्याय से अनपेत अर्थ में यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्
९३. छन्दसो निर्मिते १६४५ । निर्मिते ९४
तृतीया समर्थ छन्दस् से निर्मित अर्थ में यत् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, यत्, नि-ते **९४. उरसोऽण्च १६४६ ।** तृतीया समर्थ उरस् से निर्मित अर्थ में अण् यत् होते हैं।

ङ्यात्, तद्धिताः, सम-वा, यत् **९५. हृदयस्य प्रियः १६४७ ।** हृदयस्य ९६ हृदय शब्द से अस्य प्रियः अर्थ में यत् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-म-वा, यत्, हृ-य **९६. बन्धने चर्षौ १६४८ ।** यदि बन्धन ऋषि हो तो षष्ठ्यन्त हृदय से यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत् **९७. मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु १६४९ ।** षष्ठ्यन्त मत जन हल से क्रमशः करण जल्प कर्ष अर्थ में यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत् **९८. तत्र साधुः १६५० ।** तत्र ११९ साधुः १०६ तत्र साधुः अर्थ में यत् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, साधुः **९९. प्रतिजनादिभ्यः खञ् १६५१ ।** प्रतिजन आदि शब्दों से तत्र साधुः अर्थ में खञ् होता है।

(१४३) प्रतिजन इदंयुग संयुग समयुग परयुग परकुल परस्यकुल अमुष्यकुल सर्वजन विश्वजन महाजन पञ्चजन। **इति प्रतिजनादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, साधुः **१००. भक्ताण्णः १६५२ ।। ५ ।।** तत्र साधुः अर्थ में भक्त से ण होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र. साधुः **१०१. परिषदो ण्यः १६५३ ।** परिषद् से तत्र साधुः अर्थ में ण्य होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, साधुः **१०२. कथादिभ्यष्ठक् १६५४ ।** तत्र साधुः अर्थ में कथा आदि से ठक् होता है।

(१४४) कथा विकथा विश्वकथा संकथा वितण्डा कुष्टविद् (कुष्ठविद्) जनवाद जनेवाद जनोवाद वृत्ति संग्रह गुण गण आयुर्वेद। **इति कथादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, साधुः **१०३. गुडादिभ्यष्ठञ् १६५५ ।** तत्र साधुः अर्थ में गुड आदि से ठञ् होता है।

(१४५) गुड कल्माष सक्तु अपूप मांसौदन इक्षु वेणु संग्राम संघात (संक्राम संवाह) प्रवास निवास उपवास। **इति गुडादिः ।।**

ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, साधुः	**१०४. पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् १६५६ ।**		तत्र साधुः अर्थ में पथि, अतिथि वसति स्वपति से ढञ् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, साधुः	**१०५. सभाया यः १६५७ ।**	सभायाः १०६	सभा से तत्र साधुः अर्थ में य प्रत्यय होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, साधुः, सभा	**१०६. ढश्छन्दसि ३४५५ ।**		तत्र साधुः अर्थ में सभा से वेद में ढ होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र	**१०७. समानतीर्थे वासी १६५८ ।**		तत्र वासी अर्थ में समानतीर्थ से यत् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र	**१०८. समानादरे शयित ओ चोदात्तः १६५९**	शयितः १०९	सप्तमीसमर्थ समानोदर शब्द से शयित अर्थ में यत् होता है और ओ उदात्त होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, शयितः	**१०९. सोदराद्यः १६६० ।**		सोदर शब्द से शयित अर्थ में य होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र	**११०. भवे छन्दसि ३४५६ ।**	भवे ११८ छन्दसि १४४	तत्र भवः इस अर्थ मे वेद में यत् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, छ०, भवे	**१११. पाथोनदीभ्यां ड्यण् ३४५७ ।**		पाथस् और नदी शब्द से तत्र भवः अर्थ में ड्यण् होता है वेद में ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, छ०, भवे	**११२. वेशन्तहिमवद्भ्यामण् ३४५८ ।**		वेशन्त और हिमवत् से तत्र भवः अर्थ में अण् होता है वेद में ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, छ०, भवे	**११३. स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ ३४५९ ।**		स्रोतस् शब्द से तत्र भवः अर्थ में विकल्प से ड्यत् ड्य होते हैं वेद में ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, छ०, भवे	**११४. सगर्भसयूथसनुताद्यन् ३४६० ।**		सगर्भ सयूथ सनुत से यन् होता है वेद में ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, छ०, भवे	**११५. तुग्राद्घन् ३४६१ ।**		तुग्र से घन् होता है वेद में ।
ड्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, छ०, भवे	**११६. अग्राद्यत् ३४६२ ।**	अग्रात् ११७	अग्र से यत् होता है वेद में ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, छ०, भवे, अग्रात्	**११७. घच्छौ च ३४६३ ।**		अग्र से यत् घ छ प्रत्यय होते हैं वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, छ०, भवे	**११८. समुद्राभ्राद्घः ३४६४ ।**		समुद्र अभ्र से घ होता है भव अर्थ में वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, तत्र, छ०	**११९. बर्हिषि दत्तम् ३४६५ ।**		तत्र दत्तम् अर्थ में बर्हिष् से यत् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१२०. दूतस्य भागकर्मणी ३४६६ ॥६॥**		भाग कर्म वाच्य होने पर दूत से अस्य इस अर्थ में यत् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१२१. रक्षोयातूनां हननी ३४६७ ।**		षष्ठी समर्थ रक्षस् यातु से हननी अर्थ में यत् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१२२. रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये ३४६८**		षष्ठी समर्थ रेवती जगती हविष्या शब्द से प्रशस्य अर्थ में यत् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१२३. असुरस्य स्वम् ३४६९ ।**	अ-य १२४	अस्य स्वम् इस अर्थ में असुर से यत् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, अ-य, छ०	**१२४. मायायामण् ३४७०**		असुर से माया में अण् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१२५. तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टिकासु लुक्च मतोः ३४७१ ।**	तद्वा-तोः १२६	वेद में यदि उपधान मन्त्र हों तो मत्वन्त प्रथमासमर्थ से यत् प्रत्यय हो आसाम् के अर्थ में। आसामं से इष्टका अभिप्रेत होना चाहिये। मतुप् का लुक् भी होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, त-तोः, छ०	**१२६. अश्विमानण् ३४७२ ।**		अश्विमन् से अण् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१२७. वयस्यासु मूर्ध्नो मतुप् ३४७३ ।**		वयस्या में मूर्धन् शब्द से मतुप् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१२८. मत्वर्थे मासतन्वोः ३४७४ ।** **** मासतन्वोरनन्तरार्थे वा ।*** **** लुगकारेकाररेफाश्च ।***	म-र्थे १३२	मास तनु अर्थ में मतुप् के स्थान पर यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, मर्थे, छ०	**१२९. मधोर्ञ च ३४७५ ।**		मत्वर्थ में मधु शब्द से ञ और यत् होते हैं वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, मर्थे, छ०	**१३०. ओजसोऽहनि यत्खौ ३४७६ ।**		यदि अंहन् वाच्य हो तो ओजस् से मत्वर्थ में यत् और ख होते हैं वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, मर्थे, छ०	**१३१. वेशोयशआदेर्भगाद्यल् ३४७७ ।**	वे-ल् १३२	वेशो यशस् आदि वाले भग से यल् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, मर्थे, छ०, वे-ल्	**१३२. ख च ३४७८ ।**	ख १३३	वेशो यशस् आदि वाले भग से मत्वर्थ में यल् और ख दोनों होते हैं वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०, ख	**१३३. पूर्वैः कृतमिनयौ च ३४७९ ।**		तेन कृतम् अर्थ में पूर्वशब्द से इन य ख प्रत्यय होते हैं वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१३४. अद्भिः संस्कृतम् ३४८० ।**		तेन संस्कृतम् अर्थ में अप् से यत् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१३५. सहस्रेण संमितौ घः ३४८१ ।**	स-ण, १३६ घः १३६	संमिति अर्थ में सहस्र से घ होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, स-ण, छ०, घः	**१३६. मतौ च ३४८२ ।**		मत्वर्थ मे सहस्र से घ होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१३७. सोममर्हति यः ३४८३ ।**	सोमं, १३८ यः १३८	अर्हति अर्थ में सोम से घ होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, सोम, छ०, यः	**१३८. मये च ३४८४ ।**	मये १४०	मयट् के अर्थ में सोम से य होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०, मये	**१३९. मधोः ३४८५ ।**		मधु शब्द से मयट् के अर्थ में यत् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०, मये	**१४०. वसोः समूहे च ३४८६ ।। ७ ।।** ** अक्षरसमूहे छन्दस उपसंख्यानम् ।*		वसु शब्द से समूह वाच्य में मयडर्थ में भी यत् होता है वेद में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, यत्, छ०	**१४१. नक्षत्राद्घः ३४८७ ।**		नक्षत्र से स्वार्थ में घ प्रत्यय होता है वेद में।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४२. सर्वदेवात्तातिल् ३४८८ ।** तातिल् १४४ सर्व और देव शब्द से स्वार्थ में
सम-वा, यत्, छ० तातिल् होता है वेद में ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४३. शिवशमरिष्टस्य करे ३४८९ ।** ।श-स्य १४४ कर अर्थ में शिव शम् अरिष्ट से
सम-वा, यत्, ता-
ल, छ० तातिल् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४४. भावे च ३४९० ।** भाव अर्थ में शिवादि शब्द से
सम-वा, यत्, ता-
ल्, छ०, शि-स्य तातिल् होता है वेद में ।

प्राग्वहतेरपमित्यधर्मं शीलं हलपरिषदो
रक्षोनक्षत्राच्चत्वारि ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य
चतुर्थः पादः अध्यायश्च ।

।। अथ पञ्चमोध्यायः ।।

प्रथमः पादः ।

आर्हीये छयद्-विधि प्रकरणम्

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१. प्राक् क्रीताच्छः १६६१ ।** छः ३६ — तेन क्रीतम् सूत्र तक छ प्रत्यय का अधिकार है ।
स-वा, यत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२. उगवादिभ्यो यत् १६६२ ।** यत् ४ — उकारान्त तथा गो आदि शब्दों से प्राक्क्रीत अर्थ में छ प्रत्यय होता है ।
स-वा, यत्

(१४६) गो हविस् अक्षर विष बर्हिस् अष्टका स्वदा युग मेधा स्रुच् । 'नाभि नभं च' ९५ । 'शुनः संप्रसारणं वा च दीर्घत्वं तत्संनियोगेन चान्तोदात्तत्वम्' ९६ । 'ऊधसोऽनङ् च' ९७ । कूप खद दर खर असुर अध्वन् (अध्वन) क्षर वेद बीज दीस (दीप्त) ।। **इति गवादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **३. कम्बलाच्च संज्ञायाम् १६६३ ।** — संज्ञा में कम्बल शब्द से प्राक्क्रीत अर्थ में यत् होता है ।
स-वा, यत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, **४. विभाषा हविरपूपादिभ्यः १६६४ ।** — हविष्वाची तथा अपूप आदि शब्दों से प्राक्क्रीतार्थ में विकल्प से यत् होता है ।
स-वा, यत्

(१४७) अपूप तण्डुल अभ्युष (कभ्यूष) [अभ्योष अवोष अभ्येष] पृथुक ओदन सूप पूप किण्व प्रदीप मुसल कटक कर्णवेष्टक [इर्गल] अर्गल । 'अन्नविकारेभ्यश्च' ९८ । यूप स्थूणा दीप अश्व पत्र ।। **इत्यपूपादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **५. तस्मै हितम् १६६५ ।** त-तम् ११ — तस्मै हितम् अर्थ में यथाविहित (छ) प्रत्यय होता है ।
स-वा, छः

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६. शरीरावयवाद्यत् १६६६ ।** यत् ७ — तस्मै हितम् अर्थ में शरीरावयव वाची शब्द से यत् होता है ।
स-वा, छः, त-तं **** यत्प्रकरणे रथाच्च ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७. खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च १६६८ ।** — खल यव माष तिल वृष ब्रह्मन् से तस्मै हितम् अर्थ में यत् होता है ।
स-वा यत् छः त-तं

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८. अजाविभ्यां थ्यन् १६६९ ।** — तस्मै हितम् अर्थ में अज अवि से थ्यन् होता है ।
स-वा, छः, त-तं

ङ्या-त्, तद्धिताः, **९. आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात्खः १६७० ।** — आत्मन् विश्वजन तथा भोगोत्तरपद से तस्मै हितम् अर्थ में ख होता है ।
स-वा, छः, त-तं **** आचार्यादणत्वं च ।***

** पञ्चजनादुपसंख्यानम् ।*
** सर्वजनाट्ठञ् खश्च ।*
** महाजनाट्ठञ् ।*
** कर्मधारयादेवेष्यते ।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, छः, त-तं — **१०. सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ १६७२ ।** — सर्व और पुरुष से क्रमशः ण ढञ् होते हैं तस्मै हितम् अर्थ में।
** सर्वाण्णो वेति वक्तव्यम् ।*
** पुरुषाद्वधविकारसमूहतेनकृतेष्विति वक्तव्यम् ।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, छः, त-तं — **११. माणवचरकाभ्यां खञ् १६७३ ।** — माणव चरक से तस्मै हितम् अर्थ में खञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, छः — **१२. तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ १६७४ ।** तद-तौ १५ — विकृति वाची शब्दों के लिये जब प्रकृतिवाची कहे जॉय तो उनसे तस्मै हितम् अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, छः, तद-तौ — **१३. छदिरुपधिबलेर्ढञ् १६७५ ।** — छदिष् उपधि बलि से तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ अर्थ में ढञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, छः, तद-तौ — **१४. ऋषभोपानहोर्ञ्यः १६७६ ।** — ऋषभ उपानह् से त० वि० प्र० अर्थ में ञ्य प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, छः, तद-तौ — **१५. चर्मणोऽञ् १६७७ ।** — त० वि० प्र० अर्थ में चर्मन् से अञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, छः — **१६. तदस्य तदस्मिन्स्यादिति १६७८ ।** त-ति १७ — तत् अस्य स्यात्, तत् अस्मिन् स्यात् इस अर्थ में तद्वाची शब्द से यथाविहित प्रत्यय होता हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, छः, त-ति — **१७. परिखाया ढञ् १६७९ ।** — तत् स्यात् इस अर्थ में परिखा से ढञ् होता है।

आर्हीयः

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, छः — **१८. प्राग्वतेष्ठञ् १६८० ।** ठञ् ११४ — तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः सूत्रतक ठञ् का अधिकार है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, छः — **१९. आर्हादगोपुच्छसंख्यापरिमाणाट्ठक् १६८१** ठक् ७१ — तदर्हति सूत्रतक ठञ् के अन्तर्गत ठक् का अधिकार है, गोपुच्छ, संख्या परिमाण को छोड़कर।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा ठञ् छः ठक् — **२०. असमासे निष्कादिभ्यः १६८२ ।।१।।** — आर्हीय अर्थ में असमस्त निष्क आदि शब्दों से ठक् होता है।

(१४८) निष्क पण पाद माष वाह द्रोण षष्टि ।।
इति निष्कादिः ।।
** इत उर्ध्वं तु संख्यापूर्वपदानां तदन्तग्रहणं प्राग्वतेरिष्यते तच्चालुकि ।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, सम-वा, ठञ्, छः, ठक्	**२१. शताच्च ठन्यतावशते १६८६ ।**		आर्हीय में अशत वाच्य हो तो शत से ठन् यत् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा ठञ् छः ठक्	**२२. संख्याया अतिशदन्तायाः कन् १६८७ ।**		त्यन्त शदन्त को छोड़कर संख्या शब्दों से कन् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा ठञ् छः ठक्	**२३. वतोरिड्वा १६८८ ।**		आर्हीय अर्थ मे वतु अन्त वाले संख्या शब्दों से कन् के साथ इट् भी विकल्प से होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा ठञ् छः ठक्	**२४. विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुन्नसंज्ञायाम् १६८९**		असंज्ञा में विंशति त्रिंशत् से ड्वुन् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा ठञ् छः ठक्	**२५. कंसाट्टिठन् १६९० ।** * *अर्धाच्चेति वक्तव्यम् ।* * *कार्षापणाट्टिठन्वक्तव्यः प्रतिरादेशश्च वा ।*		आर्हीय अर्थ में कंस से टिठन् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा ठञ् छः ठक्	**२६. शूर्पादञन्यतरस्याम् १६९१ ।**		आर्हीय अर्थों में शूर्प से अञ् विकल्प से होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा ठञ् छः ठक्	**२७. शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण् १६९२**		शतमान आदि शब्दों आर्हीय अर्थों में अण् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा ठञ् छः ठक्	**२८. अध्यर्धपूर्वद्विगो[1]र्लुगसंज्ञायाम् १६९३ ।**	अ-गोः ३५ लुक् ३१	अध्यर्धपूर्व तथा द्विगु से असंज्ञा में आर्हीय का लुक् होता है।
ङ्या-त्,तद्धिताः, स-वा, ठञ्, छः, ठक्, अ- गोः, लुक्	**२९. विभाषा कार्षापणसहस्राभ्याम् १६९४** * *सुवर्णशतमानयोरुपसंख्यानम् ।*	विभाषा ३१	अध्यर्धपूर्व द्विगु कार्षापण सहस्र शब्दों से आर्हीय का विकल्प से लुक् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा ठञ् छः ठक् अ-गोः लुक् विभाषा	**३०. द्वित्रिपूर्वान्निष्कात् १६९५ ।** * *बहुपर्वाच्चेति वक्तव्यम् ।*	द्वि-त् ३१	द्वि त्रि पूर्वक द्विगु निष्क से आर्हीय का विकल्प से लुक् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, छः, ठक्, अ-गोः, लुक्, द्वि-त्, विभाषा	**३१. बिस्ताच्च १६९६ ।** * *बहुपूर्वाच्च ।*		द्वित्रि पूर्व विस्तान्त द्विगु से आर्हीय का विकल्प से लुक् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, छः, ठक्, अ-गोः	**३२. विंशतिकात्खः १६९७ ।**		अध्यर्धपूर्व द्विगु विंशतिक से आर्हीय ख प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, छः, ठक्, अ-गोः	**३३. खार्या ईकन् १६९८ ।** * *केवलायाश्चेति वक्तव्यम् ।*		अध्यर्धपूर्व द्विगु खारी से आर्हीय अर्थ में ईकन् होता है।

१. पूर्वाद्द्विगोरिति पाठान्तरम्।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, छः, ठक्, अ-गोः	**३४. पणपादमाषशताद्यत् १६९९ ।**	यत् ३६	अध्यर्धपूर्व द्विगु पण पाद माष शत से आर्हीय अर्थ में यत् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, छः, ठक्, अ-गोः, यत्	**३५. शाणाद्वा १७०० ।**	शाणात् ३६	आर्हीय अर्थ में अध्यर्धपूर्व द्विगु शाण से यत् विकल्पेन होता है ।
ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, ठञ्, छः, ठक्, अ-के, शा-त्, यत्	**३६. द्वित्रिपूर्वादण्च १७०१ ।**		द्वि त्रि पूर्वक शाण से आर्हीय अर्थ में अण् तथा विकल्प से यत् भी होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्	**३७. तेन क्रीतम् १७०२ ।**		तेन क्रीतम् अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्	**३८. तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ १७०४ ।** **** वातपित्तश्लेष्मभ्यः शमनकोपयोरुपसंख्यानम् ।*** **** संनिपाताच्च ।***	त-तौ ४१	संयोग उत्पात में तस्य निमित्तम् अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, त-तौ	**३९. गोद्व्यचोऽसंख्यापरिमाणाश्वादेर्यत् १७०५ ।** (**१४०**) अश्व अश्मन् गण ऊर्णा (उर्म) उमा भङ्गा (गङ्गा) वर्षा वसु ।। **इत्यश्वादिः ।।** **** ब्रह्मवर्चसादुपसंख्यानम् ।***	यत् ४०	संख्या परिमाण अश्व आदि शब्दों को छोड़कर गो तथा द्व्यच् शब्दों से यत् होता है तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ अर्थ में ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, त-तौ, यत्	**४०. पुत्राच्छ च १७०६ ।। २ ।।**		तस्य निमित्तं संयोगोत्पतौ अर्थ में पुत्र से छ और यत् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, त-तौ	**४१. सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ १७०७ ।**	स-ञौ ४३	तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ अर्थ में सर्वभूमि पृथिवी से क्रमशः अण् अञ् होता है ।
ङ्या-त् तद्धिताः स-वा ठञ् ठक् स-ञौ	**४२. तस्येश्वरः १७०८ ।**		तस्य ईश्वरः अर्थ में सर्वभूमि पृथिवी से अण् अञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, स-ञौ	**४३. तत्र विदित इति च १७०९ ।**	त-दित ४४	तत्र विदितः इस अर्थ में सर्वभूमि पृथिवी शब्द से क्रमशः अण् अञ् होता है ।
ङ्या-त् तद्धिताः स-वा ठञ् ठक् त-दित	**४४. लोकसर्वलोकाट्ठञ् १७१० ।**		लोक सर्वलोक से तत्र विदितः अर्थ में ठञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्	**४५. तस्य वापः १७११ ।**	त-प: ४६	तस्य वापः इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।
ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, ठञ्, ठक्, त-पः	**४६. पात्रात्ष्ठन् १७१२ ।**		पात्र से ष्ठन् होता है तस्य वापः अर्थ में ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्	**४७. तदस्मिन्वृद्ध्यायलाभशुल्कोपदा दीयते १७१३ ।** ** चतुर्थ्यर्थ उपसंख्यानम् ।*	त-ते ४९	वृद्धि आय लाभ शुल्क उपदा (किसी) अर्थ में तदस्मिन् दीयते इस विग्रह में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, त-ते	**४८. पूरणार्धाट्ठन् १७१४ ।**	ठन् ४९	पूरणवाची शब्द तथा अर्द्धशब्द से तद्......दीयते अर्थ में ठन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, त-ते, ठन्	**४९. भागाद्यच्च १७१५ ।**		तद्.....दीयते अर्थ में भाग से यत् और ठन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्	**५०. तद्धरति वहत्यावहति भाराद्वंशादिभ्यः १७१६ ।**	तत् ५५ हरति ५१	वंश आदि पूर्व भार शब्द से हरति वहति आवहति अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
	(१५०) वंश कुटज बल्बज मूल स्थूणा (स्थूण) अक्ष अश्मन् अश्व श्लक्ष्ण इक्षु खट्वा ॥ **इति वंशादिः ।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तत्, हरति	**५१. वस्नद्रव्याभ्यां ठन्कनौ १७१७ ।**		हरति आदि अर्थों में वस्न द्रव्य से क्रमशः ठन् तथा कन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तत्	**५२. संभवत्यवहरति पचति १७१८ ।** ** तत्पचतीति द्रोणादण्च ।*	स-ति ५५	तत् संभवति अवहरति पचति अर्थों में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तत्, स-ति	**५३. आढकाचितपात्रात्खोऽन्यतरस्याम् १७१९**	आ-त् ५४	संभवति अभ्यवहरति पचति अर्थों में द्वितीया समर्थ आढक आचित पात्र शब्द से विकल्प से ख होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तत्, स-ति, आ-त्	**५४. द्विगोः ष्ठंश्च १७२० ।**	द्वि-न् ५५	संभवति आदि अर्थों में आढक आचित पात्रान्त द्विगु से ष्ठन् तथा विकल्प से ख होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तत्, स-ति, द्वि-न्	**५५. कुलिजाल्लुक्खौ च १७२१ ।**		कुलिजान्त द्विगु से संभवति आदि अर्थों में लुक् ख ष्ठन् विकल्प से होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्	**५६. सोऽस्यांशवस्नभृतयः १७२२ ।**		सः अस्य इस अर्थ में अंश वस्न भृति से यथाविहित प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्	**५७. तदस्य परिमाणम् १७२३ ।**	तद-णम् ६२	तत् अस्य परिमाणम् अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद-णम्	**५८. संख्यायाः संज्ञासंघसूत्राध्ययनेषु १७२४** ** तत्र संज्ञायां स्वार्थे प्रत्ययो वाच्यः ।* ** स्तोमे डविधिः ।* ** शन्शतोर्डिनिश्छन्दसि ।* ** विंशतेश्च ।*		संज्ञा संघ सूत्र अध्ययन अर्थों में संख्यावाची शब्दों से सः अस्य परिमाणम् विग्रह में यथाविहित प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद-णम्	**५९. पंक्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टि-सप्तत्यशीतिनवतिशतम् १७२५ ।**		तदस्य परिमाणम् अर्थ में पंक्ति आदि शब्द निपातित होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद-णम्	**६०. पञ्चद्दशतौ वर्गे वा १७२६ ।। ३ ।।**	वर्गे ६१	यदि वर्ग अभिधेय हो तो तदस्य परिमाणम् अर्थ में पञ्चत् दशत् विकल्प से निपातित होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद-णम्, वर्गे	**६१. सप्तनोऽञ्छन्दसि ३४९१ ।**		वेद में सप्तन् शब्द से वर्ग वाच्य रहने पर तदस्य परिमाणम् अर्थ में अञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद-णम्	**६२. त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे संज्ञायां डण् १७२७ ।**		संज्ञा में त्रिंशत् चत्वारिंशत् शब्दों से तदस्य परिमाणम् अर्थ में डण् प्रत्यय होता है, यदि ब्राह्मण अभिधेय हो।
ङ्यात्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्	**६३. तदर्हति १७२८ ।**	तद् ७६ अर्हति ७१	तत् अर्हति अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद् अर्हति	**६४. छेदादिभ्यो नित्यम् १७२९ ।** (**१५१**) छेद भेद द्रोह दोह नर्ति (नर्त) कर्ष [तीर्थ] संप्रयोग विप्रयोग प्रयोग [विप्रकर्ष] प्रेषण संप्रश्न विप्रश्न विकर्ष प्रकर्ष। 'विराग विरङ्गं च' ९९ । **इति छेदादिः ।।**	नित्यं ६५	नित्यम् अर्हति इस अर्थ में छेद आदि शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद्, अर्हति, नित्यम्	**६५. शीर्षच्छेदाद्यच्च १७३० ।**	यत् ७०	नित्यम् अर्हति इस अर्थ में शीर्षच्छेद से यत् तथा यथाविहित प्रत्यय होते हैं

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद्, अर्हति, यत्

६६. दण्डादिभ्यो यत् १७३१ ।

अर्हति अर्थ में दण्ड आदि शब्दों से यत् होता है।

(१५२) दण्ड मुसल मधुपर्क कशा अर्घ मेघ मेधा सुवर्ण उदक वध युग गुहा भाग इभ भङ्ग ॥
इति दण्डादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद्, अर्हति, यत्

६७. छन्दसि च ३४९२ ।

तदर्हति अर्थ में शब्दमात्र से वेद में यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद्, अर्हति, यत्

६८. पात्राद्घंश्च १७३२ ।

पात्र से तदर्हति अर्थ में घन् और यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद्, अर्हति, यत्

६९. कडङ्करदक्षिणाच्छ च १७३३ ।

तदर्हति अर्थ में कडङ्कर और दक्षिणा से छ और यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद्, अर्हति, यत्

७०. स्थालीबिलात् १७३४ ।

स्थालीबिल से तदर्हति अर्थ में छ यत् होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ठक्, तद्, अर्हति

७१. यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ १७३५ ।
**** यज्ञर्त्विग्भ्यां तत्कर्मार्हतीत्युपसंख्यानम् ।***

यज्ञ और ऋत्विक् शब्द से तदर्हति अर्थ में क्रमशः घ और खञ् होते हैं।

ठञधिकारः

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, तद्

७२. पारायणतुरायणचान्द्रायणं वर्तयति १७३६

वर्तयति अर्थ में पारायण तुरायण चान्द्रायण से ठञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, तद्

७३. संशयमापन्नः १७३७ ।

आपन्न अर्थ में संशय से ठञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, तद्

७४. योजनं गच्छति १७३८ । गच्छति ७७
**** क्रोशशतयोजनशतयोरुपसंख्यानम् ।***
**** ततोऽभिगमनमर्हतीति च वक्तव्यम् ।***

गच्छति अर्थ में योजन से ठञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, तद्, ग-ति

७५. पथः ष्कन् १७३९ । पथः ७६

गच्छति अर्थ में पथिन् से ष्कन् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, पथः, तद्, ग-ति

७६. पन्थो ण नित्यम् १७४० ।

नित्यं गच्छति अर्थ में पथिन् से ण प्रत्यय तथा पथिन् को पन्थ आदेश होता है।

ङ्यात्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, ग-ति	**७७. उत्तरपथेनाहृतं च १७४१ ।** ** आहृतप्रकरणे वारिजङ्गलस्थलकान्तारपूर्वादुपसंख्यानम् ।* ** अजपथशङ्कुपथाभ्यां च ।* ** मधुकमरीचयोरण्स्थलात् ।*		तेन आहृतम् इस अर्थ में उत्तरपथ से ठञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्	**७८. कालात् १७४२ ।**	का-त् ९७	यहाँ से आगे प्रातिपदिक के साथ कालात् जुड़ा रहेगा ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्	**७९. तेन निर्वृत्तम् १७४३ ।**		तेन निर्वृत्तम् अर्थ में कालवाची शब्द से ठञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्	**८०. तमधीष्टो भृतो भूतो भावी १७४४ ।** ॥ ४ ॥		तम् अधीष्टः भृतः भूतः भावी अर्थों में कालवाचक शब्द से यथाविहित प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्	**८१. मासाद्वयसि यत्खञौ १७४५ ।**	मा-त् ८२ वयसि ८३	वयसि अर्थ में मास से यत् और खञ् होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्, मा-त्, व-सि	**८२. द्विगोर्यप् १७४६ ।**	यप् ८३	मासान्त द्विगु से वयसि अर्थ में यप् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्, यप्, व-सि	**८३. षण्मासाण्ण्यच्च १७४७ ।**	ष-यत् ८४	वयसि अर्थ में षण्मास से ण्यत् और यत् होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्, ष-यत्	**८४. अवयसि ठंश्च १७४८ ।**		अवयसि अर्थ में षण्मास से ठन् और ण्यत् होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्	**८५. समायाः खः १७४९ ।**	स-याः ८६ खः ८८	तमधीष्टे आदि चारों अर्थों में समा से ख होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्, स-याः, खः	**८६. द्विगोर्वा १७५० ।**	द्विगोः ८९ वा ८८	समा शब्दान्त द्विगु से निर्वृत्त आदि अर्थों में ख होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्, द्विगोः, खः, वा	**८७. रात्र्यहःसंवत्सराच्च १७५१ ।**		रात्रि अहः संवत्सरान्त द्विगु से निर्वृत्तादि अर्थ में विकल्प से ख होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्, द्विगोः, खः, वा	**८८. वर्षाल्लुक्च १७५३ ।**	व-त् ८९	वर्षान्त द्विगु से निर्वृत्तादि अर्थों में विकल्प से ख होता है । पक्ष में ठञ् होता है और लुक् भी होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्, द्विगोः, व-त् **८९. चित्तवति नित्यम् १७५५ ।** प्रत्ययार्थ यदि चेतन हो तो वर्ष-शब्दान्त द्विगु से निर्वृत्त आदि अर्थों में नित्य लुक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त् **९०. षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते १७५६ ।** षष्ठिरात्रेण पच्यन्ते इस अर्थ में षष्ठिक निपातित होता है

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त् **९१. वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि ३४९३ ।** व-सि ९२ वत्सरान्त शब्द से वेद में छ होता है निर्वृत्तादि अर्थ में ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्, व-सि **९२. संपरिपूर्वात्ख च ३४९४ ।** सम् परि पूर्वक वत्सरान्त शब्द से निर्वृत्तादि अर्थों में ख और छ वेद में होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त् **९३. तेन परिजय्यलभ्यकार्यसुकरम् १७५७ ।** परिजय्य लभ्य कार्य सुकर अर्थों में कालवाची शब्द से ठञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त् **९४. तदस्य ब्रह्मचर्यम् १७५८ ।** अस्य ब्रह्मचर्यम् अर्थ में कालवाची शब्द से ठञ् होता है ।

**** महानाम्न्यादिभ्यः षष्ठ्यन्तेभ्य उपसंख्यानम् ।***

(१५३) (वा० ग०) । महानाम्नी आदित्यव्रत गोदान ॥ **इति महानाम्न्यादिः ।।**

**** अवान्तरदीक्षादिभ्यो डेर्निर्वक्तव्यः ।***

(१५४) (वा० ग०) । अवान्तरदीक्षा तिलव्रत देवव्रत ॥ **इत्यवान्तरदीक्षादिः ।।**

**** चतुर्मासाण्ण्यो यज्ञे ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त् **९५. तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः १७५९ ।** तस्य दक्षिणा अर्थ में यज्ञवाची शब्दों से ठञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त् **९६. तत्र च दीयते कार्यं भववत् १७६० ।** तत्र ९७ दी-म् ९८ तत्र दीयते कार्यम् अर्थ में कालवाची शब्दों से 'तत्र भवः' के समान प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, का-त्, तत्र दी-म् **९७. व्युष्टादिभ्योऽण् १७६१ ।** व्युष्ट आदि शब्दों से तत्र दीयते कार्यम् अर्थ में अण् होता है ।

(१५५) व्युष्ट नित्य निष्क्रमण प्रवेशन [उप-संक्रमण] तीर्थ [अस्तरण] संग्राम संघात ॥ **इति व्युष्टादिः ।।**

**** अग्निपदादिभ्य उपसंख्यानम् ।***

(१५६) (वा० ग०) । अग्निपद पीलुमूल (पीलू मूल) प्रवास उपवास ।। **इत्यग्निपदादिः ।। आकृतिगणः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, दी-म्	**९८. तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ १७६२**		यथाकथाच हस्त शब्दों से तेन दीयते कार्यम् अर्थ में ण और यत् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्	**९९. संपादिनि १७६३ ।**	सं-नि १००	तेन संपादिनि अर्थ में शब्दों से ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, सं-नि	**१००. कर्मवेषाद्यत् १७६४** ।। ५ ।।		कर्मन् और वेष शब्दों से तेन संपादिनि अर्थ में यत् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्	**१०१. तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः १७६५**	त-ति १०३	संताप आदि शब्दों से तस्मै प्रभवति अर्थ में ठञ् होता है।
	(१५७) संताप संनाह संग्राम संयोग संपराय [संवेशन] संपेष निष्पेष [सर्ग] निसर्ग विसर्ग उपसर्ग प्रवास उपवास संघात संवेष संवास संमोदन [सक्तु] 'मांसौदनाद्विगृहीतादपि' १०० । **इति संतापादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-ति	**१०२. योगाद्यच्च १७६६ ।**		तस्मै प्रभवति अर्थ में योग से यत् और ठञ् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-ति	**१०३. कर्मण उकञ् १७६७ ।**		कर्मन् शब्द से तस्मै प्रभवति अर्थ में उकञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्	**१०४. समयस्तदस्य प्राप्तम् १७६८ ।**	त-य ११४ प-म् १०७	तत् अस्य प्राप्तम् अर्थ में समय से ठञ् होता है।
ङ्या-त् तद्धिताः स-वा ठञ् त-य प-म्	**१०५. ऋतोरण् १७६९ ।** * *उपवस्त्रादिभ्य उपसंख्यानम् ।*	ऋतोः १०६	ऋतु शब्द से तत् अस्य प्राप्तम् अर्थ में अण् होता है।
	(१५८) (**वा० ग०**) । उपवस्तृ प्राशितृ ।। **इत्युपवस्त्रादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-य, प-म्, ऋतोः	**१०६. छन्दसि घस् ३४९५ ।**		तदस्य प्राप्तम् अर्थ में ऋतु शब्द से वेद में घस् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-य, प-म्	**१०७. कालाद्यत् १७७० ।**	कालात् १०८	काल शब्द से तदस्य प्राप्तम् अर्थ में यत् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-य, कालात्	**१०८. प्रकृष्टे ठञ् १७७१ ।**		तदस्य अर्थ में प्रकृष्ट काल से ठञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-य	**१०९. प्रयोजनम् १७७२ ।**	प्र-म ११४	तदस्य प्रयोजनम् अर्थ में ठञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-य, प्र-म् — **११०. विशाखाषाढादण्मन्थदण्डयोः १७७३**
**** चूडादिभ्य उपसंख्यानम् ।***

(१५९) चूडा श्रद्धा ॥ **इति चूडादिः ।।**

विशाखा आषाढ से तदस्य प्रयोजनम् अर्थ में यदि अभिधेय क्रमशः मन्थ और दण्ड हो तो अण् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-य, प्र-म् — **१११. अनुप्रवचनादिभ्यश्छः १७७४ ।** छः ११२

(१६०) अनुप्रवचन उत्थापन उपस्थापन संवेशन प्रवेशन अनुप्रवेशन अनुवासन अनुवचन अनुवाचन अन्वारोहण प्रारम्भण आरम्भण आरोहण ॥ **इत्यनुप्रवचनादिः ।।**
**** (स्वर्गादिभ्यो यद्वक्तव्यः ।)***
(१६१) (**वा० ग०**) । स्वर्ग यशस् आयुस् काम धन ॥ **इति स्वर्गादिः ।।**
**** पुण्याहवाचनादिभ्यो लुब्वक्तव्यः ।***
(१६२) (**वा० ग०**) । 'पुण्याहवाचन स्वस्तिवाचन शान्तिवाचन ॥ **इति पुण्याहवाचनादिः ।।**

तदस्य प्रयोजनम् अर्थ में अनुप्रवचन आदि से छ प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-य, प्र-म्, छः — **११२. समापनात्सपूर्वपदात् १७७५ ।**

सपूर्वपद समापन शब्द से तदस्य प्रयोजनम् अर्थ में छ प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-य, प्र-म् — **११३. ऐकागारिकट् चौरे १७७६ ।**

चौर के लिये ऐकागारिकट् निपातित होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, ठञ्, त-य, प्र-म् — **११४. आकालिकडाद्यन्तवचने १७७७ ।**
**** आकालाट्ठंश्च ।***

समानकालौ आद्यन्तौ अस्य अर्थ में आकालिकट् निपातित होता है।

नञ्स्नञधिकारः

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा — **११५. तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः १७७८ ।** वतिः ११८

तेन तुल्यम् अर्थ में यदि क्रिया तुल्य हो तो वत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, वतिः — **११६. तत्र तस्येव १७७९ ।**

तत्र तस्य इव अर्थ में वत् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, वतिः — **११७. तदर्हम् १७८० ।**

तत् अर्हति अर्थ में वत् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११८. उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे ३४९६ ।**
स-वा, वतिः

वेद में उपसर्ग से धात्वर्थसाधन में वर्तमान शब्द से वत् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **११९. तस्य भावस्त्वतलौ १७८१ ।** तस्य-लौ १३६
स-वा

तस्य भावः इस अर्थ में प्रातिपदिक से त्व, तल् होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२०. आ च त्वात् १७८२ ।** ।। ६ ।।
स-वा, त-लौ

ब्रह्मणस्त्वः (५.१.१३६) सूत्र तक त्व तल् का अधिकार है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२१. न नञ्पूर्वात्तत्पुरुषादचतुरसंगतलवणवटयुधकतरसलसेभ्यः १७८३ ।**
स-वा, त-लौ

चतुर संगत लवण वट युध कत रस लस शब्दों को छोड़कर यहाँ से त्व तल् से अतिरिक्त जो भाव और कर्म में प्रत्यय होंगे वे नञ्पूर्व तत्पुरुष से नहीं होंगे ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२२. पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा १७८४ ।** इमनिच् १२४
स-वा, त-लौ

तस्य भावः अर्थ में पृथु आदि शब्दों से विकल्प से इमनिच् होता है ।

(१६३) पृथु मृदु महत् पटु तनु लघु बहु साधु आशु उरु गुरु बहुल खण्ड दण्ड चण्ड अकिञ्चन बाल होड पाक वत्स मन्द स्वादु ह्रस्व दीर्घ प्रिय वृष ऋजु क्षिप्र क्षुद्र अणु ।। **इति पृथ्वादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२३. वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च १७८७ ।** ष्यञ् १२४
स-वा, त-लौ, इम-च्

वर्णविशेषवाची तथा दृढ आदि शब्दों से तस्य भावःअर्थ में ष्यञ् तथा विकल्प से इमनिच् होता है ।

(१६४) दृढ वृढ परिवृढ भृश कृश [वक्र] शुक्र चुक्र आम्र [कृष्ट] लवण ताम्र शीत उष्ण जड बधिर पण्डित मधुर मूर्ख मूक । 'वेर्यातलातमतिर्मनःशारदानाम्' १०१ । 'समा मतिमनसोः' १०२ । जवन ।। **इति दृढादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१२४. गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च १७८८ ।** क-णि १३६
स-वा, ष्यञ्, त-लौ, इम-च्

तस्य भावे, तस्य कर्मणि अर्थ में गुणवचन एवं ब्राह्मण आदि शब्दों से ष्यञ् होता है ।

(१६५) ब्राह्मण बाडव माणव । ('अर्हतो नुम्च') १०३ । चोर धूर्त आराधय विराधय अपराधय उपराधय एकभाव द्विभाव त्रिभाव अन्यभाव अक्षेत्रज्ञ संवादिन् संवेशिवन् संभाषिन् बहुभाषिन् शीर्षघातिन् विघातिन् समस्थ विषमस्थ परमस्थ मध्यमस्थ अनीश्वर

कुशल चपल निपुण पिशुन कुतूहल क्षेत्रज्ञ निश्न बालिश अलस दुःपुरुष कापुरुष राजन् गणपति अधिपति गडुल दायाद विशस्ति विषम विपात निपात। 'सर्ववेदादिभ्यः स्वार्थे' १०४। 'चतुर्वेदस्योभयपदवृद्धिश्च' १०५। शौटीर॥ **आकृतिगणोऽयम्। इति ब्राह्मणादिः॥**

** चतुर्वर्णादीनां स्वार्थ उपसंख्यानम्।*

(१६६) (वा० ग०)। चतुर्वर्ण चतुर्वेद चतुराश्रम सर्वविद्य त्रिलोक त्रिखर षड्गुण सेना अनन्तर संनिधि समीप उपमा सुख तदर्थ इतिह मणिक॥ **इति चतुर्वर्णादिः॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-लौ, क-णि **१२५. स्तेनाद्यन्नलोपश्च १७९०।**

तस्य भावे कर्मणि अर्थ में स्तेन से यत् प्रत्यय तथा न का लोप होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा त-लौ क-णि **१२६. सख्युर्यः १७९१।**

** दूतवणिग्भ्यां च।*

भावकर्म में सखि शब्द से य होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा त-लौ क-णि **१२७. कपिज्ञात्योर्ढक् १७९२।**

कपि और ज्ञाति से भावकर्म अर्थ में ढक् होता है

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा त-लौ क-णि **१२८. पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् १७९३।**

भावकर्म में पत्यन्त तथा पुरोहित आदि शब्दों से यक् प्रत्यय होता है।

(१६७) पुरोहित। 'राजाऽसे' १०६। ग्रामिक पिण्डिक सुहित बालमन्द (बाल मन्द) खण्डिक दण्डिक वर्मिक कर्मिक धर्मिक शितिक (सूतिक मूलिक तिलक) अञ्जलिक (अन्तलिक) [रूपिक ऋषिक] पुत्रिक अविक छत्रिक पर्षिक पथिक चर्मिक (प्रतिक) सारथि आस्तिक सूचिक संरक्षसूचक (संरक्ष सूचक) नास्तिक [अजानिक शाक्वर नागर चूडिक]॥ **इति पुरोहितादिः॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा त-लौ क-णि **१२९. प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ् १७९४।**

प्राणभृज्जातिवाची वयोवचन तथा उद्गातृ आदि शब्दों से भाव कर्म अर्थ में अञ् होता है।

(१६८) उद्गातृ उन्नेतृ प्रतिहर्तृ प्रशास्तृ होतृ पोतृ हर्तृ रथगणक पत्तिगणक सुष्ठु दुष्ठु अध्वर्यु वधू। 'सुभग मन्त्रे' १०७। **इत्युद्गात्रादिः॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा त-लौ क-णि **१३०. हायनान्तयुवादिभ्योऽण् १७९५ ।** अण् १३१ हायनान्त एवं युवन् आदि शब्दों से भाव कर्म में अण् होता है।

(१६९) युवन् स्थविर होतृ यजमान। 'पुरुषासे' १०८। भ्रातृ कुतुक श्रमण (श्रणम) कटुक कमण्डलु कुस्त्री सुस्त्री दुःस्त्री सुहृदय दुर्हृदय सुहृद् दुर्हृद् सुभ्रातृ दुर्भ्रातृ वृषल परिव्राजक सब्रह्मचारिन् अनृशंस। 'हृदयासे' १०९। कुशल चपल निपुण पिशुन कुतूहल क्षेत्रज्ञ। ('श्रोत्रियस्य यलोपश्च') ११०॥ **इति युवादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-लौ, क-णि, अण् **१३१. इगन्ताच्च लघुपूर्वात् १७९६ ।** लघुपूर्व इगन्त प्रातिपदिक से भावकर्म में अण् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा त-लौ क-णि **१३२. योपधाद्गुरूपोत्तमाद्वुञ् १७९७ ।** वुञ् १३४ योपध गुरूपोत्तम प्रातिपदिक से वुञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-लौ, क-णि, वुञ् **१३३. द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च १७९८ ।** द्वन्द्व संज्ञक एवं मनोज्ञ आदि शब्दों से भाव कर्म में वुञ् प्रत्यय होता है।

(१७०) मनोज्ञ प्रियरूप अभिरूप कल्याण मेधाविन् आढ्य कुलपुत्र छान्दस छात्र श्रोत्रिय चोर धूर्त विश्वदेव युवन् कुपुत्र ग्रामपुत्र ग्रामकुलाल ग्रामड (ग्रामषण्ड) ग्रामकुमार सुकुमार बहुल (अवश्यपुत्र) अमुष्यपुत्र अमुष्यकुल सारपुत्र शतपुत्र ॥ **इति मनोज्ञादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-लौ, कर्म-णि, वुञ् **१३४. गोत्रचरणाच्छलाघात्याकारतदवेतेषु १७९९ ।** श्लाघा अत्याकार तदवेत के विषय में गोत्र वाचक चरणवाचक शब्दों से भावकर्म में वुञ् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-लौ, कर्म-णि **१३५. होत्राभ्यश्छः १८०० ।** ऋत्विक् विशेषवाचक से भाव कर्म में छ होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-लौ, कर्म-णि **१३६. ब्रह्मणस्त्वः १८०१ ।** भावकर्म में होतावाची ब्रह्मन् शब्द से त्व होता है।

प्राक्क्रीताच्छताच्च सर्वभूमिसप्तनोऽन्मासा-
त्तस्मै प्रभवति न नञ्पूर्वात्षोडश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य प्रथमः पादः।

द्वितीयः पादः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**१. धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् १८०२ ।**	भव-त्रे ४	क्षेत्रवाची भवन अर्थ में तस्य भवने इस विग्रह में धान्यवाची शब्दों से खञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, भ-त्रे	**२. व्रीहिशाल्योर्ढक् १८०३ ।**		तस्य भवने अर्थ में व्रीहिशालि से ढक् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, भ-त्रे	**३. यवयवकषष्टिकाद्यत् १८०४ ।**	यत् ४	तस्य भवने अर्थ में यव यवक षष्टिक से यत् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, भ-त्रे, यत्	**४. विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः १८०५**		तस्य भवने अर्थ में तिल माष उमा भङ्ग अणु से यत् विकल्प से होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**५. सर्वचर्मणः कृतः खखञौ १८०६ ।**		तेन कृतः अर्थ में सर्वचर्म से ख खञ् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**६. यथामुखसंमुखस्य दर्शनः खः १८०७ ।**	खः १५	तस्य दर्शनः अर्थ में यथामुख संमुख से ख होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, खः	**७. तत्सर्वादेः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति १८०८ ।**	तद् १७	सर्वपूर्व पथिन् अङ्ग कर्मन् पत्र पात्र अन्त वाले शब्दों से तद् व्याप्नोति अर्थ में ख प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, खः, तद्	**८. आप्रपदं प्राप्नोति १८०९ ।**		आप्रपद से प्राप्नोति अर्थ में ख होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, खः, तद्	**९. अनुपदसर्वान्नायानयं बद्धाभक्षयतिनेयेषु १८१० ।**		अनुपद सर्वान्न अयानय शब्दों से क्रमशः बद्धा भक्षयति नेय अर्थों में ख होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, खः, तद्	**१०. परोवरपरम्परपुत्रपौत्रमनुभवति १८११ ।**		तम् अनुभवति इस अर्थ में परोवर परम्पर पुत्रपौत्र शब्द से ख होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, खः, तद्	**११. अवारपारात्यन्तानुकामं गामी १८१२ ।**		तद् गामी इस अर्थ में अवारपार अत्यन्त अनुकाम शब्दों से ख होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, खः, तद्	**१२. समांसमां विजायते १८१३ ।** **** खप्रत्ययानुत्पत्तौ यलोपो वा वक्तव्यः ।***	वि-ते १३	समांसमां विजायते इस अर्थ में समांसमा से ख होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, खः, तद्, वि-ते	**१३. अद्यश्वीनाऽवष्टब्धे १८१४ ।**		अवष्टब्ध अर्थ में अद्यश्वीन का निपातन होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४. आगवीनः १८१५ ।**
स-वा, खः, तद्
आगवीन शब्द निपातन से गोभृत्य के लिये प्रयुक्त होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५. अनुग्वलं गामी १८१६ ।** अलं-मी १७
स-वा, खः, तद्
अनुगु शब्द से अलं गामी अर्थ में ख होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१६. अध्वनो यत्खौ १८१७ ।** यत्खौ १७
स-वा तद्, अलं-मी
अलंगामी अर्थ में अध्वन् से यत् और ख् होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१७. अभ्यमित्राच्छ च १८१८ ।**
स-वा, यत्खौ, तद्, अलं-मी
अभ्यमित्र से अलंगामी अर्थ में छ और यत् होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१८. गोष्ठात्खञ्भूतपूर्वे १८१९ ।** खञ् २३
स-वा
भूतपूर्व गोष्ठ शब्द से स्वार्थ में खञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१९. अश्वस्यैकाहगमः १८२० ।**
स-वा, खञ्
एकाहगम अर्थ में षष्ठीसमर्थ अश्व से खञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२०. शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः १८२१**
स-वा, खञ् ।। १ ।।
अधृष्ट और अकार्य अर्थ में क्रमशः शालीन और कौपीन निपातित होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२१. व्रातेन जीवति १८२२ ।**
स-वा, खञ्
तेन जीवति अर्थ में व्रात से खञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२२. साप्तपदीनं सख्यम् १८२३ ।**
स-वा, खञ्
यदि सख्य वाच्य हो तो साप्तपदीन निपातित होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२३. हैयङ्गवीनं संज्ञायाम् १८२४ ।**
स-वा, खञ्
संज्ञा में हैयङ्गवीन निपातित होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२४. तस्य पाकमूले पील्वादिकर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ १८२५ ।** त-मूल २५
स-वा
तस्य पाकः अर्थ में पीलु आदि शब्दों से तथा तस्य मूलम् अर्थ में कर्ण आदि शब्दों से क्रमशः कुणप् तथा जाहच् प्रत्यय होते हैं ।

(१७१) पीलु कर्कन्धू (कर्कन्धु) शमी करीर बल (कुवल) बदर अश्वत्थ खदिर ।। **इति पील्वादिः ।।**

(१७२) कर्ण अक्षि नख मुख केश पाद गुल्फ भ्रू शृङ्ग दन्त ओष्ठ पृष्ठ ।। **इति कर्णादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२५. पक्षात्तिः १८२६ ।**
स-वा, त-मूल
तस्य मूलम् अर्थ में पक्ष से ति प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२६. तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ १८२७ ।**
स-वा
तेन वित्तः इस अर्थ में चुञ्चुप् तथा चणप् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा
२७. विनञ्भ्यां नानाञौ नसह १८२८ ।
न सह अर्थ में प्रयुक्त वि और नञ् से ना और नाञ् प्रत्यय होते हैं स्वार्थ में।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा
२८. वेः शालच्छङ्कटचौ १८२९ । वेः २९
स्वार्थ में वि से शालच् शङ्कटच् होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, वेः
२९. संप्रोदश्च कटच् १८३० । कटच् ३०
** अलाबूतिलोमाभङ्गाभ्यो रजस्युपसंख्यानम् ।*
** गोष्ठजादयः स्थानादिषु पशुनामभ्यः ।*
** संघाते कटच् ।*
** विस्तारे पटच् ।*
** द्वित्वे गोयुगच् ।*
** षट्त्वे षड्गवच् ।*
** स्नेहे तैलच् ।*
** भवने क्षेत्रे शाकटशाकिनौ ।*
सम् प्र उद् तथा वि से कटच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, कटच्
३०. अवात्कुटारच्च १८३१ । अवात् ३१
अव से कुटारच् तथा कटच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, अवात्
३१. नते नासिकायाः संज्ञायां टीटञ्नाटज्भ्रटचः १८३२ । न-याः ३३ सं-यां ३४
नासिकाया नते इस अर्थ में अव से टीटच् नाटच् और भ्रटच् प्रत्यय होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा सं-यां, न-याः
३२. नेर्बिडज्बिरीसचौ १८३३ । नेः ३३
नि से नासिकाया नते अर्थ में बिडच् और बिरीसच् प्रत्यय होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, सं-यां, न-याः, नेः
३३. इनच्पिटच्चिकचि च १८३४ ।
** कप्रत्ययचिकादेशौ च वक्तव्यौ ।*
** क्लिन्नस्य चिल् पिल् लश्चास्य चक्षुषी ।*
** चुल् च ।*
नासिकाया नते अर्थ में नि से इनच् पिटच् होते हैं तथा नि को चिक चि आदेश भी होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, सं-यां
३४. उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः १८३५
उप अधि से क्रमशः आसन्न और आरूढ अर्थ में स्वार्थ में त्यकन् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा
३५. कर्मणि घटोऽठच् १८३६ ।
कर्मणि घटते इस अर्थ में अठच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा
३६. तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच् १८३७ तदस्य ३८
तदस्य संजातम् इस अर्थ में तारका आदि शब्दों से इतच् होता है।

(१७३) तारका पुष्प कर्णक मञ्जरी ऋजीष [क्षण सूच] मूत्र निष्क्रमण पुरीष उच्चार प्रचार (विचार) कुड्मल कण्टक मुसल (मुकुल) कुसुम कुतूहल

स्तबक (स्तवक) किसलय पल्लव (खण्ड)
वेग निद्रा मुद्रा बुभुक्षा (धेनुष्या) पिपासा श्रद्धा
अभ्र पुलक अङ्गारक वर्णक द्रोह दोह सुख दुःख
उत्कण्ठा भर व्याधि वर्मन् व्रण गौरव शास्त्र तरङ्ग
तिलक चन्द्रक अन्धकार गर्व कुमुर (मुकुर) हर्ष
उत्कर्ष (रण) कुवलय गर्ध क्षुध सीमन्त ज्वर गर
रोग रोमाञ्च पण्डा कज्जल तृष् कोरक कल्लोल
स्थपुट फल कञ्चुक शृङ्गार अङ्कुर शैवल वकुल
श्वभ्र आराल कलङ्क कर्दम (कन्दल) मूर्च्छा अङ्गार
हस्तक प्रतिबिम्ब विघ्न तन्त्र प्रत्यय दीक्षा गर्ज ।
'गर्भादप्राणिनि' १११ ।। **इति तारकादिः ।।**
आकृतिगणः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, तदस्य — **३७. प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः १८३८ ।** प्र-चः ३८
**** प्रमाणे लः ।***
**** द्विगोर्नित्यम् ।***
**** प्रमाणपरिमाणाभ्यां संख्यायाश्चापि संशये मात्रच् ।***
**** वत्वन्तात्स्वार्थे द्वयसज्मात्रचौ बहुलम् ।***

अस्य प्रमाणम् इस अर्थ में द्वयसच् दघ्नच् तथा मात्रच् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, प्र-च, तदस्य — **३८. पुरुषहस्तिभ्यामण्च १८३९ ।**

तदस्य प्रमाणम् इस अर्थ में पुरुष और हस्तिन् से अण् द्वयसच् दघ्नच् मात्रच् होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा — **३९. यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् १८४० ।** वतुप् ४१
**** युष्मदस्मदोः सादृश्ये वतुब्वाच्यः ।***

परिमाणोपाधिक यत् तत् एतत् से वतुप् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, वतुप् — **४०. किमिदंभ्यां वो घः १८४१ ।। २ ।।** वोघः ४१

किम् इदम् से वतुप् तथा व को घ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, वतुप्, वोघः — **४१. किमः संख्यापरिमाणे डति च १८४२ ।**

संख्यापरिच्छेद में वर्तमान किम् से अस्य अर्थ में डति तथा वतुप् होता है । व को घ भी होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा — **४२. संख्याया अवयवे तयप् १८४३ ।**

अवयव में वर्तमान संख्या से अस्य इस अर्थ में तयप् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा — **४३. द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा १८४४ ।** त-ज् ४४

द्वि त्रि से होने वाले तयप् को विकल्प से अयच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-ज् — **४४. उभादुदात्तो नित्यम् १८४५ ।**

उभ से होने वाले तयप् को नित्य अयच् होता है और वह उदात्त होता है ।

मत्वर्थीय प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**४५. तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः १८४६**	तद-कं ४६ ड: ४६	तदस्मिन् अधिकम् इस अर्थ में दशान्त शब्दों से ड होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, तद-कं, डः	**४६. शदन्तविंशतेश्च १८४७ ।**		शदन्त शब्द तथा विंशति से ड प्रत्यय होता है इसी अर्थ में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**४७. संख्याया गुणस्य निमाने मयट् १८४८**		गुण के निमान में प्रयुक्त संख्या शब्द से अस्य अर्थ में मयट् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**४८. तस्य पूरणे डट् १८४९ ।**	डट् ५३ त-णे ५८	तस्य पूरणे अर्थ में संख्या शब्द से डट् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे, डट्	**४९. नान्तादसंख्यादेर्मट् १८५० ।**	ना-त् ५०	नान्त संख्यावाची शब्दों से हुये डट् को मट् हो जाता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे, डट्, ना-त्	**५०. थट् च च्छन्दसि ३४९७ ।**		वेद में असंख्यादि संख्यावाची नान्त शब्दों से थट् तथा मट् होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे, डट्	**५१. षट्कतिकतिपयचतुरां थुक् १८५१ ।** * ***चतुरश्छयतावाद्यक्षरलोपश्च ।***		षट् कति कतिपय चतुर् से डट् के यहाँ थुक् का आगम होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे, डट्	**५२. बहुपूगगणसङ्घस्य तिथुक् १८५२ ।**		बहु पूग गण सङ्घ से डट् के यहाँ तिथुक् आगम होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे, डट्	**५३. वतोरिथुक् १८५३ ।**		वतु को डट् के यहाँ इथुक् आगम होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे	**५४. द्वेस्तीयः १८५४ ।**	तीयः ५५	तस्य पूरणे अर्थ में द्वि से तीय प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे, तीयः	**५५. त्रेः संप्रसारणं च १८५५ ।**		त्रि से तस्य पूरणे अर्थ में तीय होता है और त्रि को सम्प्रसारण भी होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे	**५६. विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् १८५६**	तमट् ५८	विंशति आदि से परे डट् को विकल्प से तमट् आगम होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे, तमट्	**५७. नित्यं शतादिमासार्धमाससंवत्सराच्च १८५७ ।**		शतादि शब्द तथा मास अर्द्धमास संवत्सर शब्दों से पूरणे अर्थ में नित्य मट् का आगम होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-णे, तमट्	**५८. षष्ट्यादेश्चासंख्यादेः १८५८ ।**		असंख्यादि षष्टि आदि संख्या शब्दों से नित्य मट् का आगम होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**५९. मतौ छः सूक्तसाम्नोः १८५९ ।**	म-छः ६२	सूक्त और साम अभिधेय होने पर मत्वर्थ में छ प्रत्यय होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, म-छः, अ-योः **६०. अध्यायानुवाकयोर्लुक् १८६० ।।३।।** अ-योः ६२ — अध्यायानुवाक अभिधेय हो तो मत्वर्थ छ का लुक् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, म-छः, अ-योः **६१. विमुक्तादिभ्योऽण् १८६१ ।** — अध्यायानुवाक अभिधेय हो तो मत्वर्थ में विमुक्त आदि शब्दों से अण् होता है।

(१७४) विमुक्त देवासुर रक्षोसुर उपसद सुवर्ण परिसारक (सदसत्) वसु मरुत् पत्नीवत् वसुमत् महीयत्व सत्त्वत् बर्हवत् दशार्ण दशार्ह वयस् हविर्धान पतित्रिन् महित्री अस्यहत्य सोमापुषन् (सोमापूषन्) इडा अग्नाविष्णू उर्वशी वृत्रहन् ।। **इति विमुक्तादिः ।।**

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, म-छः, अ-योः **६२. गोषदादिभ्यो वुन् १८६२ ।** वुन् ६३ — अध्यायानुवाक् अभिधेय हो तो मत्वर्थ में गोषद आदि शब्दों से वुन् होता है।

(१७५) गोषद (गोषद्) इषेत्वा मातरिश्वन् देवस्य देवीरापः कृष्णोऽस्याखरेष्ठः देवीधिया (दैवीधिय) रक्षोहण युञ्जान अञ्जन प्रभूत प्रतूत कृशानु (कृशाकु) ।। **इति गोषदादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, वुन् **६३. तत्र कुशलः पथः १८६३ ।** तत्र ६७, कुशलः ६४ — तत्र कुशलः अर्थ में पथिन् शब्द से वुन् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, तत्र कुशलः **६४. आकर्षादिभ्यः कन् १८६४ ।** कन् ८२ — आकर्ष आदि से तत्र कुशलः अर्थ में कन् होता है।

(१७६) आकर्ष त्सरु पिशाच पिचण्ड अशनि अश्मन् निचय चय (विजय) जय आचय नय पाद दीप ह्रद ह्राद (गद्गद) शकुनि ।। **इत्याकर्षादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, तत्र, कन् **६५. धनहिरण्यात्कामे १८६५ ।** — तत्र कामः अर्थ में धन हिरण्य से कन् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, तत्र, कन् **६६. स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते १८६६ ।** प्रसिते ६७ — तत्र प्रसितः अर्थ में स्वाङ्गवाची शब्दों से कन् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, तत्र, कन्, प्रसिते **६७. उदराट्ठगाद्यूने १८६७ ।** — आद्यून रहने पर उदर से तत्र प्रसितः अर्थ में ठक् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, कन् **६८. सस्येन परिजातः १८६८ ।** — तेन परिजातः अर्थ में सस्य से कन् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, कन् **६९. अंशं हारी १८६९ ।** — तं हारी अर्थ में अंश से कन् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७०. तन्त्रादचिरापहृते १८७० ।**
स-वा, कन्
तस्मात् अचिरापहृतः अर्थ में तन्त्र से कन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७१. ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम् १८७१ ।**
स-वा, कन्
संज्ञा में ब्राह्मणक उष्णिक निपातित होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७२. शीतोष्णाभ्यां कारिणि १८७२ ।**
स-वा, कन्
तं कारी अर्थ में शीत उष्ण से कन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७३. अधिकम् १८७३ ।**
स-वा, कन्
कर्ता या कर्म में अधिक निपातित होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७४. अनुकाभिकाभीकः कमिता १८७४ ।**
स-वा, कन्
कमिता अर्थ में अनुक अभिक अभीक निपातित होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७५. पार्श्वेनान्विच्छति १८७५ ।** अन्व-ति ७६
स-वा, कन्
तेन अन्विच्छति अर्थ में पार्श्व से कन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७६. अयःशूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ १८७६**
स-वा, कन्, अ-ति
तेन अन्विच्छति अर्थ में अयःशूल दण्डाजिन से ठक् और ठञ् होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७७. तावतिथं ग्रहणमिति लुग्वा १८७७ ।**
स-वा, कन् **** तावतिथेन गृह्णातीति कन्वक्तव्यो नित्यं च लुक् ।***
ग्रहणोपाधिक तृतीयान्त पूरणप्रत्ययान्त से स्वार्थ में कन् तथा पूरण का विकल्प से लुक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७८. स एषां ग्रामणीः १८७८ ।**
स-वा, कन्
एषां ग्रामणीः अर्थ में प्रातिपदिक से कन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७९. शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे १८७९ ।**
स-वा, कन्
अस्य करभस्य बन्धनं अर्थ में शृङ्खल से कन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८०. उत्क उन्मनाः १८८० ।** ।।४।।
स-वा, कन्
उन्मनाः के लिये उत्क निपातित होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८१. कालप्रयोजनाद्रोगे १८८१ ।**
स-वा, कन्
रोग वाच्य होने पर काल और प्रयोजन से कन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८२. तदस्मिन्नन्नं प्रायेण संज्ञायाम् १८८२ ।** त-याम् ८३
स-वा, कन् **** वटकेभ्य इनिर्वाच्यः ।***
संज्ञा में अस्मिन् अर्थ में प्रायः अन्न से कन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८३. कुल्माषादञ् १८८३ ।**
स-वा, कन्, त-याम्
तदस्मिन् प्रायेण संज्ञायाम् में कुल्माष से अञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८४. श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते १८८४ ।**
स-वा
छन्दोऽधीते इस अर्थ में श्रोत्रिय निपातित होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८५. श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ १८८५ ।** अनेन ८८
स-वा
अनेन भुक्तम् इस अर्थ में श्राद्ध से इनि, ठन् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, अनेन	**८६. पूर्वादिनिः १८८६ ।**	इनिः ९१ पूर्वात् ८७	अनेन भुक्तम् आदि अर्थों में पूर्व से इनि होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, इनिः, अनेन, पूर्वात्	**८७. सपूर्वाच्च १८८७ ।**		सपूर्व से भी इनि होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, इनिः, अनेन	**८८. इष्टादिभ्यश्च १८८८ ।** (**१७७**) इष्ट पूर्त उपासादित निगदित परिगदित (परिवादित) निकथित निषादित निपठित संकलित परिकलित संरक्षित परिरक्षित अर्चित गणित अवकीर्ण आयुक्त गृहीत आम्रात श्रुत अधीत (अवधान) आसेवित अवधारित अवकल्पित निराकृत उपकृत उपाकृत अनुयुक्त अनुगणित अनुपठित व्याकुलित ॥ **इतीष्टादिः ॥**		अनेन अस्मिन् अर्थ में इष्ट आदि शब्दों से इनि होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, इनिः	**८९. छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि १८८९ ।**		पर्यवस्थाता वाच्य होने पर परिपन्थिन् परिपरिन् निपातित होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, इनिः	**९०. अनुपद्यन्वेष्टा १८९०**		अन्वेष्टा वाच्य होने पर अनुपदी निपातित होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, इनिः	**९१. साक्षाद्द्रष्टरि संज्ञायाम् १८९१ ।**		द्रष्टा वाच्य होने पर साक्षात् से इनि होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**९२. क्षेत्रियच्परक्षेत्रे चिकित्स्यः १८९२ ।**		तत्र चिकित्स्यः अर्थ में परक्षेत्र शब्द से घच् प्रत्यय तथा पर का लोप होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**९३. इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा १८९३ ।**		इन्द्रलिङ्ग इन्द्रदृष्ट इन्द्रसृष्ट इन्द्रजुष्ट इन्द्रदत्त अर्थों में इन्द्रिय शब्द निपातित होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा	**९४. तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् १८९४ ।**	त-मिन् १४० मतुप् १४०	अस्य अस्ति, अस्मिन् अस्ति इस अर्थ में मतुप् होता है।
ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्	**९५. रसादिभ्यश्च १८९५ ।** (**१७८**) रस रूप वर्ण गन्ध स्पर्श स्नेह भाव। 'गुणात्' ११२। 'एकाचः' ११३॥ **इति रसादिः ॥** **** गुणवचनेभ्यो मतुपो लुक् ।***		रसआदि शब्दों से 'अस्यास्मिन् अस्ति' अर्थ में मतुप् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्

९६. प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् १९०३ । लज्-म् ९९

** प्राण्यङ्गादेव ।*

प्राणिस्थ आकारान्त शब्दों में मतुबर्थ में लच् और मतुप् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, लज्-म्

९७. सिध्मादिभ्यश्च १९०४ ।

सिध्म आदि शब्दों से लच् और मतुप् होता है।

(१७९) सिध्म गडु मणि नाभि बीज (वीणा) कृष्ण निष्पाव पांसु पार्श्व पर्शू हनु सक्तु मास (मांस)। 'पार्ष्णिधमन्योर्दीर्घश्च' ११४। 'वातदन्तबलललाटानामूङ् च' ११५। 'जटाघटाकटाकालाः क्षेपे' ११६। पर्ण उदक प्रज्ञा सक्थि कर्ण स्नेह शीत श्याम पिङ्ग पित्त पुष्क पृथु मृदु मञ्जु (मण्ड) पत्र चटु कपि गण्डु ग्रन्थि श्री कुश धारा वर्ष्मन् पक्ष्मन् श्लेष्मन् पेश निष्पाद् कुण्ड 'क्षुदजन्तूपतापयोश्च' ११७ ॥ **इति सिध्मादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, लज्-म्

९८. वत्सांसाभ्यां कामबले १९०५ ।

क्रमशः कामवत् और बलवत् अर्थ में वत्स अंस से लच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, लज्-म्

९९. फेनादिलच्च १९०६ ।

मत्वर्थ में फेन से इलच् और लच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्

१००. लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः १९०७ ।। ५ ।।

लोम आदि पामन् आदि पिच्छल आदिसे क्रमशः श न इलच् होता है, मतुप् भी होता है।

(१८०) लोमन् रोमन् बभ्रु हरि गिरि कर्क कपि मुनि तरु ॥ **इति लोमादिः ।।**

(१८१) पामन् वामन् वेमन् हेमन् श्लेष्मन् कद्रु (कद्रू) बलि सामन् ऊष्मन् कृमि। 'अङ्गात्कल्याणे' ११८। 'शाकीपलालीदद्रूणां ह्रस्वत्वं च' ११९। ('विष्वगित्युत्तरपदलोपश्चाकृतसन्धेः') १२०। 'लक्ष्म्या अच्च' १२१ ॥ **इति पामादिः ।।**

(१८२) पिच्छा उरस् धुवक ध्रुवक। 'जटाघटाकालाः क्षेपे' १२२। वर्ण उदक पङ्क प्रज्ञा ॥ **इति पिच्छादिः ।।**

** विष्वगित्युत्तरपदलोपश्चाकृतसन्धेः ।*

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्

१०१. प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः १९०८ ।
** वृत्तेश्च ।*

मतुबर्थ में प्रज्ञा श्रद्धा अर्चा से ण होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्

१०२. तपःसहस्राभ्यां विनीनी १९०९ । तपः-म् १०३

तपस् और सहस्र शब्द से क्रमशः विनि इनि प्रत्यय होते हैं मत्वर्थ में।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, तपः-म्

१०३. अण्च १९१० । अण् १०५
** ज्योत्स्नादिभ्य उपसंख्यानम् ।*

(१८३) (**वा० ग०**) ज्योत्स्ना तमिस्रा कुण्डल कुतप विसर्थ विपादिका ॥ **इति ज्योत्स्नादिः ।।**

तपस् सहस्र शब्द से अण् भी होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, अण्

१०४. सिकताशर्कराभ्यां च १९११ । सि-म् १०५

मत्वर्थ में सिकता शर्करा से अण् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, अण्, सि-म्

१०५. देशे लुबिलचौ च १९१२ ।

देश वाच्य रहने पर सिकता शर्करा शब्द से इलच् अण् मतुप् होते हैं तथा उनका लुप् भी होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्

१०६ दन्त उन्नत उरच् १९१३ ।

उन्नत- उपाधि वाले दन्त शब्द से उरच् होता है मतुबर्थ में।

ङ्यात्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्

१०७. ऊषसुषिमुष्कमधो रः १९१४ ।
** रप्रकरणे खमुखकुञ्जेभ्य उपसंख्यानम् ।*
** नगपांसुपाण्डुभ्यश्च ।*
** कच्छ्वा ह्रस्वत्वं च ।*

मत्वर्थ में ऊष सुखि मुष्क मधु से रं होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्

१०८. द्युद्रुभ्यां मः १९१५ ।

मत्वर्थ में द्यु द्रु से म होता है।

ङ्यात्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्

१०९. केशाद्वोऽन्यतरस्याम् १९१६ वः ११०
** अन्येभ्योऽपि दृश्यत इति वक्तव्यम् ।*
** अर्णसो लोपश्च ।*
** छन्दसीवनिपौ च ।*
** मेधारथाभ्यामीरन्निरचौ वक्तव्यौ ।*

केश शब्द से मत्वर्थ में विकल्प से व होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, वः

११०. गाण्ड्यजगात्संज्ञायाम् १९१७ ।

मत्वर्थमें संज्ञा में गाण्डी अजग से व होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्

१११. काण्डाण्डादीरन्नीरचौ १९१८ ।

काण्ड अण्ड से मत्वर्थ में क्रमशः ईरन् ईरच् होते हैं।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्

११२. रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच् १९१९ वलच् ११३
** अन्येभ्योऽपि दृश्यते ।*

रजस् कृषि आसुति परिषद् से वलच् मत्वर्थ में होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, वलच् **११३. दन्तशिखात्संज्ञायाम् १९२० ।** सं-म् ११४ संज्ञा में दन्त शिखा से मत्वर्थ में वलच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, सं-म् **११४. ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः १९२१ ।** संज्ञा रहने पर मत्वर्थ में ज्योत्स्ना तमिस्रा शृङ्गिण ऊर्जस्वल गोमिन् मलिन मलीमस शब्द निपातित होते हैं।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप् **११५. अत इनिठनौ १९२२** इ-नौ ११७ मतुबर्थ में अकारान्त शब्दों से इनि और ठन् प्रत्यय होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, इ-नौ **११६. व्रीह्यादिभ्यश्च १९२३ ।** मत्वर्थ में व्रीहि आदि शब्दों से इनि ठन् होते हैं। मतुप् भी होता है।

(१८४) व्रीहि माया (शाला) शिखा माला मेखला केका अष्टका पताका चर्मन् कर्मन् वर्मन् दंष्ट्रा संज्ञा बडबा कुमारी नौ वीणा बलाका यवखदनौ कुमारी। 'शीर्षान्नञः' १२३ ॥ **इति व्रीह्यादिः ॥**

** शिखामालासंज्ञादिभ्य इनिः ।*

** यवखदादिभ्य इकः ।*

** अन्येभ्य उभयम् ।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, इ-नौ **११७. तुन्दादिभ्य इलच्च १९२४ ।** तुन्द आदि शब्दों से मत्वर्थ में इलच् इनि ठन् मतुप् होते हैं।

(१८५) तुन्द उदर पितण्ड यव व्रीहि। 'स्वाङ्गाद्विवृद्धौ' १२४ ॥ **इति तुन्दादिः ॥**

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप् **११८. एकगोपूर्वाट्ठञ्नित्यम् १९२५ ।** ठञ् ११९ एक और गो पूर्वशब्दों से मत्वर्थ में नित्य ठञ् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, ठञ् **११९. शतसहस्रान्ताच्च निष्कात् १९२६ ।** निष्क से परे शत सहस्र से मत्वर्थ में ठञ् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप् **१२०. रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् १७२७ ॥६॥** ** अन्येभ्योऽपि दृश्यते ।* आहत और प्रशंसा में प्रयुक्त रूप शब्द से यप् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप् **१२१. अस्मायामेधास्रजो विनिः १९२८ ।** विनिः १२२ असन्त प्रातिपदिक और माया मेधा स्रज् से विनि होता है मत्वर्थ में।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्, विनिः **१२२. बहुलं छन्दसि ३४९८ ।** ** आमयस्योपसंख्यानं दीर्घश्च ।* मत्वर्थ में विनि वेद में बहुल प्रकार से होता है।

** शृङ्गवृन्दाभ्यामारकन् ।*
** फलबर्हाभ्यामिनच् ।*
** हृदयाच्चालुरन्यतरस्याम् ।*
** शीतोष्णतृप्रेभ्यस्तदसहने ।*
** हिमाच्चेलुः ।*
** बलादूलः ।*
** वातात्समूहे च ।*
** तप्पर्वमरुद्भ्याम् ।*

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्
१२३. ऊर्णाया युस् १९२९ ।
मत्वर्थ में ऊर्णा शब्द से युस् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्
१२४. वाचो ग्मिनिः १९३० । वाचः १२५
वाच् से मत्वर्थ में ग्मिनि प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, वाचः
१२५. आलजाटचौ बहुभाषिणि १९३१ ।
** कुत्सित इति वक्तव्यम् ।*
यदि बहुभाषी अभिधेय हो तो वाच् से मत्वर्थ में आलच् आटच् प्रत्यय होते हैं।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्
१२६. स्वामिन्नैश्वर्ये १९३२ ।
ऐश्वर्य में स्व से मतुबर्थ में स्वामिन् निपातित होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप्
१२७. अर्शआदिभ्योऽच् १९३३ ।
अर्शस् आदि शब्दों से मत्वर्थ में अच् होता है।

(१८६) अर्शस् उरस् तुन्द चतुर पलित जटा (घटा) घाटा अभ्र (अघ) (कर्दम) अम्ल लवण। 'स्वाङ्गाद्धीनात्' १२५। वर्णात्॥ **इत्यर्शआदिः॥ आकृतिगणः॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, मतुप्
१२८. द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात्प्राणिस्थादिनिः १९३४ । इनिः १३७
द्वन्द्व समास उपताप गर्ह्य वाची प्राणिस्थ शब्दों से मत्वर्थ में इनि होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, इनिः
१२९. वातातीसाराभ्यां कुक्च १९३५ ।
** पिशाचाच्च ।*
मत्वर्थ में वात और अतीसार से इनि तथा कुक् का आगम होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, इनिः
१३०. वयसि पूरणात् १९३६ ।
यदि वयस् गम्यमान हो तो पूरण प्रत्ययान्त से मत्वर्थ में इनि होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, इनिः
१३१. सुखादिभ्यश्च १९३७ ।
सुख आदि शब्दों से मत्वर्थ में इनि होता है।

(१८७) सुख दुःख तृप्त [तृप्र] कृच्छ्र अस्र (आश्र) आस्र (अस्र) अलीक करुण सोढ प्रतीप शील हल । 'माला क्षेपे' १२६ । (कृपण) प्रणाय (प्रणय) दल कक्ष ॥ **इति सुखादिः ॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, इनिः **१३२. धर्मशीलवर्णान्ताच्च १९३८ ।** धर्म शील वर्ण अन्तवाले शब्दों से इनि होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, इनिः **१३३. हस्ताज्जातौ १९३९ ।** यदि जाति वाच्य हो तो हस्त से मत्वर्थ में इनि होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, इनिः **१३४. वर्णाद्ब्रह्मचारिणि १९४० ।** यदि ब्रह्मचारी अर्थ हो तो वर्ण से मत्वर्थ में इनि होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, इनिः **१३५. पुष्करादिभ्यो देशे १९४१ ।** यदि देश गम्यमान हो तो पुष्कर आदि शब्दों से मत्वर्थ में इनि होता है ।

(१८८) पुष्कर पद्म उत्पल तमाल कुमुद नड कपित्थ बिस मृणाल कर्दम शालूक विगर्ह करीष शिरीष यवास (प्रवास) हिरण्य कैरव कल्लोल तट तरङ्ग पङ्कज सरोज राजीव नालीक सरोरुह पुटक अरविन्द अम्भोज अब्ज कमल (कल्लोल) पयस् ॥ **इति पुष्करादिः ॥**

*** बाहूरू पूर्वपदाद्बलात् ।**

*** सर्वादेश्च ।**

*** अर्थाच्चासंनिहिते ।**

*** तदन्ताच्च ।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, इनिः **१३६. बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् १९४२ ।** बल आदि शब्दों से मतुप् और इनि होते हैं ।

(१८९) बल उत्साह (उद्भास उद्वास) उद्वास शिखा कुल चूडा सुल कूल आयाम व्यायाम उपयाम आरोह अवरोह परिणाह (युद्ध) ॥ **इति बलादिः ॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप्, इनिः **१३७. संज्ञायां मन्माभ्याम् १९४३ ।** मन् अन्त वाले और म अन्त वाले शब्दों से मतुबर्थ में इनि होता है, यदि संज्ञा वाच्य हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, त-मिन्, म-तुप् **१३८. कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयसः १९४४ ।** संज्ञा में कं और शं शब्द से मत्वर्थ में ब, भ, युस् ति तु त यस् होते हैं ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप् **१३९. तुन्दिवलिवटेर्भः १९४५ ।** मत्वर्थ में तुन्दि वलि वटि से भ होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, त-मिन्, मतुप् **१४०. अहंशुभमोर्युस् १९४६ ॥ ७ ॥** अंह शुभं से मत्वर्थ में युस् होता है ।

धान्यानां व्रातेन किमो विमुक्तादिभ्यः काल-
प्रयोजनात्प्रज्ञाश्रद्धास्मायामेधाविंशतिः ॥

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

प्राग्दिशीय प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा **१. प्राग्दिशो विभक्तिः १९४७ ।** विभक्तिः २६ सूत्र ५.३.२७ के पहले (प्राग्दिशः के पहले) विभक्ति का अधिकार होगा ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, विभक्तिः **२. किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः १९४८ ।** किम् अद्व्यादि सर्वनाम तथा बहु शब्द से प्राग्दिशः विभक्तियाँ होंगी ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, विभक्तिः **३. इदम इश् १९४९ ।** इदमः ४ प्राग्दिशीय परे रहने पर इदम् को इश् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा विभक्तिः इदमः **४. एतेतौ रथोः १९५० ।** ** थाहेतौ च च्छन्दसि ।* इदम् को प्राग्दिशीय के यहाँ एत इत आदेश होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, विभक्तिः **५. एतदोऽन् १९५१ ।** प्राग्दिशीय में एतद् को अन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, विभक्तिः **६. सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि १९५२ ।** प्राग्दिशीय दकारादि के यहाँ सर्व को विकल्प से स होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, विभक्तिः **७. पञ्चम्यास्तसिल् १९५३ ।** तसिल् ९ पञ्चम्यन्त किं सर्वनाम बहु से तसिल् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, विभक्तिः, तसिल् **८. तसेश्च १९५५ ।** पञ्चम्यन्त किं सर्वनाम बहु से होने वाले तस् को भी तसिल् होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-वा, विभक्तिः, तसिल् **९. पर्यभिभ्यां च १९५६ ।** ** सर्वोभयार्थाभ्यामेव ।* परि अभि से भी तसिल् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा वि० **१०. सप्तम्यास्त्रल् १९५७ ।** स-म्याः २२ सप्तम्यन्त किं सर्वनाम बहु से त्रल् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, वि० स-म्याः **११. इदमो हः १९५८ ।** — सप्तम्यन्त इदम् से ह होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-वा, वि० स-म्याः **१२. किमोऽत् १९५९ ।** किमः १३ — सप्तम्यन्त किम् से अत् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः वि० स-वा स-म्याः किमः **१३. वा ह च च्छन्दसि १९६१ ।** — सप्तम्यन्त किम् से वेद में ह भी होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा, स-म्याः **१४. इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते १९६३ ।** — सप्तमी पञ्चमी भिन्न विभक्तियों से भी तसिल् आदि देखे जाते हैं।
**** दृशिग्रहणाद्भवदादियोग एव ।***
(**१९०**) (**वा० ग०**) । भवान् दीर्घायुः देवानां प्रियः आयुष्मान् ॥ **इति भवदादिः ।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा, स-म्याः **१५. सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा १९६४ ।** काले २२ — सप्तम्यन्त सर्व एक अन्य किम् यत् तत् से काल अर्थ में दा होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा, स-म्याः **१६. इदमो र्हिल् १९६५ ।** इदमः १८ — कालार्थ में सप्तम्यन्त इदम् से र्हिल् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा, स-म्याः काले, इदमः **१७. अधुना १९६६ ।** — अधुना शब्द निपातित होता है

ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा, स-म्याः काले, इदमः **१८. दानीं च १९६७ ।** **दानीं १९** — कालार्थ में सप्तम्यन्त इदम् से दानीम् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा, स-म्याः वि० काले, दानीं **१९. तदो दा च १९६८ ।** — सप्तम्यन्त तद् से कालार्थ में दा भी होता है।
**** तदो दावचनमनर्थकं विहितत्वात् ।***

ङ्या-त् तद्धिताः वि० स-वा, स-म्याः काले **२०. तयोर्दार्हिलौ च च्छन्दसि ३४९९ ॥१॥** — वेद में इदम् और तत् से दा और र्हिल् भी होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा, स-म्याः **२१. अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम् १९६९ ।** — सप्तम्यन्त किं सर्वनाम बहु से अनद्यतन काल में विकल्प से र्हिल् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा, स-म्याः **२२. सद्यः परुत्परार्यैषमः परेद्यव्यद्यपूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः १९७० ।** — सद्यः परुत् परारि ऐषमः परेद्यवि अद्य पूर्वेद्युः अन्येद्युः अन्यतरेद्युः इतरेद्युः अपरेद्युः अधरेद्युः उभयेद्युः उत्तरेद्युः निपातित होते हैं।
**** समानस्य सभावो द्यस् चाहनि ।***
**** पूर्वपूर्वतरयोः परभाव उदारी च संवत्सरे ।***
**** इदम इश् समसण् प्रत्ययश्च संवत्सरे ।***

**** परस्मादेद्यव्यहनि ।***

**** इदमोऽश्भावो द्यश्च ।***

**** पूर्वान्यान्यतरेतरापराधरोभयोत्तरेभ्यो [ऽहनि] एद्युस् ।***

**** द्युश्चोभयात् ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा	**२३. प्रकारवचने थाल् १९७१ ।**	प्र-ने २६	प्रकारवचन में किं सर्वनाम बहु से थाल् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, वि० स-वा, प्र-ने	**२४. इदमस्थमुः १९७२ ।** **** एतदो वाच्यः ।***	थमुः २५	प्रकारवचन में इदम् से थमु होता है ।
ङ्या-त् तद्धिताः वि० स-वा, प्र-ने, थमुः	**२५. किमश्च १९७३ ।**	किमः २६	किम् से प्रकारवचन में थाल् होता है ।
	प्रागिवीय प्रत्ययाः		
ङ्या-त् तद्धिताः वि० स-वा, प्र-ने, किमः	**२६. था हेतौ च च्छन्दसि ३५०० ।**		हेतु तथा प्रकारवचन में किम् से वेद में था होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**२७. दिक्छब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः १९७४ ।**	दिं-स-तिः ३८	दिग् देश काल में वर्तमान सप्तमी पञ्चमी प्रथमान्त शब्दों से स्वार्थ में अस्ताति होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः	**२८. दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् १९७८ ।**	अत-च् २९	दिग्देशकाल में वर्तमान सप्तमी पञ्चमी प्रथमान्त दक्षिण उत्तर शब्द से स्वार्थ में अतसुच् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः, अत-च्	**२९. विभाषा परावराभ्याम् १९७९ ।**		अस्ताति के अर्थ में पर अवर से विकल्पेन अतसुच् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः	**३०. अञ्चेर्लुक १९८० ।**		अञ्च् उत्तर पद वाले दिक् शब्द से अस्ताति का लुक् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः	**३१. उपर्युपरिष्टात् १९८१ ।**		अस्ताति के अर्थ में उपरि उपरिष्टात् का निपातन होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः	**३२. पश्चात् १९८२ ।** **** अपरस्यार्थे पश्चभावो वक्तव्यः ।***		अस्ताति के अर्थ में पश्चात् का निपातन होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः	**३३. पश्च पश्चा च च्छन्दसि ३५०१ ।**		वेद में अस्ताति के अर्थ में पश्च पश्चा पश्चात् बनते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः	**३४. उत्तराधरदक्षिणादातिः १९८३ ।**	उ-त् ३५	उत्तर अधर दक्षिण से अस्ताति के अर्थ में आति होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः, उ-त्	**३५. एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः १९८४ ।**	अ-म्याः ३८	पञ्चमी को छोड़कर यदि अवधि अवधिमान् के समीप में हो तो उत्तर अधर दक्षिण शब्द से विकल्पेन एनप् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः, अ-म्याः	**३६. दक्षिणादाच् १९८५ ।**	द-त् ३७ आच् ३८	अस्ताति के अर्थ में दक्षिण से आच् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः, अ-म्याः द-त् आच्	**३७. आहि च दूरे १९८६ ।**	आ-रे ३८	अवधि अवधिमत् से दूर में हो तो दक्षिण से अस्ताति के अर्थ में आहि होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, दि-स-तिः, अ-म्याः आ-रे, आच्	**३८. उत्तराच्च १९८७ ।**		दूर में अस्ताति के अर्थ में उत्तर से आच् आहि होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**३९. पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम् १९७५**	पू-म् ४० पु-वः ४०	अस्ताति के अर्थ में पूर्व अधर अवर में असि होता है तथा उन्हें क्रमशः पुर् अध् अव् आदेश होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, पू-म्, पु-वः	**४०. अस्ताति च १९७६ । ।। २ ।।**	अति ४१	अस्ताति के यहाँ भी पुर् अध् अव् आदेश होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, अ-ति	**४१. विभाषाऽवरस्य १९७७ ।**		अवर को अस्ताति के यहाँ अव् विकल्पेन होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**४२. संख्याया विधार्थे धा १९८८ ।**	सं-या ४३ धा ४३	संख्यावाची शब्दों से विधा अर्थ में धा होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, सं-या, धा	**४३. अधिकरणविचाले च १९८९ ।**		अधिकरणविचाल में संख्यावाची शब्दों से धा होता है ।
ङ्यात्, तद्धिताः	**४४. एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम् १९९० ।**	धः ४६ अ-म् ४६	एक शब्द से हुये धा को विकल्प से ध्यमुञ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, धः, अ-म्	**४५. द्वित्र्योश्च धमुञ् १९९१ ।** ** धमुञन्तात्स्वार्थे डदर्शनम् ।*	द्वि-त्र्योः ४६	द्वि त्रि सम्बन्धी धा को धमुञ् विकल्पेन होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, धः, अ-म्, द्वि-त्र्योः	**४६. एधाच्च १९९२ ।**		द्वि त्रि सम्बन्धी धा को विकल्पेन एधाच् आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**४७. याप्ये पाशप् १९९३ ।**		याप्य में प्रातिपदिक से स्वार्थ में पाशप् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**४८. पूरणाद्भागे तीयादन् १९९४ ।**	पू-त् ४९ भागे ५१ अन् ५०	पूरण में हुये तीय अन्तवालों से स्वार्थ में अन् होता है भाग अर्थ में ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, भागे, अन्, पू-त्	**४९. प्रागेकादशभ्योऽछन्दसि १९९५ ।**	अ-सि ५०	एकादश से पहले वाले संख्यावाची पूरण प्रत्ययान्त से स्वार्थ में अन् होता है, यदि वेद का विषय न हो तथा भाग अर्थ हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **५०. षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च १९९६ ।** भागे, अन्, अ-सि	ष-म् ५१	षष्ठ अष्टम से भागवाच्य रहने पर ञ और अन् होते हैं लोक विषय में ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **५१. मानपश्वङ्गयोः कन्लुकौ च १९९७ ।** भागे, ष-म्	क-कौ ५२	षष्ठ अष्टम शब्द से क्रमशः कन् और लुक् होता है मान तथा पश्वङ्ग वाच्य होने पर ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **५२. एकादाकिनिच्चासहाये १९९८ ।** क-कौ		असहायवाची एक शब्द से आकिनिच् प्रत्यय होता है, तथा कन् और लुक् भी होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः **५३. भूतपूर्वे चरट् १९९९ ।**	चरट् ५४	भूतपूर्व अर्थ में वर्तमान प्रातिपदिक से चरट् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **५४. षष्ठ्या रूप्य च २००० ।** चरट्		षष्ठ्यन्त प्रातिपदिक से रूप्य तथा चरट् होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः **५५. अतिशायने तमबिष्ठनौ २००१ ।**	अ-ने ५७ त-नौ ५६	अत्युत्कृष्ट अर्थ में प्रातिपदिक शब्द से स्वार्थ में तमप् और इष्ठन् प्रत्यय होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **५६. तिङश्च २००२ ।** अ-ने, त-नौ	तिङः ७१	अतिशय द्योत्य में तिङन्त से भी तमप् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **५७. द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ २००५** अ-ने, तिङः		द्व्यर्थप्रतिपादक और विभक्तव्य विषयक उपपद रहने पर प्रातिपदिक तथा तिङन्त से तरप् और ईयसुन् होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **५८. अजादी गुणवचनादेव २००६ ।** तिङः	अजादी ६५	इष्ठन् और ईयसुन् गुणवचन से ही होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **५९. तुश्छन्दसि २००७ ।** अजादी, तिङः		वेद में त्रन्त से इष्ठन् ईयसुन् होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **६०. प्रशस्यस्य श्रः २००९ । ।। ३ ।।** अजादी, तिङः	प्र-स्य ६१	इष्ठन् ईयसुन् के यहाँ प्रशस्य को श्र हो जाता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **६१. ज्य च २०११ ।** अजादी, तिङः, प्र-स्य	ज्य ६२	प्रशस्य को ज्य होता है इष्ठन् ईयसुन् परे रहने पर ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **६२. वृद्धस्य च २०१३ ।** अजादी, तिङः, ज्य		इष्ठन् ईयसुन् के यहाँ वृद्ध को ज्य आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **६३. अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ २०१४ ।** अजादी, तिङः		अन्तिक और बाढ को क्रमशः नेद और साध आदेश होते हैं इष्ठन् ईयसुन् के यहाँ ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६४. युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् २०१९ ।**
अजादी, तिङः
युवन् और अल्प को विकल्प से कन् आदेश होता है इष्ठन् और ईयसुन् के यहाँ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६५. विन्मतोर्लुक् २०२० ।**
अजादी, तिङः
विन् और मतुप् का लुक् होता है इष्ठन ईयसुन् के यहाँ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६६. प्रशंसायां रूपप् २०२१ ।**
तिङः
प्रशंसा में प्रातिपदिक से रूपप् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६७. ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः २०२२** ई-प्तौ ६८
तिङः
ईषत् असमाप्ति अर्थ में कल्पप् देश्य देशीयर् प्रत्यय होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६८. विभाषा सुपो बहुच्पुरस्तात्तु २०२३ ।** सुपः ६९
ई-प्तौ, तिङः
ईषत् असमाप्ति अर्थ में सुबन्त से बहुच् प्रत्यय विकल्प से होता है पर वह प्रकृति के पहले होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६९. प्रकारवचने जातीयर् २०२४ ।**
सुपः, तिङः
प्रकार वचन में वर्तमान शब्दसे स्वार्थ में जातीयर् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७०. प्रागिवात्कः २०२५ ।** कः ९५
तिङः
इवे प्रतिकृतौ सूत्र तक क का अधिकार है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७१. अव्ययसर्वनाम्नामकच्प्राक्टेः २०२६ ।** अकच् ७२
कः, तिङः
प्रागिवीय अर्थों में अव्यय सर्वनाम को टि के पहले अकच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७२. कस्य च दः २०२७ ।**
कः, अकच्
***** ओकारसकारभकारादौ सुपि सर्वनाम्नष्टेः प्रागकच् ।*
***** अकच्प्रकरणे तूष्णीमः काम् ।*
***** शीले को मलोपश्च ।*
क् अन्त वाले अव्यय से अकच् होने पर द अन्तादेश होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७३. अज्ञाते २०२८ ।**
कः
अज्ञात अर्थ में वर्तमान प्रातिपदिक तथा तिङन्त से स्वार्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७४. कुत्सिते २०२९ ।** कु-ते ७५
कः
कुत्सित अर्थ में वर्तमान शब्द से यथाविहित प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७५. संज्ञायां कन् २०३० ।**
कः, कु-ते
यदि संज्ञा गम्यमान हो तो कुत्सित अर्थ में कन् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७६. अनुकम्पायाम् २०३१ ।** अ-म् ८२
कः
अनुकम्पा में प्रतिपदिक तथा तिङन्त से यथाविहित प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७७. नीतौ च तद्युक्तात् २०३२ ।** नी-तौ ८१
कः, अ-म् त-त् ८०
नीति वाच्य होने पर अनुकम्पायुक्त से यथाविहित प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, कः, अ-म्, नी-तौ, त-त्	**७८. बह्वचो मनुष्यनाम्नष्ठज्वा २०३३ ।**	म-म्नः ८२ ब-चो, ठ-वा ८०	वह्वच् प्रातिपदिक तथा मनुष्य नामधेय से अनुकम्पा तथा नीति गम्यमान रहने पर विकल्प से ठच् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कः, अ-म्, नी-तौ, त-त्, म-म्नः, ब-चो, ठ-वा	**७९. घनिलचौ च २०३४ ।**	घ-चौ ८०	उपरिलिखित स्थिति में घन् और इलच् भी होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कः, अ-म्, नी-तौ, त-त्, म-म्नः, ब-चो, ठ-वा, घ-चौ	**८०. प्राचामुपादेरडज्वुचौ च २०३६ ।। ४ ।।**		उपादि प्रातिपदिक वह्वच् मनुष्यनामवाची शब्दों से अडच् और वुच् प्रत्यय होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कः, अ-म्, नी-तौ, म-म्नः,	**८१. जातिनाम्नः कन् २०३७ ।**	कन् ८२	मनुष्य नाम के लिये प्रयुक्त जातिवाची शब्द से अनुकम्पा और नीति में कन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कः, अ-म्, म-म्नः, कन्	**८२. अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च २०३९ ।**	लोपः ८४	अजिनान्त मनुष्य नाम वाची शब्द से कन् और उत्तरपद लोप होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कः, लोपः	**८३. ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः २०३५ ।** ** चतुर्थादच ऊर्ध्वस्य लोपो वक्तव्यः ।* ** अनजादौ च विभाषा लोपो वक्तव्यः ।* ** लोपः पूर्वपदस्य च ।* ** विनापि प्रत्ययं पूर्वोत्तरपदयोर्वा लोपो वाच्यः ।* ** उवर्णाल्ल इलस्य च ।* ** (ऋवर्णादपि) ।* ** ठग्रहणमुको द्वितीयत्वे कविधानार्थम् ।* ** द्वितीयं संध्यक्षरं चेत्तदादेर्लोपो वक्तव्यः ।*	ठा-दौ ८४ अचः ८४	इस प्रकरण में ठ और अजादि प्रत्यय के यहाँ द्वितीय अच् के बाद के वर्णों का लोप हो जाता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कः, लोपः, ठा-दौ, अचः	**८४. शेवलसुपरिविशालवरुणार्यमादीनां तृतीयात् २०३८ ।** ** एकाक्षरपूर्वपदानामुत्तरपदलोपो वक्तव्यः ।* ** षषष्ठाजादिवचनात्सिद्धम् ।*		मनुष्यनामवाची शेवल सुपरि विशाल वरुण अर्यमन् शब्दों से ठाजादि प्रत्ययों के यहाँ तृतीय अच् के बाद के वर्णों का लोप होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कः	**८५. अल्पे २०४० ।**		अल्पत्व विशिष्ट शब्दों से अल्पार्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कः	**८६. ह्रस्वे २०४१ ।**	ह्रस्वे ९०	ह्रस्वत्व विशिष्ट शब्दों से ह्रस्वार्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८७. संज्ञायां कन् २०४२।** कः. ह्रस्वे		ह्रस्वत्व हेतु वाले शब्दों से संज्ञा में कन् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **८८. कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः २०४३।** कः. ह्रस्वे		ह्रस्वार्थ वाच्य रहने पर कुटी शमी शुण्डा से र होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **८९. कुत्वा डुपच् २०४४।** कः. ह्रस्वे		कुतू से ह्रस्वत्व द्योत्य रहने पर डुपच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९०. कासूगोणीभ्यां ष्टरच् २०४५।** कः. ह्रस्वे	ष्टरच् ९१	कासू गोणी से ह्रस्वत्व में ष्टरच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९१. वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे २०४६।** कः, ष्टरच्		ह्रस्वत्व में वत्स उक्षन् अश्व ऋषभ से ष्टरच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९२. किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् २०४७।** कः	किं-णे ९३ ए-स्य ९३ ड-च् ९४	दो में एक का निर्धारण करना हो तो किम् यत् तत् से डतरच् प्रत्यय होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९३. वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् २०४८** कः, किं-णे, ए-स्य, ड-च्	ड-मच् ९४	बहुतों में एक का निर्धारण करना हो या जाति के विषय में पूछना हो तो किम् यत् तत् से विकल्पेन डतमच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९४. एकाच्च प्राचाम् २०४९।** कः, ड-मच्, ड-च्		एक शब्द से स्वार्थ में डतरच् डतमच् विकल्पेन होते हैं प्राचीन मत में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९५. अवक्षेपणे कन् २०५०।** कः	कन् १००	अवक्षेपण में कन् होता है।

स्वार्थिक प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, **९६. इवे प्रतिकृतौ २०५१।** कन्	इवे १११ प्र-तौ १००	प्रतिकृति विशेषणक इव के अर्थ में कन् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९७. संज्ञायां च २०५२।** कन्, इवे, प्र-तौ	सं-म् १००	संज्ञा में भी इवार्थ में कन् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९८. लुम्मनुष्ये २०५३।** कन्, इवे, प्र-तौ, सं-म्	लुप् १००	मनुष्य अभिधेय रहने पर संज्ञा में विहित कन् का लुप् हो जाता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **९९. जीविकार्थे चापण्ये २०५४।** कन्, इवे, प्र-तौ, सं-म्, लुप्		अपण्य जीविकार्थ वाच्य होने पर कन् का लुप् हो जाता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, **१००. देवपथादिभ्यश्च २०५५। ॥ ५ ॥** कन्, इवे, प्र-तौ, सं-म्, लुप्		इवार्थ संज्ञा में विहित कन् का देवपथ आदि शब्दों से लुप् हो जाता है।

(**१९१**) देवपथ (हंसपथ वारिपथ रथपथ) स्थलपथ कारिपथ अजपथ राजपथ शतपथ शङ्कुपथ सिन्धुपथ सिद्धगति उष्ट्रग्रीव वामरज्जु हस्त इन्द्र दण्ड पुष्प मत्स्य **इति देवपथादिः ।। आकृतिगणः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे — **१०१. वस्तेर्ढञ् २०५६ ।** — इवार्थ मात्र द्योत्य रहने पर वस्ति से ढञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे — **१०२. शिलाया ढः २०५७ ।** — शिला शब्द से इवार्थ में ढ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे — **१०३. शाखादिभ्यो यः २०५८ ।** — यः १०४ — इवार्थ में शाखा आदि शब्दों से विकल्पेन य प्रत्यय होता है ।

(**१९२**) शाखा मुख जघन शृङ्ग मेघ अभ्र चरण स्कन्ध स्कद (स्कन्द) उरस् शिरस् अग्र (शाण) शरण ।। **इति शाखादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे, यः — **१०४. द्रव्यं च भव्ये २०५९ ।** — भव्य अर्थ में द्रव्य निपातित होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे — **१०५ कुशाग्राच्छः २०६० ।** — छः १०६ — इवार्थ में कुशाग्र से छ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे, छः — **१०६, समासाच्च तद्विषयात् २०६१ ।** — इवार्थ विषयक समास से दूसरे इवार्थ में छ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे — **१०७. शर्करादिभ्योऽण् २०६२ ।** — शर्करा आदि शब्दों से इवार्थ में अण् होता है ।

(**१९३**) शर्करा कपालिका कपाटिका कपिष्ठिका (कनिष्ठिका) पुण्डरीक शतपत्र गोलोमन् लोमन् गोपुच्छ नराची नकुल सिकता ।। **इति शर्करादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे — **१०८. अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् २०६३ ।** — ठक् १०९ — इवार्थ में अङ्गुली आदि शब्दों से ठक् होता है ।

(**१९४**) अङ्गुली भरुज बभ्रु वल्गु मण्डर मण्डल शष्कुली हरि कपि मुनि रुह खल उदश्वित् गोणी उरस् कुलिश ।। **इत्यङ्गुल्यादिः ।।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे, ठक् — **१०९. एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम् २०६४ ।** — एकशाला से इवार्थ में विकल्प से ठच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे — **११०. कर्कलोहितादीकक् २०६५ ।** — इवार्थ में कर्क और लोहिते से ईकक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, इवे — **१११. प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थालछन्दसि ३५०२ ।** — वेद में इवार्थ में प्रत्न पूर्व विश्व इम से थाल् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः	**११२. पूगाञ्ज्योऽग्रामणीपूर्वात् २०६६ ।** ञ्यः ११३	अग्रामणीपूर्व पूगवाचीशब्द से स्वार्थ में ञ्य होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, ञ्यः	**११३. व्रातच्फञोरस्त्रियाम् ११०० ।**	व्रातवाची तथा च्फञ् अन्तवाले शब्दों से स्वार्थ में ञ्य होता है, यदि स्त्रीलिङ्ग न हो ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**११४. आयुधजीविसङ्घाञ्ञ्यड्वाहीकेष्वब्राह्मणराजन्यात् २०६७ ।** आ-त् ११७	वाहीकस्थ आयुधजीवी सङ्घ के वाचक शब्दों से स्वार्थ में ञ्यट् होता है पर वे शब्द ब्राह्मण तथा राजन्यवाची न हों ।
ङ्यात्, तद्धिताः, आ-त्	**११५. वृकाट्टेण्यण् २०६८ ।**	आयुधजीवी वृक से स्वार्थ में टेण्यण् होता है ।
ङ्यात्, तद्धिताः, आ-त्	**११६. दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः २०६९ ।**	आयुधजीवी दामनि आदि तथा त्रिगर्त षष्ठ शब्दों से स्वार्थ में छ प्रत्यय होता है ।

(१९५) दामनि औलपि बैजवापि औदकि औदङ्कि अच्युतन्ति (आच्युतन्ति) अच्युतदन्ति (आच्युतदन्ति) शाकुन्तकि आकिदन्ति आक्तिदन्ति औडवि काकदन्तकि शात्रुंतपि सार्वसेनि बिन्दु वैन्दवि तुलभ मौञ्जायन काकन्दि सावित्रीपुत्र ॥ **इति दामन्यादिः ।।**

ङ्यात्, तद्धिताः, आ-त्	**११७. पर्श्वादियौधेयादिभ्योऽणञौ २०७० ।**	पर्शु आदि तथा यौधेय आदि आयुध जीवि सङ्घवाची शब्दों से स्वार्थ में अण् अञ् होते हैं ।

(१९६) पर्शु असुर रक्षस् बाह्लीक वयस् वसु मरुत् सत्त्वत् दशार्ह पिशाच अशनि कार्षापण ॥ **इति पर्श्वादिः ।।**

(१९७) यौधेय (कौशेय) शौक्रेय शौभ्रेय धार्तेय घार्तेय ज्याबाणेय त्रिगर्त भरत उशीनर ॥ **इति यौधेयादिः ।।**

११८. अभिजिद्विदभृच्छालावच्छिखावच्छमीवदूर्णावच्छ्रुमदणो यञ् २०७१ ।	अणन्त अभिजित् विदभृत् शालावत् शिखावत् शमीवत् ऊर्णावत् श्रुमत् शब्दों से स्वार्थ में यञ् होता है ।
११९. ञ्यादयस्तद्राजाः २०७२ ।	जहाँ से ञ्य (११२ से) प्रत्यय हुआ है वहाँ से यहाँ तक (११९ तक) विहित प्रत्यय तद्राज कहलाते हैं ।

प्राग्दिशोऽनद्यतने विभाषा ज्य च जातिनाम्नो वस्तेरेकोनविंशतिः ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

स्वार्थिक प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः **१. पादशतस्य संख्यादेर्वीप्सायां वुन्लोपश्च** पा-देः २ **२०७३** । वुन् २

संख्यादि पाद और शत अन्त वाले शब्दों से वीप्सा में वुन् होता है और अन्त का लोप होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **२. दण्डव्यवसर्गयोश्च २०७४ ।** वुन्, पा-देः

दण्ड और दान वाच्य हो तो संख्यादि पाद शतान्त से स्वार्थ में वुन् तथा अन्त्यलोप होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः **३. स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् २०७५ ।** कन् ६

प्रकार वचन द्योत्य रहने पर स्थूल आदि शब्दों से कन् होता है ।

(१९८) स्थूल अणु माषेषु (माष इषु) । 'कृष्ण तिलेषु' १२८ । 'यव व्रीहिषु' १२९ । 'इक्षु तिल पाद्यकालावदाताः सुरायाम्' १३० । 'गोमूत्र आच्छादने' १३१ । 'सुरा अहौ' १३२ । 'जीर्ण शालिषु' १३३ । 'पत्रमूल समस्तो व्यस्तश्च' १३४ ॥ कुमारीपुत्र कुमारीश्वशुर मणि ॥ **इति स्थूलादिः ॥**

** चञ्चद्बृहतोरुपसंख्यानम् ।*

** (सुराया अहौ ।)*

ङ्या-त्, तद्धिताः, **४. अनत्यन्तगतौ क्तात् २०७६ ।** क्तात् ५ कन्

अनत्यन्तगति द्योत्य रहने पर क्तान्त से कन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **५. न सामिवचने २०७७ ।** कन्, क्तात्

सामि उपपद में हो तो क्तान्त से कन् नहीं होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **६. बृहत्या आच्छादने २०७८ ।** कन्

बृहती से स्वार्थ में कन् होता है यदि वह आच्छादन में हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः **७. अषडक्षाशितङ्ग्वलंकर्मालंपुरुषाऽध्युत्तरपदात्खः २०७९ ।** खः ८

अषडक्ष आशितंगु अलंकर्मन् अलंपुरुष शब्दों से तथा अध्युत्तर पद से स्वार्थ में ख होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८. विभाषाञ्चेरदिक्स्त्रियाम् २०८० ।** कन्, खः

स्त्रीत्व में वर्तमान अञ्चत्यन्त दिग्वाची शब्दों से स्वार्थ में ख प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः **९. जात्यन्ताच्छ बन्धुनि २०८१ ।** छः १०

बन्धुत्व में वर्तमान जात्यन्त शब्द से स्वार्थ में छ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१०. स्थानान्ताद्विभाषा सस्थानेनेति चेत् २०८२** छः

स्थानान्त से छ प्रत्यय होता है विकल्प से, यदि समानस्थान वाच्य हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, छः	**११. किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे** २००४	कि-त् १५ आमु १५ अर्षे १५	घ प्रत्ययान्त किम् एकारान्त शब्द तिङ् तथा अव्यय से आमु होता है, यदि द्रव्य प्रकर्ष न हो।
ङ्यात्, तद्धिताः, कि-त्, आमु, अर्षे	**१२. अमु च च्छन्दसि** ३५०३।		घ प्रत्ययान्त किम् एकारान्तशब्द तिङ् तथा अव्यय से वेद में अमु आमु दोनों होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कि-त्, आमु, अर्षे	**१३. अनुगादिनष्ठक्** २०८३।		अनुगादिन् से ठक् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कि-त्, आमु, अर्षे	**१४. णचः स्त्रियामञ्** ३२१६।		स्त्रीलिङ्ग में णजन्त से अञ् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कि-त्, आमु, अर्षे	**१५. अणिनुणः** ३२१९।	अण् १६	इनुणन्त से स्वार्थ में अण् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, अण्	**१६. विसारिणो मत्स्ये** २०८४।		मत्स्य वाच्य होने पर विसारिन् से स्वार्थ में अण् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**१७. संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच्** २०८५।	सं-याः १८ क्रि-च् २०	क्रियाभ्यावृत्तिगणन में वर्तमान संख्या शब्दों से स्वार्थ में कृत्वसुच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, क्रि-च्, सं-याः	**१८. द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्** २०८६।	सुच् १९	क्रियाभ्यावृत्तिगणन में वर्तमान द्वि त्रि चतुर् से सुच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, क्रि-च्, सुच्	**१९. एकस्य सकृच्च** २०८७।		एक को क्रियागणन में सकृत् आदेश तथा सुच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, क्रि-च्	**२०. विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले** २०८८। ॥ १ ॥		क्रियाभ्यावृत्तिगणन में बहु से विकल्पेन धा होता है, यदि गणन अविप्रकृष्ट कालिक है।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**२१. तत्प्रकृतवचने मयट्** २०८९।	तत्-ट् २५	प्रचुरता से प्रस्तुत अर्थ में शब्द से मयट् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, तत्-ट्	**२२. समूहवच्च बहुषु** २०९०।		बहु प्रकृत में समूहवत् प्रत्यय तथा मयट् भी होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, तत्-ट्	**२३. अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः** २०९१।		अनन्त आवसथ इतिह भेषज से स्वार्थ में ञ्य होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, तत्-ट्	**२४. देवतान्तात्तादर्थ्ये यत्** २०९२।	ता-ये २६ यत् २५	तादर्थ्य में देवतान्त शब्दों से यत् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, यत्, तत्-ट्, ता-ये	**२५. पादार्घाभ्यां च** २०९३।		चतुर्थीसमर्थ तादर्थ्य में पाद अर्घ तथा अन्य शब्दों से भी (परिगणित) यत् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ता-ये	**२६. अतिथेर्ञ्यः २०९४ ।**		चतुर्थी समर्थ अतिथि से तादर्थ्य में ञ्य होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**२७. देवात्तल् २०९५ ।**		देव से स्वार्थ में तल् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**२८. अवेः कः २०९६ ।**		अवि से स्वार्थ में क होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**२९. यावादिभ्यः कन् २०९७ ।**	कन् ३३	याव आदि शब्दों से स्वार्थ में कन् होता है ।
	(१९९) याव मणि अस्थि [तालु] जानु सान्द्र पीत स्तम्ब । 'ऋतावुष्णशीते' १३५ । 'पशौ लूनविपाते' १३६' । 'अणु निपुणे' १३७ । 'पुत्र कृत्रिमे' १३८ । 'स्नात वेदसमाप्तौ' १३९ । 'शून्य रिक्ते' १४० । 'दान कुत्सिते' १४१ । 'तनु सूत्रे' १४२' । 'ईयसश्च' १४३ । ज्ञात अज्ञात । कुमारीक्रीडनकानि च (कुमारक्रीडनकानि च) ।। **इति यावादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, कन्	**३०. लोहितान्मणौ २०९८ ।** ** लोहिताल्लिङ्गबाधनं वा ।* ** नवस्य नू आदेशः त्नप्तनप्खाश्च प्रत्यया वक्तव्याः ।* ** नश्च पुराणे प्रात् ।*	लो-त् ३२	मणि अर्थ में लोहित शब्द से कन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कन्, लो-त्	**३१. वर्णे चानित्ये २०९९ ।**	अ-त्ये ३३	अनित्य वर्णार्थक लोहित से स्वार्थ में कन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कन्, लो-त्, अ-त्ये	**३२. रक्ते २१०० ।**	रक्ते ३३	रंगे गये अर्थ में लोहित से स्वार्थ में कन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कन्, रक्ते, अ-त्ये	**३३. कालाच्च २१०१ ।**		अनित्य और रक्त अर्थ में काल से कन् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**३४. विनयादिभ्यष्ठक् २१०२ ।**	ठक् ३५	विनय आदि शब्दों से स्वार्थ में ठक् होता है ।
	(२००) विनय समय । 'उपायो ह्रस्वत्वं च' १४४ । संप्रति संगति कथंचित् अकस्मात् समाचार उपचार समाय (समयाचार) व्यवहार संप्रदान समुत्कर्ष समूह विशेष अत्यय ।। **इति विनयादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, ठक्	**३५. वाचो व्याहृतार्थायाम् २१०३ ।**	व्या-म् ३६	अर्थ प्रकाशक वाच् शब्द से स्वार्थ में ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, व्या-म् **३६. तद्युक्तात्कर्मणोऽण् २१०४ ।** अण् ३८
** अणप्रकरणे कुलालवरुडनिषादचण्डालामित्रेभ्यश्छन्दसि ।*
** भागरूपनामभ्यो धेयः ।*
** मित्राच्च छन्दसि ।*
** आग्नीध्रसाधारणादञ् ।*
** अवयसमरुद्भ्यां छन्दसि ।*
अर्थ प्रकाशक वाग्युत कर्माभिधायी कर्मन् से अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, अण् **३७. ओषधेरजातौ २१०५ ।**
अजाति में वर्तमान ओषधि से स्वार्थ में अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, अण् **३८. प्रज्ञादिभ्यश्च २१०६ ।**
प्रज्ञआदि शब्दों से स्वार्थ में अण् होता है ।

(२०१) प्रज्ञ वणिज् उशिज्, उष्णिज् प्रत्यक्ष [विद्वस्] विदन् षोडन् विद्या मनस् । 'श्रोत्र शरीरे' १४५ । जुह्वत् । 'कृष्ण मृगे' १४६ । चिकीर्षत् चोर शत्रु योध चक्षुस् वसु (एनस्) मरुत् क्रुञ्च सत्वन्तु दशार्ह वयस् (व्याकृत) असुर रक्षस् पिशाच अशनि कार्षापण देवता बन्धु ॥ **इति प्रज्ञादिः ॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः **३९. मृदस्तिकन् २१०७ ।** मृदः ४०
मृद् से स्वार्थ में तिकन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, मृदः **४०. सस्नौ प्रशंसायाम् २१०८ । ॥ २ ॥** प्र-म् ४१
प्रशंसा अर्थ में मृद् से स और स्न होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, प्र-म् **४१. वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्तातिलौ च च्छन्दसि ३५०४ ।**
प्रशंसार्थ में वृक और ज्येष्ठ से क्रमशः वेद में तिल् और तातिल् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः **४२. बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम् २१०९** शस् ४३, अ-म् ४९
** बहल्पार्थान्मङ्गलामङ्गलवचनम् ।*
कारकाभिधायी बहु और अल्प से विकल्पेन शस् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, शस्, अ-म् **४३. संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् २११० ।**
संख्यावाची शब्दों से तथा एकवचनार्थ शब्दों से वीप्सा में विकल्प से शस् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, अ-म् **४४. प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः २१११ ।** प-म्याः ४५, तसिः ४९
** आद्यादिभ्य उपसंख्यानम् ।*
(२०२) (वा० ग०) । आदि मध्य अन्त पृष्ठ पार्श्व ॥ **इत्याद्यादिः ॥ आकृतिगणः ॥**
प्रतियोग में विहित पञ्चमी से तसि होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, तसिः, अम्, प-म्याः **४५. अपादाने चाहीयरुहोः २११२ ।**
अपादान प्रयुक्त पञ्चमी से विकल्पेन तसि प्रत्यय होता है, **जबकि** जहाति और रुह का प्रयोग न हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, तसिः, अम्	**४६. अतिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वकर्तरि तृतीयायाः २११३ ।**	अति-याः ४७	अतिग्रह अव्यथन क्षेप में बने तृतीयान्त शब्दों से विकल्पेन तसि होता है, यदि वह तृतीया कर्ता में न हुई हो ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, तसिः, अम्, अति-याः	**४७. हीयमानपापयोगाच्च २११४ ।**		अकर्ता में तथा हीयमान और पाप के योग में बने तृतीयान्त से विकल्पेन तसि होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, तसिः, अ-म्	**४८. षष्ठ्या व्याश्रये २११५ ।**	षष्ठ्याः ४९	व्याश्रय में षष्ठ्यन्त से विकल्पेन तसि होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, तसिः, अम्, षष्ठ्याः	**४९. रोगाच्चापनयने २११६ ।**		रोगवाची शब्दों से हुये षष्ठ्यन्त से अपनयन में विकल्प से तसि होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः	**५०. कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः २११७** ** अभूततद्भाव इति वक्तव्यम् ।*	कृ-गे ५७ सं-रि ५२ च्विः ५१	सम्पद्यमान में वर्तमान शब्दों से कृ भू अस् के योग में च्वि प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कृ-गे, सं-रि, च्विः	**५१. अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च २१२१**		कृ भू अस् के योग में अरुष् अनस् चक्षुष् चेतस् रहस् रजस् के अन्त का लोप तथा च्वि भी होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कृ-गे, सं-रि	**५२. विभाषा साति कार्त्स्न्ये २१२२ ।**	विभाषा ५३ साति ५५	यदि कार्त्स्न्य गम्यमान हो तो इन्हीं स्थितियों में विकल्प से साति होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कृ-गे, साति, विभाषा	**५३. अभिविधौ संपदा च २१२४ ।**	संपदा ५५	अभिविधि में सम्पद् तथा कृन्वादि योग में च्व्यर्थ में साति विकल्प से होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कृ-गे, साति, संपदा	**५४. तदधीनवचने २१२५ ।**	त-ने ५५	पूर्व स्थिति में अधीनवचन में शब्दों से साति भी होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कृ-गे, साति, संपदा, त-ने	**५५. देये त्रा च २१२६ ।**	त्रा ५६	तदधीन देय वाच्य रहने पर पूर्व स्थिति में त्रा भी होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कृ-गे, त्रा	**५६. देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम् २१२७ ।**		द्वितीया सप्तम्यन्त देव मनुष्य पुरुष पुरु मर्त्य शब्दों से बहुलतया त्रा प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, कृ-गे	**५७. अव्यक्तानुकरणाद्द्व्यजवरार्धादनितौ डाच् २१२८ ।**	डाच् ६७	अनेकाच्क भाग युक्त अव्यक्तानुकरण शब्द से कृभ्वस्ति योग में डाच् होता है, यदि आगे इति न हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच् **५८. कृञो द्वितीयतृतीयशम्बबीजात्कृषौ २१२९**	कृञः ६७ कृषौ ५९	कृ के योग में द्वितीय तृतीय शम्बबीज शब्दों से डाच् होता है, यदि कृषि वाच्य हो।
ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच्, कृञः, कृषौ **५९. संख्यायाश्च गुणान्तायाः २१३०।**		यदि कृषि वाच्य हो तो गुणान्त संख्यावाची शब्दों से कृ योग में डाच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच्, कृञः **६०. समयाच्च यापनायाम् २१३१। ।।३।।**		यापना में समयशब्द से डाच् होता है कृ के योग में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच्, कृञः **६१. सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने २१३२।**		कृ के योग में अतिव्यथन में सपत्र निष्पत्र शब्द से डाच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच्, कृञः **६२. निष्कुलान्निष्कोषणे २१३३।**		निष्कोषण में निष्कुल शब्द से कृ के योग में डाच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच्, कृञः **६३. सुखप्रियादानुलोम्ये २१३४।**		आनुलोम्य में सुख प्रिय शब्द से कृ के योग में डाच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच्, कृञः **६४. दुःखात्प्रातिलोम्ये २१३५।**		प्रातिलोम्य में दुःख से कृ योग मे डाच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच्, कृञः **६५. शूलात्पाके २१३६।**		कृ के योग में शूल शब्द से पाक अर्थ में डाच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच्, कृञः **६६. सत्यादशपथे २१३७।**		सत्य से कृ के योग में अशपथ अर्थ में डाच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, डाच्, कृञः **६७. मद्रात्परिवापणे २१३८।** ** भद्राच्चेति वक्तव्यम्।*		परिवापण में मद्र से कृ योग में डाच् होता है।
समासान्त प्रत्ययाः		
ङ्या-त्, तद्धिताः **६८. समासान्ताः ६७६।**	स-न्ताः १६०	पाद समाप्ति तक समासान्ताः का अधिकार है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः **६९. न पूजनात् ९५४।** ** स्वतिभ्यामेव।*	न ७२	पूजनवाची शब्दों से समासान्त प्रत्यय नहीं होते हैं।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, न **७०. किमः क्षेपे ९५५।**		क्षेपार्थ क़िम् से परे समासान्त नहीं होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, न **७१. नञस्तत्पुरुषात् ९५६।**	न-षात् ७२	नञ् से परे तत्पुरुष से समासान्त नहीं होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, न, न-षात् **७२. पथो विभाषा ९५७।**		नञ् से परे पथिन् (तत्पुरुष) से समासान्त प्रत्यय विकल्प से होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः **७३. बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात् ८५१।** ** संख्यायास्तत्पुरुषस्य वाच्यः।*		संख्येय में होने वाले बहुव्रीहि में अबहुगण से डच् होता है।

सर्वसमासान्तप्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७४. ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे ९४० ।**
स-न्ताः ** अनृचबह्वृचावध्येतर्येव ।*

अक्ष को छोड़कर ऋक् पुर् अप् धुर् पथिन् शब्दों से समासान्त अ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७५. अच्प्रत्यन्ववपूर्वात्सामलोम्नः ९४३ ।** अच् ८७
स-न्ताः ** कृष्णोदक्पाण्डुसंख्यापूर्वाया भूमेरजिष्यते ।*

प्रति अनु अव पूर्वक सामान्त लोमान्त से अच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७६. अक्ष्णोऽदर्शनात् ९४४ ।**
स-न्ताः, अच्

दर्शनातिरिक्त अक्षि से समासान्त अच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७७. अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्-सामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तंदिवरात्रिंदिवाहर्दिवसरजसनिः-श्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजा-तोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः ९४५ ।**
स-न्ताः, अच्
** त्र्युपाभ्यां चतुरोऽजिष्यते ।*

अचतुर विचतुर सुचतुर स्त्रीपुंस धेन्वनुडुह ऋक्साम वाङ्मनस अक्षिभ्रुव दारगव उर्वष्ठीव पदष्ठीव नक्तंदिव रात्रिंदिव अहर्दिव सरजस निःश्रेयस पुरुषायुष द्व्यायुष त्र्यायुष ऋग्यजुष जातोक्ष महोक्ष वृद्धोक्ष उपशुन गोष्ठश्व शब्द अच्प्रत्ययान्त निपातित होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७८. ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः ९४६ ।**
स-न्ताः, अच् ** पल्यराजभ्यां च ।*

ब्रह्म हस्ति पूर्वक वर्चस् से समासान्त अच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **७९. अवसमन्धेभ्यस्तमसः ९४७ ।**
स-न्ताः, अच्

अव सम् अन्ध पूर्वक तमस् शब्दान्त से समासान्त अच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८०. श्वसो वसीयःश्रेयसः ९४८ ।। ४ ।।**
स-न्ताः, अच्

श्वस् पूर्वक वसीयस् और श्रेयस् से समासान्त अच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८१. अन्ववतप्ताद्रहसः ९४९ ।**
स-न्ताः, अच्

अनु अव तप्त से परे रहस् शब्द से समासान्त अच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८२. प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात् ९५० ।**
स-न्ताः, अच्

प्रतिपूर्वक उरस् शब्द से समासान्त अच् होता है, यदि उरस् सप्तमी के अर्थ में हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८३. अनुगवमायामे ९५१ ।**
स-न्ताः, अच्

आयाम में अनुगवम् का निपातन होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८४. द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ९५२ ।**
स-न्ताः, अच्

यदि वेदि विवक्षित हो तो द्विस्तावा त्रिस्तावा बनते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८५. उपसर्गादध्वनः ९५३ ।**
स-न्ताः, अच्

उपसर्गपूर्वक अध्वन् से समासान्त अच् होता है ।

तत्पुरुषसमासान्त प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, **८६. तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः ७८६ ।** त-स्य १०५
स-न्ताः, अच् सं-देः ८८

संख्यादि अव्ययादि अङ्गुल्यन्त तत्पुरुष से समासान्त अच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, अच्, त-स्य, सं-देः	**८७. अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः ७८७ ।** ** अहर्ग्रहणं द्वन्द्वार्थम् ।*		अहन् सर्व एकदेश संख्यात पुण्य पूर्वक तथा संख्यादि अव्ययादि रात्र्यन्त तत्पुरुष से समासान्त अच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, त-स्य, सं-देः	**८८. अह्नोऽह्न एतेभ्यः ७९० ।**	अ-ऽह्नः ९०	सर्वादि से परे अहन् को अह्न आदेश होता है समासान्त में।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, त-स्य, अ-ऽह्न	**८९. न संख्यादेः समाहारे ७९३ ।**		संख्यादि तत्पुरुष यदि समाहार में हो तो अहन् को अह्न आदेश नहीं होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, त-स्य, अ-ऽह्न	**९०. उत्तमैकाभ्यां च ७९४ ।**		उत्तम एक से परे अहन् को अह्न नहीं होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, त-स्य	**९१. राजाहःसखिभ्यष्टच् ७८८ ।**	टच् ११२	राजन् अहन् सखि अन्त वाले शब्दों से टच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, त-स्य	**९२. गोरतद्धितलुकि ७२९ ।**		गो शब्दान्त तत्पुरुष से टच् होता है, यदि तत्पुरुष तद्धितलुक् विषयक न हो।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः टच्, त-स्य	**९३. अग्राख्यायामुरसः ७९५ ।**		अग्राख्या में उरस् शब्दान्त तत्पुरुष से टच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, त-स्य	**९४. अनोश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः ७९६ ।**		जाति और संज्ञा में अनस् अश्मन् अयस् सरस् शब्दान्त तत्पुरुष से टच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः टच्, त-स्य	**९५. ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः ७९७ ।**		ग्राम कौट पूर्वक तक्षन् से तत्पुरुष में टच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच् त-स्य	**९६. अतेः शुनः ७९८ ।**	शुनः ९७	अतिपूर्वक श्वन् से तत्पुरुषान्त टच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, त-स्य, शुनः	**९७. उपमानादप्राणिषु ७९९ ।**	उ-त् ९८	अप्राणी में वर्तमान उपमान वाची श्वन् से तत्पुरुषान्त टच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, त-स्य, उ-त्	**९८. उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः ८०० ।**		उत्तर मृग पूर्व पूर्वक तथा उपमान पूर्वक सक्थि से समासान्त टच् होता है।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः टच्, त-स्य	**९९. नावो द्विगोः ८०१ ।**	नावः १०० द्विगोः १०१	नौ शब्दान्त द्विगु से समासान्त टच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, त-स्य, द्विगोः, नावः **१००. अर्धाच्च ८०२** ।।५।। अर्धात् १०१ — अर्धपूर्वक नौ से तत्पुरुषान्त टच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, त-स्य, द्विगोः, अ-त् **१०१. खार्याः प्राचाम् ८०३** । — खारी शब्दान्त द्विगु तथा अर्द्धपूर्वक खारी से टच् होता है, पूर्वाचार्य के मत से।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः टच्, त-स्य **१०२. द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ८०४** । — द्वि त्रि पूर्वक अञ्जलि से समासान्त टच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः टच्, त-स्य **१०३. अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि ३५०५** । — वेद में नपुंसक अन्नन्त असन्त से तत्पुरुषान्त टच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, त-स्य **१०४. ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ८०५** । ब्रह्मणः १०५ — यदि समास से जनपद बताया जाय तो ब्रह्मन् से तत्पुरुषान्त टच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, त-स्य, ब्रह्मणः **१०५. कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम् ८०६** । — कु महत् पूर्वक ब्रह्मन् से विकल्पेन तत्पुरुषान्त टच् होता है।

द्वन्द्व समासान्त प्रत्ययः

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच् **१०६. द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे ९३०** । — समाहार में वर्तमान चवर्गान्त दकारान्त षान्त हान्त द्वन्द्व से टच् होता है।

अव्ययीभाव समासान्त प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच् **१०७. अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः ६७७** । अ-ये ११२ — अव्ययीभाव में शरद् आदि शब्दों से टच् होता है।

(२०२) शरद् विपाश् अनस् मनस् उपानह् अनुडुह् दिव हिमवत् हिरुक् विद् सद् दिश् दृश् विश् चतुर त्यद् तद् यद् कियत्। 'जराया जरस् च' १४७। 'प्रतिपरसमनुभ्योऽक्ष्णः १४८। पथिन्॥ **इति शरदादिः** ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः टच्, अ-ये **१०८. अनश्च ६७८** । अनः १०९ — अन्नन्त अव्ययीभाव से समासान्त टच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, अनः, अ-ये **१०९. नपुंसकादन्यतरस्याम् ६८०** । अ-म् १११ — नपुंसक अन्नन्त अव्ययीभाव से विकल्पेन समासान्त टच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, अ-ये, अ-म् **११०. नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ६८१** । — नदी पौर्णमासी आग्रहायणी अन्त वाले अव्ययीभाव से विकल्पेन टच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, अ-ये, अ-म् — **१११. झयः ६८२ ।** — झयन्त अव्ययीभाव से विकल्पेन टच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, टच्, अ-ये — **११२. गिरेश्च सेनकस्य ६८३ ।** — सेनक के मत में गिरिशब्दान्त अव्ययीभाव से विकल्पेन टच् होता है।

बहुव्रीहि समासान्त प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः — **११३. बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् ८५२** ब-हौ १६० षच् ११४ — स्वाङ्गवाची सक्थ्यन्त अक्ष्यन्त बहुव्रीहि से समासान्त षच् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, षच् — **११४. अङ्गुलेर्दारुणि ८५३ ।** — दारु के लिये प्रयुक्त अङ्गुल्यन्त बहुव्रीहि से षच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ — **११५. द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ८५४ ।** — द्वित्रि पूर्वक मूर्धन् अन्तवाले बहुव्रीहि से ष होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ — **११६. अप्पूरणीप्रमाण्योः ८३२ ।** अप् ११७ — स्त्रीलिङ्ग पूरण प्रत्ययान्त तथा प्रमाणी अन्त वाले बहुव्रीहि से अप् प्रत्यय होता है।

** नेतुर्नक्षत्रेऽब्वक्तव्यः ।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, अप् — **११७. अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः ८५५ ।** — अन्तर् बहिस् पूर्वक लोमन् शब्दान्त बहुव्रीहि से अप् प्रत्यय होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ — **११८. अञ्नासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात् ८५६ ।** अच् १२१ ना-याः ११९ — नासिका शब्दान्त बहुव्रीहि से संज्ञा में अच् होता है तथा नासिका को नस हो जाता है पर नासिका के पूर्व में स्थूल शब्द न हो।

** खुरखराभ्यां वा नस् ।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, अ-च्, ना-याः — **११९. उपसर्गाच्च ८५८ ।** — उपसर्ग पूर्वक नासिकान्त बहुव्रीहि से अच् होता है तथा नासिका को नस हो जाता है।

** वेर्ग्रो वक्तव्यः ।*

** ख्यश्च ।*

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, अच् — **१२०. सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः ८६० ॥ ६ ॥** — सुप्रात सुश्व सुदिव शारिकुक्ष चतुरश्र एणीपद अजपद प्रोष्ठपद निपातित होते हैं।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, अच् — **१२१. नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यतरस्याम् ८६१ ।** न-भ्यः १२२ — नञ् दुस् सु पूर्वक हल्यन्त सक्थ्यन्त बहुव्रीहि से विकल्पेन समासान्त अच् होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः ब-हौ न-भ्यः — **१२२. नित्यमसिच्प्रजामेधयोः ८६२ ।** असिच् १२३ — नञ् दुस् सु पूर्वक प्रजान्त मेधान्त बहुव्रीहि से नित्य अच् होता है।

ङ्या-त् तद्धिताः स-न्ताः, ब-हौ, असिच् — **१२३. बहुप्रजाश्छन्दसि ३५०६ ।** — वेद में बहुप्रजा शब्द निपातित होता है।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ	**१२४. धर्मादनिच्केवलात् ८६३ ।**	अनिच् १२६	केवल (एक) पद पूर्वक धर्मान्त बहुव्रीहि से अनिच् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, अनिच्	**१२५. जम्भा सुहरिततृणसोमेभ्यः ८६४ ।**		सु हरित तृण सोम पूर्वक जम्भा शब्दान्त बहुव्रीहि निपातित होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः ब-हौ अनिच्	**१२६. दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ८६५ ।**		लुब्धयोग में दक्षिणेर्मा शब्द निपातित होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ	**१२७. इच्कर्मव्यतिहारे ८६६ ।**	इच् १२८	कर्मव्यतिहार में बहुव्रीहि से इच् प्रत्यय होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, इच्	**१२८. द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ८६७ ।**		द्विदण्डि आदि शब्दों से भी इच् प्रत्यय होता है ।
	(२०४) द्विदण्डि द्विमुसलि उभाञ्जलि उभयाञ्जलि उभादन्ति उभयादन्ति उभाहस्ति उभयाहस्ति उभाकर्णि उभयाकर्णि उभापाणि उभयापाणि उभाबाहु उभयाबाहु एकपदि प्रोष्ठपदि आच्पदि (आढ्यपदि) सपदि निकुच्यकर्णि संहृतपुच्छि अन्तेवासि ।। **इति द्विदण्ड्यादिः ।।**		
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ	**१२९. प्रसंभ्यां जानुनोर्ज्ञुः ८६८ ।**	जा-ज्ञुः १३०	बहुव्रीहि में प्र सम् पूर्वक जानु शब्द को ज्ञु आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः ब-हौ जा-ज्ञुः	**१३०. ऊर्ध्वाद्विभाषा ८६९ ।**		ऊर्ध्वशब्दोत्तर जानु को विकल्प से ज्ञु होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ	**१३१. ऊधसोऽनङ् ४८३ ।**	अनङ् १३३	ऊधस् शब्दान्त बहुव्रीहि को अनङ् आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः ब-हौ अनङ्	**१३२. धनुषश्च ८७० ।**	धनुषः १३३	धनुष् शब्दान्त बहुव्रीहि को अनङ् आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, अनङ्, धनुषः	**१३३. वा संज्ञायाम् ८७१ ।**		धनुष् शब्दान्त बहुव्रीहि को संज्ञा में विकल्पेन अनङ् होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ	**१३४. जायाया निङ् ८७२ ।**		जाया शब्दान्त बहुव्रीहि को निङ् आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ	**१३५. गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः ८७४ ।** **** गन्धस्येत्त्वे तदेकान्तग्रहणम् ।***	ग-येत् १३७	उत् पूति सु सुरभि पूर्वक गन्ध को बहुव्रीहि में समासान्त इकार आदेश होता है ।
ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, ग-येत्	**१३६. अल्पाख्यायाम् ८७५ ।**		अल्पार्थवाची गन्धान्त बहुव्रीहि में इकारादेश होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-न्ताः, ब-हौ, ग-येत् **१३७. उपमानाच्च ८७६ ।** उ-त् १३८ उपमान पूर्वक गन्धान्त बहुव्रीहि में इकारादेश होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, उ-त् **१३८. पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः ८७७ ।** हस्तिन् आदि उपमानों को छोड़कर उपमान पूर्वक पादान्त बहुव्रीहि में अन्त्य अ का लोप होता है ।

(२०५) हस्तिन् (कुद्दाल अश्व कशिक कुरुत) कटोल कटोलक गण्डोल गण्डोलक कण्डोल कण्डोलक अज कपोत जाल गण्ड महेला दासी गणिका कुसूल ॥ **इति हस्त्यादिः ॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ **१३९. कुम्भपदीषु च ८७८ ।** कुम्भपदी आदि शब्द निपातित होते हैं ।

(२०६) कुम्भपदी एकपदी जालपदी (शूलपदी) मुनिपदी गुणपदी शतपदी सूत्रपदी गोधापदी कलशीपदी विपदी (तृणपदी) द्विपदी त्रिपदी षट्पदी दासीपदी शितिपदी विष्णुपदी सुपदी निष्पदी आर्द्रपदी कुणिपदी कृष्णपदी शुचिपदी द्रोणीपदी (द्रोणपदी) द्रुपदी सूकरपदी शकृत्पदी अष्टापदी स्थूणापदी अपदी सूचीपदी ॥ **इति कुम्भपद्यादिः ॥**

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ **१४०. संख्यासुपूर्वस्य ८७९ ॥ ७ ॥** सं-स्य १४१ संख्या और सु पूर्वक पादान्त बहुव्रीहि में अन्त्य का लोप होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ, सं-स्य **१४१. वयसि दन्तस्य दतृ ८८० ।** दन्-तृ १४५ यदि वय वाच्य हो तो संख्या और सु पूर्वक दन्त को दतृ आदेश होता है बहुव्रीहि में ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-न्ताः, ब-हौ, दन्-तृ **१४२. छन्दसि च ३५०७ ।** वेद में भी संख्या सु पूर्वक दन्त को दतृ होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-न्ताः, ब-हौ, दन्-तृ **१४३. स्त्रियां संज्ञायाम् ८८१ ।** संज्ञा में दन्त को दतृ होता है स्त्रीलिङ्ग बहुव्रीहि में ।

ङ्या-त् तद्धिताः स-न्ताः, ब-हौ, दन्-तृ **१४४. विभाषा श्यावारोकाभ्याम् ८८२ ।** विभाषा १४५ श्याव अरोक पूर्वक दन्त को विकल्प से दतृ होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः ब-हौ, दन्-तृ, विभाषा **१४५. अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च ८८३ ।** अग्रान्त तथा शुद्ध शुभ्र वृष वराह पूर्वक दन्त को दतृ आदेश विकल्प होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः, ब-हौ **१४६. ककुदस्यावस्थायां लोपः ८८४ ।** लोपः १५० यदि अवस्था गम्यमान हो तो ककुदान्त बहुव्रीहि का अन्त्यलोप होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, स-न्ताः ब-हौ, लोपः **१४७. त्रिककुत्पर्वते ८८५ ।** यदि पर्वत वाच्य हो तो बहुव्रीहि में त्रिककुद के अन्त का लोप होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४८. उद्विभ्यां काकुदस्य ८८६ ।** का-स्य १४९ उत् वि पूर्वक काकुद का अन्त्यलोप बहुव्रीहि में होता है ।
स-न्ताः ब-हौ, लोपः

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१४९. पूर्णाद्विभाषा ८८७ ।** पूर्ण पूर्वक काकुद का विकल्पेन अन्त्य लोप होता है ।
स-न्ताः, ब-हौ, लोपः, का-स्य

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५०. सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः ८८८ ।** मित्र और अमित्र अर्थ में क्रमशः सुहृत् दुर्हृत् निपातित होते हैं ।
स-न्ताः ब-हौ, लोपः

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५१. उरःप्रभृतिभ्यः कप् ८८९ ।** कप् १५९ उरस् आदि शब्दान्त बहुव्रीहि से कप् प्रत्यय होता है ।
स-न्ताः, ब-हौ

(२०७) उरस् सर्पिस् उपानह पुमान् अनड्वान्
पयः नौः लक्ष्मीः दधि मधु शाली (शालिः) ।
('अर्थान्नञः) १४९ ॥ **इत्युरःप्रभृतयः ।**

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५२. इनः स्त्रियाम् ८९० ।** स्त्रीलिङ्ग में इन् अन्त वाले बहुव्रीहि से कप् होता है ।
स-न्ताः, ब-हौ, कप् **** अर्थान्नञः ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५३. नद्यृतश्च ८३३ ।** नद्यन्त तथा ऋकारान्त बहुव्रीहि से कप् होता है ।
स-न्ताः, ब-हौ, कप्

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५४. शेषाद्विभाषा ८९१ ।** जिस बहुव्रीहि में प्रत्यय का विधान न किया गया हो उनसे विकल्पेन कप् होता है ।
स-न्ताः, ब-हौ, कप्

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५५. न संज्ञायाम् ८९३ ।** न १६० संज्ञा में बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।
स-न्ताः, ब-हौ, कप्

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५६. ईयसश्च ८९४ ।** ईयसन्त बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।
स-न्ताः ब-हौ कप् न **** ईयसो बहुव्रीहिर्नेति वाच्यम् ।***

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५७. वन्दिते भ्रातुः ८९५ ।** वन्दितार्थक भ्रातृशब्दान्त बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।
स-न्ताः ब-हौ कप् न

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५८. ऋतश्छन्दसि ३५०८ ।** वेद में ऋवर्णान्त बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।
स-न्ताः ब-हौ कप् न

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१५९. नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ८९६ ।** स्वाङ्ग में नाडी तन्त्री अन्त वाले बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।
स-न्ताः ब-हौ कप् न

ङ्या-त्, तद्धिताः, **१६०. निष्प्रवाणिश्च ८९७** ॥ ८ ॥ निष्प्रवाणिः में कप् का प्रतिषेध होता है ।
स-न्ताः ब-हौ कप् न

पादशतस्य तत्प्रकृतवृकज्येष्ठाभ्यां सपत्रान्व-
वतप्तात्खार्या नञ्दुःसुभ्यो वयसि विंशतिः ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य चतुर्थः
पादः अध्यायश्च ।

।। अथ षष्ठोऽध्यायः ।।

प्रथमः पादः ।

द्वित्व प्रकरणम्

	१. एकाचो द्वे प्रथमस्य २१७५ ।	ए-स्य ११	एकाचः प्रथमस्य द्वे का अधिकार होगा ।
ए-स्य	**२. अजादेर्द्वितीयस्य २१७६ ।**	अ-स्य ११	अजादेः द्वितीयस्य का भी अधिकार होगा ।
ए-स्य, अ-स्य	**३. नन्द्राः संयोगादयः २४४६ ।** ** ईर्ष्यतेस्तृतीयस्येति वाच्यम् ।* ** कण्ड्वादीनां तृतीयस्येति वाच्यम् ।* ** यथेष्टं नामधातुषु ।*		अच् से परे संयोगादि न् द् र् को द्वे नहीं होता है ।
ए-स्य, अ-स्य	**४. पूर्वोऽभ्यासः २१७८ ।**		(द्वे में) पूर्व को अभ्यास कहा जाता है ।
ए-स्य, अ-स्य	**५. उभे अभ्यस्तम् ४२६ ।**	अ-तम् ६	दोनों की अभ्यस्त संज्ञा होती है ।
ए-स्य, अ-स्य, अ-तम्	**६. जक्षित्यादयः षट् ४२८ ।**		जक्ष जागृ दरिद्रा चकासृ शासु दीधीङ् वेवीङ् की अभ्यस्त संज्ञा होती है ।
ए-स्य, अ-स्य	**७. तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य ३५०९ ।** ** तुजादिषु छन्दः प्रत्ययग्रहणं कर्तव्यम् ।*	धा-स्य ११	तुज आदि के अभ्यास को वेद में दीर्घ होता है ।
ए-स्य, अ-स्य	**८. लिटि धातोरनभ्यासस्य २१७७ ।**		लिट् में धातु का अनभ्यास पर धात्वयव के प्रथम एकाच् तथा आदिभूत अच् से परे द्वितीय को यथायोग द्वित्व होता है ।
ए-स्य, अ-स्य, धा-स्य	**९. सन्यङोः २३९५ ।**		सन्नन्त यङन्त के अनभ्यास धात्वयव प्रथम एकाच् तथा आदिभूत अच् से परे द्वितीय को यथायोग द्वित्व होता है ।
ए-स्य, अ-स्य, धा-स्य	**१०. श्लौ २४९० ।**		श्लु में भी पूर्ववत् द्वित्व होता है ।
ए-स्य, अ-स्य, धा-स्य	**११. चङि २३१५ ।**		चङ् में भी पूर्ववत् द्वित्व होता है ।
	१२. दाश्वान्साह्वान्मीढ्वांश्च ३६२९ । ** चरिचलिपतिवदीनां वा द्वित्वमच्याक् चाभ्यासस्य ।*		दाश्वान् साह्वान् मीढ्वान् निपातित होते हैं ।

	** हन्तेर्घत्वं च ।*		
	** पाटेर्णिलुक् चोक्च दीर्घश्चाभ्यासस्य ।*		
	१३. ष्यङः संप्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे १००३	ष्यङः १४ स-म् ३१	पुत्र पति शब्द यदि उत्तरपद में हों तो तत्पुरुष में ष्यङ् को सम्प्रसारण होता है ।
स-म्, ष्यङः	**१४. बन्धुनि बहुव्रीहौ १००५ ।** ** मातज्मातृकमातृषु वा ।*		बहुव्रीहि में यदि बन्धु शब्द उत्तरपद में हो तो ष्यङ् को सम्प्रसारण होता है ।
स-म्	**१५. वचिस्वपियजादीनां किति २४०९ ।**	व-नां १७ किति १६	वच स्वप् यज वप वह वस वेञ् व्येञ् ह्वेञ् वद श्वि को कित् के यहाँ सम्प्रसारण होता है ।
स-म्, व-नां, किति	**१६. ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च २४१२ ।**	ग्र-नां १७	ग्रह ज्या वेञ् व्यध् वश व्यच व्रश्च् प्रच्छ भ्रस्ज को ङित् और कित् के यहाँ सम्प्रसारण होता है ।
स-म्, व-नां, ग्र-नां	**१७. लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् २४०८ ।**		उपरिलिखित वचादि ग्रहादि को लिट् के यहाँ अभ्यास को सम्प्रसारण होता है ।
स-म्	**१८. स्वापेश्चङि २५८४ ।**		ण्यन्त स्वप को चङ् के यहाँ सम्प्रसारण होता है ।
स-म्	**१९. स्वपिस्यमिव्येञां यङि २६४५ ।**	यङि २१	ष्वप स्यम व्येञ् को यङ् के यहाँ सम्प्रसारण होता है ।
स-म्, यङि	**२०. न वशः २६४६ । ॥ १ ॥**		वश को यङ् के यहाँ सम्प्रसारण नहीं होता है ।
स-म्, यङि	**२१. चायः की २६४७ ।**		चाय को यङ् के यहाँ की आदेश होता है ।
स-म्	**२२. स्फायः स्फी निष्ठायाम् ३०४४ ।**	नि-म् २८	स्फायी को निष्ठा में स्फी आदेश होता है ।
स-म्, नि-म्	**२३. स्त्यः प्रपूर्वस्य ३०३३ ।**		प्र पूर्वक स्त्यै ष्ट्यै को निष्ठा में सम्प्रसारण होता है ।
स-म्, नि-म्	**२४. द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः ३०२० ।**	श्यः २६	द्रवमूर्ति और स्पर्श अर्थ में वर्तमान श्यैङ् धातु को निष्ठा में सम्प्रसारण होता है ।
स-म्, नि-म्, श्यः	**२५. प्रतेश्च ३०२२ ।**		प्रतिपूर्वक श्यैङ् को निष्ठा में सम्प्रसारण होता है ।
स-म्, नि-म्, श्यः	**२६. विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य ३०२३ ।**	विभाषा २८	अभि अव पूर्वक श्यैङ् को निष्ठा में विकल्प से सम्प्रसारण होता है ।

स-म्, नि-म्, विभाषा	**२७. शृतं पाके ३०६७ ।**		श्रा पाके को क्त के यहाँ विकल्प से शृ हो जाता है ।
स-म्, नि-म्, विभाषा	**२८. प्यायः पी ३०७२ ।** ** आङ्पूर्वस्यान्धूधसोरिति वक्तव्यम् ।*	प्या-पी २९	प्यायी को निष्ठा में विकल्प से पी होता है ।
स-म्, प्या-पी	**२९. लिड्यङोश्च २३२७ ।**	लि-डो: ३०	लिट् और यङ् में प्यायी को पी होता है ।
स-म्, लि-ङो:	**३०. विभाषा श्वेः २४२० ।**	वि-श्वे: ३१	श्वि को लिट् यङ् में विकल्प से सम्प्रसारण होता है ।
स-म्, विश्वे:	**३१. णौ च संश्चङोः २५७९ ।**	णौ, सं-ङो: ३२	सन् परक यङ्परक णि के यहाँ श्वि को विकल्प से सम्प्रसारण होता है ।
णौ, सं-ङो:,	**३२. ह्वः संप्रसारणम् २५८६ ।**	सं-म् ४४ ह्व: ३४	सन्परक यङ्परक णि के यहाँ ह्वा को सम्प्रसारण होता है ।
सं-म्, ह्व:	**३३. अभ्यस्तस्य च २४१७ ।**		अभ्यस्तीभूत ह्वेञ् (ह्वा) को सम्प्रसारण होता है ।
सं-म्, ह्व:	**३४. बहुलं छन्दसि ३५१० ।**	व-ल ३५ छ-सि ३६	वेद में ह्वा को बहुलतया सम्प्रसारण होता है ।
सं-म्, छसि, व-ल	**३५. चायः की ३५११ ।**		वेद में चाय को बहुलत: की होता है ।
सं-म्, छसि	**३६. अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याजश्राताःश्रितमाशीराशीर्ताः ३५१२ ।**		वेद में अपस्पृधेथाम् आनृचु: आनृहु: चिच्युषे तित्याज श्राता: श्रितम् आशीरा आशीर्त: निपातनात् बनते हैं ।
सं-म्	**३७. न संप्रसारणे संप्रसारणम् ३६३ ।** ** रयेर्मतौ बहुलम् ।* ** ऋचि त्रेरुत्तरपदादिलोपश्छन्दसि ।*	न ४४	सम्प्रसारण परे रहने पर पूर्व यण् को सम्प्रसारण नहीं होता है ।
सं-म्, न	**३८. लिटि वयो यः २४१३ ।**	लिटि ४०	लिट् के यहाँ वय् के य को सम्प्रसारण नहीं होता है ।
सं-म्, न, लिटि	**३९. वश्चास्यान्यतरस्यां किति २४१४ ।**		वय् के व को कित् लिट् में विकल्प से व होता है ।
सं-म्, न, लिटि	**४०. वेञः २४१५** ।। २ ।।	वेञ: ४१	वेञ् को लिट् के यहाँ सम्प्रसारण नहीं होता है ।
सं-म्, न, वेञ:	**४१. ल्यपि च ३३३९ ।**	ल्यपि ४४	ल्यप् के यहाँ वेञ् को सम्प्रसारण नहीं होता है ।
सं-म्, न, ल्यपि	**४२. ज्यश्च ३३४० ।**		ज्या को ल्यप् के यहाँ सम्प्रसारण नहीं होता है ।

सं-म्, न, ल्यपि	**४३. व्यश्च ३३४१ ।**	व्यः ४४	व्येञ् को ल्यप् के यहाँ सम्प्रसारण नहीं होता है।
सं-म्, न, ल्यपि, व्यः	**४४. विभाषा परेः ३३४२ ।**		परिपूर्वक व्येञ् को ल्यप् के यहाँ विकल्प से सम्प्रसारण होता है।

आत्व विधि प्रकरणम्

	४५. आदेच उपदेशेऽशिति २३७० ।	आ-चः ५७ उ-शे ६५	उपदेश में एजन्त धातु को आ होता है, शित् के यहाँ नहीं होता है।
उ-शे, आ-चः	**४६. न व्यो लिटि २४१६ ।**		व्येञ् को लिट् के यहाँ आकार नहीं होता है।
उ-शे, आ-चः	**४७. स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ३१८५ ।**		स्फुर स्फुल के एच् को घञ् में आ होता है।
उ-शे, आ-चः	**४८. क्रीङ्जीनां णौ २६०० ।**	णौ ४९	णि परे रहने पर क्री इङ् जि के एच् को आ होता है।
उ-शे, आ-चः, णौ	**४९. सिद्ध्यतेरपारलौकिके २६०२ ।**		अपारलौकिक अर्थ में षिधु के एच् को णि के यहाँ आकार आदेश होता है।
उ-शे, आ-चः	**५०. मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च २५०८ ।**	ल्यपि ५१	मीञ् मिञ् दीङ् को ल्यप् के यहाँ तथा एज्निमित्त अशित् रहने पर आ होता है।
उ-शे, आ-चः, ल्यपि	**५१. विभाषा लीयतेः २५०९ ।** ** प्रलम्भनशालिनीकरणयोश्च णौ नित्यमात्त्वम् ।*	विभाषा ५६	ली लीङ् को आ होता है विकल्प से ल्यप् तथा एच् के विषय में।
उ-शे, आ-चः, विभाषा	**५२. खिदेश्छन्दसि ३५१३ ।**		वेद में खिद को एच् के स्थान में विकल्प से आ होता है।
उ-शे, आ-चः, विभाषा	**५३. अपगुरो णमुलि ३३७५ ।**		अप पूर्वक गुरी धातु को एच् के स्थान में णमुल् में विकल्प से आ होता है।
उ-शे, आ-चः, विभाषा	**५४. चिस्फुरोर्णौ २५६९ ।**	णौ ५७	णि के यहाँ चिञ स्फुर को एच् के स्थान में विकल्प से आ होता है।
उ-शे, आ-चः, विभाषा, णौ	**५५. प्रजने वीयतेः २६०३ ।**		प्रजनार्थ वी को णि के यहाँ विकल्प से आ होता है।
उ-शे, आ-चः, विभाषा, णौ	**५६. बिभेतेर्हेतुभये २५९३ ।**	हे-ये ५७	हेतुभय में ञिभी को विकल्प से णि के यहाँ आ होता है।
उ-शे, आ-चः, हे-ये, णौ	**५७. नित्यं स्मयतेः २५९६ ।**		हेतुभय में स्मिङ् को नित्य आ होता है णि के यहां ।

उ-शे	**५८. सृजिदृशोर्झल्यमकिति २४०५ ।**	झ-ति ५९	झलादि अकित् प्रत्यय के यहाँ सृज दृशिर् धातु को अम् का आगम होता है ।
उ-शे, झ-ति	**५९. अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् २४०२**		उपदेश में अनुदात्त ऋकारोपध धातु को झलादि अकित् प्रत्यय के यहाँ विकल्प से अम् का आगम होता है ।
उ-शे	**६०. शीर्षंश्छन्दसि ३५१४ ।। ३ ।।**	शीर्ष न् ६१	वेद में शीर्षन् शब्द निपातित होता है ।
उ-शे, शीर्ष न्	**६१. ये च तद्धिते १६६७ ।** * वा केशेषु । * अचि शीर्षः ।		यकारादि तद्धित परे रहने पर शिरस् को शीर्षन् आदेश होता है ।
+ उ-शे	**६२. (अचि शीर्षः) १६६७ ।** * छन्दसि च ।		अजादि तद्धित परे रहने पर शिरस् को शीर्ष आदेश होता है ।
उ-शे	**६३. पद्दन्नोमास्हृन्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नु-दन्नासञ्छस्प्रभृतिषु २२८ ।** * मांसपृतनासानूनां मांस्पृत्स्नवो वाच्याः । * नस् नासिकाया यत्तस् क्षुद्रेषु । * वर्णनगरयोर्नेति वक्तव्यम् ।		शस् आदि प्रत्ययों के यहाँ पाद दन्त नासिका मास हृदय निशा असृज् यूष दोष यकृद् शकृत् उदक आसन को क्रमशः पद् दत् नस् मास् हृत् निश् असन् यूषन् दोषन् यकन् शकन् उदन् आसन् आदेश होते हैं ।
उ-शे	**६४. धात्वादेः षः सः २२६४ ।** * सुब्धातुष्ठिवुष्वष्कतीनां सत्वप्रतिषेधो वक्तव्यः ।	धात्वादेः ६५	धातु के आदि ष् को स् होता है ।
उ-शे, धात्वादेः	**६५. णो नः २२८६ ।**		धातु के आदि के ण् को न् होता है ।
	६६. लोपो व्योर्वलि ८७३ ।	लोपः ७०	प्रत्येक प्रकार के व् य् का वल् परे रहने पर लोप होता है ।
लोपः	**६७. वेरपृक्तस्य ३७५ ।**		अपृक्त व् (वि सम्बन्धी) का लोप होता है ।
लोपः	**६८. हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् २५२**	हल् ६९	हलन्त दीर्घ ङी आप् से परे सु ति सम्बन्धी अपृक्त हल् का लोप होता है ।
लोपः, हल्	**६९. एङ्ह्रस्वात्संबुद्धेः १९३ ।**		एङन्त ह्रस्वान्त से परे सम्बुद्धि के हल् का लोप होता है ।

+ यद्यपीदं वार्तिकम् तथापि काशिकायां सूत्रत्वेन गृहीतम् ।

लोपः	**७०. शेश्छन्दसि बहुलम् ३५१६ ।**		वेद में शि का बहुल प्रकार से लोप होता है।
	तुग् विधि प्रकरणम्		
	७१. ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् २८५८ ।	ह्र-य ७३ तुक् ७६	पित् कृत् परे रहने पर ह्रस्व को तुक् का आगम होता है।
	७२. संहितायाम् १४५ ।	सं-यां १५७	यहाँ से 'अनुदात्तं पदमेकवर्जम्' तक संहिता का अधिकार है।
सं-यां, ह्र-य, तुक्	**७३. छे च १४६ ।**	छे ७६	संहिता में छ परे रहने पर ह्रस्व को तुक् का आगम होता है।
सं-यां, छे, तुक्	**७४. आङ्माङोश्च १४७ ।**		छ परे रहने पर आङ् माङ् को तुक् आगम होता है।
सं-यां, छे, तुक्	**७५. दीर्घात् १४८ ।**	दीर्घात् ७६	छ परे रहने पर दीर्घ स्वर को तुक् आगम होता है।
सं-यां, छे, तुक्, दीर्घात्	**७६. पदान्ताद्वा १४९ ।** ** (विश्वजनादीनां छन्दसि तुग्वा वक्तव्यः ।)*		पदान्त दीर्घ को विकल्प से तुक् होता है छ के यहाँ।
सं-यां	**७७. इको यणचि ४७ ।**	अचि १२३	अच् परे रहने पर इक् को यण् आदेश होता है।
सं-यां, अचि	**७८. एचोऽयवायावः ६१ ।**	एचः ८०	अच् पर रहने पर एच् को क्रमशः अय् अव् आय् आव् आदेश होते हैं।
सं-यां, एचः, अचि	**७९. वान्तो यि प्रत्यये ६३ ।** ** गोर्यूतौ च्छन्दस्युपसंख्यानम् ।* ** अध्वपरिमाणे च ।*	वान्तः ८० यि-ये ८३	यकारादि प्रत्यय परे रहने पर ओ-औ को अव् आव् होते हैं।
सं-यां, एचः, अचि, वान्तः, यि-ये	**८०. धातोस्तन्निमित्तस्यैव ६४ ।। ४ ।।**	धातोः ८३	धातु सम्बन्धी ए, ओ को अव् आव् होते हैं यदि उस ए ओ के बाद यकारादि प्रत्यय हों जो तन्निमित्त हों।
सं-यां, अचि, धातोः, यि-ये	**८१. क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ६५ ।**		शक्यार्थ में क्षय्य जय्य का निपातन होता है।
सं-यां, अचि, धातोः, यि-ये	**८२. क्रय्यस्तदर्थे ६६ ।**		तदर्थ में क्रय्य का निपातन होता है।
सं-यां, अचि, धातोः, यि-ये	**८३. भय्यप्रवय्ये च च्छन्दसि ३५१७ ।** ** हदय्या उपसंख्यानम् ।* ** शरस्य च अवादेशो भवतीति वक्तव्यम् ।*		वेद में भय्य प्रवय्य का निपातन होता है।

	एकादेश:		
सं-यां, अचि	**८४. एकः पूर्वपरयोः ६८ ।**	ए-योः ११२	यहाँ से 'ख्यत्यात् परस्य' सूत्र तक 'पूर्वपरयोः एकः' का सन्निवेश करना चाहिये ।
सं-यां, ए-योः, अचि	**८५. अन्तादिवच्च ७५ ।**		पूर्व पर के स्थान में होने वाला एकादेश पूर्व को अन्तवत् पर को आदिवत् होता है ।
सं-यां, ए-योः, अचि	**८६. षत्वतुकोरसिद्धः ३३३३ ।**		षत्व तुक् कर्त्तव्य में एकादेश असिद्ध होता है ।
	एकादेशे गुण:		
सं-यां, ए-योः, अचि	**८७. आद्गुणः ६९।**	आत् ९६	अ के बाद यदि अच् हो तो अ और अच् को गुण एकादेश होता है ।
	ऐकादेशे वृद्धि:		
सं-यां, ए-योः, अचि, आत्	**८८. वृद्धिरेचि ७२ ।**	वृद्धिः ९२ एचि ८९	अ के बाद यदि एच् हो तो अ और एच् को वृद्धि एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अचि, आत्, वृद्धिः, एचि	**८९. एत्येधत्यूठ्सु ७३ ।** * *अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् ।* * *स्वादीरेरिणोः ।* * *प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु ।* * *ऋते च तृतीयासमासे ।* * *प्रवत्सतरकम्बलवसनदशार्णानामृणे ।*		अ के बाद यदि एति एधति ऊठ् हो तो पूर्वपर के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अचि, आत्, वृद्धि:	**९०. आटश्च २६९ ।**		आट् के बाद यदि अच् हो तो पूर्वपर के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अचि, आत्, वृद्धि:	**९१. उपसर्गादृति धातौ ७४ ।**	उ-त् ९४ धातौ ९४ ऋति ९२	अवर्णान्त उपसर्ग के बाद यदि ऋकारादि धातु हो तो वृद्धि एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अचि, आत्, वृद्धिः, उ-त्, धातौ, ऋति	**९२. वा सुप्यापिशलेः ७७ ।**		अवर्णान्त उपसर्ग के बाद यदि सुबन्त प्रकृतिक ऋकारादि धातु हो तो वृद्धि एकादेश विकल्प से होता है ।
सं-यां, ए-योः, अचि, आत्	**९३. औतोऽम्शसोः २८५ ।**		ओत् के बाद अम् शस् हो तो आ एकादेश होता है ।
	एकादेशे पररूपम्		
सं-यां, ए-योः, अचि, आत्, उ-त्, धातौ	**९४. एङि पररूपम् ७८ ।** * *शकन्ध्वादिषु पररूपं वक्तव्यम् ।*		अवर्णान्त उपसर्ग के बाद यदि एङादि धातु हो तो पूर्व पर के स्थान में पर वाला रूप रहता है ।

(२०८) (वा० ग०) । शकन्धुः कर्कन्धुः प-म् ९९
कुलटा । 'सीमन्तः केशवेशेषु' १५० । हलीषा
मनीषा लाङ्गलीषा पतञ्जलिः । 'सारङ्गः पशुपक्षिणोः'
१५१ ॥ **इति शकन्ध्वादिः ॥**

**** एवे चानियोगे ।***

**** ओत्वोष्ठयोः समासे वा ।***

**** एमन्नादिषु छन्दसि ।***

सं-यां, ए-योः, अ-चि, आत्, प-म्	**९५. ओमाङोश्च ८० ।**		अ से परे ओम् आङ् के रहने पर पूर्वपर के स्थान में पररूप एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अ-चि, आत्, प-म्	**९६. उस्यपदान्तात् २२१४ ।**	अ-त् ९७	अपदान्त अवर्ण से परे उस् हो तो पररूप एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अ-चि, अ-त्, प-म्	**९७. अतो गुणे १९१ ।**		अपदान्त अकार से परे गुण रहने पर पररूप होता है
सं-यां, ए-योः, अ-चि, प-म्	**९८. अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ ८१ ।** **** एकाचो न ।***	अव्य-तौ ९९	अव्यक्तानुकरण अत् के बाद इति हो तो पररूप होता है ।
सं-यां, ए-योः, अ-चि, अव्य-तौ, प-म्	**९९. नाम्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा ८२ ।**		आम्रेडित अव्यक्तानुकरण अत् को इति परे रहने पर पररूप नहीं होता है विकल्प से । द्वितीय त् को आ होता है ।
+ सं-यां, ए-योः, अचि	**१००. नित्यमाम्रेडिते डाचि २१२८ ।** ॥ ५ ॥		आम्रेडित अव्यक्तानुकरण अत् के बाद यदि डाच् हो तो दोनों त को पररूप होता है ।

एकादेशे दीर्घः

सं-यां, ए-योः, अ-चि	**१०१. अकः सवर्णे दीर्घः ८५ ।** **** ऋति सवर्णे ऋ वा ।*** **** ऌति सवर्णे ऌ वा ।***	अकः १०७ दीर्घः १०६	अक् के बाद यदि सवर्ण अच् हो तो पूर्वपर के स्थान में दीर्घ एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अ-चि, अकः, दीर्घः	**१०२. प्रथमयोः पूर्वसवर्णः १६४ ।**	पू-र्णः १०६	प्रथमा द्वितीया सम्बन्धी अक् के बाद अच् हो तो पूर्व सवर्ण दीर्घ आदेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अ-चि, अकः, दीर्घः, पू-र्णः	**१०३. तस्माच्छसो नः पुंसि १९६ ।**		पूर्वसवर्ण दीर्घ के बाद शस् के स् को पुँल्लिङ्ग में न होता है ।
सं-यां ए-योः अचि, अकः, दीर्घः, पू-र्णः	**१०४. नादिचि १६५ ।**	न, इचि १०६	अवर्ण के बाद इच् हो तो पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता है ।

+ यद्यपीदं वार्तिकम् तथापि काशिकायां सूत्रत्वेन गृहीतम् ।

सं-यां, ए-योः, अ-चि, अकः, दीर्घः, पू-र्णः, न, इचि	**१०५. दीर्घाज्जसि च २३९ ।**	दी-सि १०६	दीर्घ के बाद जस् या इच् हो तो पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता है ।
सं-यां, ए-योः, अ-चि, अकः, दीर्घः, पू-र्णः, न, इचि, दी-सि	**१०६. वा च्छन्दसि ३५१५ ।**		वेद में दीर्घ के बाद जस् या इच् हो तो विकल्प से पूर्वसवर्ण दीर्घ होता है ।

एकादेशे पूर्वरूपम्

सं-यां, ए-योः, अ-चि, अकः	**१०७. अमि पूर्वः १९४ ।**	पूर्वः ११०	अक् के बाद यदि अम् हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अ-चि, पूर्वः	**१०८. संप्रसारणाच्च ३३० ।**		सम्प्रसारण के बाद यदि अच् हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अ-चि, पूर्वः	**१०९. एङः पदान्तादति ८६ ।**	एङः १२२ अति १२२	पदान्त एङ् से परे यदि अ हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, अ-चि, एङः, अति, पूर्वः	**११०. ङसिङसोश्च २४६ ।**	ङ-सोः ११२	एङ् से परे यदि ङसि ङस् सम्बन्धी अ हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है ।

एकादेशे उकारादेशः

सं-यां, ए-योः, अ-चि, एङः, अति, ङ-सोः	**१११. ऋत उत् २७९ ।**	उत् ११४	ऋकारान्त से उत्तर ङसि ङस् का अ हो तो उकार एकादेश होता है ।
सं-यां, ए-योः, उत्, अ-चि, एङः, अति, ङ-सोः	**११२. ख्यत्यात्परस्य २५५ ।**		यण्सन्धि युक्त ख्य् त्य् के बाद यदि ङसि ङस् का अ हो तो उसे उकार आदेश होता है ।

रोरुत्वविधिः

सं-यां, उत्, अ-चि, एङः अति	**११३. अतो रोरप्लुतादप्लुते १६३ ।**	अतो रोः ११४	अप्लुत अकार से परे से रु के रेफ् को उ होता है यदि बाद में भी अप्लुत अ हो ।
सं-यां, उत्, अ-चि, एङः अति, अतोरोः	**११४. हशि च १६६ ।**		अ से परे रु के रेफ को उ होता है, यदि उसके बाद हश् हो ।

प्रकृतिभाव प्रकरणम्

सं-यां, उत्, अ-चि, एङः अति	**११५. प्रकृत्यान्तःपादमव्यपरे ३५१८ ।**	प्रकृत्या १३०	ऋक्पादमध्यस्थ ए को प्रकृतिभाव होता है, यदि आगे अ हो तथा उसके बाद व् य् नहीं हो ।
सं-यां, प्रकृत्या, अ-चि, एङः अति	**११६. अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रतायमवन्त्ववस्युषु च ३५१९ ।**		अव्यात् अवद्यात् अवक्रमु अव्रत अयम् अवन्तु अवस्यु में व्यपरक अ के रहने पर भी एङ् को प्रकृति भाव होता है ।

सं-यां, प्रकृत्या, अ-चि, एङः अति	**११७. यजुष्युरः ३५२० ।**	यजुषि १२१	यजुः में एङन्त उरस् को अ परे रहने पर भी प्रकृतिभाव होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अ-चि, एङः अति, यजुषि	**११८. आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठेऽम्बेऽम्बा-लेऽम्बिके पूर्वे ३५२१ ।**		आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठे के एङ् को अ परे रहने पर भी यजुः में प्रकृतिभाव होता है तथा अम्बिके के परे रहने पर अम्बे अम्बाले के ए को प्रकृतिभाव होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अ-चि, एङः अति, यजुषि	**११९. अङ्ग इत्यादौ च ३५२२ ।**		अङ्ग के ए को तथा अङ्गपूर्व एङ् को अ परे रहने पर प्रकृतिभाव होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अ-चि, एङः अति, यजुषि	**१२०. अनुदात्ते च कुधपरे ३५२३ ।।६।।**	अ-त्ते १२१	कवर्ग धकार परक अनुदात्त अ के परे रहने पर एङ् को यजुः में प्रकृतिभाव होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अ-चि, एङः अति, यजुषि, अ-त्ते	**१२१. अवपथासि च ३५२४ ।**		अवपथाः में अनुदात्त अ के परे रहने पर एङ् को प्रकृतिभाव होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अ-चि, एङः अति	**१२२. सर्वत्र विभाषा गोः ८७ ।**	गोः १२४	लोक वेद में अ परे रहने पर एङन्त गो को प्रकृतिभाव होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अ-चि, गोः	**१२३. अवङ् स्फोटायनस्य ८८ ।**	अवङ् १२४ ।	पदान्त में अच् परे रहने पर गो को विकल्प से अवङ् होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, गोः, अवङ्	**१२४. इन्द्रे च ८९ ।**		इन्द्र शब्द परे रहने पर गो को नित्य अवङ् होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या	**१२५. प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ९० ।**	अचि १२८	अच् परे रहने पर प्लुत और प्रगृह्य को नित्य प्रकृतिभाव होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अचि	**१२६. आङोऽनुनासिकश्छन्दसि ३५२५ ।**		वेद में आङ् के बाद यदि अच् हो तो आ को अनुनासिक होता है तथा प्रकृतिभाव भी होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अचि	**१२७. इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च ९१** ** न समासे ।* ** सिति च ।*	शा-वः १२८	पदान्त इक् के वाद यदि असवर्ण अच् हो तो विकल्प में प्रकृतिभाव तथा दीर्घ को ह्रस्व हो जाता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अचि, शा-वः	**१२८. ऋत्यकः ९२ ।**		अक् के बाद यदि ऋ आवे तो प्रकृतिभाव तथा दीर्घ को ह्रस्व विकल्प से होता है ।

	अप्लुतवत्		
सं-यां, प्रकृत्या	**१२९. अप्लुतवदुपस्थिते ९८ ।**	अ-वत् १३०	अनार्ष इति शब्द यदि बाद में हो प्लुत को अप्लुवत् कार्य होता है ।
सं-यां, प्रकृत्या, अ-वत्	**१३०. ई३ चाक्रवर्मणस्य ९९ ।**		प्लुत ई३ के बाद यदि अच् हो तो विकल्प से अप्लुतवत् होता है ।
सं-यां	**१३१. दिव उत् ३३७ ।**		प्रातिपदिक दिव् पद को उकार आदेश होता है ।
	सुलोपः		
सं-यां	**१३२. एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि १७६ ।**	सुलोपः १३४ हलि १३३	यदि नञ्समास न हो तो ककारहीन एतत् तत् शब्द के सु का लोप होता है हल् पर रहने पर ।
सं-यां, हलि, सु-लोपः	**१३३. स्यश्छन्दसि बहुलम् ३५२६ ।**		वेद में स्य के सु का बहुलतया लोप होता है हल् परे रहने पर ।
सं-यां, हलि, सु-लोपः	**१३४. सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम् १७७ ।**		सस् के सु का लोप होता है यदि बाद में अच् हो तथा पादपूर्ति अपेक्षित हो ।
	सुट्प्रसङ्गः		
सं-यां	**१३५. सुट्कात्पूर्वः २५५३ ।**	सुट् १५७	पारस्कर प्रभृतीनि तक 'सुट् कात् पूर्वः' का अधिकार है ।
+ सं-यां, सुट्	**१३६. अडभ्यासव्यवायेऽपि २५३९ ।**		अट् और अभ्यास का व्यवधान रहने पर भी क से पूर्व सुट् होता है।
* सं-यां, सुट्	**१३७. संपरिभ्यां करोतौ भूषणे २५५०**	सं-भ्यां १३८ करोतौ १३९	सम् परि (उप) पूर्वक भूषणार्थक कृ हो तो क से पहले सुट् होता है ।
सं-यां, सुट्, कर्तौ, सं-भ्यां	**१३८. समवाये च २५५१ ।**		सम्परिपूर्वक समवायार्थक कृ धातु हो तो क से पहले सुट् होता है ।
सं-यां, सुट्, कर्तौ	**१३९. उपात्प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहारेषु च २५५२ ।**	उपात् १४१	उपपूर्वक प्रतियत्न वैकृत वाक्याध्याहारार्थक कृ हो तो क से पहले सुट् होता है ।
सं-यां, सुट्, उपात्	**१४०. किरतौ लवने २५३९ ॥ ७ ॥**	किरतौ १४२ ।	उप पूर्वक लवनार्थक कृ (किरति) का प्रयोग हो तो क से पहले सुट् का आगम होता है ।
सं-यां, सुट्, उपात्, किरतौ	**१४१. हिंसायां प्रतेश्च २५४० ।**		उप प्रति पूर्वक हिंसार्थक किरति का प्रयोग हो तो क से पहले सुट् होता है ।

+ यद्यपीदं वार्तिकम् तथापि काशिकायां सूत्रत्वेन गृहीतम् ।

* काशियायां 'संपर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे' इति सूत्रम् ।

सं-यां, सुट्, किरतौ	**१४२. अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने २६८८** ** किरतेर्हर्षजीविकाकुलायकरणेषु ।*	अप के बाद किरति को सुट् होता है, यदि पशु पक्षी कृत आलेखन हो ।
सं-यां, सुट्	**१४३. कुस्तुम्बुरूणि जातिः १०५८ ।**	यदि जाति अर्थ हो तो कुस्तुम्बुरूणि में सुट् निपातित होता है ।
सं-यां, सुट्	**१४४. अपरस्पराः क्रियासातत्ये १०५९ ।**	क्रिया सातत्य में अपरस्पराः में सुट् निपातित होता है ।
सं-यां, सुट्	**१४५. गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु १०६०**	सेवित असेवित प्रमाण में गोष्पद में सुट् तथा षत्व निपातित होता है ।
सं-यां, सुट्	**१४६. आस्पदं प्रतिष्ठायाम् १०६१ ।**	प्रतिष्ठा में आस्पद निपातित होता है ।
सं-यां, सुट्	**१४७. आश्चर्यमनित्ये १०६२ ।**	अद्भुत अर्थ में आश्चर्य निपातित होता है ।
सं-यां, सुट्	**१४८. वर्चस्केऽवस्करः १०६३ ।**	उच्छिष्ट दूषित अन्न के अर्थ में अवस्कर निपातित होता है ।
सं-यां, सुट्	**१४९. अपस्करो रथाङ्गम् १०६४ ।**	यदि रथाङ्ग हो तो अपस्कर निपातित होता है ।
सं-यां, सुट्	**१५०. विष्किरः शकुनौ वा १०६५ ।**	शकुनि अर्थ में विकल्प से विष्किर निपातित होता है ।
सं-यां, सुट्	**१५१. ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ३५२७ ।**	मन्त्रविषय में ह्रस्व के बाद यदि चन्द्र हो तो सुट् होता है ।
सं-यां, सुट्	**१५२. प्रतिष्कशश्च कशेः १०६६ ।**	प्रति पूर्वक कश धातु से सुट् निपातित होता है ।
सं-यां, सुट्	**१५३. प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी १०६७ ।**	यदि ऋषि वाच्य हो तो प्रस्कण्व और हरिश्चन्द्र निपातित होते हैं ।
सं-यां, सुट्	**१५४. मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः १०६८ ।**	वेणु और परिव्राजक अर्थ में क्रमशः मस्कर और मस्करी निपातित होते हैं ।
सं-यां, सुट्	**१५५. कास्तीराजस्तुन्दे नगरे १०६९ ।**	नगरार्थ में कास्तीर और अजस्तुन्द निपातित होते हैं ।
सं-यां, सुट्	**१५६. कारस्करो वृक्षः १०७० ।**	यदि वृक्ष वाच्य हो तो कारस्कर निपातित होता है ।
सं-यां	**१५७. पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् १०७१**	संज्ञा में पारस्कर आदि शब्द निपातित होते हैं ।

(२०९) 'पारस्करो देशः' १५२। 'कारस्करो वृक्षः' १५३ 'रथस्या [रयस्था] नदी' १५४। 'किष्कुः प्रमाणम्' १५५। 'किष्कन्धा गुहा' १५६। ('तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च') १५७ 'प्रातुम्पतौ गवि कर्तरि' १५८॥ **इति पारस्करादिः ॥**

**** प्रायस्य चित्तिचित्तयोः सुडस्कारो वा ।***

स्वरविधिः

१५८. अनुदात्तं पदमेकवर्जम् ३६५० । — (जिस पद में एक को उदात्त या स्वरित किया जाय उस) एक पद को छोड़कर शेष अनुदात्त होते हैं।

अन्तोदात्तः

१५९. कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः ३६८० । उदात्तः २२३ अन्तः १८४ — कर्ष धातु आकार वान् तथा घञ् का अन्त उदात्त होता है।

उदात्तः, अन्तः **१६०. उञ्छादीनां च ३६८१ ॥ ८ ॥** — उञ्छ आदि का अन्त उदात्त होता है।

(२१०) उञ्छ म्लेच्छ जञ्ज नल्प (जल्प) जप वध 'युग कालविशेषे रथाद्युपकरणे च' १५९। 'गरो दूष्ये' (गरो डूष्ये) १६०। अवन्तः। 'वेदवेगवेष्टबन्धाः करणे' १६१। 'स्तयुद्रुवश्छन्दसि' १६२। 'वर्तनिः स्तोत्रे' १६३। 'श्वभ्रे दरः' १६४। 'साम्बतापौ भावगर्हायाम्' १६५। 'उत्तमशश्वत्तमौ सर्वत्र' १६६। 'भक्षमन्थभोगमन्थाः' १६७। हेहाः ॥ **इत्युञ्छादिः ॥**

उदात्तः, अन्तः **१६१. अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः ३६५१** — उस अनुदात्त के आदि को उदात्त हो जाता है, जिससे पूर्व उदात्त का लोप होता है।

उदात्तः, अन्तः **१६२. धातोः ३६७१ ।** — धातु का अन्त उदात्त होता है।

उदात्तः, अन्तः **१६३. चितः ३७१० ।** चितः १६४ — चित् का अन्त उदात्त होता है।

उदात्तः, अन्तः, चितः **१६४. तद्धितस्य ३७११ ।** त-स्य १६५ — चित् तद्धित का अन्त उदात्त होता है।

उदात्तः, अन्तः, तस्य **१६५. कितः ३७१२ ।** — कित् तद्धित का अन्त उदात्त होता है।

उदात्तः, अन्तः **१६६. तिसृभ्यो जसः ३७१३ ।** — तिसृ के उत्तरस्थित जस् का अन्त उदात्त होता है।

उद्रात्तः, अन्तः	**१६७. चतुरः शसि ३६८२ ।**		शस् परे रहने पर चतुर् का अन्त उदात्त होता है ।
उदात्तः, अन्तः	**१६८. सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः ३७१४**	ए-दिः १६९ वि-क्तिः १८४	सु में एकाच् रहने वाले से परे तृतीयादि विभक्ति उदात्त होती है ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, ए-दिः	**१६९. अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे ३७१५ ।**	अ-त् १७८	अनित्य समास में जिसका उत्तरपद अनुदात्त तथा एकाच् हो उससे तृतीया विभक्ति विकल्प से उदात्त होती है ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, अ-त्	**१७०. अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्थानम् ३७१६**	अ-म् १७५	अञ्च से परा असर्वनामस्थान विभक्ति वेद में उदात्त होती है ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, अ-त्, अ-म्	**१७१. ऊडिदंपदाद्यप्पुम्रैद्युभ्यः ३७१७ ।** ** ऊठ्युपधाग्रहणं कर्तव्यम् ।*		ऊठ्, इदम् पदादि अप् पुम् रै दिव् से असर्वनाम स्थान विभक्ति उदात्त होती है ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, अ-त्, अ-म्	**१७२. अष्टनो दीर्घात् ३७१८ ।**		दीर्घान्त अष्टन् शब्द से असर्वनाम स्थान विभक्ति उदात्त होती है ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, अ-त्, अ-म	**१७३. शतुरनुमो नद्यजादी ३७१९ ।** ** बृहन्महतोरुपसंख्यानम् ।*	न-दी १७५	अनुम् शतृ प्रत्ययान्त अन्तोदात्त से परे नद्यजादि शसादि विभक्ति (असर्वनामस्थान) उदात्त होती है ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, अ-त्, अ-म्, न-दी	**१७४. उदात्तयणो हल्पूर्वात् ३७२० ।**	उ-त् १७५	उदात्तस्थान में हल् पूर्वक यण् से परे नदी शसादि विभक्ति उदात्त होती है ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, अ-त्, अ-म्, न-दी, उ-त्	**१७५. नोङ्धात्वोः ३७२१ ।**		ऊङ् धातु और हल्पूर्व यण् से परे शसादि विभक्ति उदात्त नहीं होती है ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, अ-त्	**१७६. ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् ३७२२ ।**	मतुप् १७७	ह्रस्वान्त अन्तोदात्त तथा नुट् से परे मतुप् होता है ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, अ-त्, मतुप्	**१७७. नामन्यतरस्याम् ३७२३ ।**		मतुप् में ह्रस्वान्त अन्तोदात्त से परे नाम् उदात्त होता है विकल्प से ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, अ-त्	**१७८. ङ्याश्छन्दसि बहुलम् ३७२४ ।**		ङी से परे नाम विकल्प से उदात्त होता है वेद में ।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः	**१७९. षट्त्रितुर्भ्यो हलादिः ३७२५ ।**	ष-भ्यो १८१	षट् संज्ञक, त्रि, चतुर् से परे हलादि विभक्ति उदात्त होती है ।

उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, ष-भ्यो	**१८०. झल्युपोत्तमम् ३६८३ ॥ ९ ॥**		षट् संज्ञक, त्रि, चतुर् से परे झलादि तदन्त पद में उपोत्तम उदात्त होता है।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, ष-भ्यो, झ-म्	**१८१. विभाषा भाषायाम् ३६८४।**		भाषा में यह नियम विकल्प से होता है।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः	**१८२. न गोश्वन्त्साववर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः ३७२६।**	न १८३	गो श्वन् सु में अवर्णान्त राज, अङ् क्रुङ् तथा कृत् से उपरि लिखित नियम नहीं होता है।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, न	**१८३. दिवो झल् ३७२७।**	झल् १८४	दिव् से परे झलादि विभक्ति उदात्त नहीं होती है।
उदात्तः, अन्तः, विभक्तिः, झल्	**१८४. नृ चान्यतरस्याम् ३७२८।**		नृ से परे झलादि विभक्ति विकल्प से उदात्त होती है।
उदात्तः	**१८५. तित्स्वरितम् ३७२९।**	ल-म् १९२	तित् स्वरित होता है।
उदात्तः	**१८६. तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्लसार्वधातुकमनुदात्तमह्न्विङोः ३७३०।**		ह्नुङ् इङ् को छोड़कर तासि अनुदात्तेत् ङित् अकारान्तोपदेश से परे ल सार्वधातुक अनुदात्त होता है।
	आद्युदात्तः		
उदात्तः, ल-म्	**१८७. आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् ३७३१।**	आदिः १८८ अ-म् १८८	सिजन्त का आदि विकल्प से उदात्त होता है
उदात्तः, ल-म्, आदिः, अ-म्	**१८८. स्वपादिहिंसामच्यनिटि ३६७२।**	अच्-टि १८९	स्वप आदि तथा हिंस के बाद अजादि अनिट् ल सार्वधातुक हो तो विकल्प से आद्युदात्त होता है।
उदात्तः, ल-म्, अच्-टि	**१८९. अभ्यस्तानामादिः ३६७३।**	अ-म् १९० आदिः १९१	अजादि अनिट् ल सार्वधातुक परे रहने पर अभ्यस्त के आदि को उदात्त होता है।
उदात्तः, ल-म्, अ-म्, आदिः	**१९०. अनुदात्ते च ३६७४।**		अविद्यमानोदात्त ल सार्वधातुक परे हो तो अभ्यस्त का आदि उदात्त होता है।
उदात्तः, ल-म्, आदिः	**१९१. सर्वस्य सुपि ३६८५।**		सुप् परे रहते सर्व का आदि उदात्त होता है।
उदात्तः, ल-म	**१९२. भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्ययात्पूर्वं पिति ३६७५।**	प्र-पूर्वम् १९३	भी ह्री भृ हु मद जन धन दरिद्रा जागृ धातु के अभ्यस्त को प्रत्यय से पूर्व उदात्त होता है, यदि परमें पित् ल सार्वधातुक हो।

उदात्तः, प्र-पूर्वम्	**१९३. लिति ३६७६ ।**		प्रत्यय से पूर्व को लित् के यहाँ उदात्त होता है ।
	१९४. आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ३६७७ ।	आदिः १९६ अ-म् १९५	णमुल् परे रहने पर आदि को विकल्प से उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः, अ-म्	**१९५. अचः कर्तृयकि ३६७८ ।**		उपदेश में अजन्त धातु के आदि को उदात्त होता है कर्तृयक् में ।
उदात्तः, आदिः	**१९६. थलि च सेटीडन्तो वा ३७३२ ।**		सेट् थल् में इट् उदात्त होता है, विकल्प से आदि अन्त भी उदात्त होता है ।
उदात्तः	**१९७. ञ्नित्यादिर्नित्यम् ३६८६ ।**	आदिः २१६	ञित् नित् के यहाँ आदि नित्य उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः	**१९८. आमन्त्रितस्य च ३६५३ ।**		आमन्त्रित का आदि उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः	**१९९. पथिमथोः सर्वनामस्थाने ३६८७ ।**		सर्वनामस्थान में पथिन् मथिन् का आदि उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः	**२००. अन्तश्च तवै युगपत् ३६८८ ॥१०॥**		तवै प्रत्ययान्त का आदि अन्त एक साथ उदात्त होते हैं ।
उदात्तः, आदिः	**२०१. क्षयो निवासे ३६८९ ।**		निवास वाच्य रहने पर क्षय का आदि उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः	**२०२. जयः करणम् ३६९० ।**		करणवाची जयशब्द आद्युदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः	**२०३. वृषादीनां च ३६९१ ।** (**२११**) वृषः जनः ज्वरः ग्रहः हयः गयः नयः तायः तयः चयः अमः वेदः सूदः अंशः गुहा । 'शमरणौ' संज्ञायां संमतौ भावकर्मणोः' १६८ । मन्त्रः शान्तिः कामः यामः आरा धारा कारा वहः कल्पः पादः । **इति वृषादिः ॥ आकृतिगणः ॥** अविहित-लक्षणमाद्युदात्तत्वं वृषादिषु ज्ञेयम् ॥		वृष आदि का आदि उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः	**२०४. संज्ञायामुपमानम् ३६९२ ।**	सं-म् २०५	संज्ञा में उपमान शब्दों का आदि उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः, सं-म्	**२०५. निष्ठा च द्व्यजनात् ३६९३ ।**		संज्ञा में निष्ठान्त द्व्यच् का आदि उदात्त होता है, यदि आदि में आ न हो ।
उदात्तः, आदिः	**२०६. शुष्कधृष्टौ ३६९४ ।**		शुष्क धृष्ट का आदि उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः	**२०७. आशितः कर्ता ३६९५ ।**		कर्तृवाची आशित का आदि उदात्त होता है ।

उदात्तः, आदिः	**२०८. रिक्ते विभाषा ३६९६ ।**	विभाषा २०९	रिक्त शब्द में आदि विकल्प से उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः, विभाषा	**२०९. जुष्टार्पिते च च्छन्दसि ३६९७ ।**	जु-ते २१०	वेद में जुष्ट अर्पित शब्द विकल्प से आद्युदात्त होते हैं ।
उदात्तः, आदिः, जु-ते	**२१०. नित्यं मन्त्रे ३६९८ ।**		मन्त्र विषय में जुष्ट अर्पित नित्य आद्युदात्त होते हैं ।
उदात्तः, आदिः	**२११. युष्मदस्मदोर्ङसि ३६९९ ।**	यु-दोः २१२	युष्मद् अस्मद् ङस् के यहाँ आद्युदात्त होते हैं ।
उदात्तः, आदिः, यु-दो	**२१२. ङयि च ३७०० ।**		ङि परे रहने पर युष्मद् अस्मद् आद्युदात्त होते हैं ।
उदात्तः, आदिः	**२१३. यतोऽनावः ३७०१ ।**		यत्प्रत्ययान्त द्व्यच् का आदि उदात्त होता है, नौ को छोड़कर ।
उदात्तः, आदिः	**२१४. ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः ३७०२ ।**		ईड वन्द वृ शंस दुह के ण्यदन्त का आदि उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः	**२१५. विभाषा वेण्विन्धानयोः ३७०३ ।**	विभाषा २१६	वेणु इन्धान का आदि विकल्प से उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः, विभाषा	**२१६. त्यागरागहासकुहश्वठक्रथानाम् ३७०४**		त्याग राग हास कुह श्वठ क्रथ का आदि विकल्प से उदात्त होता है ।
उदात्तः	**२१७. उपोत्तमं रिति ३७३३ ।**	उ-मं २१८	रिदन्त का उपोत्तम उदात्त होता है ।
उदात्तः, उ-मं	**२१८. चङ्यन्यतरस्याम् ३६७९ ।**		चङन्त में उपोत्तम विकल्प से उदात्त होता है ।
उदात्तः	**२१९. मतोः पूर्वमात्संज्ञायां स्त्रियाम् ३७०५**	सं-स्त्रियां २२१	मतुप् के पूर्व का आ उदात्त होता है, यदि मत्वन्त स्त्रीलिङ्ग हो तथा संज्ञा हो ।
	अन्तोदात्तः		
उदात्तः, सं-स्त्रियां	**२२०. अन्तोऽवत्याः ३७०६ ।। ११ ।।**	अन्तः २२३	संज्ञा में अवती का अन्त उदात्त होता है ।
उदात्तः, सं-स्त्रियां, अन्तः	**२२१. ईवत्याः ३७०७ ।**		संज्ञा में ईवती का अन्त उदात्त होता है ।
उदात्तः, अन्तः	**२२२. चौ ३६५२ ।** ** चोरतद्धित इति वक्तव्यम् ।*		चि परे रहने पर पूर्व के अन्त को उदात्त होता है ।
उदात्तः, अन्तः	**२२३. समासस्य ३७३४ ।**		समास का अन्त उदात्त होता है ।

एकाचश्चायो ल्यपि च ये च क्षय्यजय्यावकः
सवर्णेऽवपथाहिंसायामनुदात्तस्य विभाषा क्षय
ईवत्यास्त्रीणि ।।

इति पाणिनीसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः ।

पूर्वपदप्रकृतिस्वर:

	१. बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् ३७३५	प्र-म् ६३	बहुव्रीहि में पूर्वपद के स्वर का प्रकृतिभाव होता है ।
प्र-म्	**२. तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्यय-द्वितीयाकृत्याः ३७३६ ।**	त-षे २४	तत्पुरुष में तुल्यार्थ तृतीयान्त सप्तम्यन्त उपमानवाची अव्यय द्वितीयान्त कृत्यान्त पूर्वपदस्वर प्रकृतिवत् रहता है ।
प्र-म्, त-षे	**३. वर्णो वर्णेष्वनेते ३७३७ ।**		वर्णवाची पूर्वपद हो और वर्णवाची उत्तरपद हो तो एतत् शब्द को छोड़कर तत्पुरुष में पूर्वपद प्रकृति-स्वर होता है ।
प्र-म्, त-षे	**४. गाधलवणयोः प्रमाणे ३७३८ ।**		प्रमाणवाची तत्पुरुष में गाध लवण शब्द उत्तरपद में हों तो पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, त-षे	**५. दायाद्यं दायादे ३७३९ ।**		तत्पुरुष में दायाद शब्द के उत्तर में रहने पर तथा दायाद्यवाची शब्द के पूर्व में रहने पर पूर्वपदप्रकृति स्वर होता है ।
प्र-म्, त-षे	**६. प्रतिबन्धि चिरकृच्छ्रयोः ३७४० ।**		चिर कृच्छ के उत्तरपद में रहने पर प्रतिबन्धवाची पूर्वपद प्रकृतिवत् रहता है ।
प्र-म्, त-षे	**७. पदेऽपदेशे ३७४१ ।**		अपदेश वाची पद शब्द के उत्तर में रहने पर तत्पुरुष में पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, त-षे	**८. निवाते वातत्राणे ३७४२ ।**		वातत्राणवाची निवात के उत्तर में रहने पर पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, त-षे	**९. शारदेऽनार्तवे ३७४३ ।**		अनार्तव वाची शारद के उत्तर में रहने पर पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, त-षे	**१०. अध्वर्युकषाययोर्जातौ ३७४४ ।**		जातिवाची अध्वर्यु कषाय के पूर्व-पद को प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, त-षे	**११. सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये ३७४५ ।**		यदि सदृश प्रतिरूप उत्तरपद में हो तो सादृश्य वाची तत्पुरुष में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे **१२. द्विगौ प्रमाणे ३७४६ ।** प्रमाणवाची तत्पुरुष में यदि द्विगु उत्तरपद में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे **१३. गन्तव्यपण्यं वाणिजे ३७४७ ।** वाणिज उत्तरपद में हो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है गन्तव्य पण्यवाची तत्पुरुष में ।

प्र-म्, त-षे **१४. मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके ३७४८ ।** मात्रा उपज्ञा उपक्रम छाया उत्तरपद में हो तो नपुंसक तत्पुरुष में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे **१५. सुखप्रिययोर्हिते ३७४९ ।** सु-योः १६ सुखप्रिय उत्तरपद में हो तो हितवाची तत्पुरुष में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे, सु-योः **१६. प्रीतौ च ३७५० ।** प्रीति गम्यमान हो तो भी सुख प्रिय के पूर्व को प्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे **१७. स्वं स्वामिनि ३७५१ ।** स्ववाची पूर्वपद को प्रकृतिस्वर होता है स्वामिन् के उत्तर में रहने पर ।

प्र-म्, त-षे **१८. पत्यावैश्वर्ये ३७५२ ।** प-र्ये २० पति शब्द उत्तर में हो तो ऐश्वर्यवाची तत्पुरुष में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे, प-र्ये **१९. न भूवाक्चिद्दिधिषु ३७५३ ।** भू वाक् चित् दिधिषू को पूर्वपदप्रकृतिस्वर नहीं होता है यदि पति शब्द बाद में हो ।

प्र-म्, त-षे, प-र्ये **२०. वा भुवनम् ३७५४ । ।। १ ।।** पतिशब्द के उत्तर में रहने पर भुवन शब्द को विकल्प से पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ऐश्वर्यवाची तत्पुरुष में ।

प्र-म्, त-षे **२१. आशङ्काबाधनेदीयस्सु संभावने ३७५५** संभावना में आशङ्का आबाध नेदीयस् उत्तर पद में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे **२२. पूर्वे भूतपूर्वे ३७५६ ।** भूतपूर्ववाची पूर्व शब्द उत्तर में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे **२३. सविधसनीडसमर्यादसवेशसदेशेषु सामीप्ये ३७५७ ।** सामीप्यवाची तत्पुरुष में सविध सनीड समर्याद सवेश सदेश शब्द उत्तर में हों तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे	**२४. विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु ३७५८ ।**		विस्पष्ट आदि शब्द पूर्व में गुणवचन शब्द उत्तर में हो तो पूर्वपदप्रकृति-स्वर होता है ।
	(२१२) विस्पष्ट विचित्र विचित्त व्यक्त संपन्न पटु पण्डित कुशल चपल निपुण ।। **इति वि-स्पष्टादिः ।।**		
प्र-म्	**२५. श्रज्यावमकन्यापवत्सु भावे कर्मधारये** ३७५९ ।	क-ये २८	कर्मधारय में भाववाची पूर्वपद को प्रकृतिस्वर होता है यदि उत्तर में श्रज्य अवम कन् तथा पापवत् शब्द हो ।
प्र-म्, क-ये	**२६. कुमारश्च ३७६० ।**	कुमारः २८	कर्मधारय में पूर्वपद कुमार को प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, क-ये, कुमारः	**२७. आदिः प्रत्येनसि ३७६१ ।**	आदिः २८	कुमार शब्द का आदि उदात्त होता है यदि प्रत्येनस् शब्द उत्तर में हो ।
प्र-म्, क-ये, कुमा-रः, आदिः	**२८. पूगेष्वन्यतरस्याम् ३७६२ ।**		कुमार को विकल्प से आद्युदात्त हो यदि पूगवाची शब्द उत्तर में हों ।
प्र-म्	**२९. इगन्तकालकपालभगालशरावेषु द्विगौ ३७६३ ।**	द्विगौ ३१ इं-षु ३०	द्विगु में यदि इगन्त, कालवाची, कपाल भगाल शराव शब्द उत्तर में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होत है ।
प्र-म्, द्विगौ, इ-षु	**३०. बह्वन्यतरस्याम् ३७६४ ।**	अ-म् ३१	द्विगु में यदि बहु शब्द पूर्व में तथा इगन्त, कालवाची शब्द, कपाल भगाल शराव उत्तर में हों तो विकल्प से पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, द्विगौ, अ-म्	**३१. दिष्टिवितस्त्योश्च ३७६५ ।**		दिष्टि वितस्ति यदि उत्तर में हों तो द्विगु में विकल्प से पूर्वपदप्रकृति-स्वर होता है ।
प्र-म्	**३२. सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धेष्वकालात् ३७६६ ।**		सिद्ध शुष्क पक्व बन्ध यदि उत्तर में हों तो द्विगु में कालभिन्नसप्तम्यन्त पूर्वपद को प्रकृति स्वर होता है ।
प्र-म्	**३३. परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाहोरात्रावयवेषु ३७६७ ।**		परि प्रति उप अप यदि पूर्व में हों तथा वर्ज्यमान अहोरात्रवाची अवयव उत्तर में हों तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है

प्र-म् **३४. राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु ३७६८** द्वन्द्वे ३७ राजन्यवाची बहुवचनान्तों के द्वन्द्व में पूर्वपदप्रकृति स्वर होता है, यदि द्वन्द्व अन्धक वृष्णि में हो।

प्र-म्, द्वन्द्वे **३५. संख्या ३७६९ ।** द्वन्द्व में संख्यावाची पूर्वपद को प्रकृतिस्वर होता है।

प्र-म्, द्वन्द्वे **३६. आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासी ३७७० ।** आचार्योपसर्जन तथा अन्तेवासियों के द्वन्द्व में पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है।

प्र-म्, द्वन्द्वे **३७. कार्तकौजपादयश्च ३७७१ ।** कार्तकौजप आदि द्वन्द्वों में पूर्वपद-प्रकृतिस्वर होता है।

(२१३) कार्तकौजपौ सावर्णिमाण्डकेयौ (सावर्णिमाण्डूकेयौ) अवन्त्यश्मकाः पैलश्यापर्णेयाः कपिश्यापर्णेयाः शैतिकाक्षपाञ्चालेयाः कटुकवाधूलेयाः शाकलशुनकाः शाकलशणकाः शणकबाभ्रवाः आर्चाभिमौद्गलाः कुन्तिसुराष्ट्राः चिन्तिसुराष्ट्राः तण्डवतण्डाः अविमत्तकामविद्धाः बाभ्रवशालङ्कायनाः बाभ्रवदानच्युताः कठकालापाः कठकौथमाः कौथुमलौकाक्षाः स्त्रीकुमारम् मौद्गपैप्पलादाः वत्सजरन्तः सौश्रुतपार्थवाः जरामृत्यू याज्यानुवाक्ये ॥ **इति कार्तकौजपादिः ॥**

प्र-म् **३८. महान्व्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वासजाबालभारभारतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु ३७७२ ।** महान् ३९ महान् पूर्वपद में हो तथा व्रीहि अपराह्ण गृष्टि इष्वास से जाबाल भार भारत हैलिहिल रौरव प्रवृद्ध उत्तर में हों तो प्रकृतिस्वर होता है।

प्र-म्, महान् **३९. क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे ३७७३ ।** महान् और क्षुल्लक पूर्व में हों वैश्वदेव उत्तर में हो तो प्रकृतिस्वर होता है।

प्र-म् **४०. उष्ट्रः सादिवाम्योः ३७७४ ॥ २ ॥** पूर्व में उष्ट्र उत्तर में सादि वामि हो तो प्रकृतिस्वर होता है।

प्र-म् **४१. गौः सादसादिसारथिषु ३७७५ ।** गो पूर्व में हो साद सादि सारथि उत्तर में हों तो प्रकृतिस्वर होता है।

प्र-म् **४२. कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजरत्यश्लीलदृढरूपापारेवडवातैतिलकद्रूपण्यकम्बलो दासीभाराणां च ३७७६ ।** कुरुगार्हपत रिक्तगुरु असूतजरती अश्लीलदृढरूपा पारेवडवा तैतिलकद्रू पण्यकम्बल तथा दासीभार आदि में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है।

	(२१४) दासीभार: देवहूति: देवभीति: देवलाति: वसुनीति: (वसूनिति:) ओषधि: चन्द्रमा: ।। **इति दासीभारादि: ।। आकृतिगण: ।।** * ***कुरुवृज्योर्गार्हपते ।***		
प्र-म्	**४३. चतुर्थी तदर्थे ३७७७ ।**	चतुर्थी ४५	चतुर्थ्यन्त पूर्वपद में हो तदर्थाभिधायी उत्तर में हो तो प्रकृतिस्वर होता है
प्र-म्, चतुर्थी	**४४. अर्थे ३७७८ ।**		चतुर्थ्यन्त पूर्वपद में अर्थ उत्तरपद में हो तो पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, चतुर्थी	**४५. क्ते च ३७७९ ।**	क्ते ४९	उत्तर में क्त तथा पूर्व में चतुर्थ्यन्त हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, क्ते	**४६. कर्मधारयेऽनिष्ठा ३७८० ।**		कर्मधारय में क्त उत्तर में हो अनिष्ठान्त पूर्व में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, क्ते	**४७. अहीने द्वितीया ३७८१ ।** *** अनुपसर्ग इति वक्तव्यम् ।**		क्त उत्तर में द्वितीयान्त पूर्व में हो तो अहीनवाची समास में पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, क्ते	**४८. तृतीया कर्मणि ३७८२ ।**	कर्मणि ४९	कर्मवाची क्त उत्तर में तृतीयान्त पूर्व में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, क्ते, कर्मणि	**४९. गतिरनन्तर: ३७८३ ।**	गति: ५२ अ-र: ५१	कर्मवाची क्त उत्तर में अव्यवहित गति पूर्व में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, गति:, अ-र:	**५०. तादौ च निति कृत्यतौ ३७८४ ।**		तु भिन्न तादि नित् कृत् पर में हो अव्यवहित गति पूर्व में हो तो प्रकृतस्वर होता है ।
प्र-म्, गति:, अ-र:	**५१. तवै चान्तश्च युगपत् ३७८५ ।**		तवै का अन्त उदात्त अव्यवहित गति प्रकृतिस्वर युक्त होता है ।
प्र-म्, गति:	**५२. अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये ३७८६ ।**	अञ्च-ये ५३	अनिगन्त गति को प्रकृतिस्वर होता है यदि व प्रत्ययान्त अञ्च बाद में हो ।
प्र-म्, अञ्च-ये	**५३. न्यधी च ३७८७ ।**		व प्रत्ययान्त अञ्च पर में हो तो नि अधि को प्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्	**५४. ईषदन्यतरस्याम् ३७८८ ।**	अ-म् ६३	ईषद् को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है।
प्र-म्, अ-म्	**५५. हिरण्यपरिमाणं धने ३७८९ ।**		हिरण्य परिमाण वाची पूर्व में धन उत्तर में हो तो विकल्प से प्रकृति-स्वर होता है।
प्र-म्, अ-म्	**५६. प्रथमोऽचिरोपसंपत्तौ ३७९० ।**		अचिरोपसंपत्ति में पूर्वस्थित प्रथम शब्द को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है।
प्र-म्, अ-म्	**५७. कतरकतमौ कर्मधारये ३७९१ ।**	कर्म-ये ५९	पूर्वस्थित कतर कतम को कर्म-धारय में विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है।
प्र-म्, कर्म-ये, अ-म्	**५८. आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः ३७९२ ।**	ब्रा-योः ५९	ब्राह्मण, कुमार उत्तर में हों तो कर्मधारय समास में पूर्वपद आर्य को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है।
प्र-म्, कर्म-ये, अ-म्, ब्रा-योः	**५९. राजा च ३७९३ ।**	राजा ६०	पूर्व में राजा उत्तर में ब्राह्मण कुमार हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है।
प्र-म्, अ-म्, राजा	**६०. षष्ठी प्रत्येनसि ३७९४ । ।।३।।**		षष्ठ्यन्त राजन् पूर्व में प्रत्येनस् उत्तर में हो तो विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है।
प्र-म्, अ-म्	**६१. क्ते नित्यार्थे ३७९५ ।**		नित्यार्थ में क्त उत्तर में हो तो विकल्प से पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है।
प्र-म्, अ-म्	**६२. ग्रामः शिल्पिनि ३७९६ ।**	शि-नि ६३	शिल्पवाची उत्तर में हो तो पूर्वपद ग्राम को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है।
प्र-म्, अ-म्, शि-नि	**६३. राजा च प्रशंसायाम् ३७९७ ।**		यदि प्रशंसा हो शिल्पवाची उत्तर में हो तो पूर्वपद राजन् को प्रकृति-स्वर होता है।
	पूर्वपदाद्युदात्तः		
	६४. आदिरुदात्तः ३७९८ ।	आ-त्तः ९१	यहाँ से आदिः उदात्तः का अधिकार है।
आ-त्तः	**६५. सप्तमीहारिणौ धर्म्येऽहरणे ३७९९ ।**		सप्तम्यन्त और हारिवाची पूर्व में हो धर्म्यवाची हरण से भिन्न कोई उत्तर में हो तो आदि उदात्त होता है।

आ-त्त:	**६६. युक्ते च ३८०० ।**		युक्तवाची समास में पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:	**६७. विभाषाऽध्यक्षे ३८०१ ।**	विभाषा ६८	यदि अध्यक्ष उत्तर में हो तो विकल्प से पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:, विभाषा	**६८. पापं च शिल्पिनि ३८०२ ।**		शिल्पवाची उत्तर में हो तो पूर्वमें पापको आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:	**६९. गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु क्षेपे ३८०३**		यदि क्षेपसमास हो, अन्त में गोत्र-वाची तथा अन्तेवासीवाची शब्द और माणव ब्राह्मण शब्द हों तो पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:	**७०. अङ्गानि मैरेये ३८०४ ।**		मैरेय शब्द उत्तर में हो तो तदङ्ग-वाची पूर्वपद आद्युदात्त होते हैं ।
आ-त्त:	**७१. भक्ताख्यास्तदर्थेषु ३८०५ ।**		भक्तवाची शब्द आद्युदात्त होते हैं, यदि उत्तर में तदर्थ शब्द हों ।
आ-त्त:	**७२. गोबिडालसिंहसैन्धवेषूपमाने ३८०६ ।**		गो विडाल सिंह सैन्धव उपमान-वाची होकर यदि उत्तरपद में हों तो पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:	**७३. अके जीविकार्थे ३८०७ ।**	अके ७४	जीविकार्थवाची समास में अक के उत्तर में रहने पर पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:, अके	**७४. प्राचां क्रीडायाम् ३८०८ ।**		प्राग्देशवाची क्रीडा वाच्य होने पर अक प्रत्ययान्त उत्तर पद के पूर्वपद को आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:	**७५. अणि नियुक्ते ३८०९ ।**	अणि ७७	नियुक्तवाची समास में अण्यन्त उत्तर-पद के पूर्व को आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:, अणि	**७६. शिल्पिनि चाकृञः ३८१० ।**	अकृञः ७७	शिल्पवाची समास में कृ धातु से रहित अण्यन्त के पूर्वपद को आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:, अकृञः, अणि	**७७. संज्ञायां च ३८११ ।**		संज्ञा में अकृञ् अण्यन्त उत्तरपद के पूर्व को आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:	**७८. गोतन्तियवं पाले ३८१२ ।**		पाल उत्तर में हो तो पूर्वपद गो तन्ति यव को आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:	**७९. णिनि ३८१३ ।**	णिनि ८०	णिन्नन्त उत्तरपद में पूर्वपद आद्यु-दात्त होता है ।
आ-त्त:, णिनि	**८०. उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव ३८१४ ।** ।। ४ ।।		शब्दार्थप्रकृति में णिन्नत उत्तर में हो तो पूर्व उपमान को आद्युदात्त होता है ।

आ-त्तः **८१. युक्तारोह्यादयश्च ३८१५ ।** समास में युक्तारोही आदि शब्द आद्युदात्त होते हैं ।

(२१५) युक्तारोही आगतरोही आगतयोधी आगतवञ्ची आगतनन्दी आगतप्रहारी आगतमत्स्यः क्षीरहोता भगिनीभर्ता ग्रामगोधुक् अश्वत्रिरात्रः गर्गत्रिरात्रः व्युष्टित्रिरात्रः गणपादः एकशितिपाद् । 'पात्रेसमितादयश्च' १६९ । **इति युक्तारोह्यादिः ।।**

आ-त्तः **८२. दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटं जे ३८१६ ।** जे ८३ दीर्घान्त शब्द काश तुष भ्राष्ट्र वट के बाद ज उत्तर में हो तो पूर्वपद आद्युदात्त होते हैं ।

आ-त्तः, जे **८३. अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः ३८१७ ।** उत्तर में ज हो तो बह्वच् पूर्वपद का उपान्त्य उदात्त होता है ।

आ-त्तः **८४. ग्रामेऽनिवसन्तः ३८१८ ।** निवासार्थभिन्न ग्राम उत्तर में हो तो पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।

आ-त्तः **८५. घोषादिषु च ३८१९ ।** घोषादि के उत्तर में रहने पर पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।

(२१६) घोष घट (कट) वल्लभ ह्रद बदरी पिङ्गल (पिङ्गली) पिशङ्ग माला रक्षा शाला (वृट्) कूट (कट्) शाल्मली अश्वत्थ तृण (शिल्पी) मुनि प्रेक्षाकू (प्रेक्षा) ।। **इति घोषादिः ।।**

आ-त्तः **८६. छात्र्यादयः शालायाम् ३८२० ।** शाला उत्तर में हो तो छात्रि आदि आद्युदात्त होते हैं ।

(२१७) छात्रि पेलि भाण्डि व्याडि आखण्डि आटि गोमि ।। **इति छात्र्यादिः ।।**

आ-त्तः **८७. प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम् ३८२१ ।** प्रस्थे ८८ कर्कि आदि वर्जित अवृद्ध पूर्वपद को आद्युदात्त होता है, यदि उत्तर में प्रस्थ शब्द हो ।

(२१८) कर्कि (कर्की) मघ्नी मकरी कर्कन्धु शमी करीरि (करीर) कन्दुक कुबल (कवल) बदरी ।। **इति कर्क्यादिः ।।**

आ-त्तः, प्रस्थे **८८. मालादीनां च ३८२२ ।** प्रस्थ उत्तर रहने पर पूर्व माला आदि का आदि उदात्त होता है ।

(२१९) माला शाला शोणा (शोण) द्राक्षा स्राक्षा क्षामा काञ्ची एक काम ।। **इति मालादिः ।।**

आ-त्त:	**८९. अमहन्नवन्नगरेऽनुदीचाम् ३८२३ ।**		नगर उत्तर में हो तो महत् नव को छोड़-कर शेष पूर्वपद का आदि उदात्त होता है, अनुदीच्य में ।
आ-त्त:	**९०. अर्मे चावर्णं द्व्यच्त्र्यच् ३८२४ ।**	अर्मे ९१	अर्म शब्द उत्तर में हो तो द्व्यच् त्र्यच् अवर्णान्त पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।
आ-त्त:, अर्मे	**९१. न भूताधिकसंजीवमद्राश्मकज्जलम् ३८२५** **** आद्युदात्तप्रकरणे दिवोदासादीनां छन्दस्युपसंख्यानम् ।***		उत्तर में अर्म हो तो भूत अधिक संजीव मद्र अश्मन् कज्जल पूर्वपद आद्युदात्त नहीं होता है ।
	पूर्वपदान्तोदात्त:		
	९२. अन्त: ३८२६ ।	अन्त: ११०	यहाँ से 'पूर्वपदस्य अन्त: उदात्त:' का अधिकार है ।
अन्त:	**९३. सर्वं गुणकार्त्स्न्ये ३८२७ ।** **** गुणात्तरेण तरपो लोपश्चेति वक्तव्यम् ।***		गुण और कार्त्स्न्य में सर्व पूर्वपद का अन्त उदात्त होता है ।
अन्त:	**९४. संज्ञायां गिरिनिकाययो: ३८२८ ।**		गिरि और निकाय यदि उत्तर में हो तो संज्ञा में पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।
अन्त:	**९५. कुमार्यां वयसि ३८२९ ।**		यदि कुमारी उत्तरपद हो अवस्था वाच्य हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।
अन्त:	**९६. उदकेऽकेवले ३८३० ।**		यदि उदक उत्तर में हो और अकेवल (मिश्र) वाची समास हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।
अन्त:	**९७. द्विगौ क्रतौ ३८३१ ।**		द्विगु में क्रत्वर्थ यदि उत्तर में हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।
अन्त:	**९८. सभायां नपुंसके ३८३२ ।**		सभा उत्तर में हो नपुंसकलिङ्गक समास हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।
अन्त:	**९९. पुरे प्राचाम् ३८३३ ।**	पुरे १०१	प्राच्य क्षेत्र में पुर शब्द उत्तर में हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।
अन्त:, पुरे	**१००. अरिष्टगौडपूर्वे च ३८३४ ।। ५ ।।**		पुर उत्तर में हो तो अरिष्ट गौड एवं तत्पूर्वक शब्द को अन्तोदात्त होता है ।
अन्त:, पुरे	**१०१. न हास्तिनफलकमार्देया: ३८३५ ।**		यदि पुर शब्द उत्तर में हो तो हास्तिन फलक मार्देय पूर्वपद को अन्तोदात्त नहीं होता है ।

अन्तः	**१०२. कुसूलकूपकुम्भशालं बिले ३८३६ ।**		बिल उत्तर में हो तो कुसूल कूप कुम्भ शाला पूर्वपद को अन्तोदात्त होता है ।
अन्तः	**१०३. दिक्छब्दा ग्रामजनपदाख्यानचानराटेषु ३८३७ ।**	दि-दा १०५	पूर्वपद दिक्शब्द अन्तोदात्त होते हैं, यदि उत्तर में ग्रामवाची जनपदवाची आख्यानवाची तथा चानराट शब्द हों ।
अन्तः, दि-दा	**१०४. आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासिनि ३८३८**		दिक्शब्द अन्तोदात्त होते हैं यदि उत्तर में आचार्योपसर्जनान्तेवासी वाचक शब्द हों ।
अन्तः, दि-दा	**१०५. उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च ३८३९ ।**		उत्तरपद वृद्धि वाले शब्द यदि उत्तर में हों तो दिक्शब्द और सर्व शब्द अन्तोदात्त होता है ।
अन्तः	**१०६. बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् ३८४० ।**	ब-हौ १२० स-म् १०८	बहुव्रीहि में पूर्वपदीय विश्व शब्द अन्तोदात्त होता है, यदि संज्ञा हो ।
अन्तः, ब-हौ, स-म्	**१०७. उदराश्वेषुषु ३८४१ ।**	उ-षु १०८	बहुव्रीहि में पूर्वपद को अन्तोदात्त होता है, यदि संज्ञा हो तथा उदर अश्व इषु उत्तरपद में हों ।
अन्तः, ब-हौ, उ-षु, स-म्	**१०८. क्षेपे ३८४२ ।**		क्षेप में उदर अश्व इषु उत्तर में हों तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है संज्ञा में तथा बहुव्रीहि में ।
अन्तः, ब-हौ	**१०९. नदी बन्धुनि ३८४३ ।**		बहुव्रीहि में बन्धुनि उत्तर में हो तो नद्यन्त पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।
अन्तः, ब-हौ	**११०. निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् ३८४४ ।**		निष्ठान्त उपसर्गपूर्वक यदि पूर्वपद हो तो बहुव्रीहि में विकल्प से अन्तोदात्त होता है ।
	उत्तरपदाद्युदात्तः		
ब-हौ	**१११. उत्तरपदादिः ३८४५ ।**	उत्त-दिः १९९	यहाँ से 'उत्तरपदस्य आदिः उदात्तः' का अधिकार है ।
उत्त-दिः, ब-हौ	**११२. कर्णो वर्णलक्षणात् ३८४६ ।**	कर्णः ११३	वर्णवाची लक्षणवाची पूर्व में हो तो उत्तरपदस्थ कर्ण आद्युदात्त होता है ।
उत्त-दिः, ब-हौ, कर्णः	**११३. संज्ञौपम्ययोश्च ३८४७ ।**	सं-योः ११५	संज्ञा औपम्य में बहुव्रीहिगत उत्तरपद कर्ण आद्युदात्त होता है ।
उत्त-दिः, ब-हौ, सं-योः	**११४. कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च ३८४८ ।**		उत्तरपदगत कण्ठपृष्ठ ग्रीवा जङ्घा आद्युदात्त होते हैं, यदि संज्ञा और **औपम्य हो** तथा बहुव्रीहि हो ।

उत्त-दि:, ब-हौ, सं-योः	**११५. शृङ्गमवस्थायां च ३८४९ ।**		बहुव्रीहि में अवस्था संज्ञा औपम्य हो तो उत्तरपदस्थ शृङ्ग आद्युदात्त होता है ।
उत्त-दि:, ब-हौ	**११६. नञो जरमरमित्रमृताः ३८५० ।**		बहुव्रीहि में नञ् उत्तरवर्ती जर मर मित्र मृत आद्युदात्त होते हैं ।
उत्त-दि:, ब-हौ	**११७. सोर्मनसी अलोमोषसी ३८५१ ।**	सो: १२०	लोम और उषस् भिन्न मन्नन्त असन्त आद्युदात्त होते हैं, यदि बहुव्रीहि में सु के बाद हों ।
उत्त-दि:, ब-हौ, सो:	**११८. क्रत्वादयश्च ३८५२ ।** (२२०) क्रतु दृशीक प्रतीक प्रतूर्ति हव्य भव्य भग ॥ **इति क्रत्वादिः ॥**		सु के बाद आये क्रतु आदि शब्द बहुव्रीहि में आद्युदात्त होते हैं ।
उत्त-दि:, ब-हौ, सो:	**११९. आद्युदात्तं द्व्यच्छन्दसि ३८५३ ।**	छ-सि १२०	बहुव्रीहि में सु के उत्तर में आद्युदात्त द्व्यच् को आद्युदात्त ही होता है वेद में ।
उत्त-दि:, ब-हौ, छ-सि, सो:	**१२०. वीरवीर्यौ च ३८५४ ॥ ६ ॥**		वेद में बहुव्रीहि में सु के बाद वीर वीर्य आद्युदात्त होते हैं ।
उत्त-दि:	**१२१. कूलतीरतूलमूलशालाक्षसममव्ययीभावे ३८५५ ।**		अव्ययीभाव में उत्तरपदस्थ कूल तीर तूल मूल शाला अक्ष सम आद्युदात्त होते हैं ।
उत्त-दि:	**१२२. कंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं द्विगौ ३८५६ ।**		द्विगु में उत्तरपदस्थ कंस मन्थ शूर्प पाय्य काण्ड आद्युदात्त होते हैं ।
उत्त-दि:	**१२३. तत्पुरुषे शालायां नपुंसके ३८५७ ।**	त-षे १३७ न-के १२५	तत्पुरुष नपुंसक में शालाशब्दान्त उत्तरपद आद्युदात्त होता है ।
उत्त-दि:, त-षे, न-के	**१२४. कन्था च ३८५८ ।**	कन्था १२५	तत्पुरुष नपुंसक में उत्तरपद कन्था शब्द आद्युदात्त होता है ।
उत्त-दि:, त-षे, न-के, कन्था	**१२५. आदिश्चिहणादीनाम् ३८५९ ।** (२२१) चिहण मदुर मद्रुमर वैतुल पटत्क बैडालिकर्णक बैडालिकर्णि कुक्कुट चिक्कण चित्कण ॥ **इति चिहणादिः ॥**		कन्थान्त तत्पुरुष नपुंसक में चिहण आदि का आदि उदात्त होता है ।
उत्त-दि:, त-षे	**१२६. चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम् ३८६०**		गर्हा में चेल खेट कटुक काण्ड उत्तरपद तत्पुरुष में आद्युदात्त होते हैं ।
उत्त-दि:, त-षे	**१२७. चीरमुपमानम् ३८६१ ।**		उपमानवाची तत्पुरुष में उत्तरपद चीर आद्युदात्त होता है ।

उत्त-दिः, त-षे **१२८. पललसूपशाकं मिश्रे ३८६२ ।** मिश्रवाची तत्पुरुष में उत्तरपद पलल सूप शाक आद्युदात्त होते हैं।

उत्त-दिः, त-षे **१२९. कूलसूदस्थलकर्षाः संज्ञायाम् ३८६३ ।** संज्ञा में तत्पुरुष में उत्तरपद कूल सूद स्थल कर्ष आद्युदात्त होते हैं।

उत्त-दिः, त-षे **१३०. अकर्मधारये राज्यम् ३८६४ ।** अ-ये १३१ कर्मधारय वर्जित तत्पुरुष में राज्यम् उत्तरपद आद्युदात्त होता है।
**** चेलराज्यादिस्वरादव्ययस्वरो भवति पूर्वविप्रतिषेधेन ।***

उत्त-दिः, त-षे, अ-ये **१३१. वर्ग्यादयश्च ३८६५ ।** अकर्मधारय तत्पुरुष में उत्तरपद वर्ग्य आदि शब्द आद्युदात्त होते हैं।

(२२२) दिगादिषु वर्गादयस्त एव कृतयदन्ता वर्ग्यादयः ।

उत्त-दिः, त-षे **१३२. पुत्रः पुंभ्यः ३८६६ ।** पुत्रः १३३ पुँल्लिङ्ग से उत्तरवर्ती पुत्र शब्द तत्पुरुष में आद्युदात्त होता है।

उत्त-दिः, त-षे, पुत्रः **१३३. नाचार्यराजर्त्विक्संयुक्तज्ञात्याख्येभ्यः ३८६७ ।** आचार्य राजा ऋत्विक् संयुक्त ज्ञाति वाची शब्दों से पर पुत्र शब्द आद्युदात्त नहीं होता है।

उत्त-दिः, त-षे **१३४. चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः ३८६८ ।** अ-याः १३५ तत्पुरुष में अप्राणिवाची षष्ठ्यन्त से परे चूर्ण आदि उत्तरपद आद्युदात्त होते हैं।

(२२३) चूर्ण करिव करिप शाकिन शाकट द्राक्षा तूस्त कुन्दुम दलप चमसी चक्कन चौल ॥
इति चूर्णादिः ।।

उत्त-दिः, त-षे, अ-याः **१३५. षट् च काण्डादीनि ३८६९ ।** अप्राणि षष्ठ्यन्त से परे काण्ड आदि उत्तरपद आद्युदात्त होते हैं।

(२२४) काण्ड चीर पलल सूप शाक कूल ॥
इति काण्डादिः ।।

उत्त-दिः, त-षे **१३६. कुण्डं वनम् ३८७० ।** वन्यपूर्वक उत्तरपद कुण्ड तत्पुरुष में आद्युदात्त होता है।

उत्तरपदप्रकृतिस्वरः

उत्त-दिः, त-षे **१३७. प्रकृत्या भगालम् ३८७१ ।** प्र-त्या १४२ भगालवाची उत्तरपद में हो तो प्रकृतिस्वर होता है।

उत्त-दिः, प्र-त्या **१३८. शितेर्नित्याबह्वज्बहुव्रीहावभसत् ३८७२** शिति से उत्तर भसत् वर्जित अबह्वच् शब्द हों तो बहुव्रीहि में प्रकृतिस्वर होता है।

उत्त-दि:, प्र-त्या **१३९. गतिकारकोपपदात्कृत् ३८७३ ।** तत्पुरुष में गतिकारक उपपद से परे कृदन्त को प्रकृतिस्वर होता है ।

उत्त-दि:, प्र-त्या **१४०. उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ३८७४ ।** उभे १४२ ॥ ७ ॥ यु-त् १४२ वनस्पति आदि शब्दों में दोनों पदों में साथ साथ प्रकृति स्वर होता है ।

(२२५) वनस्पति: बृहस्पति: शचीपति: तनूनपात् नराशंस: शुन:शेफ: शण्डामर्कौ तृष्णावरूत्री लम्बाविश्ववयसौ मर्मृत्यु: ॥ **इति वनस्पत्यादि: ।।**

उत्त-दि:, उभे, प्र-त्या, यु-त् **१४१. देवताद्वन्द्वे च ३८७५ ।** देवतावाची द्वन्द्व में दोनों पदों में साथ-साथ प्रकृतिस्वर होता है ।

उत्त-दि:, उभे, प्र-त्या, यु-त् **१४२. नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथिवीरुद्रपूषमन्थिषु ३८७६ ।** पृथिवी रुद्र पूष मन्थि वर्जित देवता द्वन्द्व में दोनों पदों में प्रकृतिस्वर नहीं होता है, यदि उत्तरपद अनुदात्तादि हो ।

उत्तरपदान्तोदात्त:

उत्त-दि: **१४३. अन्त: ३८७७ ।** अन्त: १९९ यहाँ से 'उत्तरपदस्य अन्त:' का अधिकार है ।

उत्त-दि:. अन्त: **१४४. थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम् ३८७८ ।** गति कारक उपपद से परे थ अथ घञ् क्त अज् अप् इत्र क अन्तवाले उत्तरपदों का अन्त उदात्त होता है ।

उत्त-दि:. अन्त: **१४५. सूपमानात्क्त: ३८७९ ।** क्त: १४९ सु और उपमान से परे क्तान्त उत्तर पद अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दि: अन्त:, क्त: **१४६. संज्ञायामनाचितादीनाम् ३८८० ।** सं-म् १४८ संज्ञा में गतिकारकोपपद से क्तान्त उत्तरपद अन्तोदात्त होता है आचित आदि को छोड़कर ।

(२२६) आचित पर्याचित आस्थापित परिगृहीत निरुक्त प्रतिपन्न अपश्लिष्ट प्रश्लिष्ट उपहित उपस्थित । 'संहितागवि' १७० ॥ **इत्याचितादि: ।।**

उत्त-दि:. अन्त:, क्त:, सं-म् **१४७. प्रवृद्धादीनां च ३८८१ ।** प्रवृद्ध आदि के क्तान्त उत्तरपद अन्तो-दात्त होते हैं ।

(२२७) 'प्रवृद्धं यानम्' १७१ । 'प्रवृद्धो वृषल:' १७२ । 'प्रयुता सूष्णव:' १७३ । 'आकर्षेऽवहित:' १७४ । 'अवहितो भोगेषु' १७५ । खट्वारूढ: । कविशस्त: ॥ **इति प्रवृद्धादि: ।। आकृतिग-**

णोऽयम् ।। तेन। प्रवृद्धं यानम्। अप्रवृद्धो वृषकृतो रथ इत्यादि ।।

उत्त-दि:. अन्त:, क्त:, सं-म्	**१४८. कारकद्दत्तश्रुतयोरेवाशिषि ३८८२ ।**	का-त् १५१	संज्ञा में आशी: वाच्य रहने पर कारक से परे केवल दत्त और श्रुत क्तान्त का ही अन्त उदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, क्त:, का-त्	**१४९. इत्थंभूतेन कृतमिति च ३८८३ ।**		इत्थंभूतेन कृतम् इस अर्थ में समस्त क्तान्त उत्तरपद अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, का-त्	**१५०. अनो भावकर्मवचन: ३८८४ ।**		कारक से परे अन प्रत्ययान्त भाव-वचन कर्मवचन अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, का-त्	**१५१. मन्क्तिन्व्याख्यानशयनासनस्थानयाजकादिक्रीता: ३८८५ ।**		उत्तरपदस्थ मन्नन्त क्तिन्नन्त व्याख्यान शयन आसन स्थान तथा याजकादि एवं क्रीत पद अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दि:. अन्त:	**१५२. सप्तम्या: पुण्यम् ३८८६ ।**		सप्तमी से परे पुण्य यह उत्तरपद अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:	**१५३. ऊनार्थकलहं तृतीयाया: ३८८७ ।**	तृ-या: १५४	तृतीया से परे ऊनार्थ तथा कलह शब्द अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दि:. अन्त:, तृ-या:	**१५४. मिश्रं चानुपसर्गमसन्धौ ३८८८ ।**		यदि सन्धि न हो तो तृतीयान्त से परे अनुपसर्ग मिश्र उत्तरपद अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:	**१५५. नञो गुणप्रतिषेधे संपाद्यर्हहितालमर्थास्तद्धिता: ३८८९ ।**	नञ: १६१ गु-धे १५६ तद्धिता: १५६	गुण प्रतिषेध में वर्तमान नञ् से परे तथा सम्पादि अर्हहित अलम् अर्थ में तद्धितान्त से परे उत्तरपद अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दि:. अन्त:, नञ:, गु-धे, तद्धिता:	**१५६. ययतोश्चातदर्थे ३८९० ।**		गुणप्रतिषेधक अतदर्थक य और यत् अन्त वाले का उत्तरपद अन्तोदान्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, नञ:	**१५७. अच्कावशक्तौ ३८९१ ।**	अच्कौ १५८	नञ् से परे अशक्तिवाचक अजन्त कान्त उत्तरपद अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, नञ:, अच्कौ	**१५८. आक्रोशे च ३८९२ ।**	आ-शे १५९	आक्रोश रहने पर नञ् से उत्तर अच् और कान्त अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, नञ:, आ-शे	**१५९. संज्ञायाम् ३८९३ ।**		आक्रोश में संज्ञा में नञ् से परे उत्तरपद अन्तोदात्त होता है।

उत्त-दि:. अन्त:, न-ञ:	**१६०. कृत्योकेष्णुच्चार्वादयश्च ३८९४ ।।८।।**		कृत्य उक इष्णुच् अन्तवाले तथा चारु आदि शब्द यदि नञ् से परे हों तो अन्तोदात्त होते हैं।
	(**२२८**) चारु साधु यौधिक (यौधकि) अनङ्ग । मेजय वदान्य अकस्मात् । 'वर्तमानवर्धमानत्वरमाणध्रियमाणक्रियमाणरोचमानशोभमाना: संज्ञायाम्' १७६ । 'विकारसदृशे व्यस्तसमस्ते' १७७ । गृहपति गृहपतिक ('राजाह्नोश्छन्दसि') १७८ ।। **इति चार्वादि: ।।** ** राजाह्नोश्छन्दसि ।*		
उत्त-दि:. अन्त:, न-ञ:	**१६१. विभाषा तृन्नन्नतीक्ष्णशुचिषु ३८९५ ।**		नञ् से परे तृन्नन्त अन्न तीक्ष्ण शुचि शब्द विकल्प से अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दि:. अन्त:	**१६२. बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्य: प्रथमपूरणो: क्रियागणने ३८९६ ।**	ब-हौ १७७	बहुव्रीहि में इदम् एतत् तत् से परे प्रथम शब्द तथा पूरण प्रत्ययान्त शब्द का अन्त उदात्त होता है, यदि वे क्रियागणन में वर्तमान हों।
उत्त-दि:. अन्त:, ब-हौ	**१६३. संख्याया: स्तन: ३८९७ ।**	सं-न: १६४	संख्या से परे स्तन शब्द बहुव्रीहि में अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, ब-हौ, सं-न:	**१६४. विभाषा छन्दसि ३८९८ ।**		वेद में संख्या से परे स्तन विकल्प से अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, ब-हौ	**१६५. संज्ञायां मित्राजिनयो: ३८९९ ।** ** ऋषिप्रतिषेधोऽमित्रे ।*		संज्ञा एवं बहुव्रीहि में यदि मित्र और अजिन हों तो वे अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दि:. अन्त:, ब-हौ	**१६६. व्यवायिनोऽन्तरम् ३९०० ।**		बहुव्रीहि में व्यवधान कारक शब्दों से पर शब्द अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दि:. अन्त:, ब-हौ	**१६७. मुखं स्वाङ्गम् ३९०१ ।**	मु-ङ्गम् १६९	बहुव्रीहि में स्वाङ्गवाची उत्तरपदस्थ मुख शब्द अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, ब-हौ, मु-ङ्गम्	**१६८. नाव्ययदिक्छब्दगोमहत्स्थूलमुष्टिपृथुवत्सेभ्य: ३९०२ ।**		बहुव्रीहि में अव्यय दिक्शब्द गो महत् स्थूल मुष्टि पृथु वत्स से परे स्वाङ्गवाची मुख शब्द अन्तोदात्त नहीं होता है।
उत्त-दि:. अन्त:, ब-हौ, मु-ङ्गम्	**१६९. निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् ३९०३ ।**		निष्ठान्त उपमान से परे स्वाङ्गवाची मुख शब्द बहुव्रीहि में विकल्प से अन्तोदात्त होता है।

उत्त-दिः. अन्तः, ब-हौ	**१७०. जातिकालसुखादिभ्योऽनाच्छादनात्क्तोऽकृतमितप्रतिपन्नाः ३९०४ ।**	जा-भ्यः १७१	बहुव्रीहि में आच्छादन वर्जित जाति वाची शब्दों कालवाची तथा सुख आदि शब्दों से परे कृत मित प्रतिपन्न भिन्न क्तान्त अन्दोदात्त होते हैं।
उत्त-दिः. अन्तः, ब-हौ, जा-भ्यः	**१७१. वा जाते ३९०५ ।**		जातिकाल सुखादि से परे जात शब्द बहुव्रीहि में विकल्प से अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, ब-हौ	**१७२. नञ्सुभ्याम् ३९०६ ।**	न-म् १७४	बहुव्रीहि में नञ् सु परे उत्तरपद अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, ब-हौ, न-म्	**१७३. कपि पूर्वम् ३९०७ ।**	कपि १७४	नञ् सु पूर्व में हो कप् प्रत्यय अन्त में हो तो पूर्व अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, ब-हौ, न-म्, कपि	**१७४. ह्रस्वान्तेऽन्त्यात्पूर्वम् ३९०८ ।**		नञ् सु से परे ह्रस्वान्त उत्तरपद में कप् से पूर्व अन्त्यपूर्व को उदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, ब-हौ	**१७५. बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि ३९०९ ।**	बहोः १७६	उत्तरपदार्थ बहुत्ववाची बहुशब्द से परे पद को नञ्वत् स्वर होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, ब-हौ, बहोः	**१७६. न गुणादयोऽवयवाः ३९१० ।**		अवयववाची बहु से परे गुणादि बहुव्रीहि में अन्तोदात्त नहीं होते हैं।

(२२९) गुण अक्षर अध्याय सूक्त छन्दोमान ॥
इति गुणादिः ॥ आकृतिगणः ॥

उत्त-दिः. अन्तः, ब-हौ	**१७७. उपसर्गात्स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु ३९११ ।**	उ-त् १९६	उपसर्ग से पर्शुरहित एकरूप स्वाङ्ग बहुव्रीहि में अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१७८. वनं समासे ३९१२ ।**	वनं १७९	उपसर्गोत्तर वन शब्द सभी समासों में अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्, वनं	**१७९. अन्तः ३९१३ ।**		अन्तः शब्दोत्तर वन अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१८०. अन्तश्च ३९१४** ॥ ९ ॥	अन्तः १८१	उपसर्गोत्तर अन्तः शब्द अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्, अन्तः	**१८१. न निविभ्याम् ३९१५ ।**		नि वि से परे अन्तः शब्द अन्तोदात्त नहीं होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१८२. परेरभितोभावि मण्डलम् ३९१६ ।**		परि से परे अभितोभाविवाची तथा मण्डल शब्द अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१८३. प्रादस्वाङ्गं संज्ञायाम् ३९१७ ।**		संज्ञा में प्रोत्तर अस्वाङ्गवाची शब्द अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१८४. निरुदकादीनि च ३९१८ ।**		निरुदक आदि अन्तोदात्त होते हैं।

(२३०) निरुदक निरुपल निर्मक्षिक निर्मशक निष्कालक निष्कालिक निष्पेष दुस्तरीप निस्तरीप निस्तरीक निरजिन (उदजिन) उपाजिन। 'परेर्हस्तपादकेशकर्षाः' १७९ ॥ **इति निरुदकादिः ॥ आकृतिगणः ॥**

उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१८५. अभेर्मुखम् ३९१९ ।**	मुखम् १८६	अभि उत्तरवर्ती मुख अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्, मुखम्	**१८६. अपाच्च ३९२० ।**	अपात् १८७	अप उत्तरवर्ती मुख अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्, अपात्	**१८७. स्फिगपूतवीणाऽञ्जोऽध्वकुक्षिसीरनाम-नाम च ३९२१ ।**		अप उत्तरवर्ती स्फिग पूत वीणा अध्वन् कुक्षि सीरवाचक शब्द तथा नामन् शब्द अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१८८. अधेरुपरिस्थम् ३९२२ ।**		अधि उत्तरवर्ती उपरिस्थवाची शब्द अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१८९. अनोरप्रधानकनीयसी ३९२३ ।**	अनोः १९०	अनु उत्तरवर्ती अप्रधानवाची तथा कनीयस् शब्द अन्तोदात्त होते हैं।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्, अनोः	**१९०. पुरुषश्चान्वादिष्टः ३९२४ ।**		अनु उत्तरवर्ती अन्वादिष्टवाची पुरुष अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१९१. अतेरकृत्पदे ३९२५ ।** ** अतेर्धातुलोप इति वक्तव्यम् ।*		अति उत्तरवर्ती अकृदन्तपद शब्द अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१९२. नेरनिधाने ३९२६ ।**		अनिधान में नि उत्तरवर्ती पद अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्	**१९३. प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे ३९२७ ।**	त-षे १९६	प्रति उत्तरवर्ती अंशु आदि शब्द तत्पुरुष में अन्तोदात्त होते हैं।

(२३१) अंशु जन (राजन्) उष्ट्र खेटक अजिर आर्द्रा श्रवण कृत्तिका अर्धपुर ॥ **इत्यंश्वादिः ॥**

उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्, त-षे	**१९४. उपाद्द्व्यजजिनमगौरादयः ३९२८ ।**		उपोत्तरवर्ती द्व्यच् शब्द तथा अजिन शब्द अन्तोदात्त होते हैं गौर आदि को छोड़कर।

(२३२) गौर तैष तैल लेट लोट जिह्वा कृष्ण कन्या गुध कल्प पाद ॥ **इति गौरादिः ॥**

उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्, त-षे	**१९५. सोरवक्षेपणे ३९२९ ।**		अवक्षेपण में सु उत्तरवर्ती पद अन्तोदात्त होता है।
उत्त-दिः. अन्तः, उ-त्, त-षे	**१९६. विभाषोत्पुच्छे ३९३० ।**	विभाषा १९८	तत्पुरुष में उत्पुच्छ विकल्प से अन्तोदात्त होता है।

उत्त-दि:. अन्त:, विभाषा **१९७. द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्धसु बहुव्रीहौ ३९३१** — बहुव्रीहि में द्वि त्रि उत्तरवर्ती पाद् दत् मूर्द्धन् शब्द विकल्प से अन्तोदात्त होते हैं।

उत्त-दि:. अन्त:, विभाषा **१९८. सक्थं चाक्रान्तात् ३९३२ ।** — आक्रान्त परक सक्थ विकल्प से अन्तोदात्त होता है।

उत्त-दि:. अन्त: **१९९. परादिश्छन्दसि बहुलम् ३९३३ ।** — पर में अवस्थित सक्थ का आदि वेद में बहुलतया उदात्त होता है।

** त्रिचक्रादीनां छन्दस्युपसंख्यानम् ।*

(२३३) (वा० ग०) । त्रिचक्र त्रिवृत् त्रिवङ्कुर ।। **इति त्रिचक्रादि: ।। आकृतिगण: ।।**

बहुव्रीहावाशङ्कागौ: सादक्ते नित्यार्थे युक्तान
हास्तिनकूलतीरदेताविभाषा न
निव्येकोनविंशति: ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य द्वितीय: पाद: ।

तृतीय: पाद: ।

उत्तरपदाधिकारे अलुक्

१. अलुगुत्तरपदे ९५८ । — उ-दे १३८, अ-क् २३ — यहाँ से उत्तरपदे अलुक् का अधिकार है।

उ-दे, अ-क् **२. पञ्चम्या: स्तोकादिभ्य: ९५९ ।** — स्तोकादि से परे पञ्चमी का अलुक् होता है यदि बाद में पद हो।

** ब्राह्मणाच्छंसिन उपसंख्यानम् ।*

उ-दे, अ-क् **३. ओज:सहोऽम्भस्तमसस्तृतीयाया: ९६० ।** — तृ-या: ५ — ओजस् सहस् अम्भस् तमस् से परे तृतीया का अलुक् होता है उत्तरपद के पूर्व।

** अञ्जस उपसंख्यानम् ।*

** पुंसानुजो[1] जनुषान्ध इति च ।*

उ-दे, अ-क्, तृ-या: **४. मनस: संज्ञायाम् ९६१ ।** — मनस: ५ — संज्ञा में उत्तरपद परे रहते मनस् की तृतीया का अलुक् होता है।

उ-दे, अ-क्, तृ-या:, मनस: **५. आज्ञायिनि च ९६२ ।** — आज्ञायिन् उत्तरपद में हो तो मनस् की तृतीया का अलुक् होता है।

उ-दे, अ-क् **६. आत्मनश्च[2] ९६३ ।** — (पूरण प्रत्ययान्त) उत्तर पद परे रहने पर मनस् की तृतीया का अलुक् होता है।

** पूरणे ।*

उ-दे, अ-क् **७. वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्या: ९६४ ।** — वै-या: ८ — वैयाकरणाख्या में आत्मने की चतुर्थी का अलुक् होता है।

---

१. विकृताक्ष इत्यपि भाष्ये पाठ: ।

२. इदं विशिष्टं वार्तिकमिति भाष्यस्वरस: इति स्पष्टं शेखरे ।

उ-दे, अ-क्, वै-या:	**८. परस्य च ९६५ ।**		पर के चतुर्थी का अलुक् होता है वैयाकरणाख्या में ।
उ-दे, अ-क्, वै-या:	**९. हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम् ९६६ ।** **** हृद्द्युभ्यां च ।***	ह-त् १३ स-म्या: २०	संज्ञा में हलन्त और अदन्त की सप्तमी का अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:, ह-त्	**१०. कारनाम्नि च प्राचां हलादौ ९६८ ।**		प्राच्य देश में हलन्त और अदन्त की सप्तमी का अलुक् होता है यदि उत्तरपद हलादि हो तथा वह कार (कर) वाची हो ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:, ह-त्	**११. मध्याद्गुरौ ९६९ ।** **** अन्ताच्च ।***		गुरु उत्तर पद में हो तो मध्य की सप्तमी का अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:, ह-त्	**१२. अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे ९७० ।**		मूर्द्ध मस्तक भिन्न स्वाङ्गवाची शब्दों की सप्तमी का अलुक् होता है, यदि उत्तर पद में काम न हो ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:, ह-त्	**१३. बन्धे च विभाषा ९७१ ।**		(घञन्त) बन्ध यदि उत्तर में हो तो हलदन्त की सप्तमी का विकल्प से अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:	**१४. तत्पुरुषे कृति बहुलम् ९७२ ।**	बहुलम् १५	तत्पुरुष में यदि कृदन्त उत्तरपद में हो तो सप्तमी का बहुलतया अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:, बहुलम्	**१५. प्रावृट्शरत्कालदिवां जे ९७३ ।**	जे १६	यदि ज उत्तरपद में हो तो प्रावृष् शरत् काल दिव् की सप्तमी का बाहुल्येन अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:, जे	**१६. विभाषा वर्षक्षरशरवरात् ९७४ ।**	विभाषा १८	यदि ज उत्तरपद में हो तो वर्ष क्षर शर वर की सप्तमी का विकल्प से अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:, विभाषा	**१७. घकालतनेषु कालनाम्नः ९७५ ।**		घ संज्ञक प्रत्यय, कालशब्द, तन प्रत्यय उत्तरपद में हो तो कालवाची, शब्द की सप्तमी का विकल्प से अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:, विभाषा	**१८. शयवासवासिष्वकालात् ९७६ ।** **** अपो योनियन्मतिषु[1] ।***		यदि उत्तर में शय वास वासिन् हो तो अकालवाची शब्दों की सप्तमी का विकल्प से अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, स-म्या:	**१९. नेन्सिद्धबध्नातिषु च ९७७ ।**	न २०	यदि सिद्ध इन्नन्त बध्नाति उत्तर में हों तो उनसे पूर्व की सप्तमी का अलुक् नहीं होता है ।

१. अत्र 'मतुषु' इति पाठानादरः ।

उ-दे, अ-क्, स-म्या:, न	**२०. स्थे च भाषायाम् ९७८ ।। १ ।।**		भाषा में स्थ के उत्तर में रहने पर उससे पूर्व की सप्तमी का अलुक् नहीं होता है ।
उ-दे, अ-क्	**२१. षष्ठ्या आक्रोशे ९७९ ।** * *वाग्दिक्पश्यद्भ्यो युक्तिदण्डहरेषु ।* * *आमुष्यायणामुष्यपुत्रिकामुष्यकुलिकेति च ।* * *देवानां प्रिय इति च (मूर्खे) ।* * *शेफपुच्छलाङ्गूलेषु शुनः संज्ञायाम् ।* * *दिवश्च दासे ।*	ष-या: २४ आ-शे २२	आक्रोश गम्यमान हो तो उत्तरपद के पूर्व की षष्ठी का अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, ष-या:, आ-शे	**२२. पुत्रेऽन्यतरस्याम् ९८० ।**		पुत्र शब्द उत्तर में हो तथा आक्रोश गम्यमान हो तो षष्ठी का अलुक् होता है ।
उ-दे, अ-क्, ष-या:	**२३. ऋतो विद्यायोनिसंबन्धेभ्यः ९८१ ।** * *विद्यायोनिसंबन्धेभ्यस्तत्पूर्वोत्तरपदग्रहणम् ।*	ऋत: २४ वि-भ्य: २५	ऋकारान्त की षष्ठी का अलुक् होता है, यदि विद्या योनि सम्बन्धी शब्द उत्तर में हों ।
उ-दे, वि-भ्य:, ष-या:, ऋत:	**२४. विभाषा स्वसृपत्योः ९८२ ।**		यदि स्वसृ और पति शब्द उत्तर में हों तो विद्या योनि सम्बन्धी ऋकारान्त शब्दों की षष्ठी का विकल्प से अलुक् होता है ।
	उत्तरपदविकार:		
उ-दे, वि-भ्य:	**२५. आनङृतो द्वन्द्वे ९२१ ।**	आनङ् २६	विद्या योनि सम्बन्ध वाचक ऋकारान्त शब्दों को आनङ् होता है, यदि द्वन्द्व हो तथा उत्तरपद भी ऋकारान्त हो ।
उ-दे, आनङ्	**२६. देवताद्वन्द्वे च ९२२ ।** * *वायुशब्दप्रयोगे प्रतिषेधो वक्तव्यः ।*	दे-द्वे ३१	देवतावाची द्वन्द्व में पूर्वपद को आनङ् होता है ।
उ-दे, दे-द्वे	**२७. ईदग्नेः सोमवरुणयोः ९२३ ।**	अग्ने: २८	सोम वरुण के देवता द्वन्द्व में पूर्वपदस्थ अग्नि को ईकार आदेश होता है ।
उ-दे, दे-द्वे, अग्ने	**२८. इद्वृद्धौ ९२५ ।** * *विष्णौ न ।*		कृतवृद्धि उत्तरपद वाले देवता द्वन्द्व में पूर्वपदस्थ अग्नि को इकार आदेश होता है ।
उ-दे, दे-द्वे	**२९. दिवो द्यावा ९२६ ।**	दि-वा ३०	उत्तरपद परे रहने पर देवताद्वन्द्व में दिव् को द्यावा आदेश होता है ।
उ-दे, दे-द्वे, दि-वा	**३०. दिवसश्च पृथिव्याम् ९२७ ।**		देवता द्वन्द्व में पृथिवी उत्तर में हो तो दिव् को दिवस् तथा द्यावा होता है ।

उ-दे, दे-द्वे **३१. उषासोषसः ९२८ ।** उत्तरपद परे रहने पर देवता द्वन्द्व में उषस् को उषासा होता है ।

उ-दे **३२. मातरपितरावुदीचाम् ९२९ ।** औदीच्य मत में मातरपितरौ बनता है ।

उ-दे **३३. पितरामातरा च च्छन्दसि ३५२८ ।** वेद में पितरामातरा बनता है ।

पुंवद्भावः

उ-दे **३४. स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु ८३१ ।** स्त्रि-वत् ४२ भा-त् ४३ अनूङ् ४२

ऊङ्रहित भाषितपुंस्क स्त्री लिङ्ग शब्द को पुंवत् हो जाता है यदि समा-नाधिकरण स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद में हो । पर इस स्त्रीलिङ्ग में पूरण-प्रत्ययान्त तथा प्रिया आदि शब्द न हों ।

(२३४) प्रिया मनोज्ञा कल्याणी सुभगा दुर्भगा भक्तिः सचिवा स्वसा (स्वा) कान्ता (क्षान्ता) समा चपला दुहिता वामा (तनया)॥ **इति प्रियादिः ॥**

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-वत्, अनूङ् **३५. तसिलादिष्वाकृत्वसुचः ८३६ ।** कृत्वसुजन्त तसिलादि परे रहने पर अनूङ् भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द को पुंवत् होता है ।

(२३५) तसिल् त्रल् तरप् तमप् चरट् जातीयर् कल्पप् देशीयर् रूपप् पाशप् थल् थाल् दा र्हिल् तिल् ध्यन् ॥ **एते तसिलादयः ॥**

**** शसि बह्वल्पार्थस्य पुंवद्भावो वक्तव्यः ।***

**** त्वतलोर्गुणवचनस्य ।***

**** भस्याढे तद्धिते ।***

**** ठक्छसोश्च ।***

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-वत्, अनूङ् **३६. क्यङ्मानिनोश्च ८३७ ।** क्यङ् और मानी परे हो तो अनूङ् भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द को पुंवत् होता है ।

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-वत्, अनूङ् **३७. न कोपधायाः ८३८ ।** न ४१ क उपधावाले स्त्रीलिङ्ग शब्दों को पुंवद्भाव नहीं होता है ।

**** कोपधप्रतिषेधे तद्धितवुग्रहणम् ।***

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-वत्, अनूङ्, न **३८. संज्ञापूरण्योश्च ८३९ ।** संज्ञा एवं पूरणप्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों का पुंवद्भाव नहीं होता है ।

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-वत्, अनूङ्, न **३९. वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धितस्यारक्तविकारे ८४० ।** रक्त एवं विकारार्थरहित वृद्धिनिमित्त तद्धितान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव नहीं होता है ।

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-वत्, अनूङ्, न	४०. स्वाङ्गाच्चेतः ८४१ । ।। २ ।। * *अमानिनीति वाच्यम् ।*		स्वाङ्गोत्तर ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों का भी पुंवद्भाव नहीं होता है ।
उ-दे, भा-त्, स्त्रि-वत्, अनूङ्, न	४१. जातेश्च ८४२ ।		जाति वाचक शब्दों से परे स्त्री प्रत्यय वाले स्त्रीलिङ्ग वाचक शब्दों से भी पुंवद्भाव नहीं होता है ।
उ-दे, भा-त्, स्त्रि-वत्, अनूङ्	४२.[1] पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु ७४६ । * *कुक्कुट्यादीनामण्डादिषु ।* (२३६-२३७) (वा० ग०) । कुक्कुटी मृगी काकी अण्ड पद शाब भ्रकुंस भ्रुकुटी ।। **इति कुक्कुट्याद्यण्डादी ।।**		कर्मधारय में तथा जातीय देशीय युक्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों का पुंवद्भाव होता है, यदि वह भाषितपुंस्क तथा अनूङ् हो ।
उ-दे, भा-त्	४३. घरूपकल्पच्चेलड्ब्रुवगोत्रमतहतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः ९८५ ।	घ-तेषु ४५ ह्रस्वः ४५	भाषितपुंस्क अनेकाच् ङीबन्त को ह्रस्व हो जाता है, यदि उसके बाद घ रूप कल्पप् चेलट् ब्रुव गोत्र मत और हत हों ।
उ-दे, ह्रस्वः, घ-तेषु	४४. नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम् ९८६ । * *कृन्नद्या न ।*	नद्याः ४५ अ-म् ४५	अङ्यन्त नदी तथा एकाच् ङ्यन्त को विकल्प से ह्रस्व होता है यदि पर में घ रूप आदि हो ।
उ-दे, ह्रस्वः, नद्याः, घ-तेषु, अ-म्	४५. उगितश्च ९८७ ।		उगित् से परे नदी को घ रूप आदि के यहाँ विकल्प से ह्रस्व होता है ।
उ-दे	४६. आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः ८०७ । * *महत आत्त्वे घासकरविशिष्टेषूपसंख्यानं पुंवद्भावश्च ।* * *अष्टनः कपाले हविषि ।* * *गवि च युक्ते ।*	आत् ४९	समानाधिकरण या जातीयर् प्रत्यय बाद में हो तो पूर्वस्थ महत् को आकार आदेश होता है ।
उ-दे, आत्	४७. द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः ८०८ * *प्राक्शतादिति वक्तव्यम् ।*	द्व्य-त्योः ४९	द्वि और अष्टन् को आकार आदेश होता है, यदि संज्ञा हो तथा उत्तर में बहुव्रीहि और अशीति न हो ।
उ-दे, आत्, द्व्य-त्योः	४८. त्रेस्त्रयः ८०९ ।	त्रयः ४९	त्रि को त्रयस् आदेश होता है, यदि संख्या हो तथा उत्तर में बहुव्रीहि और अशीति न हो ।

१. इदं भाष्ये प्रत्याख्यातम् ।

उ-दे, आत्, द्वय-त्योः, त्रयः	**४९. विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम् ८१०**		संख्या हो तथा उत्तर में बहुव्रीहि और अशीति न हो तो सभी द्वि त्रि अष्टन् को विकल्प से आ होता है चत्वारिंशत् आदि में।
उ-दे	**५०. हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु ९८८।**	हृ-हृत् ५१	लेख यत् अण् लास यदि पर में हों तो हृदय को हृत् होता है।
उ-दे, हृ-हृत्	**५१. वा शोकष्यञ्रोगेषु ९८९।**		शोक ष्यञ् रोग यदि पर में हो तो हृदय को विकल्प से हृत् होता है।
उ-दे	**५२. पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु ९९०।**	पादस्य ५६	आजि आति ग उपहत यदि पर में हो तो पाद को पद होता है।
उ-दे, पादस्य	**५३. पद्यत्यतदर्थे ९९१।** ** इके चरतावुपसंख्यानम्।*	पद् ५६	अतदर्थ में यदि यत् प्रत्यय पर में हो तो पाद को पद् होता है।
उ-दे, पद्, पादस्य	**५४. हिमकाषिहतिषु च ९९२।**		हिम काषि हति पर में हो तो पाद को पद् होता है।
उ-दे, पद्, पादस्य	**५५. ऋचः शे ९९३।**		ऋक्सम्बन्धी पाद को पद् होता है श के यहाँ।
उ-दे, पद्, पादस्य	**५६. वा घोषमिश्रशब्देषु ९९४।** ** निष्के चेति वक्तव्यम्।*		पाद को विकल्प से पद् होता है यदि पर में घोष मिश्र शब्द हों।
उ-दे	**५७. उदकस्योदः संज्ञायाम् ९९५।** ** उत्तरपदस्येति च वक्तव्यम्।*	उद-दः ६०	यदि उत्तर में कोई पद हो और संज्ञा हो तो उदक को उद होता है।
उ-दे, उद-दः	**५८. पेषंवासवाहनधिषु च ९९६।**		पेषम् वास वाहन धि पर में हो तो उदक को उद आदेश होता है।
उ-दे, उद-दः	**५९. एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतरस्याम् ९९७**	अ-म् ६१	पूरयितव्य एकहलादि यदि उत्तर में हो तो उदक को विकल्प से उद आदेश होता है।
उ-दे, उद-दः, अ-म्	**६०. मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभारहारवीवधगा-हेषु च ९९८। ॥ ३ ॥**		उदक को विकल्प से उद आदेश होता है, यदि बाद में मन्थ ओदन सक्तु विन्दु वज्र भार हार बीवध गाह हों।
उ-दे, अ-म्	**६१. इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य ९९९।** ** इयङुवङ्भाविनामव्ययानां च नेति वाच्यम्।* ** अभ्रूकुंसादीनामिति वक्तव्यम्।*	ह्रस्वः ६६	यदि उत्तर में कोई पद हो तो अङ्यन्त इगन्त को विकल्प से ह्रस्व होता है।

उ-दे, ह्रस्वः	**६२. एक तद्धिते च १०००।**		यदि उत्तर में कोई पद हो या तद्धित हो तो एक को ह्रस्व होता है।
उ-दे, ह्रस्वः	**६३. ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम् १००१।**	ङ्यापोः ६४ ब-म् ६४	संज्ञा और छन्द में ङ्यन्त और आबन्त को बहुलतया ह्रस्व होता है।
उ-दे, ब-म्, ह्रस्वः, ङ्यापोः	**६४. त्वे च १००२।**		ङ्याप् को बहुलतया ह्रस्व होता है यदि बाद में त्व हो।
उ-दे, ह्रस्वः	**६५. इष्टकेषीकामालानां चिततूलभारिषु १००६।**		इष्टका इषीका माला को क्रमशः चित तूल भारिन् से पूर्व रहने पर ह्रस्व होता है।
उ-दे, ह्रस्वः	**६६. खित्यनव्ययस्य २९४३।**	खिति ६९ अ-स्य ६७	खिदन्त उत्तरपद में हो तो अनव्यय को ह्रस्व होता है।
उ-दे, खिति, अ-स्य	**६७. अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् २९४२।**	मुम् ७२	यदि खिदन्त उत्तर में हो तो अरुष् द्विषत् और अनव्यय अजन्त को मुम् का आगम होता है।
उ-दे, मुम्, खिति	**६८. इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च २९९४।**		एकाच् इजन्त से मुम् का आगम होता है, यदि खिदन्त परे हो। साथ ही मुम् द्वितीया के एकवचन के सदृश होता है।
उ-दे, मुम्, खिति	**६९. वाचंयमपुरन्दरौ च २९५७।**		वाचंयम और पुरन्दर निपातित होते हैं।
उ-दे, मुम्	**७०. कारे सत्यागदस्य १००७।** * *अस्तोश्चेति वक्तव्यम्।* * *भक्षस्य च छन्दसि।* * *धेनोर्भव्यायाम्।* * *लोकस्य पृणे।* * *इत्येऽनभ्याशस्य।* * *भ्राष्ट्राग्न्योरिन्धे।* * *गिलेऽगिलस्य।* * *गिलगिले च।* * *उष्णभद्रयोः करणे।* * *सूतोग्रराजभोजकुलमेरुभ्यो दुहितुः पुत्रड्वा।*		सत्य और अगद को मुम् होता है, यदि कार शब्द बाद में हो।
उ-दे, मुम्	**७१. श्येनतिलस्य पाते ञे १२६८।**		श्येन तिल को मुम् आगम होता है यदि ञ प्रत्यय तथा पात उत्तर में हो।
उ-दे, मुम्	**७२. रात्रेः कृति विभाषा १००८।**		रात्रि को विकल्प से मुम् होता है यदि उत्तर में कृत् हो।

उ-दे	**७३. नलोपो नञः ७५७ ।** ** नञो नलोपस्तिङि क्षेपे ।*	नञः ७७	यदि उत्तर में कोई पद हो तो नञ् के न् का लोप होता है ।
उ-दे, नञः	**७४. तस्मान्नुडचि ७५८ ।**		लुप्तनकार नञ् (अ) को नुट् होता है अच् परे रहते ।
उ-दे, नञः	**७५. नभ्राण्नपान्नवेदानासत्यानमुचिनकुलनख-नपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्या ७५९ ।**	प्रकृत्या ७७	नभ्राट् नपात् नवेदा नासत्या नमुचि नकुल नख नपुंसक नक्षत्र नक्र नाक में न प्रकृतिवत् रहता है ।
उ-दे, नञः, प्रकृत्या	**७६. एकादिश्चैकस्य चादुक् ८११ ।**		एक आदि वाले नञ् को प्रकृतिभाव होता है तथा एक को आदुक् आदेश होता है ।
उ-दे, नञः, प्रकृत्या	**७७. नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम् ७६० ।**		अप्राणि नग में नञ् को विकल्प से प्रकृतिभाव होता है ।
उ-दे	**७८. सहस्य सः संज्ञायाम् १००९ ।**	सहस्य ८३ सः ८९	संज्ञा में सह का स आदेश होता है ।
उ-दे, सः, सहस्य	**७९. ग्रन्थान्ताधिके च १०१० ।**		ग्रन्थान्त और अधिक में सह को स होता है ।
उ-दे, सः, सहस्य	**८०. द्वितीये चानुपाख्ये १०११ ।। ४ ।।**		द्वितीय अनुपाख्य में सह को स होता है ।
उ-दे, सः, सहस्य	**८१. अव्ययीभावे चाकाले ६६० ।**		अव्ययीभाव में कालवाचिभिन्न उत्तर पद में सह को स आदेश होता है ।
उ-दे, सः, सहस्य	**८२. वोपसर्जनस्य ८४९ ।**		उपसर्जन-बहुव्रीहि अवयव-सह को विकल्प से स होता है ।
उ-दे, सः, सहस्य	**८३. प्रकृत्याशिषि ८५० ।** ** अगोवत्सहलेष्विति[1] वाच्यम् ।*		आशीः अर्थ में सह को प्रकृतिभाव होता है ।
उ-दे, सः	**८४. समानस्य च्छन्दस्यमूर्धप्रभृत्युदर्केषु १०१२**	स-स्य ८९	वेद में समान को स आदेश होता है, यदि उत्तर में मूर्धन् प्रभृति उदर्क न हो ।
उ-दे, सः, स-स्य	**८५. ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनामगोत्ररूपस्थान-वर्णवयोवचनबन्धुषु १०१३ ।**		समान को स आदेश होता यदि उत्तर में ज्योतिष् जनपद रात्रि नाभि नामन् गोत्र रूप स्थान वर्ण वयस् वचन बन्धु हों ।
उ-दे, सः, स-स्य	**८६. चरणे ब्रह्मचारिणि १०१४ ।**		चरण वाच्य रहने पर समान को स होता है यदि उत्तर में ब्रह्मचारिन् हो ।

१. अत्रागवादिष्विति भाष्यपाठः । भाष्योदाहरणेन चादिना वत्सहलयोरेव ग्रहणम् ।

उ-दे, सः, स-स्य	**८७. तीर्थे ये १०१५ ।**	ये ८८	यत् प्रत्ययान्त तीर्थ शब्द यदि पर में हो तो समान को स होता है।
उ-दे, सः, स-स्य, ये	**८८. विभाषोदरे १०१६ ।**		समान को विकल्प से स होता है यदि यत्प्रत्ययान्त उदर बाद में हो।
उ-दे, सः, स-स्य	**८९. दृग्दृशवतुषु १०१७ ।** ** दृक्षे चेति वक्तव्यम् ।*	दृ-षु ९१	दृग् दृश वतु परे हो तो समान को स होता है।
उ-दे, दृ-षु	**९०. इदंकिमोरीश्की १०१८ ।** ** दृक्षे चेति वक्तव्यम् ।*		दृग् दृश् वतु परे हो तो इदम् और किम् को क्रमशः ईश् और की आदेश होता है।
उ-दे, दृ-षु	**९१. आ सर्वनाम्नः ४३० ।** ** दृक्षे चेति वक्तव्यम् ।*	स-म्नः ९२	सर्वनाम को आकार आदेश होता है यदि पर में दृग् दृश वतु हो।
उ-दे, स-म्नः	**९२. विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतावप्रत्यये ४१८** ** छन्दसि स्त्रियां बहुलं विष्वग्देवयोष्टेरद्र्यादेशः ।*	अ-ये ९५	विष्वक् और देव तथा सर्वनाम के टि को अद्रि आदेश होता है, यदि अ प्रत्ययान्त अञ्चति बाद में हो।
उ-दे, अ-ये	**९३. समः समि ४२१ ।**		अ प्रत्ययान्त अञ्चति परे रहने पर सम् को समि आदेश होता है।
उ-दे, अ-ये	**९४. तिरसस्तिर्यलोपे ४२३ ।**		अलुप्ताकार अप्रत्ययान्त अञ्चति पर रहने पर तिरस् को तिरि आदेश होता है।
उ-दे, अ-ये	**९५. सहस्य सध्रिः ४२२ ।**	सहस्य ९६	अ प्रत्ययान्त अञ्चति परे रहने पर सह को सध्रि आदेश होता है।
उ-दे, सहस्य	**९६. सध-मादस्थयोश्छन्दसि ३५२९ ।**		वेद में सह को सध होता है यदि पर में माद और स्थ हो।
उ-दे	**९७.. द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत् ९४१ ।** ** अवर्णान्ताद्वा ।*	अपः ९८	द्वि अन्तर् तथा उपसर्गों से परे अप को ईत् होता है।
उ-दे, अपः	**९८. ऊदनोर्देशे ९४२ ।**		यदि देशाभिधान हो तो अनु उत्तरवर्ती अप के अ को ऊ हो जाता है।
उ-दे	**९९. अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य दुगाशीराशा-स्थास्थितोत्सुकोतिकारकरागच्छेषु १०२५ ।**	अष-दुक् १००	अषष्ठीस्थ अतृतीयास्थ अन्य शब्द को दुक् आगम होता है, यदि पर में आशीः आशा आस्था आस्थित उत्सुक ऊति कारक राग तथा छ हो।
उ-दे, अष-दुक्	**१००. अर्थे विभाषा १०२६ ॥ ५ ॥**		अन्य को विकल्प से दुक् होता है यदि बाद में अर्थ हो।
उ-दे	**१०१. कोः कत्तत्पुरुषेऽचि १०२७ ।** ** त्रौ च ।*	कोः १०८ कत् १०३	तत्पुरुष में अजादि उत्तर पद रहने पर कु को कत् होता है

उ-दे, कोः, कत्	**१०२. रथवदयोश्च १०२८ ।**		रथ वद उत्तर में हो तो कु को कत् आदेश होता है ।
उ-दे, कोः, कत्	**१०३. तृणे च जातौ १०२९ ।**		जाति अभिधेय हो तो कु को कत् होता है तृण परे रहते ।
उ-दे, कोः	**१०४. का पथ्यक्षयोः १०३० ।**	का १०८	पथिन् अक्ष परे रहते कु को का होता है ।
उ-दे, कोः, का	**१०५. ईषदर्थे १०३१ ।**		ईषत् के अर्थ में कु को का होता है ।
उ-दे, कोः, का	**१०६. विभाषा पुरुषे १०३२ ।**	विभाषा १०८	यदि पुरुष उत्तर में हो तो कु को विकल्प से का होता है ।
उ-दे, कोः, का, विभाषा	**१०७. कवं चोष्णे १०३३ ।**	कवं १०८	यदि उष्ण उत्तर में हो तो कु को कव होता है विकल्प से का भी होता है ।
उ-दे, कोः, का, विभाषा, कवं	**१०८. पथि च च्छन्दसि ३५३० ।**		वेद में कु को विकल्प से कव का होते हैं यदि पर में पथिन् हो ।
उ-दे	**१०९. पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् १०३४ ।**		पृषोदर आदि यथोपदिष्ट साधु होते हैं ।

(२३८) पृषोदर पृषोत्थान वलाहक जीमूत श्मशान उलूखल पिशाच वृसी मयूर ॥ **इति पृषोदरादिः ॥ आकृतिगणः ॥**

**** दिक्छब्देभ्यस्तीरस्य तारभावो वा ।***

**** षष उत्वं दतृदशधासूत्तरपदादेः ष्टुत्वं च ।***

**** धासु वेति वाच्यम् ।***

**** दुरो दाशनाशदभध्येषूत्वमुत्तरपदादेः ष्टुत्वं च ।***

**** स्वरो रोहतौ छन्दस्युत्वम् ।***

**** पीवोपवसनादीनां छन्दसि लोपः ।***

उ-दे	**११०. संख्याविसायपूर्वस्याह्नस्याहन्नन्यतरस्यां ङौ २३८ ।**		संख्या वि साय पूर्व में हो तो अह्न को विकल्प से ङि के यहाँ अहन् आदेश होता है ।

उत्तरपददीर्घः

उ-दे	**१११. ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः १७४ ।**	ढ्र-पे ११२ पू-स्य १३९ दीर्घः ६/४/१८	ढ्र लोप में पूर्व अण् को दीर्घ होता है ।
उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, ढ्र-पे	**११२. सहिवहोरोदवर्णस्य २३५७ ।**		ढ्रलोप में सहि वहि के अ को ओ होता है ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **११३. साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे ३५३१** — वेद में साढ्यै साढ्वा साढा निपातित होता है।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **११४. संहितायाम् १०३५।** — यहाँ से संहितायाम् का अधिकार है।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **११५. कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्टपञ्चमणिभिन्नच्छिन्नच्छिद्रस्रुवस्वस्तिकस्य १०३६।** — विष्ट अष्ट पञ्च मणि भिन्न छिन्न छिद्र स्रुव स्वस्तिक को छोड़कर लक्षणवाची शब्दों को दीर्घ हो जाता है यदि कर्ण उत्तरपद में हो।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **११६. नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ १०३७।** — क्वि प्रत्ययान्त नहि वृति वृषि व्यधि रुचि सहि तनि के पूर्वपद को दीर्घ होता है संहिता में।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **११७. वनगिर्योः संज्ञायां कोटरकिंशुलुकादीनाम् १०३८।** सं-म् १२० — वन पूर्ववर्ती कोटर आदि तथा गिरि पूर्ववर्ती किंशुलुक आदि को संज्ञा में दीर्घ हो जाता है।

(२३९) कोटर मिश्रक सिध्रक पुरग सारिक (शारिक) **इति कोटरादिः ।।**

(२४०) किंशुलुक शाल्वनभ्र (नड) अञ्जन भञ्जन लोहित कुक्कुट ।। **इति किंशुलुकादिः ।।**

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, सं-म् **११८. वले १०४०।** — पूर्व को दीर्घ होता है यदि बाद में वल हो।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, सं-म् **११९. मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् १०४१।** मतौ १२० — यदि मतुप् बाद में हो अजिर् आदि को छोड़कर बह्वच् को संज्ञा में दीर्घ हो जाता है।

(२४१) अजिर खदिर पुलिन हंसक (हंस) कारण्ड (कारण्डव) चक्रवाक ।। **इत्यजिरादिः ।।**

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, सं-म्, मतौ **१२०. शरादीनां च १०४२ ।। ६ ।।** — मतुप् के यहाँ शर आदि को संज्ञा में दीर्घ होता है।

(२४२) शर वंश धूम अहि कपि मणि मुनि शुचि हनु ।। **इति शरादिः ।।**

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१२१. इको वहेऽपीलोः १०४३।** — पीलु वर्जित इगन्त पूर्वपद को दीर्घ होता है यदि बाद में वह हो।

**** अपील्वादीनामिति वाच्यम् ।***

(२४३) (वा० ग०) । पीलु दारु रुचि चारु गम् कम् ।। **इति पील्वादिः ।।**

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१२२. उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् १०४४** उ-स्य १२४ — यदि मनुष्यभिन्न वाच्य हो तो घञ् परे रहने पर उपसर्ग को विकल्प से दीर्घ हो जाता है।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, उ-स्य **१२३. इकः काशे १०४५.** इकः १२४ — इगन्त उपसर्ग को दीर्घ होता है यदि बाद में काश हो।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, **१२४. दस्ति ३०७९ ।** इगन्त उपसर्ग को दीर्घ होता है यदि बाद में कृततकारादि दा हो।
उ-स्य, इकः

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१२५. अष्टनः संज्ञायायाम् १०४६ ।** अ-नः १२६ संज्ञा में उत्तरपद परे रहते अष्टन् को दीर्घ होता है।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, **१२६. छन्दसि च ३५३२ ।** वेद में उत्तर पद रहते अष्टन् को दीर्घ होता है।
अ-नः ** भाषायामष्टनो दीर्घो भवतीति वक्तव्यम् ।*

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१२७. चितेः कपि १०४७ ।** कप् परे रहते चिति को दीर्घ होता है।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१२८. विश्वस्य वसुराटोः ३७९ ।** वि-स्य १३० यदि वसु और राट् उत्तर में हों तो विश्व को दीर्घ होता है।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, **१२९. नरे संज्ञायाम् १०४८ ।** संज्ञा में नर परे रहते विश्व को दीर्घ होता है।
वि-स्य

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, **१३०. मित्रे चर्षौ १०४९ ।** यदि ऋषि अभिधेय हो और मित्र शब्द परे हो तो विश्व को दीर्घ होता है।
वि-स्य

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१३१. मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ ३५३३ ।** मन्त्रे १३२ यदि मन्त्र विषय हो और मतुप् परे हो तो अश्व सोम इन्द्रिय विश्वदेव्य को दीर्घ होता है।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, **१३२. ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् ३५३४** मन्त्र में प्रथमेतर विभक्ति परे रहे तो ओषधि को दीर्घ होता है।
मन्त्रे

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१३३. ऋचि तुनुघमक्षुतङ्कुत्रोरुष्याणाम् ३५३५** ऋचि १३६ ऋक् में तु नु घ मक्षु तङ् कु त्र उरुष्य को दीर्घ होता है।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, **१३४. इकः सुञि ३५३६ ।** मन्त्र में सुञ् परे रहते इगन्त को दीर्घ होता है।
ऋचि

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, **१३५. द्व्यचोऽतस्तिङः ३५३७ ।** द्व्यच् तिङन्त के अ को दीर्घ होता ऋक् में।
ऋचि

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, **१३६. निपातस्य च ३५३८ ।** ऋक् विषय में निपात को दीर्घ होता है।
ऋचि

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१३७. अन्येषामपि दृश्यते ३५३९ ।** अन्य में भी दीर्घ देखा जाता है।
** शुनोदन्त दंष्ट्राकर्णकुन्दवराहपुच्छपदेषु दीर्घो वाच्यः ।*

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१३८. चौ ४१७ ।** पूर्वपद को चि परे रहते दीर्घ होता है।
** चौ प्रत्यङ्गस्य प्रतिषेधः ।*

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य **१३९. संप्रसारणस्य १००४ ।** स-स्य ६/४/२ उत्तर पद परे रहते सम्प्रसारणान्त पूर्वपद को दीर्घ होता है।

अलुक्षष्ठ्या जातेरिकोऽव्ययीभावे कोः
कत्तदिको वहे एकोनविंशतिः ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

अङ्गाधिकारः (तत्र प्रत्ययविकाराः)

दीर्घः, स-स्य	१. **अङ्गस्य २०० ।**	अङ्गस्य ७.४.९७	सप्तम अध्याय परिसमाप्ति तक अङ्गस्य का अधिकार है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, स-स्य	२. **हलः २५५९ ।**		अङ्गावयव हल्परक संप्रसारणान्ताङ्ग को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः	३. **नामि २०९ ।**	नामि ७	नाम् (नुट्सहित षष्ठी बहुवचन) परे रहते अङ्ग को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नामि	४. **न तिसृचतसृ ३०० ।**	ति-सृ ५	तिसृ चतसृ को नाम् परे रहते दीर्घ नहीं होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नामि, ति-सृ	५. **छन्दस्युभयथा ३५४० ।**	उ-था ६	तिसृ चतसृ को नाम् के यहाँ वेद में दीर्घ अदीर्घ दोनों होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नामि, उ-था	६. **नृ च २८३ ।**		नाम् परे रहते नृ को दीर्घ अदीर्घ दोनों होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नामि	७. **नोपधायाः ३७० ।**	नो-याः १८	नान्त अङ्ग के उपधा को नाम् के यहाँ दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः	८. **सर्वनामस्थाने चासंबुद्धौ २५० ।**	अ-द्धौ १८ स-ने ११	सम्बुद्धि भिन्न सर्वनामस्थान परे रहने पर नान्त अङ्ग के उपधा को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः, अ-द्धौ, स-ने	९. **वा षपूर्वस्य निगमे ३५४१ ।**		निगम में षपूर्व नापध अच् को विकल्प से दीर्घ होता है, सम्बुद्धि भिन्न सर्वनामस्थान में ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः, अ-द्धौ, स-ने	१०. **सान्तमहतः संयोगस्य ३१७ ।**		सान्त संयोग और महत् के नकार की उपधा को दीर्घ होता है सम्बुद्धि भिन्न सर्वनामस्थान में ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः, अ-द्धौ, स-ने	११. **अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृ प्रशास्तृणाम् २७७ ।**		अप् तृन् तृच् स्वसृ नप्तृ नेष्टृ त्वष्टृ क्षतृ होतृ पोतृ प्रशास्तृ के उपधा को दीर्घ होता है सम्बुद्धिभिन्न सर्वनामस्थान परे रहने पर ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः, अ-द्धौ,	१२. **इन्हन्पूषार्यम्णां शौ ३५६ ।**	इ-णां १३	इन् हन् पूषन् अर्यमन् की उपधा को शी के यहाँ दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः, अ-द्धौ, इ-णां,	१३. **सौ च ३५७ ।**	सौ १४	सम्बुद्धिभिन्न सु के यहाँ इन् हन् पूषन् अर्यमन् की उपधा को दीर्घ होता है ।

अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः, अ-द्धौ, सौ	**१४. अत्वसन्तस्य चाधातोः ४२५ ।**		अधातु अत्वन्त असन्त के उपधा को सम्बुद्धिभिन्न सु के यहाँ दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः	**१५. अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति २६६६ ।**	क्वि-ति २१	क्वि और झलादि कित् ङित् के यहाँ अनुनासिकान्त अङ्ग की उपधा को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः, क्वि-ति	**१६. अज्झनगमां सनि २६१४ ।** ** गमेरिङादेशस्येति वक्तव्यम् ।*	सनि १७	अजन्त अङ्ग और हन् गम् को दीर्घ होता है यदि सन् तथा झलादि कित् ङित् पर में हो ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः, क्वि-ति, सनि	**१७. तनोतेर्विभाषा २६२२ ।**	विभाषा १८	सन् और झलादि कित् ङित् में तनु (धातु) को विकल्प से दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः, नो-याः, क्वि-ति, वि-भाषा	**१८. क्रमश्च क्त्वि ३३२९ ।**		क्रम के उपधा को विकल्प से दीर्घ होता है यदि पर में क्त्वा और झलादि कित् ङित् हो ।
अङ्गस्य, क्वि-ति	**१९. च्छ्वोः शूडनुनासिके च २५६१ ।**	च्छ्वोः २१ शू-के २०	छ् के श् और व् को ऊठ् होता है, यदि बाद में अनुनासिक प्रत्यय, क्वि और झलादि कित् ङित् हो ।
अङ्गस्य, शू-के, क्वि-ति, च्छ्वोः	**२०. ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च २६५४ ॥ १ ॥**		ज्वर त्वर स्रिवि अव मव के व और उपधा के स्थान में ऊठ् होता है यदि बाद में क्वि अनुनासिक झलादि कित् ङित् हो ।
अङ्गस्य, क्वि-ति, च्छ्वोः	**२१. राल्लोपः २६५५ ।**		रेफ के बाद स्थित च्छ्व् का लोप होता है क्वि झलादि कित् ङित् के यहाँ ।
अङ्गस्य	**२२. असिद्धवदत्राभात् २१८३ ।** ** वुग्युटावुवङ्यणोः सिद्धौ वक्तव्यौ ।*		पादपरिसमाप्ति तक समानाश्रय विधि में पूर्वविधि असिद्धवत् होगी ।
अङ्गस्य	**२३. श्नान्न लोपः २५४४ ।**	नलोपः ३३	श्नम् से परे न का लोप होता है ।
अङ्गस्य, नलोपः	**२४. अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति ४१५** ** अनिदितां नलोपे लङ्गिकम्प्योरुपतापशरीरविकारयोरुपसंख्यानम् ।* ** रञ्जेर्णौ मृगरमण उपसंख्यानम् ।*	उ-याः ३४	अनिदित हलन्त के उपधा न का लोप होता है यदि कित् ङित् पर में हो ।
अङ्गस्य, नलोपः, उ-याः	**२५. दंशसञ्जस्वञ्जां शपि २३९६ ।**	शपि २६	यदि शप् पर में हो तो दंश सञ्ज स्वञ्ज के उपधा न का लोप होता है।
अङ्गस्य, नलोपः, उ-याः, शपि	**२६. रञ्जेश्च २३९७ ।**	रञ्जेः २७	रञ्ज् के उपधा न का लोप होता है शप् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, नलोपः, उ-याः, रञ्जेः	**२७. घञि च भावकरणयोः ३१८७ ।**	अञि २९	भावकरणवाची घञ् परे हो तो रञ्ज के उपधा न का लोप् होता है ।
अङ्गस्य, नलोपः, उ-याः, घञि	**२८. स्यदो जवे ३१८८ ।**		यदि जव अभिधेय हो तो घञ् के यहाँ स्यद निपातित होता है ।
अङ्गस्य, नलोपः, उ-याः, घञि	**२९. अवोदैधौद्मप्रश्रथहिमश्रथाः ३१८९ ।**		अवोद एध ओद्म प्रश्रथ हिमश्रथ निपातित होते हैं ।
अङ्गस्य, नलोपः, उ-याः	**३०. नाञ्चेः पूजायाम् ४२४ ।**	न ३३	पूजा में अञ्चति के उधधा न का लोप नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नलोपः, उ-याः, न	**३१. क्त्वि स्कन्दिस्यन्दोः ३३२१ ।**	क्त्वि ३२	स्कन्द स्यन्द के न का लोप त्त्वा में नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नलोपः, उ-याः, न, क्त्वि	**३२. जान्तनशां विभाषा ३३३० ।**	विभाषा ३३	क्त्वा परे रहने पर जान्त अङ्गों का तथा नश् के न का लोप विकल्पेन नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नलोपः, उ-याः, न, विभाषा	**३३. भञ्जेश्च चिणि २७६४ ।**		चिण् के यहाँ भञ्ज का न लोप विकल्प से नहीं होता है ।
अङ्गस्य, उ-याः	**३४. शास इदङ्हलोः २४८६ ।** ** क्वौ च शास इत्वं भवतीति वक्तव्यम् ।* ** आङ्पूर्वाच्च ।*	शास ३५	शास के उपधा को इ होता है अङ् हलादि कित् ङित् के यहाँ ।
अङ्गस्य, शास	**३५. शा हौ २४८७ ।**	हौ ३६	शास् को हि के यहाँ शा हो जाता है ।
अङ्गस्य, हौ	**३६. हन्तेर्जः २४३१ ।**		हि के यहाँ हन् को ज हो जाता है ।
अङ्गस्य	**३७. अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति २४२८ ।**	अनु-म् ३९ अनु-पः ४०	अनुदात्तोपदेश अङ्गों तथा वनति तनोति आदि के अनुनासिक का लोप होता है झलादि कित् ङित् के यहाँ ।
अङ्गस्य, अनु-म्, अनु-पः	**३८. वा ल्यपि ३३३४ ।**		ल्यप् के यहाँ उपरिलिखित के अनुनासिक का लोप विकल्प से होता है ।
अङ्गस्य, अनु-म्, अनु-पः	**३९. न क्तिचि दीर्घश्च ३३१४ ।**		क्तिच् परे रहने पर उपरिलिखित का अनुनासिक लोप और दीर्घ नहीं होता है ।
अङ्गस्य, अनु-पः	**४०. गमः कौ २९८६ । ॥ २ ॥** ** गमादीनामिति वक्तव्यम् ।* ** ऊङ् च गमादीनामिति वक्तव्यम् ।*		क्वि परे रहने पर गम् का अनुनासिक लोप होता है ।

अङ्गस्य	**४१. विड्वनोरनुनासिकस्यात् २९८२ ।**	आत् ४५	अनुनासिकान्त अङ्ग को आकार आदेश होता है यदि विट् और वन् बाद में हो ।
अङ्गस्य, आत्	**४२. जनसनखनां सञ्झलोः २५०४ ।**	ज-नां ४३	जन सन खन को आकार आदेश होता है यदि बाद में सन् झलादि कित् ङित् हो ।
अङ्गस्य, आत्, ज-नां	**४३. ये विभाषा २३१९ ।**	विभाषा ४४	जन सन खन् को विकल्प से आ होता है यदि बाद में यकारादि कित् ङित् प्रत्यय हो ।
अङ्गस्य, आत्, वि-भाषा	**४४. तनोतेर्यकि २७५९ ।**		यक् के यहाँ तनु को आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, आत्	**४५. सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्यतरस्याम् ३३१५ ।**		क्तिच् के यहाँ सन् को विकल्प से आकार आदेश और लोप होता है ।
अङ्गस्य	**४६. आर्धधातुके २३०७ ।**	आ-के ६८	यहाँ से आर्द्धधातुके का अधिकार है ।
अङ्गस्य, आ-के	**४७. भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम् २५३५**		भ्रस्ज् के रेफ और उपधा के स्थान में विकल्प से रम् का आगम होता है आर्धधातुक में ।
अङ्गस्य, आ-के	**४८. अतो लोपः २३०८ ।** **** ण्यल्लोपावियङ्यण्गुणवृद्धिदीर्घेभ्यः पूर्वविप्रतिषेधेन ।***	लोपः ५४	आर्धधातुक में अकारान्त अङ्ग का लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः	**४९. यस्य हलः २६३१ ।**	हलः ५०	आर्धधातुक में हल् उत्तरवर्ती य का लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः, हलः	**५०. क्यस्य विभाषा २६६० ।**		हल् उत्तरवर्ती क्य का आर्धधातुक में विकल्प से लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः	**५१. णेरनिटि २३१३ ।**	णेः ५७	अनिडादि आर्धधातुक में णि का लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः, णेः	**५२. निष्ठायां सेटि ३०५७ ।**		सेट् आर्धधातुक में निष्ठा में णि का लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः, णेः	**५३. जनिता मन्त्रे ३५४२ ।**		मन्त्रविषय में जनिता निपातित होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः, णेः	**५४. शमिता यज्ञे ३५४३ ।**		यज्ञ कर्म में शमिता निपातित होता है ।

अङ्गस्य, आ-के, णेः	**५५. अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु २३११ ।**	अय् ५७	आम् अन्त आलु आय्य इत्नु इष्णु परे रहने पर णि को अय् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, णेः, अय्	**५६. ल्यपि लघुपूर्वात् ३३३६ ।**	ल्यपि ५९	लघुपूर्व धातु से परे णि को अय् आदेश ल्यप् में होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, णेः, अय्, ल्यपि	**५७. विभाषाऽऽपः ३३३७ ।**		ल्यप् में आप् उत्तरवर्ती णि को विकल्प से अय् होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, ल्यपि	**५८. युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि ३५४४ ।**	दीर्घः ६१	वेद में ल्यप् के यहाँ यु प्लु को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, दीर्घः, ल्यपि	**५९. क्षियः ३३३८ ।**	क्षियः ६१	ल्यप् में क्षि को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, दीर्घः, क्षियः	**६०. निष्ठायामण्यदर्थे ३०१४ ।। ३ ।।**	नि-म् अ-र्थे ६१	ण्यदर्थ (भावकर्म) से अन्यत्र (कर्ता) में क्षि को दीर्घ होता है निष्ठा में ।
अङ्गस्य, आ-के, दीर्घः, क्षियः, नि-म्, अ-र्थे	**६१. वाऽऽक्रोशदैन्ययोः ३०८१ ।**		आक्रोश और दैन्य गम्यमान रहने पर अण्यदर्थ निष्ठा में क्षि को विकल्प से दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, आ-के	**६२. स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च । २७५७ ।**		अजन्त अङ्ग, हन् ग्रह् दृश को विकल्प से चिण्वत् कार्य तथा इट् होता है यदि भावकर्मविषयक स्य सिच् सीचुट् तास् हो ।
अङ्गस्य, आ-के	**६३. दीङो युडचि क्ङिति २५०७ ।**	अचि ६४ क्-ति ६८	अजादि कित् ङित् प्रत्यय परे रहने पर दीङ् को युट् का आगम होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, क्-ति, अचि	**६४. आतो लोप इटि च २३७२ ।**	आतः ६५	इट् अजादि कित् ङित् परे रहने पर आकारान्त अङ्ग का लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, क्-ति, आतः	**६५. ईद्यति २८४३ ।**	ईत् ६६	यत् परे रहने पर आकारान्त अङ्ग को ईकार होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, क्-ति, ईत्	**६६. घुमास्थागापाजहातिसां हलि २४६२ ।**	घु-सां ६९	घु संज्ञक मा स्था गा पा जहाति सा को ई आदेश होता है हलादि कित् ङित् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, आ-के, क्-ति, घु-सां	**६७. एर्लिङि २३७४ ।**	एर्लिङि ६८	उपरिलिखित को लिङ् के यहाँ एकार आदेश होता है ।

अङ्गस्य, आ-के, क्-ति, घु-सां, ए-लिङि	**६८. वाऽन्यस्य संयोगादेः २३७८ ।**		घु आदि से अतिरिक्त संयोगादि आकारान्त को लिङ् परे रहने पर एकार आदेश विकल्प से होता है ।
अङ्गस्य, घु-सां	**६९. न ल्यपि ३३३५ ।**	ल्यपि ७०	घु आदि को जो कहा गया है वह ल्यप् के यहाँ नहीं होता है ।
अङ्गस्य, ल्यपि	**७०. मयतेरिदन्यतरस्याम् ३३१८ ।**		मेङ् को इकारादेश विकल्प से होता है ।
अङ्गस्य	**७१. लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः २२०६ ।**	लु-ट् ७५ उदात्तः ७२	लुङ् लङ् लृङ् के परे रहने पर अङ्ग को अट् आगम होता है और वह उदात्त होता है ।
अङ्गस्य, लु-ट्, उ-दात्तः	**७२. आडजादीनाम् २२५४ ।**	आट् ७५	लुङ् लङ् लृङ् पर रहते अजादि को आट् आगम होता है और वह उदात्त होता है ।
अङ्गस्य लु-ट्, आट्	**७३. छन्दस्यपि दृश्यते ३५४५ ।**		वेद में विहित स्थल के अतिरिक्त भी अन्यत्र आट् होता है ।
अङ्गस्य लु-ट्, आट्	**७४. न माङ्योगे २२२८ ।**		लुङादि में होने वाला अट् आट् माङ् के योग में नहीं होता है ।
अङ्गस्य लु-ट्, आट्	**७५. बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि ३५४६ ।**	ब-सि ७६	वेद में अमाङ्योग में भी बहुलतया अडादि नहीं होते हैं (और माङ् के योग में भी हो जाते हैं) ।
अङ्गस्य, ब-सि	**७६. इरयो रे ३५४७ ।**		वेद में इरे को प्रायः रे हो जाता है ।
अङ्गस्य	**७७. अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ २७१** ** तन्वादीनां बहुलं छन्दसि ।*	अचि १०० य्वोः ७८ इ-ङौ ८०	अच् परे रहने पर श्नुप्रत्ययान्त, इवर्णोवर्णान्त धातु तथा भ्रू को क्रमशः इयङ् उवङ् होते हैं ।
अङ्गस्य, अचि, इ-ङौ, य्वोः	**७८. अभ्यासस्यासवर्णे २२९० ।**		असवर्ण अच् परे रहते अभ्यास के इवर्ण उवर्ण को इयङ् उवङ् हो जाता हैं ।
अङ्गस्य, अचि, इ-ङौ	**७९. स्त्रियाः ३०१ ।**	स्त्रियाः ८०	अजादि प्रत्यय परे रहते स्त्री शब्द को इयङ् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, अचि, इ-ङौ, स्त्रियाः	**८०. वाऽम्शसोः ३०२ ॥ ४ ॥**		अम्शस् परे रहते स्त्री को विकल्प से इयङ् होता है ।
अङ्गस्य, अचि	**८१. इणो यण् २४५५ ।**	यण् ८७	इण् अङ्ग को यण् आदेश होता है यदि पर में अच् हो ।

अङ्गस्य, अचि, यण्	**८२. एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य २७२ ।**[1] ** गतिकारकेतरपूर्वपदस्य यण् नेष्यते ।*	अने-स्य ८७	असंयोग पूर्व अनेकाच् धात्वङ्ग को यण् होता है अच् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, अचि, यण्, अने-स्य	**८३. ओः सुपि २८१ ।**	सुपि ८६	असंयोगपूर्व अनेकाच् उवर्णान्त धात्वङ्ग को यण् होता है अजादि सुप् परे रहते ।
अङ्गस्य, अचि, यण्, अने-स्य, सुपि	**८४. वर्षाभ्वश्च २८२ ।** ** दृन्करपुनःपूर्वस्य भुवो यणवक्तव्यः ।*		अजादि सुप् परे रहते वर्षाभू को भी यणादेश होता है ।
अङ्गस्य, अचि, यण्, अने-स्य, सुपि	**८५. न भूसुधियोः २७३ ।**	न-योः ८६	भू और सुधी को यणादेश नहीं होता है अजादि सुप् परे रहते ।
अङ्गस्यं अचि यण् अने-स्य न-योः सुपि	**८६. छन्दस्युभयथा ३५४८ ।**		वेद में भू और सुधी का यणादेश विकल्प से हीता है अजादि सुप् परे रहते ।
अङ्गस्य, अचि, यण्, अने-स्य	**८७. हुश्नुवोः सार्वधातुके २३८७ ।**		हु श्नु प्रत्ययान्त अनेकाच् अङ्ग असंयोगपूर्व उवर्ण को यण् होता है अजादि सार्वधातुक में ।
अङ्गस्य, अचि	**८८. भुवो वुग्लुङ्लिटोः २१७४ ।**		लुङ् लिट् में अजादि प्रत्यय परे रहते भू को वुक् आगम होता है ।
अङ्गस्य, अचि	**८९. ऊदुपधाया गोहः २३६४ ।**	ऊत् ९१ उ-याः ९४	अजादि प्रत्यय परे रहते गोह के उपधा को ऊ होता है ।
अङ्गस्य, अचि, ऊत्, उ-याः	**९०. दोषो णौ २६०४ ।**	दोषः ९१ णौ ९४	णि परे रहते दोष के उपधा को ऊ होता है ।
अङ्गस्य, अचि, उ-याः, णौ, दोषः ऊत्	**९१. वा चित्तविरागे २६०५ ।**		चित्त विरागार्थक दोष के उपधा को विकल्प से ऊ होता है यदि णि बाद में हो ।
अङ्गस्य, अचि, उ-याः, णौ	**९२. मितां ह्रस्वः २५६८ ।**	मितां ९३	मित् धातुओं की उपधा को ह्रस्व होता है यदि णि परे हो ।
अङ्गस्य, अचि, उ-याः, मितां, णौ	**९३. चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् २७६२ ।**		मित् अङ्ग की उपधा को विकल्प से दीर्घ होता है यदि चिण्-णमुल् णि परे हो ।
अङ्गस्य, अचि, उ-याः, णौ	**९४. खचि ह्रस्वः २९५५ ।**	ह्रस्वः ९७	खच् परक णि—परे रहने पर उपधा को ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य, अचि, ह्रस्वः	**९५. ह्लादो निष्ठायाम् ३०७३ ।**		निष्ठा परे रहते ह्लाद की उपधा को ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य, अचि, ह्रस्वः	**९६. छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य ३२९७ ।**	छादेः ९७	द्वि प्रभृति उपसर्गहीन छादि की उपधा को ह्रस्व होता है यदि पर में घ हो ।

---

१. गतिकारकःपूर्वस्यैवेस्यत इति भाष्यसम्मतः पाठः ।

अङ्गस्य, अचि, हृ-स्वः, छादेः	**९७. इस्मन्त्रन्क्विषु च २९८५ ।**		इस् मन् त्रन् क्वि पर में हों तो छादि की उपधा को ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य, अचि	**९८. गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि २३६३ ।**	लोपः १०० क्-ति १२६	अङ्विहीन अजादि कित् ङित् परे रहने पर गम हन जन खन घस की उपधा का लोप होता है ।
अङ्गस्य, अचि, क्-ति, लोपः	**९९. तनिपत्योश्छन्दसि ३५४९ ।**	छन्दसि १००	अजादि कित् ङित् परे रहने पर वेद में तन और पत की उपधा का लोप होता है ।
अङ्गस्य, अचि, क्-ति, लोपः, छन्दसि	**१००. घसिभसोर्हलि च ३५५० ।। ५ ।।**	हलि १०१	वेद में घस भस की उपधा का लोप होता है अजादि हलादि कित् ङित् प्रत्यय परे रहने पर ।
अङ्गस्य, क्-ति, हलि	**१०१. हुझल्भ्यो हेर्धिः २४२५ ।**	हेर्धिः १०३	हु और झलन्त से परे हलादि हि को धि आदेश होता है
अङ्गस्य, क्-ति, हेर्धिः	**१०२. श्रुशृणुपृकृवृभ्यश्छन्दसि ३५५१ ।**	छन्दसि १०३	वेद में श्रु शृणु पृ कृ वृ से उत्तर हि को धि होता है ।
अङ्गस्य, क्-ति, हेर्धिः, छन्दसि	**१०३. अङितश्च ३५५३ ।**		अङित् से परे हि को धि होता है वेद में ।
अङ्गस्य, क्-ति	**१०४. चिणो लुक् २३२९ ।**	लुक् १०६	चिण् उत्तरवर्ती प्रत्यय का लुक् होता है ।
अङ्गस्य, क्-ति, लुक्	**१०५. अतो हेः २२०२ ।**	हेः १०६	अकारान्त अङ्ग उत्तरवर्ती हि का लुक् होता है ।
अङ्गस्य, क्-ति, लुक्, हेः	**१०६. उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् २३३४ ।**	उतः ११० प्र-त् ११० अ-त् १०७	असंयोग पूर्व उकारान्त प्रत्यय उत्तरवर्ती हि का लुक् होता है ।
अङ्गस्य, उतः, प्र-त्, क्-ति, अ-त्	**१०७. लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः २३३३ ।**	लोपः १०९ म्वोः १०८	असंयोग पूर्व उकारः प्रत्ययान्त अङ्ग का विकल्प से लोप होता है, यदि म व पर में हों ।
अङ्गस्य, उतः, प्र-त्, क्-ति, लोपः म्वोः	**१०८. नित्यं करोतेः २५४८ ।**	नित्यं १०९ क-तेः ११०	व म प्रत्यय यदि पर में हों तो कृ धातु से हुये उ का नित्य लोप होता है ।
अङ्गस्य, उतः, प्र-त्, क्-ति, लोपः, नित्यं, क-तेः	**१०९. ये च २५४९ ।**		यकारादि प्रत्यय परे रहने पर कृ से हुये उ प्रत्यय का नित्य लोप होता है ।
अङ्गस्य, उतः, प्र-त्, क्-ति, क-तेः	**११०. अत उत्सार्वधातुके २४६७ ।**	सा-के ११९	उकार प्रत्ययान्त कृ के अ के स्थान में उ होता है सार्वधातुक में ।

अङ्गस्य, सा-के, क्-ति	१११. श्नसोरल्लोपः २४६९ ।	अल्-पः ११२	श्ना और अस् के अ का लोप होता है यदि बाद में सार्वधातुक कित् ङित् हो ।
अङ्गस्य, सा-के, क्-ति, अल्-पः	११२. श्नाभ्यस्तयोरातः २४८३ ।	आतः ११४ श्ना-योः ११३	सार्वधातुक कित् ङित् परे रहने पर श्ना और अभ्यस्त के आ का लोप होता है ।
अङ्गस्य, सा-के, क्-ति, आतः, श्ना-योः	११३. ई हल्यघोः २४९७ ।	हलि ११६	घु भिन्न श्नान्त अङ्ग और अभ्यस्त के आ को ईकार आदेश सार्वधातुक कित् ङित् परे रहने परे होता है ।
अङ्गस्य, सा-के, क्-ति, आतः, हलि	११४. इद्दरिद्रस्य २४८२ । * *दरिद्रातेरार्धधातुके विवक्षिते आतो लोपो वाच्यः । लुङि वा सनि ण्वुलि ल्युटि च नं ।*	इत् ११६	सार्वधातुक कित् ङित् परे रहने पर दरिद्रा को इकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, सा-के, क्-ति, इत्, हलि	११५. भियोऽन्यतरस्याम् २४९२ ।	अ-म् ११७	भी को विकल्प से इकार आदेश होता है यदि पर में हलादि कित् ङित् सार्वधातुक हो ।
अङ्गस्य, सा-के, क्-ति, इत्, हलि, अ-म्	११६. जहातेश्च २४९८ ।	ज-ते ११८	जहाति को विकल्प से इकार आदेश होता है हलादि कित् ङित् सार्व-धातुक परे रहने पर विकल्प से ।
अङ्गस्य, सा-के, क्-ति, ज-तेः, अ-म्	११७. आ च हौ २४९९ ।		हि परे रहने पर जहाति को विकल्प से आ इ ई होता है ।
अङ्गस्य, सा-के, क्-ति, ज-तेः	११८. लोपो यि २५०० ।		जहाति के आ का लोप होता है यदि बाद में यकारादि कित् ङित् सार्वधातुक हो ।
अङ्गस्य, सा-के	११९. घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च २४७१ ।	एत् १२६ अ-पः १२६	हि परे रहने पर घु संज्ञकों तथा अस् को एकार आदेश और अभ्यास का लोप होता है ।
अङ्गस्य, क्-ति, ए-त्, अ-पः	१२०. अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि २२६० ॥ ६ ॥ * *यजिवप्योश्च ।* * *दम्भेश्च ।*	अतः १२६ लिटि १२६ ए-देः १२१	आदेशादिरहित धात्ववयव के असं-युक्तहल्मध्यस्थ अकार को एकार हो जाता है तथा अभ्यास का लोप भी होता है, यदि कित् लिट् पर में हो ।
अङ्गस्य, अतः, लिटि, क्-ति, ए-देः ए-त्, अ-पः	१२१. थलि च सेटि २२६१ ।	थलि सेटि १२६	यदि सेट् थल् बाद में हो तो आदेशादिरहित धात्वयवव के अ-संयुक्तहल्मध्यस्थ अ को ए तथा अभ्यास का लोप होता है ।

अङ्गस्य, अतः, लिटि, क्-ति, थलि सेटि, अ-पः	**१२२. तॄफलभजत्रपश्च २३०१ ।** * ***श्रन्थेश्चेति वक्तव्यम् ।***		तॄ फल भज त्रप के अ को ए तथा अभ्यास का लोप होता है यदि पर में लिट् कित् ङित् या सेट् थल् हो ।
अङ्गस्य, अतः, लिटि, क्-ति, थलि सेटि, अ-पः	**१२३. राधो हिंसायाम् २५३२ ।**		यदि पर में लिट् कित् ङित् या सेट् थल् हो तो राध के अ को ए तथा अभ्यास का लोप होता है ।
अङ्गस्य, अतः, लिटि, क्-ति, थलि सेटि, अ-पः	**१२४. वा जॄभ्रमुत्रसाम् २३५६ ।**	वा १२५	उपरिलिखित परिस्थिति में जॄ भ्रमु त्रस के अ को ए तथा अभ्यास लोप होता है ।
अङ्गस्य, अतः, लिटि, क्-ति, थलि सेटि, अ-पः, वा	**१२५. फणां च सप्तानाम् २३५४ ।**		लिट् कित् ङित् सेट् थल् पर रहने पर फण आदि सात धातुओं के अ को ए तथा अभ्यास लोप होता है ।
अङ्गस्य, अतः, लिटि, क्-ति, थलि सेटि, अ-पे:	**१२६. न शसददवादिगुणानाम् २२६३ ।**		शस् दद धातु तथा वकारादि धातुओं के अकार को ए नहीं होता है, न तो अभ्यास लोप होता यदि गुणशब्दभावित हो ।
अङ्गस्य	**१२७. अर्वणस्त्रसावनञः ३६४ ।**	तृ १२८	अर्वन् अङ्ग को तृ आदेश होता है यदि अर्वन् नञ् रहित हो तथा सु विभक्ति परे हो ।
अङ्गस्य, तृ	**१२८. मघवा बहुलम् ३६० ।**		मघवन् को तृ आदेश विकल्प से होता है ।
अङ्गस्य	**१२९. भस्य २३३ ।**	भस्य १७५	पादपरिसमाप्ति तक भस्य का अधिकार है ।
अङ्गस्य, भस्य	**१३०. पादः पत् ४१४ ।**		पाद अन्तवाले भ संज्ञक पाद् को पत् होता है ।
अङ्गस्य, भस्य	**१३१. वसोः संप्रसारणम् ४३५ ।**	सं-म् १३३	वस्वन्त भ को सम्प्रसारण होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, सं-म्	**१३२. वाह ऊठ् ३२९ ।**		वाह् अन्त वाले भ को ऊठ् (सम्प्रसारण) होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, सं-म्	**१३३. श्वयुवमघोनामतद्धिते ३६२ ।**		अतद्धित प्रत्यय परे रहने पर श्वन् युवन् मघवन् को सम्प्रसारण होता है ।
अङ्गस्य, भस्य	**१३४. अल्लोपोऽनः २३४ ।**	अनः १३७ अ-पः १४५	अन् अन्तवाले भ के अकार का लोप होता है ।

अङ्गस्य, भस्य, अपः, अनः	**१३५. षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि ११६० ।**		यदि पर में अण् हो तो षपूर्व अन् हन् तथा धृतराजन् के अ का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः, अनः	**१३६. विभाषा ङिश्योः २३७ ।**		ङी और शी परे रहने पर अन् के अ का विकल्प से लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः, अनः	**१३७. न संयोगाद्वमन्तात् ३५५ ।**		वकारमकारान्त संयोग से परे वर्तमान अन् के अ का लोप नहीं होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः	**१३८. अचः ४१६ ।**	अचः १३९	लुप्तनकार अञ्चत्यन्त भ के अ का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः, अचः	**१३९. उद ईत् ४२० ।**		उत्पूर्वक अञ्चत्यन्त अ को ई होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः	**१४०. आतो धातोः २४० ।। ७ ।।**		आकारान्त धात्वन्त शब्दों के भ का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः	**१४१. मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः ३५५४ ।**		मन्त्रों में आङ् परे रहने पर आत्मन् के आदि का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः	**१४२. ति विंशतेर्डिति ८४४ ।**	डिति १४३	डित् प्रत्यय परे रहने भ संज्ञक विंशति के ति का लोप होता हैं ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः, डिति	**१४३. टेः ३१६ ।**	टेः १४५	डित् परे रहने पर टि का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः, टेः	**१४४. नस्तद्धिते ६७९ ।** ***** *नान्तस्य टिलोपे सब्रह्मचारिपीठसर्पिकलापिकौथुमितैतिलिजाजगलिशिलालिशिखण्डिसूकरसद्मसुपर्वणामुपसंख्यानं कर्तव्यम् ।* ***** *अश्मनो विकारे टिलोपो वक्तव्यः ।* ***** *अव्ययानां भमात्रे टिलोपः ।* ***** *चर्मणः कोशे ।* ***** *शुनः संकोचे ।*	तद्धिते १४९	नकारान्त भ के टिका लोप होता है तद्धित परे रहने पर ।
अङ्गस्य, भस्य, अपः, टेः, तद्धिते	**१४५. अह्नष्टखोरेव ७८९ ।**		ट ख परे रहने पर अहन् के टि का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, तद्धिते	**१४६. ओर्गुणः ८४७ ।**	ओः १४७	तद्धित परे रहने पर उकारान्त भ को गुण होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, ओः, तद्धिते	**१४७. ढे लोपोऽकद्र्वाः ११४२ ।**	लोपः १५५	ढ परे रहने पर, कद्रुभिन्न उवर्णान्त भ का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, लोपः, तद्धिते	**१४८. यस्येति च ३११ ।** ***** *औङः श्यां प्रतिषेधो वक्तव्यः ।*	ईति १५०	ईकार तद्धित परे रहने पर इकारोकारान्त भ का लोप होता है ।

अङ्गस्य, भस्य, लो-पः, ईति, तद्धिते	**१४९. सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः ४९९ ।** ** मत्स्यस्य ङ्याम् ।* ** सूर्यागस्त्ययोश्छे च ङ्यां च ।* ** तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्राणि यलोप इति वाच्यम् ।*	यः १५२ उ-याः १५०	सूर्य तिष्य अगस्त्य मत्स्य के उपधा य का लोप होता है ईकार तद्धित परे रहने पर ।
अङ्गस्य, भस्य, लो-पः, ईति, यः, उ-याः	**१५०. हलस्तद्धितस्य ४७२ ।**	हलः १५२	ई परे रहने पर हलुत्तरवर्ती तद्धित यकार उपधा का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, लो-पः, यः, हलः	**१५१. आपत्यस्य च तद्धितेऽनाति १०८२ ।**	आ-स्य १५२ त-ते १५३	अनाकार तद्धित परे रहने पर हलुत्तरवर्ती आपत्य य का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, लो-पः, हलः, आ-स्य, यः, त-ते	**१५२. क्यच्व्योश्च २११९ ।**		क्य च्वि परे रहने पर हलुत्तरवर्ती आपत्य यकार का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, लो-पः, त-ते	**१५३. बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक् १३११ ।** **(२४४)** बिल्व वेणु वेत्र वेतस तृण इक्षु काष्ठ कपोत क्रुञ्चा तक्षन्—**नडाद्यन्तर्गणो बिल्वादिः ।।** छविधानार्थ ये नडादयस्ते यदा छसंनियोगे कृत-कुगागमास्ते ।। **इति बिल्वकादयः ।।**		कृत कुगागम बिल्व आदि के उत्तरवर्ती छ और भ का लुक् होता है यदि पर में तद्धित हो ।
अङ्गस्य, भस्य, लो-पः	**१५४. तुरिष्ठेमेयःसु २००८ ।**	इ-स्सु १६३	इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् परे रहने पर तृ का लोप होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, लो-पः, इ-स्सु	**१५५. टेः १७८६ ।** ** णाविष्ठवत् प्रातिपदिकस्य कार्यं भवतीति वक्तव्यम् ।*		भ के टि का लोप होता है यदि पर में इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् हो ।
अङ्गस्य, भस्य, इ-स्सु	**१५६. स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादि-परं पूर्वस्य च गुणः २०१५ ।**		इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् परे रहने पर स्थूल दूर युवन् ह्रस्व क्षिप्र क्षुद्र के यणादि पर का लोप होता है तथा पूर्व को गुण होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, इ-स्सु	**१५७. प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदी-र्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्र-ब्द्राघिवृन्दाः २०१६ ।**		प्रिय स्थिर स्फिर उरु बहुल गुरु वृद्ध तृप्र दीर्घ वृन्दारक को क्रमशः प्र स्थ स्फ वर् बंहि गर् वर्षि त्रप् द्राघि वृन्द आदेश होते हैं यदि पर में इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् हो ।

अङ्गस्य, भस्य, इ-स्सु	**१५८. बहोर्लोपो भू च बहोः २०१७ ।**	बहोः १५९ भू-होः १५९	बहु से परे इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् का लोप होता है तथा बहु को भू आदेश होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, ब-होः, इ-स्सु, भू-होः	**१५९. इष्ठस्य यिट् च २०१८ ।**	-	बहु से परे (इष्ठन् का लोप, बहु को भू आदेश) तथा यिट् का आगम होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, इ-स्सु	**१६०. ज्यादादीयसः २०१२ । ॥ ८ ॥**		ज्या उत्तरवर्ती ईयस् को आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, इ-स्सु	**१६१. र ऋतो हलादेर्लघोः १७८५ ।**	र-तो १६२	हलादि लघु ऋकार को र आदेश होता है यदि पर में इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् हो ।
अङ्गस्य, भस्य, इ-स्सु, र-तो	**१६२. विभाषर्जोश्छन्दसि ३५५५ ।**		वेद में इष्ठन् आदि परे रहने पर ऋजु के ऋ को विकल्प से रेफ होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, इ-स्सु	**१६३. प्रकृत्यैकाच् २०१० ।** ** प्रकृत्या अके राजन्यमनुष्ययुवानः ।*	प्रकृत्या १७०	भसंज्ञक एकाच् को प्रकृतिभाव होता है यदि पर में इष्ठन् आदि हों ।
अङ्गस्य, भस्य, प्र-कृत्या	**१६४. इनण्यनपत्ये १२४५ ।**	इन् १६६ अणि १७१	अनपत्यार्थ अण् परे रहने पर इन्नन्त को प्रकृतिभाव होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, प्र-कृत्या, अणि, इन्	**१६५. गाथिविदथिकेशिगणिपणिनश्च १२७५**		गाथिन् विदथिन् केशिन् गणिन् पणिन् को प्रकृतिभाव होता है । यदि पर में अण् हो, अपत्यार्थ ।
अङ्गस्य, भस्य, प्र-कृत्या, अणि, इन्	**१६६. संयोगादिश्च ११५६ ।**		संयोगादि इन् को प्रकृतिभाव होता अण् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, भस्य, प्र-कृत्या, अणि	**१६७. अन् ११५५ ।**	अन् १७०	(अपत्य-अनपत्य) अन् को प्रकृतिभाव होता है यदि अण् परे हो ।
अङ्गस्य, भस्य, प्र-कृत्या, अणि, अन्	**१६८. ये चाभावकर्मणोः ११५४ ।**		यादि तद्धित परे रहने पर अन् को प्रकृतिभाव होता है, भावकर्म में नहीं।
अङ्गस्य, भस्य, प्र-कृत्या, अणि, अन्	**१६९. आत्माध्वानौ खे १६७१ ।**		ख प्रत्यय परे रहने पर आत्मन् अध्वन् को प्रकृतिभाव होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, प्र-कृत्या, अणि, अन्	**१७०. न मपूर्वोऽपत्येऽवर्मणः ११५७ ।** ** वा हितनानाम्न इति वाच्यम् ।*		अपत्यार्थक अण् परे रहने पर वर्मन्-भिन्न मपूर्व अन् को प्रकृतिभाव नहीं होता है ।
अङ्गस्य, भस्य, अ-णि	**१७१. ब्राह्मोऽजातौ ११५८ ।**		अनपत्य अण् परे रहने पर ब्राह्म निपातित होता है ।

अङ्गस्य, भस्य **१७२. कार्मस्ताच्छील्ये १६१३ ।**
ताच्छील्य अर्थ में कार्म निपातित होता है।

अङ्गस्य, भस्य **१७३. औक्षमनपत्ये ११५९ ।**
अनपत्य अर्थ में औक्ष निपातित होता है।

अङ्गस्य, भस्य **१७४. दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिकजैह्माशिनेय वाशिनायनिभ्रौणहत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाकमैत्रेयहिरण्मयानि ११४५ ।**
दाण्डिनायन हास्तिनायन आथर्वणिक जैह्माशिनेय वाशिनायनि भ्रौणहत्य धैवत्य सारव ऐक्ष्वाक मैत्रेय हिरण्मय निपातित होते हैं।

अङ्गस्य, भस्य **१७५. ऋत्व्यवास्त्व्यवास्त्वमाध्वीहिरण्मयानि च्छन्दसि ३५५६ ।**
वेद में ऋत्व्य वास्त्व्य वास्त्व माध्वी हिरण्मय निपातित होते हैं।

अङ्गस्य राल्लोपो विड्वनोर्वाक्रोशेणो यण्हुझल्भ्यस्थलि च मन्त्रेषु र ऋतः पञ्चदश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च ।

।। अथ सप्तमोऽध्यायः ।।

प्रथमः पादः ।

अङ्गाधिकारे प्रात्ययिकविकारः

अङ्गस्य	**१. युवोरनाकौ १२४७ ।**		अनुनासिक यु वु को क्रमशः अन अक आदेश होते हैं ।
अङ्गस्य	**२. आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् ४७५ ।**	प्र-नाम् ५	प्रत्यय के आदि फ ढ ख छ घ को क्रमशः आयन् एय् ईन् ईय् इय् आदेश होते हैं ।
प्र-नाम्, अङ्गस्य	**३. झोऽन्तः २१६९ ।**	झः ७	प्रत्यय के अवयव झ् को अन्त् आदेश होता है ।
प्र-नाम्, झः, अ-ङ्गस्य	**४. अदभ्यस्तात् २४७९ ।**	अत् ७	अभ्यस्तोत्तर झ को अत् आदेश होता है ।
प्र-नाम्, झः, अत्, अङ्गस्य	**५. आत्मनेपदेष्वनतः २२५८ ।**		आत्मनेपद में अनकार से परे झ को अत् होता है ।
झः, अत्, अङ्गस्य	**६. शीङो रुट् २४४२ ।**	रुट् ८	शीङ् उत्तरवर्ती झादेश अत् को रुट् आगम होता है ।
झः, अत्, रुट्, अङ्गस्य	**७. वेत्तेर्विभाषा २७०१ ।**		विद् उत्तरवर्ती झादेश अत् को विकल्प से रुट् होता है ।
रुट्, अङ्गस्य	**८. बहुलं छन्दसि ३५५७ ।**		वेद में बहुलतया रुट् होता है ।
अङ्गस्य	**९. अतो भिस ऐस् २०३ ।**	अतः १७ भि-स् ११	अकारान्त अङ्ग से उत्तर भिस् को ऐस् होता है ।
अतः, भि-स्, अ-ङ्गस्य	**१०. बहुलं छन्दसि ३५५८ ।**		ऐस् आदेश वेद में बहुलतया होता है ।
अतः, भि-स्, अ-ङ्गस्य	**११. नेदमदसोरकोः ३४९ ।**		अककार इदम् अदस् के भिस् को ऐस् नहीं होता है ।
अतः, अङ्गस्य	**१२. टाङसिङसामिनात्स्याः २०१ ।**		अकारान्त अङ्ग से उत्तर टा ङसि ङस् को क्रमशः इन आत् स्य होते हैं ।
अतः, अङ्गस्य	**१३. ङेर्यः २०४ ।**	ङेः १४	अकारान्त अङ्ग से उत्तर ङे को य आदेश होता है ।
अतः, ङेः, अङ्गस्य	**१४. सर्वनाम्नः स्मै २१५ ।**	स-म्नः १७	अकारान्त सर्वनाम से उत्तर ङे को स्मै आदेश होता है ।
अतः, स-म्नः, अ-ङ्गस्य	**१५. ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ २१६ ।**	ङसि-नौ १६	अकारान्त सर्वनाम से उत्तर ङसि ङि को क्रमशः स्मात् स्मिन् आदेश होते हैं ।

अतः, अङ्गस्य, सम्नः, ङसि-नौ	**१६. पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा २२१**		पूर्व आदि नव सर्वनाम शब्दों से परे ङसि ङि को क्रमशः विकल्प से स्मात् स्मिन् होता है ।
अतः, अङ्गस्य, सम्नः	**१७. जसः शी २१४ ।**	शी १९	अकारान्त सर्वनाम उत्तरवर्ती जस् को शी होता है ।
शी, अङ्गस्य	**१८. औङ आपः २८७ ।**	औङः १९	आबन्त अङ्ग से उत्तर औङ् को शी होता है ।
शी, अङ्गस्य, औङः	**१९. नपुंसकाच्च ३१० ।**	न-त् २०	नपुंसक अङ्ग से उत्तर औङ् को शी होता है ।
अङ्गस्य, न-त्	**२०. जश्शसोः शिः ३१२ ।। १ ।।**	ज-सोः २२	नपुंसक अङ्ग से उत्तर जस् शस् को शि होता है ।
अङ्गस्य, ज-सोः	**२१. अष्टाभ्य औश् ३७२ ।**		कृताकार अष्टन् उत्तरवर्ती जस् शस् को औश् होता है ।
अङ्गस्य, ज-सोः	**२२. षड्भ्यो लुक् २६१ ।**	लुक् २३	षट् संज्ञक से जस् शस् का लुक् होता है ।
अङ्गस्य, लुक्	**२३. स्वमोर्नपुंसकात् ३११ ।**	स्वमोः २६ न-त् २४	नपुंसक अङ्ग से उत्तर सु अम् का लुक् होता है ।
अङ्गस्य, स्वमोः, न-त्	**२४. अतोऽम् ३०९ ।**		अदन्त नपुंसक से उत्तर सु अम् को अम् होता है ।
अङ्गस्य, स्वमोः	**२५. अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ३१५ ।**	अदड् २६	नपुंसक प्रयुक्त डतर आदि पाँच से परे सु अम् को अदट् होता है ।
अङ्गस्य, स्वमोः, अदड्	**२६. नेतराच्छन्दसि ३५५९ ।** ** एकतरात्प्रतिषेधो वक्तव्यः ।*		इतरोत्तर सु अम् को वेद में अदट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य	**२७. युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् ३९९ ।**	यु-भ्यां ३३	युष्मद् अस्मद् उत्तर ङस् को अश् होता है ।
अङ्गस्य, यु-भ्यां	**२८. ङे प्रथमयोरम् ३८२ ।**		युष्मद् अस्मद् उत्तरवर्ती ङे तथा प्रथमा द्वितीया को अम् हो जाता है ।
अङ्गस्य, यु-भ्यां	**२९. शसो न ३९१ ।**		युष्मद् अस्मद् से परे शस् को नकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, यु-भ्यां	**३०. भ्यसो भ्यम् ३९५ ।**	भ्यसः ३१	युष्मद् अस्मद् से परे भ्यस् को भ्यम् (अभ्यम्) हो जाता है ।
अङ्गस्य, भ्यसः, यु-भ्यां	**३१. पञ्चम्या अत् ३९७ ।**	प-त् ३२	युष्मद अस्मद् से परे पञ्चमी के भ्यस् को अत् होता है ।

अङ्गस्य, प-त्, यु-भ्यां	**३२. एकवचनस्य च ३९६ ।**		युष्मद् अस्मद् से परे पञ्चमी के एकवचन को अत् होता है ।
अङ्गस्य, यु-भ्यां	**३३. साम आकम् ४०० ।**		युष्मद् अस्मद् से परे सुट् सहित आम् को आकम् होता है ।
अङ्गस्य	**३४. आत औ णलः २३७१ ।**		आदन्त अङ्ग से उत्तर णल् को औ होता है ।
अङ्गस्य	**३५. तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम् २१९७ ।**	अ-म् ३६	आशीः में तु हि को विकल्प से तातङ् होता है ।
अङ्गस्य, अ-म्	**३६. विदेः शतुर्वसुः ३१०५ ।**		(ज्ञानार्थक) विद् से परे शतृ को वसु आदेश होता है ।
अङ्गस्य	**३७. समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ३३३२ ।**	स-प् ३८	अनञ्पूर्व समास में क्त्वा को ल्यप् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, स-प्	**३८. क्त्वापि च्छन्दसि ३५६० ।**	छन्दसि ५०	वेद में अनञ्पूर्व समास में क्त्वा को क्त्वा तथा ल्यप् दोनों होता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि	**३९. सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः ३५६१ ।** ** इयाडियाजीकाराणामुपसंख्यानम् ।* ** आङ्याजयारामुपसंख्यानम् ।*		वेद में सुप् के स्थान में सु लुक् पूर्वसवर्ण आ आत् शे या डा ड्या याच् आल् आदेश होते हैं ।
अङ्गस्य, छन्दसि	**४०. अमो मश् ३५६२ ।** ।। २ ।।		मिप् सम्बन्धी अम् को वेद में मश् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि	**४१. लोपस्त आत्मनेपदेषु ३५६३ ।**		वेद में आत्मनेपद में त का लोप होता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि	**४२. ध्वमो ध्वात् ३५६४ ।**		वेद में ध्वम् को ध्वात् आदेश हो जाता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि	**४३. यजध्वैनमिति च ३५६५ ।**		वेद में एनम् परे रहने पर यजध्वैनम् बनता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि	**४४. तस्य तात् ३५६६ ।**	तस्य ४५	वेद में (मध्यम पुरुष बहुवचन) त को तात् होता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि, तस्य	**४५. तप्तनप्तनथनाश्च ३५६७ ।**		वेद में ते के स्थान में तप् तनप् तन थन होते हैं ।
अङ्गस्य, छन्दसि	**४६. इदन्तो मसि ३५६८ ।**		वेद में मस् इकारान्त (मसि) होता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि	**४७. क्त्वो यक् ३५६९ ।**	क्त्वः ४९	वेद में क्त्वा को यक् का आगम होता है ।

अङ्गस्य, छन्दसि, क्त्वः	**४८. इष्ट्वीनमिति च ३५७० ।**		वेद में (यज+क्त्वा) इष्ट्वीनम् निपातित होता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि, क्त्वः	**४९. स्नात्व्यादयश्च ३५७१ ।**		वेद में स्नात्वी आदि निपातित होते हैं ।
	(२४५) स्नात्वी पीत्वी ॥ **इति स्नात्व्यादिः ॥ आकृतिगणः ॥**		
अङ्गस्य, छन्दसि	**५०. आज्जसेरसुक् ३५७२ ।**	आत् ५२ अ-क् ५१	वेद में अवर्णान्त से उत्तर जस् को असुक् आगम होता है ।
अङ्गस्य, अ-क्, आत्	**५१. अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि २६६२ ।** ** अश्ववृषयोर्मैथुनेच्छायामिति वक्तव्यम् ।* ** क्षीरलवणयोर्लालसायाम् ।* ** सर्वप्रातिपदिकानां क्यचि लालसायां सुगसुकौ च ।*		आत्मप्रीति अर्थ में क्यच् परे रहने पर अश्व क्षीर वृष लवण को असुक् आगम होता है ।
अङ्गस्य, आत्	**५२. आमि सर्वनाम्नः सुट् २१७ ।**	आमि ५७	अवर्णान्त सर्वनाम से परे आम् को सुट् आगम होता है ।
अङ्गस्य, आमि	**५३. त्रेस्त्रयः २६४ ।**		आम् परे रहने पर त्रि को त्रय आदेश होता है ।
अङ्गस्य, आमि	**५४. ह्रस्वनद्यापो नुट् २०८ ।** ** नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट्पूर्वविप्रतिषेधेन ।*	नुट ५७	ह्रस्वान्त नद्यन्त आबन्त से आम् को नुडागम होता है ।
अङ्गस्य, नुट्, आमि	**५५. षट्चतुर्भ्यश्च ३३८ ।**		षट्संज्ञक और चतुर् से परे आम् को नुट् का आगम होता है ।
अङ्गस्य, नुट्, आमि	**५६. श्रीग्रामण्योश्छन्दसि ३५७३ ।**		वेद में श्री और ग्रामणी से परे आम् को नुडागम होता है ।
अङ्गस्य, नुट्, आमि	**५७. गोः पादान्ते ३५७४ ।**		ऋक्पादान्त में गो से परे आम् को नुडागम होता है ।

नुम्प्रकरणम्

अङ्गस्य	**५८. इदितो नुम्धातोः २२६२ ।**	नुम् ८३	इदित् धातु को नुमागम होता है ।
अङ्गस्य, नुम्	**५९. शे मुचादीनाम् २५४२ ।** **तुदाद्यन्तर्गणो मुचादिः ॥** ** शे तृम्पादीनां नुम्वाच्यः ।*		श परे रहने पर मुच् आदि धातुओं को नुमागम होता है ।
अङ्गस्य, नुम्	**६०. मस्जिनशोर्झलि २५१७ । ॥ ३ ॥**		झलादि प्रत्यय परे रहने पर मस्ज नश् को नुम् का आगम होता है ।
अङ्गस्य, नुम्	**६१. रधिजभोरचि २३०२ ।**	अचि ६४	रध जभ् को मुम् का आगम होता है यदि बाद में अजादि प्रत्यय हो ।

अङ्गस्य, नुम्, अचि	**६२. नेट्यलिटि रधेः २५१६ ।**		लिट् भिन्न इडादि प्रत्यय परे रहने पर रध को नुमागम नहीं होता है।
अङ्गस्य, नुम्, अचि	**६३. रभेरशब्लिटोः २५८१ ।**	अ-टोः ६९	शप् लिट् वर्जित अजादि प्रत्यय परे रहने पर रभ को नुमागम होता है।
अङ्गस्य, नुम्, अ-टोः, अचि	**६४. लभेश्च २५८२ ।**	लभेः ६९ ।	लभ को नुमागम होता है यदि पर में शप् लिट् वर्जित अजादि प्रत्यय हो।
अङ्गस्य, नुम्, अ-टोः, लभेः	**६५. आङो यि २८४५ ।**	यि ६६	आङ्पूर्वक लभ को नुमागम होता है यादि प्रत्यय परे रहने पर।
अङ्गस्य, नुम्, यि, अ-टोः, लभेः	**६६. उपात्प्रशंसायाम् २८४६ ।**		यदि प्रशंसा वाच्य हो तो यकारादि प्रत्यय से पूर्व उप से युक्त लभ को नुमागम होता है।
अङ्गस्य, नुम्, अ-टोः, लभेः	**६७. उपसर्गात्खल्घञोः ३३०६ ।**	उ-ञोः ६८ ।	उपसर्गोत्तर लभ को नुमागम होता है यदि बाद में खल् घञ् हो।
अङ्गस्य, नुम्, उ-ञोः, अ-टोः, लभेः	**६८. न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम् ३३०७ ।**		केवल सु दुर् से युक्त लभ को खल् घञ् के यहाँ नुम् नहीं होता है।
अङ्गस्य, नुम्, अ-टोः, लभेः	**६९. विभाषा चिण्णमुलोः २७६५ ।**		लभ को विकल्प से नुम् होता है यदि पर में चिण् तथा णमुल् हो।
अङ्गस्य, नुम्	**७०. उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ३६१ ।**	स-ने ७२	अधातु उगित् अङ्ग और अञ्च को नुमागम होता है यदि पर में सर्व-नामस्थान हो।
अङ्गस्य, नुम्, स-ने	**७१. युजेरसमासे ३७६ ।**		असमास में सर्वनामस्थान परे रहने पर युज को नुमागम होता है।
अङ्गस्य, नुम्, स-ने	**७२. नपुंसकस्य झलचः ३१४ ।** * ***बहूर्जेर्नुम्प्रतिषेधः ।*** * ***अन्त्यात्पूर्वो वा नुम् ।***	न-स्य ७७	नपुंसक झलन्त अजन्त को सर्व-नामस्थान में नुमागम होता है।
अङ्गस्य, नुम्, न-स्य	**७३. इकोऽचि विभक्तौ ३२० ।**	इकः ७४ वि-कौ ७५	नपुंसक इगन्त अङ्ग को अजादि विभक्ति में नुमागम होता है।
अङ्गस्य, नुम्, वि-कौ, इकः, न-स्य	**७४. तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद्गालवस्य ३२१ ।**	तृ-षु ७५	भाषितपुंस्क नपुंसक इगन्त को विकल्प से पुंवत् होता है यदि पर में तृतीयादि अजादि विभक्ति हो।
अङ्गस्य, नुम्, वि-कौ, तृ-षु, न-स्य	**७५. अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ३२२ ।**	अ-म् ७७ उदात्तः ७६	अस्थि दधि सक्थि अक्षि को अनङ् आदेश होता है यदि तृतीयादि अजादि पर में हो। वह उदात्त होता है।

अङ्गस्य, नुम्, अ-म्, उदात्तः, न-स्य	**७६. छन्दस्यपि दृश्यते ३५७५ ।**	छन्दसि ७७	वेद में अनजादि में भी अस्थि आदि को अनङ् होता है ।
अङ्गस्य, नुम्, अ-म्, छन्दसि, न-स्य	**७७. ई च द्विवचने ३५७६ ।**		वेद में द्विवचन में अस्थि आदि को उदात्त ई होता है ।
अङ्गस्य, नुम्	**७८. नाभ्यस्ताच्छतुः ४२७ ।**	ना-त् ७९ शतुः ८१	अभ्यस्तोत्तर शतृ को नुम् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नुम्, शतुः, ना-त्	**७९. वा नपुंसकस्य ४४४ ।**	वा ८०	अभ्यस्तोत्तर शतृ प्रत्ययान्त नपुंसक को विकल्प से नुम् होता है ।
अङ्गस्य, नुम्, शतुः, वा	**८०. आच्छीनद्योर्नुम् ४४५** ।। ४ ।।	शी-दयोः ८१	अवर्णोत्तर शतृ को विकल्प से नुम् होता है शी और नदी पर रहने पर ।
अङ्गस्य, नुम्, शतुः, शी-दयोः	**८१. शप्श्यनोर्नित्यम् ४४६ ।**		शप् श्यन् सम्बन्धी शतृ को नित्य नुम् होता है यदि पर में शी और नदी हो ।
अङ्गस्य, नुम्	**८२. सावनडुहः ३३२ ।**	सौ ८५	सु के यहाँ अनडुह् को नुमागम होता है ।
अङ्गस्य, सौ, नुम्	**८३. दृक्स्ववः स्वतवसां छन्दसि ३५७७ ।**		वेद में दृक् स्ववस् स्वतवस् को नुम होता है सु के यहाँ ।
अङ्गस्य, नुम्, सौ	**८४. दिव औत् ३३६ ।**		सु परे रहने पर दिव् को औत् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, सौ	**८५. पथिमथ्यृभुक्षामात् ३६५ ।**	प-म् ८८	पथिन् मथिन् ऋभुक्षिन् को सु के यहाँ आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, प-म्	**८६. इतोऽत्सर्वनामस्थाने ३६६ ।**	स-ने ९८	यदि सर्वनामस्थान पर में हो तो पथिन् आदि के इ के स्थान में अ आदेश होता है ।
अङ्गस्य, स-ने, प-म्	**८७. थो न्थः ३६७ ।**		पथि मथि के थ के स्थान में न्थ आदेश होता है, यदि सर्वनामस्थान पर में हो ।
अङ्गस्य, स-ने, प-म्	**८८. भस्य टेर्लोपः ३६८ ।**		भसंज्ञक पथि आदि के टि का लोप होता है ।
अङ्गस्य, स-ने	**८९. पुंसोऽसुङ् ४३६ ।**		सर्वनामस्थान परे रहने पर पुंस् को असुङ् होता है ।
अङ्गस्य, स-ने	**९०. गोतो णित् २८४ ।** ** ओतो णिदिति वाच्यम् ।*	णित् ९२	गो से पर सर्वनामस्थान णिद्रवत् होता है ।
अङ्गस्य, णित्, स-ने	**९१. णलुत्तमो वा २२८३ ।**		उत्तम णल् विकल्प से णित् होता है ।

अङ्गस्य, णित्, स-ने	**९२. सख्युरसंबुद्धौ २५३ ।**	अद्धौ ९५ सख्युः ९३	सखि शब्द से पर सम्बुद्धिविहीन सर्वनामस्थान णिद्वत् होता है ।
अङ्गस्य, अद्धौ, स-ने, सख्युः	**९३. अनङ् सौ २४८ ।**	अ-सौ ९४	सम्बुद्धिहीन सु के यहाँ सखि को अनङ् होता है ।
अङ्गस्य, अद्धौ, स-ने, अ-सौ	**९४. ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च २७६ ।**		ऋकारान्त उशनस् पुरुदंस् अनेहस् शब्दों को अनङ् होता है यदि पर में असम्बुद्धि सु हो ।
अङ्गस्य, अद्धौ, स-ने	**९५. तृज्वत्क्रोष्टुः २७४ ।**	तृ-टुः ९७	क्रोष्टु को तृज्वद्भाव होता है सम्बुद्धिहीन सर्वनामस्थान पर में रहने पर ।
अङ्गस्य, स-ने, तृ-टुः	**९६. स्त्रियां च ३०५ ।**		स्त्रीलिङ्ग में क्रोष्टु को तृज्वद्भाव होता है ।
अङ्गस्य, स-ने, तृ-टुः	**९७. विभाषा तृतीयादिष्वचि २७८ ।**		तृतीयादि अजादि परे रहने पर क्रोष्टु को विकल्प से तृज्वद्भाव होता है ।
अङ्गस्य, स-ने	**९८. चतुरनडुहोरामुदात्तः ३३१ ।**	च-होः ९९	चतुर अनडुह् को आम् आगम होता है जो उदात्त होता है यदि पर में सर्वनामस्थान हो ।
अङ्गस्य, च-होः	**९९. अम्संबुद्धौ ३३३ ।**		सम्बुद्धि में चतुर् अनुडुह् को अम् का आगम होता है ।
अङ्गस्य	**१००. ॠत इद्धातोः २३९० ।। ५ ।।**	ॠतः १०३ धातोः १०३ इत् १०१	ॠकारान्त धातु अङ्ग को इकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, ॠतः, धा-तोः, इत्	**१०१. उपधायाश्च २५७१ ।**		धातु के उपधाभूत ॠ को इत् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, ॠतः, धा-तोः	**१०२. उदोष्ठ्यपूर्वस्य २४९४ ।**		ओष्ठ्यपूर्व ॠकारान्त धातु को उत् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, ॠतः, धा-तोः	**१०३. बहुलं छन्दसि ३५७८ ।**		वेद में ॠकारान्त धातु को बहुलतया उदादेश होता है ।

युवोरष्टाभ्यो लोपो
रधिशप्यनोरुपधायास्त्रीणि ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य
प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः ।

सिचि वृद्धिः

अङ्गस्य	**१. सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु २२९७ ।**	सि-षु ७	परस्मैपद में सिच् परे रहने पर इगन्त अङ्ग को वृद्धि होती है।
अङ्गस्य, सि-षु	**२. अतो ल्रान्तस्य २३३० ।**		ल् र् समीपस्थ धात्वङ्ग अत् को वृद्धि होती है यदि बाद में परस्मैपद का सिच् हो ।
अङ्गस्य, सि-षु	**३. वदव्रजहलन्तस्याचः २२६७ ।**	ह-स्य ४	वद व्रज और हलन्त धात्वङ्ग, अच् के स्थान में वृद्धि होती है यदि पर में परस्मैपद का सिच् हो ।
अङ्गस्य, ह-स्य, सि-षु	**४. नेटि २२६८ ।**	नेटि ७	हलन्त अङ्ग को वृद्धि नहीं होती है यदि इडादि सिच् पर में हो।
अङ्गस्य, नेटि, सि-षु	**५. ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् २२९९ ।**		ह् म् य् अन्तवाले तथा क्षण श्वस जागृ णि श्वि एवं एदित् धात्वङ्ग को वृद्धि नहीं होती है इडादि सिच् परस्मैपद परे रहने पर ।
अङ्गस्य, नेटि, सि-षु	**६. ऊर्णोतेर्विभाषा २४४९ ।**	विभाषा ७	इडादि सिच् परस्मैपद परे रहने पर ऊर्णुञ् को विकल्प से वृद्धि नहीं होती है।
अङ्गस्य, विभाषा, नेटि, सि-षु	**७. अतो हलादेर्लघोः २२८४ ।**		हलादि धातु के अत् (लघु अकार) को पूर्वस्थिति में विकल्प से वृद्धि नहीं होती है।

इण् निषेधः

अङ्गस्य	**८. नेड्वशि कृति २९८१ ।**	नेट् ३४ कृति ९	वशादि कृत् परे रहने पर इडागम नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, कृति	**९. तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च ३१६३ ।** * *तितुत्रेष्वग्रहादीनामिति वक्तव्यम् ।*		ति तु त्र त थ सि सु सर क स कृत् परे रहने पर इडागम नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्	**१०. एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् २२४६ ।**		उपदेशावस्था में अनुदात्त एकाच् धातु से इडागम नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्	**११. श्र्युकः किति २३८१ ।**	उकः १२	श्रि तथा उगन्त धातु को इडागम नहीं होता है कित् प्रत्यय परे रहने पर ।
अङ्गस्य, नेट्, उकः	**१२. सनि ग्रहगुहोश्च २६१० ।**		ग्रह गुह तथा उगन्त धातु को सन् के यहाँ इट् नहीं होता है ।

अङ्गस्य, नेट्	**१३. कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि २२९३ ।**		कृ सृ भृ वृ स्तु द्रु स्रु श्रु को लिट् में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्	**१४. श्वीदितो निष्ठायाम् ३०३९ ।**	नि-म् ३४	श्वि और ईदित् धातु को निष्ठा में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**१५. यस्य विभाषा ३०२५ ।**		जिस धातु को विकल्प से इट् होता है उसे निष्ठा में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**१६. आदितश्च ३०३६ ।**	आदितः १७	आदित् धातुओं से निष्ठा में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्, आदितः	**१७. विभाषा भावादिकर्मणोः ३०५४ ।**		आदित् धातुओं से निष्ठा में विकल्प से इट् नहीं होता है भाव तथा आदि कर्म में ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**१८. क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानि मन्थमनस्तमःसक्ताविस्पष्टस्वरानायासभृशेषु ३०५८ ।**		मन्थ मनः तमः सक्त अविस्पष्ट स्वर अनायास भृश अर्थों में क्रमशः क्षुब्ध स्वान्त ध्वान्त लग्न म्लिष्ट विरिब्ध फाण्ट बाढ निपातित होते हैं ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**१९. धृषिशसी वैयात्ये ३०५९ ।**		वैयात्य अर्थ में धृष शस को निष्ठा में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**२०. दृढः स्थूलबलयोः ३०६० ।। १ ।।**		स्थूल और बलवान् अर्थ में दृढ निपातित होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**२१. प्रभौ परिवृढः ३०६१ ।**		प्रभु अर्थ में परिवृढ निपातित होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**२२. कृच्छ्रगहनयोः कषः ३०६२ ।**		कृच्छ्र गहन अर्थ में कष से निष्ठा में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**२३. घुषिरविशब्दने ३०६३ ।**		अविशब्दन में घुष से निष्ठा में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**२४. अर्देः संनिविभ्यः ३०६४ ।**	अर्देः २५	सं नि वि पूर्वक अर्द से निष्ठा में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्, अर्देः	**२५. अभेश्चाविदूर्ये ३०६५ ।**		अविदूर्य अर्थ में अभिपूर्वक अर्द से निष्ठा में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्	**२६. णेरध्ययने वृत्तम् ३०६६ ।**	णेः २७	अध्ययन अर्थ में ण्यन्तवृत से वृत्त निपातित होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, नि-म्, णेः	**२७. वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः ३०६८ ।**	वा २९	ण्यन्त दम शम पूरी दस स्पश छद ज्ञप को निष्ठा में विकल्प से णिलोप और इट् का अभाव होता है ।

अङ्गस्य, नेट्, निम्, वा	**२८. रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम् ३०६९ ।**		रुष अम त्वर संघुष आस्वन को निष्ठा में विकल्प से इडागम नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, निम्, वा	**२९. हृषेर्लोमसु ३०७० ।** ** विस्मितप्रतिघातयोश्च ।*		लोम अर्थ में हृष को निष्ठा में विकल्प से इडागम नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, निम्	**३०. अपचितश्च ३०७१ ।** ** क्तिनि नित्यं चिभावो वक्तव्यः ।*		अपपूर्वक चाय को निष्ठा में अनिट्त्व और चि भाव निपातित होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, निम्	**३१. हु ह्वरेश्छन्दसि ३५७९ ।**	छन्दसि ३४	वेद में ह्वृ को निष्ठा में हरु आदेश होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, निम्, छन्दसि	**३२. अपरिह्वुताश्च ३५८० ।**		वेद में अपरिह्वृत निपातित होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, निम्, छन्दसि	**३३. सोमे ह्वरितः ३५८१ ।**		वेद में ह्वृ से निष्ठा में ह्वरित बनता है सोम में ।
अङ्गस्य, नेट्, निम्, छन्दसि	**३४. ग्रसितस्कभितस्तभितोत्तभितचत्तविकस्ताविशस्तृशंस्तृशास्तृतरुतृतरूतृवरुतृवरूतृवरूत्रीरुज्ज्वलितिक्षरितिक्षमितिवमित्यमितीति च ३५८२ ।**		वेद में ग्रसित स्कभित स्तभित उत्तभित चत्त विकस्त विशस्तृ शंस्तृ शास्तृ तरुतृ तरूतृ वरुतृ वरूतृ वरूत्रीः उज्ज्वलिति क्षरिति क्षमिति वमिति अमिति निपातित होते हैं ।
	इड्विधिः		
अङ्गस्य	**३५. आर्धधातुकस्येड्वलादेः २१८४ ।**		वलादि आर्धधातुक को इट् का आगम होता है ।
अङ्गस्य	**३६. स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते २३२३ ।**		स्नु क्रम से वलादि आर्धधातुक को तब इडागम होता है जब स्नु क्रम आत्मनेपद के निमित्त न हों ।
अङ्गस्य	**३७. ग्रहोऽलिटि दीर्घः २५६२ ।**	अलिटि ३८ दीर्घः ४०	ग्रह उत्तरवर्ती इट् को दीर्घ होता है अलिट् में ।
अङ्गस्य, दीर्घः अलिटि	**३८. वृतो वा २३९१ ।**	वृतः ४२	वृङ् वृञ् तथा ॠकारान्त धातु से इट् को विकल्प से दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, वृतः, दीर्घः	**३९. न लिङि २५२९ ।**	न ४०	लिङ् में वृ+ॠकारान्त से इट् को दीर्घ नहीं होता है ।
अङ्गस्य, वृतः, दीर्घः, न	**४०. सिचि च परस्मैपदेषु २३९२ ।। २ ।।**		परस्मैपद में वृ+ॠकारान्त उत्तरवर्ती इट् को दीर्घ नहीं होता है ।
अङ्गस्य, वृतः	**४१. इट् सनि वा २६२५ ।**	वा ४३	वृ+ॠकारान्त धातुओं को सन् परे रहने पर विकल्प से इडागम होता है ।

अङ्गस्य, वृतः, वा	**४२. लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु २५२८ ।**	लि-चोः ४३	आत्मनेपद में लिङ् सिच् परे रहने पर वृ+ऋकारन्त को विकल्प से इडागम होता है ।
अङ्गस्य, वा, लि-चोः	**४३. ऋतश्च संयोगादेः २५२६ ।**		संयोगादि ऋदन्त धातु से आत्मने पदमें लिङ् सिच् के यहाँ विकल्प से इडागम होता है ।
अङ्गस्य	**४४. स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा २२७९ ।**	वा ५१	स्वरति सूति सूयति धूञ् तथा ऊदित धातुओं से बलादि आर्धधातुक को विकल्प से इडागम होता है ।
अङ्गस्य, वा	**४५. रधादिभ्यश्च २५१५ ।**		रध आदि ८ धातु से वलादि आर्ध-धातुक को विकल्प से इडागम होता है ।
अङ्गस्य, वा	**४६. निरः कुषः २५६० ।**	नि-षः ४७	निर् पूर्वक कुष से बलादि आर्ध-धातुक को इडागम विकल्प से होता है ।
अङ्गस्य, वा, नि-षः	**४७. इण्निष्ठायाम् ३०४५ ।**		निर्पूर्वक कुष से निष्ठा में इट् होता है ।
अङ्गस्य, वा	**४८. तीषसहलुभरुषरिषः २३४० ।**		इष सह लुभ रुष रिष तकारादि आर्धधातुक में विकल्प से इडागम होता है ।
अङ्गस्य, वा	**४९. सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनाम् २६१८ ।** ** तनिपतिदरिद्रातिभ्यः सनो वा इड् वाच्यः ।*		इवन्त धातु तथा ऋधु भ्रस्ज दम्भु श्रि स्वृ यू ऊर्णु भर ज्ञप सन् को सन् परे रहने पर विकल्प से इडागम होता है ।
अङ्गस्य, वा	**५०. क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः ३०४९ ।**	क्त्-योः ५४	क्त्वा और निष्ठा में क्लिश को विकल्प से इडागम होता है ।
अङ्गस्य, वा, क्त्-योः	**५१. पूङश्च ३०५० ।**		पूङ् को विकल्प से इडागम होता है क्त्वा और निष्ठा में ।
अङ्गस्य, क्त्-योः	**५२. वसतिक्षुधोरिट् ३०४६ ।**		क्त्वा और निष्ठा में वस और क्षुध से इट् होता है ।
अङ्गस्य, क्त्-योः	**५३. अञ्चेः पूजायाम् ३०४७ ।**		पूजा अर्थ में अञ्च से क्त्वा और निष्ठा में इट् होता है ।
अङ्गस्य, क्त्-योः	**५४. लुभो विमोहने ३०४८ ।**		विमोहन अर्थ में लुभ से क्त्वा और निष्ठा में इट् होता है ।
अङ्गस्य	**५५. जृव्रश्च्योः क्त्वि ३३२७ ।**	क्त्वि ५६	जृ और व्रश्च से क्त्वा में इडागम होता है ।

अङ्गस्य, क्त्वि	**५६. उदितो वा ३३२८ ।**	वा ५७	उदित् धातु से क्त्वा में विकल्प से इट् होता है ।
अङ्गस्य, वा	**५७. सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः २५०६ ।**	से ६०	सिच्भिन्न सकारादि आर्धधातुक में कृत चृत छृत तृद नृत धातुओं से विकल्प से इट् होता है ।
अङ्गस्य, से	**५८. गमेरिट् परस्मैपदेषु २४०१ ।**	पर-षु ६०	परस्मैपद में सकारादि आर्धधातुक परे रहने पर गम से इट् होता है ।
अङ्गस्य, से, पर-षु	**५९. न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः २३४८ ।**	न ६५	वृत आदि चार धातुओं से इट् नहीं होता है परस्मैपद सकारादि आर्धधातुक में ।
अङ्गस्य, न, से, पर-षु	**६०. तासि च क्लृपः २३५२ ।। ३ ।।**	तासि ६३	कृप से तास् तथा परस्मैपद सकारादि आर्धधातुक में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, न, तासि	**६१. अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम् २२९४ ।**	थलि ६६ अ-म् ६३	तास् में नित्य अनिट् अजन्त धातुओं से थल् के यहाँ भी तास् की तरह इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, अ-म्, न, थलि, तासि	**६२. उपदेशेऽत्वतः २२९५ ।**		तास् में नित्यानिट् उपदेश में अकारवान् धातुओं से तास् की तरह थल् में इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, अ-म्, न, थलि, तासि	**६३. ऋतो भारद्वाजस्य २२९६ ।**		थल् में इट् का न होना केवल ऋकारान्त धातु से ही होगा ।
अङ्गस्य, न, थलि	**६४. बभूथततन्थजगृभ्मववर्थेति निगमे २५२७**		निगम में बभूथ आततन्थ जगृभ्म ववर्थ निपातित होते हैं ।
अङ्गस्य, न, थलि	**६५. विभाषा सृजिदृशोः २४०४ ।**		सृज् दृश् से थल् के यहाँ विकल्प से इट् नहीं होता है ।
अङ्गस्य, थलि	**६६. इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम् २३८४ ।**		अत्ति अर्ति व्ययति को थल् में इट् होता है ।
अङ्गस्य	**६७. वस्वेकाजाद्घसाम् ३०९६ ।**	वसु ६९	कृतद्विर्वचनैकाच् आकारवान् घस् से ही वसु के यहाँ इट् होता है ।
अङ्गस्य, वसु	**६८. विभाषा गमहनविदविशाम् ३०९९ ।** **** दृशेश्च ।***		वसु के यहाँ गम हन विद विश को विकल्प से इट् होता है ।
अङ्गस्य, वसु	**६९. सनिंससनिवांसम् ३५८३ ।**		सनिम् पूर्वक सन धातु को (क्वसु के यहाँ वेद में) सनिंससनिवांसम् निपातित होता है ।

अङ्गस्य	**७०. ऋद्धनोः स्ये २३६६ ।**		ऋकारान्त धातु तथा हन को स्य के यहाँ इट् होता है ।
अङ्गस्य	**७१. अञ्जेः सिचि २५४६ ।**	सिचि ७३	अञ्जू को सिच् के यहाँ इट् होता है ।
अङ्गस्य, सिचि	**७२. स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु २३८५ ।**	पर-षु ७३	परस्मैपद सिच् के यहाँ स्तु सु धूञ् से इट् होता है ।
अङ्गस्य, पर-षु, सिचि	**७३. यमरमनमातां सक्च २३७७ ।**		यम रम नम आकारान्त धातुओं से सक् का आगम तथा परस्मैपद सिच् में इट् भी होता है ।
अङ्गस्य	**७४. स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि २६२६ ।**	सनि ७५	सन् परे रहने पर स्मिङ् पूङ् ऋ अञ्जू अशू धातुओं से इट् होता है ।
अङ्गस्य, सनि	**७५. किरश्च पञ्चभ्यः २६११ ।**		किरादि पाँच धातुओं से सन् के यहाँ इट् होता है ।
अङ्गस्य	**७६. रुदादिभ्यः सार्वधातुके २४७४ ।**	सा-के ८१	रुदादि से वलादि सार्वधातुक को इडागम होता है ।
अङ्गस्य, सा-के	**७७. ईशः से २४३९ ।**	से ७८	ईश से परे से रहने पर सार्वधातुक को इट् होता है ।
अङ्गस्य, सा-के, से	**७८. ईडजनोर्ध्वे च २४४० ।**		ईड जन् से परे ध्वे और से सार्वधातुक को इट् का आगम होता है ।
अङ्गस्य, सा-के	**७९. लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य २२११ ।**		सार्वधातुक लिङ् अनन्त्य स् का लोप होता है ।
अङ्गस्य, सा-के	**८०. अतो येयः २२१२ । ।। ४ ।।**	अतः ८२ इयः ८१	अकारान्त अङ्ग से परे या इस सार्वधातुक को इय् होता है ।
अङ्गस्य, सा-के, अतः, इयः	**८१. आतो ङितः २२३५ ।**		अत से परे ङित् आकार को इय् होता है ।
अङ्गस्य, अतः	**८२. आने मुक् ३१०१ ।**	आने ८३	धात्वङ्ग को मुक् आगम होता है आन परे रहने पर ।
अङ्गस्य,. आने	**८३. ईदासः ३१०४ ।**		आस उत्तरवर्ती आन को ई होता है ।
अङ्गस्य	**८४. अष्टन आ विभक्तौ ३७१ ।**	आ ८९ विभक्तौ ११३	विभक्ति परे रहने पर अष्टन् को आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, आ	**८५. रायो हलि २८६ ।**		हलादि विभक्ति में रै को आकार आदेश होता है ।

युष्मदस्मदोरादेशः

अङ्गस्य, विभक्तौ, आ	**८६. युष्मदस्मदोरनादेशे ३९३ ।**	यु-दोः ९८ अ-शे ८९	अनादेश विभक्ति परे रहने पर युष्मद् अस्मद् को आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, आ, यु-दोः, अ-शे	**८७. द्वितीयायां च ३९० ।**		युष्मद् अस्मद् को आकार होता है द्वितीया में ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, आ, यु-दोः, अ-शे	**८८. प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् ३८७ ।**		भाषा में प्रथमा द्विवचन परे रहने पर युष्मद् अस्मद् को आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, आ, यु-दोः, अ-शे	**८९. योऽचि ३९२ ।**		युष्मद् अस्मद् को यकार आदेश होता है अनादेश अजादि परे रहने पर ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, यु-दोः	**९०. शेषे लोपः ३८५ ।**		शेष में युष्मद् अस्मद् का लोप होता है ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, यु-दोः	**९१. मपर्यन्तस्य ३८३ ।**	म-स्य ९८	यहाँ से मपर्यन्तस्य का अधिकार है ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, म-स्य, यु-दोः	**९२. युवावौ द्विवचने ३८६ ।**		द्विवचन में युष्मद् अस्मद् के म पर्यन्त को क्रमशः युव आव आदेश होते हैं ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, म-स्य, यु-दोः	**९३. यूयवयौ जसि ३८८ ।**		जस् के यहाँ म पर्यन्त युष्मद् अस्मद् को यूय वय आदेश होते हैं ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, म-स्य, यु-दोः	**९४. त्वाहौ सौ ३८४ ।**		म पर्यन्त युष्मद् अस्मद् को सु परे रहने पर त्व अह होते हैं ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, म-स्य, यु-दोः	**९५. तुभ्यमह्यौ ङयि ३९४ ।**		ङे के यहाँ युष्मद् अस्यद् के मपर्यन्त को तुभ्य मह्य आदेश होते हैं ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, म-स्य, यु-दोः	**९६. तवममौ ङसि ३९८ ।**		युष्मद् अस्मद् के म पर्यन्त को ङस् के यहाँ तव मम होते हैं ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, म-स्य, यु-दोः	**९७. त्वमावेकवचने ३८९ ।**	त्व-ने ९८	(शेष) एकवचन में युष्मद् अस्मद् के म पर्यन्त को त्व म आदेश होते हैं ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, म-स्य, यु-दोः, त्व-ने	**९८. प्रत्ययोत्तरपदयोश्च १३७३ ।**		प्रत्यय उत्तरपद में रहने पर एकार्थाभिधायी युष्मद् अस्मद् के म पर्यन्त को त्व म आदेश होते हैं ।
अङ्गस्य, विभक्तौ	**९९. त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ २९८ ।**	ति-तसृ १००	विभक्ति परे रहने पर स्त्रीलिङ्ग में त्रि चतुर् को क्रमशः तिसृ चतसृ आदेश होते हैं ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, तिसृ-चतसृ **१००. अचि र ऋतः २९९ ।। ५ ।।** — अचि १०२ — अजादि विभक्ति परे रहने पर तिसृ चतसृ के ऋ को र् हो जाता है।

अङ्गस्य, विभक्तौ, अचि **१०१. जराया जरसन्यतरस्याम् २२७ ।** — जरा को जरस् आदेश होता है विकल्प से, यदि पर में अजादि विभक्ति हो।

अङ्गस्य, विभक्तौ, अचि **१०२. त्यदादीनामः २६५ ।** — त्यद् आदि को विभक्ति परे रहने पर अकार आदेश होता है।

** द्विपर्यन्तानामेवेष्टिः ।*

अङ्गस्य, विभक्तौ **१०३. किमः कः ३४२ ।** — किमः १०५ — विभक्ति परे रहने पर किम् को क आदेश होता है।

अङ्गस्य, विभक्तौ, किमः **१०४. कु तिहोः १९५४ ।** — तकारादि हकारादि प्रत्यय परे रहने पर किम् को कु आदेश होता है।

अङ्गस्य, विभक्तौ, किमः **१०५. क्वाति १९६० ।** — अत् प्रत्यय परे रहने पर किम् को क्व आदेश होता है।

अङ्गस्य, विभक्तौ **१०६. तदोः सः सावनन्त्ययोः ३८१ ।** — सौ १०८ — त्यद् आदि के अनन्त्य त द को स होता है सु के यहाँ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, सौ **१०७. अदस औ सुलोपश्च ४३७ ।** — सु के यहाँ अदस् के स को औ होता है तथा सु का लोप होता है।

** अदस औत्वप्रतिषेधः साकच्कस्य वा वक्तव्यः सादुत्वं च । ।*

इदमो विकारः

अङ्गस्य, विभक्तौ, सौ **१०८. इदमो मः ३४३ ।** — इदमः ११३, मः १०९ — इदम् को सु के यहाँ मकार अन्तादेश होता है।

अङ्गस्य, विभक्तौ, मः, इदमः **१०९. दश्च ३४५ ।** — विभक्ति परे रहने पर इदम् के द को म होता है।

अङ्गस्य, विभक्तौ, इदमः **११०. यः सौ ४४१ ।** — सौ १११ — सु के यहाँ इदम् के म को य होता है।

अङ्गस्य, विभक्तौ, सौ, इदमः **१११. इदोऽय्पुंसि ३४४ ।** — इदः ११३ — इदम् के इत् को पुँल्लिङ्ग सु के यहाँ अय् होता है।

अङ्गस्य, विभक्तौ, इदः, इदमः **११२. अनाप्यकः ३४६ ।** — इदम् के अककार इद् को आप् विभक्ति में अन होता है।

अङ्गस्य, विभक्तौ, इदः, इदमः **११३. हलि लोपः ३४७ ।** — हलादि विभक्ति के यहां इदम् के अककार इत् का लोप होता है।

वृद्धिः

अङ्गस्य **११४. मृजेर्वृद्धिः २४७३ ।** — वृद्धिः ७.३.३५ — मृजू धातु के अङ्ग अक् को वृद्धि होती है प्रत्यय परे रहने पर।

अङ्गस्य, वृद्धिः **११५. अचो ञ्णिति २५४ ।** अचः ७.३.३१ ञ्णिति ७.३.३५ ञित् णित् के यहाँ अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है ।

अङ्गस्य, वृद्धिः **११६. अत उपधायाः २२८२ ।** धातु के उपधा अत् को वृद्धि होती है ञित् णित् प्रत्यय परे रहने पर ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः **११७. तद्धितेष्वचामादेः १०७५ ।** त-देः ७.३.३५ तद्धित ञित् णित् प्रत्यय पर में रहने पर अङ्ग के अचों में आदि अच् को वृद्धि होती है ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः **११८. किति च १०७६ ।** किति ७.३.३१ तद्धित कित् प्रत्यय परे रहने पर अङ्ग के अचों में आदि अच् को वृद्धि होती है ।

सिचि प्रभाविद् सन्यचस्तास्वदातो जराया अष्टादश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

वृद्धिविकल्पाः

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, किति **१. देविकाशिंशपादित्यवाड्दीर्घसत्रश्रेयसामात् १४३९ ।** ञित् णित् कित् तद्धित परे रहने पर देविका शिंशपा दित्यवाट् दीर्घसत्र श्रेयस् के आदि अच् को वृद्धि के स्थान में आकार होता है ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, किति **२. केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः ११४४ ।** केकय मित्रयु प्रलय के यकारादि को इय आदेश होता है तद्धित ञित् णित् कित् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, किति **३. न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच्** न ५ **१०९८ ।** य्वा-च् ४ पदान्त य् व् से परे आदि अच् को वृद्धि नहीं होती है अपितु य् व् से पहले क्रमशः ऐ औ हो जाता है तद्धित ञित् णित् कित् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, न-च्, किति **४. द्वारादीनां च १३८६ ।** द्वार आदि में भी य् व् उत्तरवर्ती आदि अच् को वृद्धि नहीं होती है अपितु य् व् से पहले ऐच् होता है ।

(२४६) द्वार स्वर स्वग्राम (स्वाध्याय) व्यल्कश स्वस्ति स्वर् स्फ्यकृत् (स्फ्यकृत्) स्वादुमृदु श्वम् श्वन् स्व ॥ **इति द्वारादिः ॥**

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, तदेः, न, किति	**५. न्यग्रोधस्य च केवलस्य १५४३ ।**		केवल न्यग्रोध के यकार से उत्तर अच् को वृद्धि नहीं होती है, अपितु य से पूर्व ऐ का आगम होता है।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, तदेः, किति	**६. न कर्मव्यतिहारे ३२१७ ।**	न ९	उपरिलिखित नियम कर्म व्यतिहार में नहीं होता है।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, तदेः, न, किति	**७. स्वागतादीनां च १५४९ ।**		स्वागत आदि में भी ऐच् का नियम नहीं लगता है।

(२४७) स्वागत स्वध्वर स्वङ्ग व्यड व्यवहार स्वपिति (स्वपति) ॥ **इति स्वागतादिः ॥**

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, तदेः, न, किति	**८. श्वादेरिञि १५६० ।** ** इकारादाविति वाच्यम् ।*	श्वादेः ९	इञ् के यहाँ श्वादि में भी यह नियम नहीं लगता है।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, तदेः, न, श्वादेः, किति	**९. पदान्तस्यान्यतरस्याम् १५६१ ।**		पद शब्दान्त श्वदि में यह नियम विकल्प से नहीं लगता है।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, तदेः, किति	**१०. उत्तरपदस्य १३९६ ।**	उ-स्य ३१	यहाँ से उत्तरपदस्य का अधिकार है।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, तदेः, उ-स्य, किति	**११. अवयवादृतोः १३९७ ।**		अवयववाची पूर्व शब्द से उत्तर स्थित ऋतु वाची शब्दों के आदि अच् को वृद्धि होती है यदि पर में तद्धित ञित् णित् कित् हो।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, तदेः, उ-स्य, किति	**१२. सुसर्वार्धाज्जनपदस्य १३९८ ।**	ज-स्य १३	सु सर्व अर्ध शब्द के बाद जनपदवाची उत्तरपद के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित ञित् णित् कित् में।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, तदेः, उ-स्य, किति, ज-स्य	**१३. दिशोऽमद्राणाम् १३९९ ।**	दिशः १४	दिग्वाची शब्दोत्तर मद्रभिन्न जनपद वाची शब्दों के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित ञित् णित् कित् में।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, दिशः, किति, उ-स्य

१४. प्राचां ग्रामनगराणाम् १४०० ।

प्राच्य देश में दिग्वाच्युत्तर ग्राम नगर के आदि के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित ञित् णित् कित् में ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, किति, उ-स्य

१५. संख्यायाः संवत्सरसंख्यस्य च १७५२ । सं-याः १७

संख्योत्तर संवत्सर तथा संख्या वाची शब्दों के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित ञित् णित् कित् में ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, सं-या, किति, उ-स्य

१६. वर्षस्याभविष्यति १७५४ ।

संख्योत्तर वर्ष शब्द के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित ञित् णित् कित् में पर तद्धित भविष्यत् अर्थ में न हो ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, सं-या, किति, उ-स्य

१७. परिमाणान्तस्यासंज्ञाशाणयोः १६८३ ।

** कुलिजशब्दमपि केचित्पठन्ति।*

संख्योत्तर परिमाणान्त अङ्ग के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित ञित् णित् कित् में पर परिमाणान्त संज्ञा या शाण न हो ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, किति, उ-स्य

१८. जे प्रोष्ठपदानाम् १४०९ ।

जात अर्थ में विहित तद्धित ञित् णित् कित् में प्रोष्ठपद शब्द के पद के आदि अच् को वृद्धि होती है ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, किति, उ-स्य

१९. हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ११३३ । पू-स्य २५

हृद भग सिन्धु अन्त वाले शब्दों में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों के आदि अच् की वृद्धि होती पूर्ववत् परे रहने पर ।

अङ्गस्य वृद्धिः ञ्णिति, अचः, त-देः, पूस्य, किति, उ-स्य

२०. अनुशतिकादीनां च १४३८ ॥ १ ॥

अनुशतिक आदि में उभयपदों के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित ञित् णित् कित् में ।

(२४८) अनुशतिक अनुहोड अनुसंवरण (अनुसंचरण) अनुसंवत्सर अङ्गारवेणु असिहत्य (अस्यहत्य) अस्यहेति वध्योग पुष्करसद् अनुहरत् कुरुकत कुरुपञ्चाल उदकशुद्ध इहलोक परलोक सर्वलोक सर्वपुरुष सर्वभूमि प्रयोग परस्त्री । "राजपुरुषात्ष्यञि' । सूत्रनड । **इत्यनुशतिकादिः ॥ आकृतिगणोऽयम् ॥** तेन । अभिगम अधिभूत अधिदेव चतुर्विद्या इत्यादयोऽप्यन्ये विज्ञेयाः ॥

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः त-देः, पूस्य, किति, उ-स्य	**२१. देवताद्वन्द्वे च १२३९ ।**	दे-द्वे २३	देवता द्वन्द्व में उभयपदों के आदि अच् की वृद्धि होती तद्धित ञित् णित् कित् परे रहने पर ।
अङ्गस्य वृद्धिः ञ्णिति: अचः त-देः पूस्य दे-द्वे, किति, उ-स्य	**२२. नेन्द्रस्य परस्य १२४० ।**	न २३	इन्द्र शब्द यदि पर में हो तो उभयपद वृद्धि नहीं होती है देवता द्वन्द्व में ।
अङ्गस्य वृद्धिः ञ्णिति अचः त-देः पूस्य दे-द्वे न किति उ-स्य	**२३. दीर्घाच्च वरुणस्य १२४१ ।**		दीर्घोत्तर वरुण के रहने पर उभयपद वृद्धि नहीं होती है देवता द्वन्द्व में ।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति अचः त-देः, पूस्य, किति, उ-स्य	**२४. प्राचां नगरान्ते १४३१ ।**		प्राच्य देश में नगरान्त पद में उभयपद वृद्धि होती है तद्धित ञित् णित् कित् में ।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः त-देः, पूस्य, किति, उ-स्य	**२५. जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम् १४३२ ।**		जङ्गल धेनु वलज अन्त वाले शब्दों में पूर्वपद के आदि अच् को वृद्धि होती है, उत्तरपद में वृद्धि विकल्प से होती है ।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, किति, उ-स्य	**२६. अर्धात्परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा १६८४ ।**	अ-स्य २७ पू-वा ३०	अर्ध शब्दोत्तर परिमाणवाची शब्द रहने पर केवल उत्तरपद के आदि अच् को वृद्धि होती है, पूर्व को विकल्प से होती है ।
अङ्गस्य वृद्धिः ञ्णिति अचः त-देः अ-स्य पू-वा किति उ-स्य	**२७. नातः परस्य १६८५ ।**		अर्धोत्तर परिमाणाकार में वृद्धि नहीं होती है, पूर्व को विकल्प से होती है ।
अङ्गस्य वृद्धिः ञ्णिति अचः त-देः अ-स्य पू-वा किति उ-स्य	**२८. प्रवाहणस्य ढे ११२९ ।**	प्र-स्य २९	ढ परे रहने पर उत्तरपदादिस्थ अच् की वृद्धि होती है, पूर्व में विकल्प से होती है ।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, अ-स्य, पू-वा, प्र-स्य, किति उ-स्य	**२९. तत्प्रत्ययस्य च ११३० ।**		ढ प्रत्ययान्त प्रवाहण से तद्धित परे रहने पर पूर्वपद को विकल्प तथा उत्तरपद को नित्य वृद्धि होती है ।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः, त-देः, पू-वा, किति, उ-स्य	**३०. नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञकुशलनिपुणानाम् १४६० ।**	नञः ३१	नञ् उत्तरवर्ती शुचि ईश्वर क्षेत्रज्ञ कुशल निपुण शब्दों के आदि अच् को नित्य तथा पूर्वपद को विकल्प से वृद्धि होती है यदि तद्धित ञित् णित् कित् पर में हो ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, अचः त-देः, नञः, किति, उ-स्य	**३१. यथातथायथापुरयोः पर्यायेण १७८९ ।**	नञ् से उत्तरवर्ती यथातथा यथापुर में पर्याय से आदि अच् को वृद्धि होती है, तद्धित ञित् णित् कित् यदि पर में रहें ।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति	**३२. हनस्तोऽचिण्णलोः २५७४ ।**	हन् को तकारादेश होता है, यदि बाद में चिण् णमुल् को छोड़कर ञित् णित् हो ।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति	**३३. आतो युक्चिण्कृतोः २७६१ ।** चि-तोः ३५	चिण् कृत् णित् ञित् परे रहने पर आकारान्त अङ्ग को युक् का आगम होता है ।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, चि-तोः	**३४. नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः २७६३ ।** न ३५ **** अनाचमिकमिवमीनामिति वक्तव्यम् ।***	उदात्तोपदेश मान्त अङ्ग को चिण् कृत् ञित् णित् परे रहने पर जो कहा गया है वह नहीं होगा पर मान्त आचम् न हो ।
अङ्गस्य, वृद्धिः, ञ्णिति, चि-तोः, न	**३५. जनिवध्योश्च २५१२ ।**	चिण् कृत् ञित् णित् परे रहने पर जो कहा गया है वह जन और वध को नहीं होगा ।
	णौ आगम विकारः	
अङ्गस्य	**३६. अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुग्णौ २५७० ।** णौ ४३	अर्ति ह्री व्ली री क्नूयी क्ष्मायी तथा आकारान्त अङ्ग को पुक् आगम होता है यदि पर में णि हो ।
अङ्गस्य, णौ	**३७. शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् २५८५ ।** **** पातेर्णौ लुग्वक्तव्यः ।*** **** धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्यः ।***	यदि णि पर में हो तो शा छा सा ह्वा व्या वे पा को युक् आगम होता है ।
अङ्गस्य, णौ	**३८. वो विधूनने जुक् २५९० ।**	विधूनन अर्थ में वा को जुक् आगम होता है णि परे रहने पर ।
अङ्गस्य, णौ	**३९. लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने २५९१ ।**	णि परे रहने पर ली ला को विकल्प से नुक् लुक् होता है, यदि धात्वर्थ स्नेहविपातन हो ।
अङ्गस्य, णौ	**४०. भियो हेतुभये षुक् २५९५ ।। २ ।।**	हेतुभय अर्थ में भी को णि परे रहने पर षुक् आगम होता है ।
अङ्गस्य, णौ	**४१. स्फायो वः २५९७ ।**	णि के यहाँ स्फाय् को वकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, णौ	**४२. शदेरगतौ तः २५९८ ।**	अगति अर्थ में शद् को णि के यहाँ तकारादेश होता है ।

अङ्गस्य, णौ **४३. रुहः पोऽन्यतरस्याम् २५९९ ।** रुह् को पकारादेश होता है णि परे रहने पर ।

इकारादेश:

अङ्गस्य **४४. प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः ४६३ ।** अतः ४९ इत् ४८ — प्रत्ययस्थ क से पूर्व अ को आप् परे रहने पर इ होता है, यदि वह आप् सुप् से परे न हो ।

** मामकनरकयोरुपसंख्यानम् ।*

** त्यक्त्यपोश्च ।*

अङ्गस्य, अतः, इत् **४५. न यासयोः ४६४ ।** या सा को इकार आदेश नहीं होता है ।

** त्यकनश्च निषेधः ।*

** पावकादीनां छन्दसि ।*

** आशिषि वुनश्च न ।*

** उत्तरपदलोपे न ।*

** क्षिपकादीनां च ।*

(२४९) (वा० ग०) । क्षिपका धुवका चरका सेवका करका चटका अवका लहका अलका कन्यका ध्रुवका एडका ॥ **इति क्षिपकादिः । आकृतिगणः ॥**

** तारका ज्योतिषि ।*

** वर्णका तान्तवे ।*

** वर्तका शकुनौ प्राचाम् ।*

** अष्टका पितृदेवत्ये ।*

** सूतकापुत्रिकावृन्दारकाणां वेति वक्तव्यम् ।*

अङ्गस्य, अतः, इत् **४६. उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः ४६५ ।** उ-म् ४८ आ-ने ४९ — औदीच्य मत में य क से पहले वाले (स्त्रीलिङ्ग) आ के स्थान में जो अ है उसे विकल्प से इत् होता है यदि वह क से पूर्व हो तथा बाद में आप् हो ।

** धात्वन्तयकोस्तु नित्यम् ।*

अङ्गस्य, अतः, इत्, उ-म्, आ-ने **४७. भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वा नञ्पूर्वाणामपि ४६६** — औदीच्य मत में ही नञ्पूर्वक भी भस्त्रा एषा अजा ज्ञा द्वा स्वा के अ को इ नहीं होता है ।

अङ्गस्य, अतः, इत्, उ-म्, आ-ने **४८. अभाषितपुंस्काच्च ४६७ ।** अ-कात् ४९ — अभाषितपुंस्क से विहित आ के स्थान में स्थित अकार को इकारादेश नहीं होता है उदीच्य मत में ।

अङ्गस्य, अतः, अ-कात्, आ-ने **४९. आदाचार्याणाम् ४६८ ।** आचार्यों के मत में पूर्वसूत्र के विषय में विकल्प से आत् होता है ।

अङ्गस्य	**५०. ठस्येकः ११७० ।**	ठस्य ५१	(अङ्गनिमित्त प्रत्यय) के ठ को इक् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, ठस्य	**५१. इसुसुक्तान्तत्कः १२२१ ।** **** दोष उपसंख्यानम् ।***		इस् उस् उक् त् अन्त वाले शब्दों से ठ को क होता है ।
	कुत्वविधिः		
अङ्गस्य	**५२. चजोः कु घिण्यतोः २८६३ ।** **** निष्ठायामनिट इति वक्तव्यम् ।***	च-कु ६९	घित् ण्यत् परे रहने पर च ज को कवर्ग आदेश होता है ।
अङ्गस्य, च-कु	**५३. नयङ्क्वादीनां च २८६४ ।** (२५०) न्यङ्कु मद्गु भृगु दूरेपाक फलेपाक क्षणेपाक दूरेपाका फलेपाका दूरेपाकु फलेपाकु तक्र (तत्र) वक्र (चक्र) व्यतिषङ्ग (अनुषङ्ग) अवसर्ग (उपसर्ग) श्वपाक मांसपाक (मासपाक) मूलपाक कपोतपाक उलूकपाक । 'संज्ञाया मेघनिदाघावदाघार्घाः' १८० । न्यग्रोध वीरुत् । **इति न्यङ्क्वादि ।।**		न्यङ्कु आदि शब्दों को कवर्ग आदेश होता है ।
अङ्गस्य, च-कु	**५४. हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ३५८ ।**	हः ५५ हन्तेः ५६	हन् के ह को कवर्गादेश होता है यदि पर में ञित् णित् तथा नकार रहे ।
अङ्गस्य, च-कु, हन्तेः, हः	**५५. अभ्यासाच्च २४३० ।**	अ-त् ५८	अभ्यासोत्तर हन्ति के हकार को कवर्ग होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, हन्तेः, अ-त्	**५६. हेरचङि २५३१ ।**		अभ्यासोत्तर हिनोति के हकार को कवर्ग होता है, यदि पर में चङ् न हो ।
अङ्गस्य, च-कु, अ-त्	**५७. सन्लिटोर्जेः २३३१ ।**	स-टोः ५८	अभ्यासोत्तर जि को कवर्ग होता है, यदि पर में सन् और लिट् हो ।
अङ्गस्य, च-कु, अ-त्, स-टोः	**५८. विभाषा चेः २५२५ ।**		अभ्यासोत्तर चि को कवर्ग होना है विकल्प से, यदि पर में सन् और लिट् हो ।
अङ्गस्य, च-कु	**५९. न क्वादेः २८७५ ।**	न ६९	कु आदि वाले धातुओं के च ज को कवर्ग नहीं होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, न	**६०.अजिव्रज्योश्च २८७६ ।** ।। ३ ।।		अज व्रज को भी कवर्ग नहीं होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, न	**६१. भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः २८७७ ।**		पाणि और उपताप अर्थ में भुज और न्युब्ज निपातित होते हैं ।

अङ्गस्य, च-कु, न	६२. **प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे २८७८ ।**		यज्ञाङ्ग में प्रयाज अनुयाज निपातित होते हैं ।
अङ्गस्य, च-कु, न	६३. **वञ्चेर्गतौ २८७९ ।**		गति अर्थ में वञ्च को कवर्गादेश नहीं होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, न	६४. **ओक उचः के २८८० ।**		उच धातु को क प्रत्यय में ओक निपातित होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, न	६५. **ण्य आवश्यके २८८१ ।**	ण्ये ६९	आवश्यक अर्थ में ण्य परे रहने पर कवर्ग नहीं होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, न, ण्ये	६६. **यजयाचरुचप्रवचर्चश्च २८८२ ।** ** त्यजेश्च ।*		यज याच रुच प्रवच ऋच को ण्य परे रहने पर कवर्ग नहीं होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, न, ण्ये	६७. **वचोऽशब्दसंज्ञायाम् २८८३ ।**		अशब्द संज्ञा में ण्यत् परे रहने पर वच को कवर्ग नहीं होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, न, ण्ये	६८. **प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे २८८४ ।**		शक्यार्थ में प्रयोज्य नियोज्य निपातित होते हैं ।
अङ्गस्य, च-कु, न, ण्ये	६९. **भोज्यं भक्ष्ये २८८५ ।**		भक्ष्य अर्थ में भोज्य निपातित होता है ।
अङ्गस्य	७०. **घोर्लोपो लेटि वा ३५८४ ।**	लोपः ७२	लेट् परे रहने पर घु संज्ञकों का विकल्प से लोप होता है ।
अङ्गस्य, लोपः	७१. **ओतः श्यनि २५१० ।**		श्यन् परे रहने पर ओकारान्त अङ्ग का लोप होता है ।
अङ्गस्य, लोपः	७२. **क्सस्याचि २३३७ ।**	क्सस्य ७३	अजादि प्रत्यय रहने पर क्स का लोप होता है ।
अङ्गस्य, क्सस्य	७३. **लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये २३६५ ।**		दुह दिह लिह गुह के क्स का विकल्प से लोप होता है यदि पर में आत्मनेपदीय दन्त्य तङ् हो ।
अङ्गस्य	७४. **शमामष्टानां दीर्घः श्यनि २५१९ ।**	दीर्घः ७६	श्यन् परे रहने पर शम आदि आठ धातुओं को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, दीर्घः	७५. **ष्ठिवुक्लमुचमां शिति २३२० ।** ** आङि चम इति वक्तव्यम् ।*	शिति ८२	शित् परे रहने पर ष्ठिवु क्लमु आचम् को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, शिति दीर्घः	७६. **क्रमः परस्मैपदेषु २३२२ ।**		परस्मैपद में शित् परे रहने पर क्रम को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, शिति	७७. **इषुगमियमां छः २४०० ।**		शित् परे रहने पर इषु गमि यम को छकार होता है ।
अङ्गस्य, शिति	७८. **पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौशी-**		शित् परे रहने पर पा घ्रा ध्मा स्था म्ना दाण् दृशि अर्ति सर्ति शद सद

	यसीदाः २३६० ।		धातु को क्रमशः पिब जिघ्र धम तिष्ठ मन यच्छ पश्य ऋच्छ धौ शीय सीद आदेश होते हैं ।
अङ्गस्य, शिति	**७९. ज्ञाजनोर्जा २५११ ।**		ज्ञा और जन को जा आदेश होता है शित् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, शिति	**८०. प्वादीनां ह्रस्वः २५५८** ।। ४ ।।	ह्रस्वः ८१	पू आदि (प्वादि) धातुओं को शित् परे रहने पर ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य, शिति, ह्रस्वः	**८१. मीनातेर्निगमे ३५८५ ।**		निगम में शित् परे रहने पर मीनाति को ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य, शिति	**८२. मिदेर्गुणः २३४६ ।**	गुणः ८८	अङ्ग मिद के इक् को गुण होता है शित् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, गुणः	**८३. जुसि च २४८१ ।**		जुस् परे रहने पर इगन्त अङ्ग को गुण होता है ।
अङ्गस्य, गुणः	**८४. सार्वधातुकार्धधातुकयोः २१६८ ।**	सा-योः ८६	इगन्त अङ्ग को गुण होता है सार्वधातुक आर्धधातुक प्रत्यय परे रहने पर ।
अङ्गस्य, गुणः, सा-योः	**८५. जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु २४८० ।**		यदि वि चिण् णल् ङित् पर में न हों तो जागृ को गुण होता है ।
अङ्गस्य, गुणः, सा-योः	**८६. पुगन्तलघूपधस्य च २१८९ ।**	पु-स्य ८७	पुगन्त तथा लघूपध अङ्ग को गुण होता है पर में सार्वधातुक आर्धधातुक के रहने पर ।
अङ्गस्य, गुणः, पु-स्य	**८७. नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके २५०३** **** बहुलं छन्दसीति वक्तव्यम् ।***	न ८८ पिति ९४ सा-के १०१	अभ्यस्त संज्ञक लघूपध को गुण नहीं होता है, यदि पर में सार्वधातुक पित् हो ।
अङ्गस्य, गुणः, सा-के, पिति, न	**८८. भूसुवोस्तिङि २२२४ ।**		सार्वधातुक तिङ् परे रहने पर भू सू को गुण नहीं होता है ।
अङ्गस्य, सा-के, पिति	**८९. उतो वृद्धिर्लुकि हलि २४४३ ।**	वृद्धिः ९० हलि १००	लुक् होने पर हलादि पित् सार्वधातुक परे रहने पर उकारान्त अङ्ग को वृद्धि होती है ।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, पिति, वृद्धिः	**९०. ऊर्णोतेर्विभाषा २४४५ ।**	ऊर्णोते ९१	ऊर्णोति को हलादि पित् सार्वधातुक में विकल्प से वृद्धि होती है ।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, पिति, ऊर्णोतेः	**९१. गुणोऽपृक्ते २४४८ ।**		पित् सार्वधातुक में अपृक्त हल् परे रहने पर ऊर्णोति को गुण होता है ।

अङ्गस्य, हलि, सा-के, पिति	**९२. तृणह इम् २५४५ ।**		हल् पित् सार्वधातुक में तृणह को इम् आगम होता है।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, पिति	**९३. ब्रुव ईट् २४५२ ।**	ईट् ९८	ब्रू उत्तरवर्ती हलादि पित् सार्वधातुक को ईडागम होता है।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, पिति, ईट्	**९४. यङो वा २६५१ ।**	वा ९५	यङ् उत्तरवर्ती हलादि पित् सार्वधातुक को विकल्प से ईट् आगम होता है।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, ईट्, वा	**९५. तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके २४४४ ।**		तु रु ष्टुञ् शम अम से परे हलादि सार्वधातुक को विकल्प से ईट् आगम होता है।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, ईट्	**९६. अस्तिसिचोऽपृक्ते २२२५ ।**	अ-चो: ९७ अपृक्ते १००	अस् और सिजन्त अङ्ग से परे अपृक्त सार्वधातुक को ईट् का आगम होता है।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, ईट्, अचो, अ-पृक्ते	**९७. बहुलं छन्दसि ३५८६ ।**		अस्तिसिच् के सार्वधातुक को विकल्पेन ईट् होता है वेद में।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, ईट्, अपृक्ते	**९८. रुदश्च पञ्चभ्यः २४७५ ।**	रु-भ्य: ९९	रुद आदि पाँच धातुओं से परे अपृक्त हलादि सार्वधातुक को ईट् का आगम होता है।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, रु-भ्य:, अपृक्ते	**९९. अड्गार्ग्यगालवयोः २४७६ ।**	अट् १००	रुदादि पाँच धातुओं से परे अपृक्त सार्वधातुक को अट् का आगम होता है (गार्ग्य गालव के मत में)।
अङ्गस्य, हलि, सा-के, अट्, अपृक्ते	**१००. अदः सर्वेषाम् २४२६ ।** ।। ५ ।।		अद (भक्षणे) से उत्तर अपृक्त सार्वधातुक को अट् का आगम सब आचार्यों के मत में होता है।
अङ्गस्य, सा-के	**१०१. अतो दीर्घो यञि २१७० ।**	अत: १०४ दी-ञि १०२	यञादि सार्वधातुक परे रहने पर अदन्त अङ्ग को दीर्घ होता है।
अङ्गस्य, अत:, दी-ञि	**१०२. सुपि च २०२ ।**	सुपि १०३	अदन्त अङ्ग को दीर्घ होता है यञादि सुप् परे रहने पर।
अङ्गस्य, अत:, सुपि	**१०३. बहुवचने झल्येत् २०५ ।**	एत् १०६	बहुवचन में झलादि सुप् परे रहने पर अदन्त अङ्ग को एकार आदेश होता है।
अङ्गस्य, अत:, एत्	**१०४. ओसि च २०७ ।**	ओसि १०५	अदन्त अङ्ग को एकार आदेश होता है ओस् परे रहने पर।

अङ्गस्य, ओसि, एत्	**१०५. आङि चापः २८९ ।**	आपः १०६	आबन्त अङ्ग को एकार आदेश होता है यदि पर में तृतीया का एकवचन या ओस् हो ।
अङ्गस्य, आपः, एत्	**१०६. संबुद्धौ च २८८ ।**	सं-द्धौ १०८	सम्बुद्धि परे रहने पर आबन्त अङ्ग को एत्व होता है ।
अङ्गस्य, सं-द्धौ	**१०७. अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः २६७ ।**		अम्बार्थ और नद्यन्त को ह्रस्व होता है सम्बुद्धि में ।
अङ्गस्य, सं-द्धौ	**१०८. ह्रस्वस्य गुणः २४२ ।**	ह्रस्वस्य १०९ गुणः १११	ह्रस्वान्त अङ्ग को सम्बुद्धि में गुण होता है ।
अङ्गस्य, गुणः, ह्र-स्वस्य	**१०९. जसि च २४१ ।**		जस् परे रहने पर ह्रस्वान्त अङ्ग को गुण होता है ।
अङ्गस्य, गुणः	**११०. ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः २७५ ।**		ङि और सर्वनामस्थान परे रहने पर ऋकारान्त अङ्ग को गुण होता है ।
अङ्गस्य, गुणः	**१११. घेर्ङिति २४५ ।**	ङिति ११५	घ्यन्त अङ्ग को गुण होता है ङित् प्रत्यय परे रहने पर ।
अङ्गस्य, ङिति	**११२. आण्नद्याः २६८ ।**		नद्यन्त से उत्तर ङित् प्रत्यय को आट् आगम होता है ।
अङ्गस्य, ङिति	**११३. याडापः २९० ।**	आपः ११४	आबन्तोत्तर ङित् प्रत्यय को याट् का आगम होता है ।
अङ्गस्य, ङिति, आ-पः	**११४. सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च २९१ ।**	स्याट् ११५	आबन्त सर्वनाम से परे ङित् को स्याट् आगम तथा ङित् के पूर्व को ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य, ङिति, स्याट्	**११५. विभाषा द्वितीयातृतीयाभ्याम् २९३ ।**		द्वितीया तथा तृतीया से उत्तर ङित् को विकल्प से स्याट् आगम तथा ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य	**११६. ङेराम्नद्याम्नीभ्यः २७० ।**	ङेः ११९ आम् ११७	नद्यन्त आबन्त तथा नी से उत्तर ङि को आम् होता है ।
अङ्गस्य, ङेः, आम्	**११७. इदुद्भ्याम् २९७ ।**	इ-म् ११८	इकार उकार नदीसंज्ञक से उत्तर ङि को आम् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, ङेः, इ-म्	**११८. औत् २५६ ।**	औत् ११९	इत् उत् से उत्तर ङि को औ आदेश होता है ।
अङ्गस्य, ङेः, औत्	**११९. अच्च घेः २४७ ।**	घेः १२०	घि संज्ञक से उत्तर ङि को औ आदेश होता है तथा घि को अत् आदेश होता है ।

अङ्गस्य, घेः	**१२०. आङो नाऽस्त्रियाम् २४४। ।।६।।**		स्त्रीलिङ्ग से अन्यत्र घि उत्तरवर्ती आङ् (टा) को ना होता है।

देविकादेवतास्फायो भुजमीनातेरतो दीर्घो विंशतिः ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः।

चतुर्थः पादः।

णौ ह्रस्वविधिः

अङ्गस्य	**१. णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः २३१४।**	णौ-याः ८ ह्रस्वः ३	चङ्परक णि परे रहने पर अङ्गोपधा को ह्रस्व होता है।
अङ्गस्य, णौ-याः, ह्रस्वः	**२. नाग्लोपिशास्वृदिताम् २५७२।**		अग्लोपी शास ऋदित् धातु के उपधा को ह्रस्व नहीं होता है, पर में चङ्परक णि के रहने पर।
अङ्गस्य, णौ-याः, ह्रस्वः	**३. भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम् २५६५।** ** काण्यादीनां वेति वक्तव्यम्।* (२५१) (वा० ग०)। कण रण भण श्रण लुप हेठ हायि वाणि (चाणि) लोटि (लोठि) लोपि ।। **इति कणादिः ।।**		भ्राज भास भाष दीप जीव मील पीड की उपधा को चङ्परक णि के यहाँ विकल्प से ह्रस्व होता है।
अङ्गस्य, णौ-याः	**४. लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य २५८७।**		णि चङ् परे रहने पर पा के उपधा का लोप होता है तथा अभ्यास को ईकार आदेश होता है।
अङ्गस्य, णौ-याः	**५. तिष्ठतेरित् २५८८।**	इत् ६	णि चङ् के यहाँ स्था के उपधा को विकल्प से इकार होता है।
अङ्गस्य, णौ-याः, इत्	**६. जिघ्रतेर्वा २५८९।**	वा ७	घ्रा के उपधा को विकल्प से इकार आदेश होता है णि चङ् में।
अङ्गस्य, णौ-याः, वा	**७. उर्ऋत् २५६७।**	उ-त् ८	उपधा के ऋ को ॠत् विकल्प से होता है णि चङ् में।
अङ्गस्य, णौ-याः, उ-त्	**८. नित्यं छन्दसि ३५८७।**		उपधा के ऋ को नित्य ॠ होता है णि चङ् के यहाँ वेद में।
अङ्गस्य	**९. दयतेर्दिगि लिटि २३८८।** ** दिग्यादेशेन द्वित्वबाधनमिष्यते।*	लिटि १२	लिट् में दय को दिगि आदेश होता है।
अङ्गस्य, लिटि	**१०. ऋतश्च संयोगादेर्गुणः २३७९।**	गुणः ११	ऋकारान्त संयोगादि को लिट् के यहाँ गुण होता है।

अङ्गस्य लिटि, गुण:	**११. ऋच्छत्यृताम् २३८३ ।**		ऋच्छति के ऋ को तथा ॠकारान्त को लिट् परे रहने पर गुण होता है ।
अङ्गस्य, लिटि	**१२. शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा २४९५ ।**	ह्रस्व: १५	शॄ दॄ पॄ को विकल्प से ह्रस्व होता है लिट् में ।
अङ्गस्य, ह्रस्व:	**१३. केऽण: ८३४ ।**	अण: १४	क प्रत्यय परे रहने पर अण् को ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य, ह्रस्व:, अ-ण:	**१४. न कपि ८३५ ।**	न-पि १५	कप् प्रत्यय परे रहने पर अण् को ह्रस्व नहीं होता है ।
अङ्गस्य, ह्रस्व:, न-पि	**१५. आपोऽन्यतरस्याम् ८९२ ।**		आबन्त अङ्ग को कप् के यहाँ विकल्प से ह्रस्व नहीं होता है ।
अङ्गस्य	**१६. ऋदृशोऽङि गुण: २४०६ ।**	अङि २०	ऋवर्णान्त और दृश को अङ् परे रहने पर गुण होता है ।
अङ्गस्य, अङि	**१७. अस्यतेस्थुक् २५२० ।**		अङ् परे रहते अस्यति को थुक् आगम होता है ।
अङ्गस्य, अङि	**१८. श्वयतेर: २४२१ ।**		श्वयति को अङ् परे रहने पर अ-कार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, अङि	**१९. पत: पुम् २३५५ ।**		अङ् परे रहने पर पत् को पुम् आगम होता है ।
अङ्गस्य, अङि	**२०. वच उम् २४५४ ।** ।। १ ।।		वच को उम् आगम होता है अङ् परे रहने पर ।
अङ्गस्य	**२१. शीङ: सार्वधातुके गुण: २४४१ ।**	शीङ: २२	सार्वधातुक परे रहने पर शीङ् को गुण होता है ।
अङ्गस्य, शीङ:	**२२. अयङ्यि क्ङिति २६४९ ।**	ञि-ति २५	यकारादि कित् ङित् परे रहने पर शी को अयङ् होता है ।
अङ्गस्य, ञि-ति	**२३. उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहते: २७०२ ।**	उ-त् २४	उपसर्गोत्तर ऊह को ह्रस्व होता है यकारादि कित् ङित् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, ञि-ति, उ-त्	**२४. एतेर्लिङि २४५७ ।**		उपसर्गोत्तर एति को ह्रस्व होता है लिङ् में यकारादि कित् ङित् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, ञि-ति	**२५. अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घ: २२९८ ।**	अ-यो: २९ दीर्घ: २६	अकृत यकार असार्वधातुक यकार कित् ङित् परे रहने पर अजन्त अङ्ग को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, अ-यो:, दीर्घ:	**२६. च्वौ च २१२० ।**	च्वौ २७	अजन्त अङ्ग को च्वि परे रहने पर दीर्घ होता है ।

अङ्गस्य, अ-योः, च्वौ	**२७. रीङृतः १२३४ ।**	ऋतः ३०	ऋकारान्त अङ्ग को रीङ् आदेश होता है अकृद्यकार असार्वधातुक यकार च्वि परे रहने पर।
अङ्गस्य, ऋतः, अ-योः	**२८. रिङ् शयग्लिङ्क्षु २३६७ ।**	श-क्षु २९	श यक् लिङ् असार्वधातुक यकार परे रहने पर रिङ् आदेश होता है ऋकारान्त अङ्ग को।
अङ्गस्य, ऋतः, अ-योः, श-क्षु	**२९. गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः २३८० ।**	गु-द्योः ३०	यक् यादि आर्धधातुक लिङ् परे रहने पर ऋ तथा संयोगादि ऋदन्त अङ्ग को गुण होता है।
अङ्गस्य, ऋतः, गु-द्योः	**३०. यङि च २६३३ ।** ** हन्तेर्हिंसायां यङि घ्नीभावो वाच्यः ।*	यङि ३१	यङ् परे रहने पर ऋ, संयोगादि ऋदन्त अङ्ग को गुण होता है।
अङ्गस्य, यङि	**३१. ई घ्राध्मोः २६४८ ।**	ई ३३	घ्रा ध्मा को यङ् परे रहने पर ईकार आदेश होता है।
अङ्गस्य, ई	**३२. अस्य च्वौ २११८ ।**	अस्य ३५	अवर्णान्त अङ्ग को च्वि परे रहने पर ई होता है।
अङ्गस्य, अस्य, ई	**३३. क्यचि च २६५८ ।**	क्यचि ३९	क्यच् परे रहने पर अवर्णान्त अङ्ग को ईकार होता है।
अङ्गस्य अस्य क्यचि	**३४. अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु २६६१ ।**		बुभुक्षा पिपासा गर्ध अर्थ में अशनाय उदन्यं धनाय निपातित होते हैं।
अङ्गस्य अस्य क्यचि	**३५. न च्छन्दस्यपुत्रस्य ३५८८ ।** ** अपुत्रादीनामिति वक्तव्यम् ।*	छन्दसि ३९	पुत्रभिन्न अवर्णान्त को वेद में क्यच् परे रहने पर दीर्घ और ई नहीं होता है।
अङ्गस्य, छन्दसि, क्यचि	**३६. दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यतिरिषण्यति ३५८९ ।**		दुरस्युः द्रविणस्युः वृषण्यति रिषण्यति वेद में निपातित होते हैं।
अङ्गस्य, छन्दसि, क्यचि	**३७. अश्वाघस्यात् ३५९० ।**	आत् ३८	वेद में क्यच् परे रहने पर अश्व और अघ को आकार आदेश होता है।
अङ्गस्य, छन्दसि, क्यचि, आत्	**३८. देवसुम्नयोर्यजुषि काठके ३५९१ ।**		काठक यजुष् में क्यच् परे रहने पर देव और सुम्न को आकार आदेश होता है।
अङ्गस्य, छन्दसि, क्यचि	**३९. कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः ३५९२ ।**		ऋक् में क्यच् परे रहने पर कवि अध्वर पृतना के अन्त्य का लोप होता है।
अङ्गस्य	**४०. द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति ३०७४ । ॥ २ ॥**	इत् ४१ तिकिति ४७	द्यति स्यति मा स्था को इकार होता है तादि कित् प्रत्यय परे रहने पर।

अङ्गस्य, तिकिति, इत्	**४१. शाच्छोरन्यतरस्याम् ३०७५ । ।। २ ।।** ** श्यतेरित्वं व्रते नित्यमिति वक्तव्यम् ।*		तादि कित् में शा छा को इकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, तिकिति	**४२. दधातेर्हिः ३०७६ ।**	हिः ४४	धा को हि आदेश होता है तादि कित् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, तिकिति, हिः	**४३. जहातेश्च क्त्वि ३३३१ ।**	ज-त्वि ४४	क्त्वा परे रहने पर हा को हि होता है ।
अङ्गस्य, तिकिति, हिः, ज-त्वि	**४४. विभाषा छन्दसि ३५९३ ।**	छन्दसि ४५	वेद में हा को विकल्प से हि होता है ।
अङ्गस्य, तिकिति, छन्दसि	**४५. सुधितवसुधितनेमधितधिष्वधिषीय च ३५९४ ।**		वेद में सुधित वसुधित नेमधित धिष्व धिषीय निपातित होते हैं ।
अङ्गस्य, तिकिति	**४६. दो दद्घोः ३०७७ ।**	दः घोः ४७	घु संज्ञक दा को दद् होता है तादि कित् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, तिकिति, दः घोः	**४७. अच उपसर्गात्तः ३०७८ ।**	तः ४९	अजन्तोपसर्ग से उत्तर घु संज्ञक दा को त होता है तादि कित् में ।
अङ्गस्य, तः	**४८. अपो भि ४४२ ।** ** मासश्छन्दसीति वक्तव्यम् ।* ** स्ववस्स्वतवसोर्मास उषसश्च त इष्यते ।*		अप् को भादि प्रत्यय परे रहने पर त आदेश होता है ।
अङ्गस्य, तः	**४९. सः स्यार्धधातुके २३४२ ।**	सः ५२ सि ५७	सकारादि आर्धधातुक परे रहने पर सकारान्त अङ्ग को तकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, सि, सः	**५०. तासस्त्योर्लोपः २१९१ ।**	ता-योः ५२ लोपः ५३	सकारादि प्रत्यय परे रहने पर तास् और अस्ति के स का लोप होता है ।
अङ्गस्य, लोपः, सि, सः, ता-योः	**५१. रि च २१९२ ।**		रेफादि प्रत्यय के यहाँ भी तास् अस्ति के स का लोप होता है ।
अङ्गस्य, लोपः, सि, सः, ता-योः	**५२. ह एति २२५० ।**		तास् अस्ति के स को ह होता है यदि पर में ए हो ।
अङ्गस्य, लोपः, सि	**५३. यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः २४८८ ।**		य और इ परे रहने पर दीधी वेवी के अन्त्य का लोप होता है ।
अङ्गस्य, सि	**५४. सनि भीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् २६२३ ।** ** राधो हिंसायां सनीस् वाच्यः ।*	सनि ५७ अचः ५६	भी मा घु रभ लभ शक पत पद के अच् के स्थान पर इस् होता है सादि सन् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, सनि, सि, अचः	**५५. आप्ज्ञप्यृधामीत् २६१९ ।**	ईत् ५६	आप् ज्ञप् ऋध् के अच् को ई होता है सादि सन् परे रहने पर ।
अङ्गस्य, सनि, सि, अचः, ईत्	**५६. दम्भ इच्च २६२१ ।**		दम्भ के अच् को इ और ई होता है सादि सन् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, सनि, सि	**५७. मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा २६२४ ।**		अकर्मक मुच् को विकल्प से गुण होता है सादि सन् परे रहने पर ।
	अभ्यासविकार:		
अङ्गस्य	**५८. अत्र लोपोऽभ्यासस्य २६२० ।**	अभ्या-य ९७	सूत्र ५४ से ५७ तक अभ्यास का लोप होता है। यहाँ से अध्याय समाप्ति तक अभ्यासस्य का अधिकार है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य	**५९. ह्रस्वः २१८० ।**		अभ्यास को ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य	**६०. हलादिः शेषः २१७९** ।। ३ ।।	शेष: ६१	अभ्यास का आदि हल् शेष रहता है, शेष का लोप होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, शेष:	**६१. शर्पूर्वाः खयः २२५९ ।**		अभ्यास का शर्पूर्व खय् रहता है, शेष लुप्त होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य	**६२. कुहोश्चुः २२४५ ।**	चुः ६४	अभ्यास के कु ह को चु होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, चुः	**६३. न कवतेर्यङि २६४१ ।**	न, यङि ६४	कवति के अभ्यास को यङ् परे रहते चु नहीं होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, चुः, न, यङि	**६४. कृषेश्छन्दसि ३५९५ ।**	छन्दसि ६५	वेद में यङ् परे रहने पर कृष के अभ्यास को चु नहीं होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, छन्दसि	**६५. दाधर्तिदर्धर्तिदर्धर्षिबोभूतुतेतिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्संसनिष्यदत्करिक्रत्कनिक्रदद्भरिभ्रद्दविध्वतोदविद्युतत्तरित्रतःसरीसृपतंवरीवृजन्मर्मृज्यागनीगन्तीति च ३५९६ ।**		वेद में दाधर्ति दर्धर्ति दर्धर्षि बोभूतु तेतिक्ते अलर्षि आपनीफणत् संनिष्यदत् करिक्रत् कनिक्रदत् भरिभ्रत् दविध्वतः दविद्युतत् तरित्रतः सरीसृपतं वरीवृजत् मर्मृज्य आगनीगन्ति निपातित होते हैं ।
अङ्गस्य, अभ्या-य	**६६. उरत् २२४४ ।**		ऋवर्णान्त अभ्यास को अकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य	**६७. द्युतिस्वाप्योः संप्रसारणम् २३४४ ।**	सं-म् ६८	द्युति स्वापि के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है लिट् में ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, सं-म्	**६८. व्यथो लिटि २३५३ ।**	लिटि ७४	व्यथ के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है लिट् में ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, लिटि	**६९. दीर्घ इणः किति २४५६ ।**	दीर्घ: ७०	कित् लिट् परे रहने पर इण् के अभ्यास को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, लिटि, दीर्घ:	**७०. अत आदेः २२४८ ।**		लिट् परे रहने पर अभ्यास के आदि अकार को दीर्घ होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, लिटि	**७१. तस्मान्नुड् द्विहलः २२८८ ।**	त-ट् ७२	उस दीर्घीभूत आ से परे द्विहल् को नुट् का आगम होता है ।

अङ्गस्य, अभ्या-य, लिटि, त-ट्	**७२. अश्नोतेश्च २५३३ ।**		दीर्घीभूत से उत्तर अशू को नुट् का आगम होता है।
अङ्गस्य, अभ्या-य, लिटि	**७३. भवतेरः २१८१ ।**	अः ७४	लिट् में भू के अभ्यास को अ होता है।
अङ्गस्य, अभ्या-य, लिटि, अः	**७४. ससूवेति निगमे ३५९७ ।**		वेद में ससूव का निपातन होता है।
अङ्गस्य, अभ्या-य	**७५. निजां त्रयाणां गुणः श्लौ २५०२ ।**	त्र-म् ७६ श्लौ ७८	णिजिर् आदि तीन धातुओं के अभ्यास को गुण होता है श्लु में।
अङ्गस्य, अभ्या-य, श्लौ, त्र-म्	**७६. भृञामित् २४९६ ।**	इत् ८१	भृञ् आदि तीन धातुओं के अभ्यास को इत् होता है श्लु में।
अङ्गस्य, अभ्या-य, श्लौ, इत्	**७७. अर्तिपिपर्त्योश्च २४९३ ।**		अर्तिपिपर्ति के अभ्यास को श्लु में इ होता है।
अङ्गस्य, अभ्या-य, श्लौ, इत्	**७८. बहुलं छन्दसि ३५९८ ।**		वेद में श्लु में अभ्यास को इकार बहुलतया होता है।
अङ्गस्य, अभ्या-य, इत्	**७९. सन्यतः २३१७ ।**	सनि ८१	अकारान्त अभ्यास को इ होता है सन् परे रहने पर।
अङ्गस्य, अभ्या-य, सनि, इत्	**८०. ओः पुयण्ज्यपरे २५७७ ।। ४ ।।**	ओः, अपरे ८१	सन् में अभ्यास उ को इ होता है यदि पवर्ग यण् जकार पर में हो जिसके बाद अ हो।
अङ्गस्य, अभ्या-य, सनि, इत्, ओः, अपरे	**८१. स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनां वा २५७८ ।**		स्रवति शृणोति द्रवति प्रवति प्लवति च्यवति के अभ्यास उ को सन् में अवर्णपर यण् परे रहने पर विकल्प से इ होता है।
अङ्गस्य, अभ्या-य	**८२. गुणो यङ्लुकोः २६३० ।**	य-कोः ९०	इगन्त अभ्यास को यङ् और यङ्लुक् में गुण होता है।
अङ्गस्य, अभ्या-य, य-कोः	**८३. दीर्घोऽकितः २६३२ ।**		अकित् अभ्यास को दीर्घ होता है यङ् और यङ् लुक् परे रहने पर।
अङ्गस्य, अभ्या-य, य-कोः	**८४. नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम् २६४२ ।**		वञ्चु स्रंसु ध्वंसु भ्रंसु कत पत पद स्कन्द धातु के अभ्यास को नीक् आगम होता है यङ् और यङ्लुक् में।
अङ्गस्य, अभ्या-य, य-कोः	**८५. नुगतोऽनुनासिकान्तस्य २६४३ ।**	नुक् ८७	अनुनासिकान्त धातु के अभ्यास अ को नुक् आगम होता है यङ् और यङ्लुक् में।

अङ्गस्य, अभ्या-य, य-कोः, नुक्	**८६. जपजभदहदशभञ्जपशां च २६३८ ।**		जप जभ दह दश भञ्ज पश के अभ्यास को नुक् आगम होता है यङ् और यङ्लुक् में ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, य-कोः, नुक्	**८७. चरफलोश्च २६३६ ।**	च-लो: ८९	चर फल के अभ्यास को नुक् होता है यङ् यङ्लुक् में ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, य-कोः, च-लो:	**८८. उत्परस्यातः २६३७ ।**	उत्, अत: ८९	चर फल के अभ्यासोत्तर अ को उ होता है यङ् और यङ्लुक् में ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, य-कोः, उत्, अत:, च-लो:	**८९. ति च ३०३७ ।**		तादि प्रत्यय परे रहने पर चर फल के अ को उ होता है ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, य-को:	**९०. रीगृदुपधस्य च २६४४ ।** ** रीगृत्वत इति वक्तव्यम् ।*	रीक् ९२ ऋ-स्य ९१	ऋदुपध धातु के अभ्यास को रीक् आगम होता है यङ् यङ्लुक में ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, रीक्, ऋ-स्य	**९१. रुग्रिकौ च लुकि २६५२ ।**	रु-कौ ९२ लुकि ९२	ऋदुपध के अभ्यास को रुक् रिक् भी होता है यङ्लुक् में ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, लुकि, रीक्, रु-कौ	**९२. ऋतश्च २६५३ ।**		ऋदन्त धातु के अभ्यास को रुक् रिक् रीक् आगम होता है यङ्लुक् में ।
अङ्गस्य, अभ्या-य	**९३. सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे २३१६ ।**	ल-नि ९४ च-पे ९७	चङ्पर णि से पूर्व लघु पर अभ्यास को सन्वत् कार्य होता है यदि णि अग्लोपी न हो ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, च-पे, ल-नि	**९४. दीर्घो लघोः २३१८ ।**		लघु अभ्यास को दीर्घ होता है यदि पर में चङ्पर अनग्लोपी णि हो ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, च-पे	**९५. अत्स्मृदॄत्वरप्रथम्रदस्तॄस्पशाम् २५६६ ।**	अत् ९७	स्मृ दॄ त्वर प्रथ म्रद स्तॄ स्पश धातु के अभ्यास को अत् आदेश होता है चङ्पर णि के यहाँ ।
अङ्गस्य, अभ्या-य, च-पे, अत्	**९६. विभाषा वेष्टिचेष्ट्योः २५८३ ।**		चङ्पर णि परे रहने पर वेष्टि चेष्टि के अभ्यास को विकल्प से अत् आदेश होता है ।
अङ्गस्य,अभ्या-य, च-पे, अत्	**९७. ई च गणः २५७३ ।**		गण के अभ्यास को ई और अत् होता है, यदि पर में चङ्पर णि हो ।

णौ च शीडः शाच्छोः शर्पूर्वाः
स्रवतिसप्तदश ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्याध्यास्य
चतुर्थः पादः अध्यायश्च ।

।। अथ अष्टमोऽध्यायः ।।

प्रथमः पादः ।

आष्टमिक द्वित्वम्

	१. सर्वस्य द्वे २१३९ ।	स-द्वे १५	यहाँ से ‘सर्वस्य द्वे’ का अधिकार है। अर्थात् ‘सर्वस्य पदस्य द्वे भवतः’ जुड़ेगा।
स-द्वे	**२. तस्य परमाम्रेडितम् ८३ ।**	आ-तम् ३	द्विरक्त का जो दूसरा रूप होगा, उसकी आम्रेडित संज्ञा होगी।
स-द्वे, आ-तम्	**३. अनुदात्तं च ३६७० ।**		जो आम्रेडित है वह अनुदात्त भी है।
स-द्वे	**४. नित्यवीप्सयोः २१४० ।**		नित्य और वींप्सा अर्थ में द्वित्व होता है।
स-द्वे	**५. परेर्वर्जने २१४१ ।** **** परेर्वर्जने वा वचनम् ।***		वर्जन में परि को द्वित्व होता है।
स-द्वे	**६. प्रसमुपोदः पादपूरणे ३५९९ ।**		यदि द्विर्वचन से ही पादपूर्ति हो रही हो तो पादपूरण में प्र सम् उप उद् को द्वित्व होता है।
स-द्वे	**७. उपर्यध्यधसः सामीप्ये २१४२ ।**		सामीप्य की विवक्षा में उपरि अधि अधस् को द्वित्व होता है।
स-द्वे	**८. वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूयाऽसंमतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु २१४३ ।**		असूया असंमति कोप कुत्सन भर्त्सन में आमन्त्रित वाक्य को द्वित्व होता है।
स-द्वे	**९. एकं बहुव्रीहिवत् २१४४ ।**	ब-वत् १०	एक शब्द को द्वित्व होता है जो बहुव्रीहिवत् होता है।
स-द्वे, ब-वत्	**१०. आबाधे च २१४५ ।**		आबाध (पीडा) में शब्द को द्वित्व होता तथा वह बहुव्रीहिवत् होता है।
स-द्वे	**११. कर्मधारयवदुत्तरेषु २१४६ ।**	क-वत् १४	यहाँ से द्विर्वचन कर्मधारयवत् होगा, यह अधिकार है।
स-द्वे, क-वत्	**१२. प्रकारे गुणवचनस्य २१४७ ।** **** आनुपूर्व्ये द्वे वाच्ये ।*** **** क्रियासमभिहारे च ।*** **** डाचि विवक्षिते द्वे बहुलम् ।*** **** स्त्रीनपुंसकयोरुत्तरपदस्थाया विभक्तेराम्भावो वा वक्तव्यः ।***		सादृश्य में गुणवचन शब्द को द्वित्व होता है।

स-द्वे, क-वत्	**१३. अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्यतरस्याम् २१४८**		अकृच्छ्र में प्रिय और सुख को विकल्प से द्वित्व होता है।
स-द्वे, क-वत्	**१४. यथास्वे यथायथम् २१४९ ।**		यथास्व में यथायथम् निपातित होता है।
स-द्वे	**१५. द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु २१५० ।**		रहस्य मर्यादावचन व्युत्क्रमण यज्ञपात्रप्रयोग अभिव्यक्ति अर्थ में द्वन्द्व शब्द निपातित होता है।
	पदविकारा:		
	१६. पदस्य ४०१ ।	पदस्य ८.३.५४	(अपदान्ताधिकार से पूर्व तक) पदस्य का अधिकार है।
पदस्य	**१७. पदात् ४०२ ।**	पदात् ६९	(प्राक् कुत्सने तक) पदात् का अधिकार है।
पदस्य, पदात्	**१८. अनुदात्तं सर्वमपादादौ ४०३ ।** * ***समानवाक्ये निघातयुष्मदस्मदादेशा वक्तव्याः ।***	अपा-दौ ७४	(पाद परिसमाप्ति तक) अनुदात्तं सर्वम् अपादादौ का अधिकार है।
पदस्य, पदात् अपादौ	**१९. आमन्त्रितस्य च ३६५४ ।**		पद से परे आमन्त्रित का सब अनुदात्त होता है।
पदस्य, पदात् अपादौ	**२०. युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वानावौ ४०४ ।** ।। १ ।।	यु-दो: २६ ष-यो: २२	युष्मद् अस्मद् (पद) से परे षष्ठी चतुर्थी द्वितीया (द्विवचन) में स्थित (विभक्ति) को वाम् और नौ आदेश क्रमश: होते हैं।
पदस्य, पदात् अपादौ, यु-दो, ष-यो:	**२१. बहुवचनस्य वस्नसौ ४०५ ।**		बहुवचनान्त युष्मद् अस्मद् से षष्ठी चतुर्थी द्वितीयास्थ विभक्ति को क्रमश: वस् नस् आदेश होते हैं।
पदस्य, पदात् अपा-दौ, यु-दो, ष-यो:	**२२. तेमयावेकवचनस्य ४०६ ।**	एक-स्य २३	एकवचनान्त युष्मद् अस्मद् से षष्ठी चतुर्थीस्थ विभक्ति को क्रमश: ते मे आदेश होते हैं।
पदस्य, यु-दो: पदात् अपा-दौ, एक-स्य	**२३. त्वामौ द्वितीयाया: ४०७ ।**		एकवचनान्त युष्मद् अस्मद् से द्वितीयास्थ विभक्ति को क्रमश: त्वा मा आदेश होते हैं।
पदस्य, यु-दो: पदात् अपा-दौ	**२४. न चवाहाहैवयुक्ते ४०८ ।**	न २६	च वा ह अह एव के योग में वाम् नौ आदि नहीं होते हैं।
पदस्य, यु-दो: पदात् अपा-दौ, न	**२५. पश्यार्थैश्चानालोचने ४०९ ।**		पश्यार्थ से अनालोचन में प्रवृत्त युष्मद् अस्मद् को वाम् नौ आदि नहीं होते हैं।

पदस्य, यु-दोः पदात् अपा-दौ, न	**२६. सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा ४१० ।**		विद्यमान पूर्व प्रथमान्तोत्तर युष्मद् अस्मद् को वाम् नौ आदि आदेश विकल्प से नहीं होते हैं ।
	अनुदात्तविधिः		
पदस्य, पदात्, अपा-दौ	**२७. तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः ३९३४ ।**		तिङन्त से परे कुत्सन और आभीक्ष्ण्य अर्थ में वर्तमान गोत्र आदि शब्द अनुदात्त होते हैं ।
	(२५२) गोत्र ब्रुव प्रवचन प्रहसन प्रकथन प्रत्ययन प्रपञ्च प्राय न्याय प्रचक्षण विचक्षण अवचक्षण स्वाध्यांय भूयिष्ठ (भूयिष्ट) वानाम ॥ **इति गोत्रादिः ॥**		
पदस्य, पदात्, अपा-दौ	**२८. तिङ्ङतिङः ३९३५ ।**	तिङ् ६६	अतिङन्त पद से परे तिङन्त अनुदात्त होता है ।
पदस्य, तिङ्, पदात्, अपा-दौ	**२९. न लुट् ३९३६ ।**	न ६६	अतिङन्त पद से परे लुट् अन्त वाला तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**३०. निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेच्चण्कच्चिद्यत्रयुक्तम् ३९३७ ।**		यत् यदि हन्त कुवित् नेत् चेत् चण् कच्चित् यत्र निपातों से युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**३१. नह प्रत्यारम्भे ३९३८ ।**		प्रत्यारम्भ में नह से युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता हैं ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**३२. सत्यं प्रश्ने ३९३९ ।**		सत्यम् पद से युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है, यदि प्रश्न हो ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**३३. अङ्गाप्रातिलोम्ये ३९४० ।**	अप्रा-म्ये ३४	अप्रातिलोम्य में अङ्ग से युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, अप्रा-म्ये	**३४. हि च ३९४१ ।**	हि ३५	अप्रातिलोम्य हि से युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, हि	**३५. छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम् ३९४२ ।**		वेद में अनेक भी साकाङ्क्ष तिङन्त हि युक्त रहने पर अनुदात्त नहीं होते हैं ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**३६. यावद्यथाभ्याम् ३९४३ ।**	याव-म् ३८	यावत् यथा से युक्त तिङ्न्त अनुदात्त नहीं होता है ।

पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, याव-म्	**३७. पूजायां नानन्तरम् ३९४४ ।**	पू-म्, न ३८	पूजा में यावत् यथा से अनन्तर तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, याव-म्, पू-म्, न	**३८. उपसर्गव्यपेतं च ३९४५ ।**		पूजा में यावत् यथा से युक्त उपसर्गव्यपेत तिङन्त भी अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**३९. तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम् ३९४६ ।**	पू-म् ४०	तु पश्य पश्यत अह से युक्त तिङन्त पूजा में अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, पू-म्	**४०. अहो च ३९४७ ।** ।। २ ।।	अहो ४१	पूजा में अहो युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, अहो	**४१. शेषे विभाषा ३९४८ ।**	विभाषा ४२	पूजातिरिक्त में अहोयुक्त तिङन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, विभाषा	**४२. पुरा च परीप्सायाम् ३९४९ ।**		परीप्सा में पुरा से युक्त तिङन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**४३. नन्वित्यनुज्ञैषणायाम् ३९५० ।**		अनुज्ञाप्रार्थना में ननु युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता हैं।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**४४. किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्गमप्रतिषिद्धम् ३९५१**	किं-द्धम् ४५	क्रिया प्रश्न में वतर्मान किम् से युक्त अनुपसर्ग अप्रतिषिद्ध तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, किं-द्धम्	**४५. लोपे विभाषा ३९५२ ।**		क्रिया प्रश्न में अप्रयुक्त किम् के रहने पर भी अनुपसर्ग अप्रतिषिद्ध तिङन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**४६. एहिमन्ये प्रहासे लृट् ३९५३ ।**		प्रहास में एहि मन्ये से युक्त लृडन्त अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**४७. जात्वपूर्वम् ३९५४ ।**	अपूर्वम् ४९	पूर्वपदविहीन जातु से युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, अपूर्वम्	**४८. किंवृत्तं च चिदुत्तरम् ३९५५ ।**		अविद्यमान पूर्व चिदुत्तर जो किंवृत्त है उससे युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, अपूर्वम्	**४९. आहो उताहो चानन्तरम् ३९५६ ।**	आहो ५०	अपूर्व आहो उताहो से युक्त अनन्तर तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है।

पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, आहो	**५०. शेषे विभाषा ३९५७ ।**		आहो उताहो से युक्त व्यवहित तिङन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**५१. गत्यर्थलोटा लृण्न चेत्कारकं सर्वान्यत् ३९५८ ।**	ग-टा ५३ न-क ५३ स-त् ५३	गत्यर्थ लोट् से युक्त लृङन्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है यदि जिस कारक में लोट् हो वहाँ ही लृट् भी हो ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, ग-टा, न-क, स-त्	**५२. लोट् च ३९५९ ।**	लोट् ५४	गत्यर्थ लोट् से युक्त लोडन्त अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, ग-टा, न-क, स-त्, लोट्	**५३. विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् ३९६० ।।**	वि-मम् ५४	गत्यर्थ लोट् से युक्त सोपसर्ग उत्तमवर्जित लोडन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, लोट्, वि-मम्	**५४. हन्त च ३९६१ ।**		सोपसर्ग उत्तमवर्जित लोडन्त हन्त से युक्त होने पर विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**५५. आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके ३९६२ ।**		अनन्तिक में आम् से पर एकपद व्यवहित भी आमन्त्रित अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**५६. यद्धितुपरं छन्दसि ३९६३ ।**		यत् हि तु से पर तिङन्त वेद में अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**५७. चनचिदिवगोत्रादितद्धिताम्रेडितेष्वगतेः ३९६४ ।**	अगतेः ५८	अगति से उत्तर तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है यदि पर में चन चिद् इव गोत्रादितद्धित आम्रेडित हों ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, अगतेः	**५८. चादिषु च ३९६५ ।**		अगति से पर तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है यदि चादि पर में हों ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ	**५९. चवायोगे प्रथमा ३९६६ ।**	प्रथमा ६५	च वा के योग में प्रथमा तिङ् विभक्ति अनुदात्त नहीं होती है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, प्र०	**६०. हेति क्षियायाम् ३९६७ ।** ।। ३ ।।	क्षि-म् ६८	आचारभेद में ह से युक्ता प्रथमा तिङ् विभक्ति अनुदात्त नहीं होती है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, प्र०, क्षि-म्	**६१. अहेति विनियोगे च ३९६८ ।**		विनियोग में अह से युक्त प्रथमा तिङ्विभक्ति अनुदात्त नहीं होती है ।

पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, प्र०, क्षि-म्	**६२. चाहलोप एवेत्यवधारणम् ३९६९ ।**		च अह के लोप होने पर ही प्रथमा तिङ्विभक्ति अनुदात्त नहीं होती है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, प्र०, क्षि-म्	**६३. चादिलोपे विभाषा ३९७० ।**	विभाषा ६५	चादि लोप रहने पर प्रथमातिङ्-विभक्ति विकल्प से अनुदात्त नहीं होती है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, प्र०, विभाषा क्षि-म्	**६४. वैवावेति च च्छन्दसि ३९७१ ।**	छन्दसि ६५	वेद में वै वाव से युक्त प्रथमा तिङ्विभक्ति विकल्प से अनुदात्त नहीं होती है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, प्र०, विभाषा, क्षि-म्, छन्दसि	**६५. एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम् ३९७२ ।**		तुल्यार्थ एक अन्य शब्दों से युक्त प्रथमा, तिङ् विभक्ति विकल्प से अनुदात्त नहीं होती है ।
पदस्य, तिङ्, न, पदात्, अपा-दौ, क्षि-म्	**६६. यद्वृत्तान्नित्यम् ३९७३ ।** *** अत्र व्यवहिते कार्यमिष्यते ।***		यद्वृत्त से उत्तर तिङन्त नित्य अनुदात्त नहीं होता है ।
पदस्य, पदात्, अ-पा-दौ, क्षि-म्	**६७. पूजनात्पूजितमनुदात्तं काष्ठादिभ्यः ३९७४** (२५३) काष्ठ दारुण अमातापुत्र वेश अनाज्ञात अनुज्ञात अपुत्र अयुत अद्भुत (अनुक्त) भृश घोर सुख परम सु अति ॥ **इति काष्ठादिः** ॥	पू-तम् ६८	पूजन काष्ठ आदि से पूजित वचन (सुबन्त) अनुदात्त होता है ।
पदस्य, पदात्, अ-पा-दौ, क्षि-म्, पू-तम्	**६८. सगतिरपि तिङ् ३९७५ ।** *** गतिग्रहणे उपसर्गग्रहणमिष्यते ।***	स-ङ् ६९	पूजन काष्ठ आदि से पूजित सगति अगति तिङन्त अनुदात्त होता है ।
पदस्य, पदात्, अ-पा-दौ, स-ङ्	**६९. कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ ३९७६ ।** *** क्रियाकुत्सन इति वाच्यम् ।*** *** पूतिश्चानुबन्ध इति वाच्यम् ।*** *** वा बह्वर्थमनुदात्तमिति वाच्यम् ।***		कुत्सन में गोत्रादि वर्जित सुबन्त परक अगति सगति तिङ् अनुदात्त होता है ।
पदस्य, अपा-दौ	**७०. गतिर्गतौ ३९७७ ।**	गतिः ७१	गति परे रहने पर गति अनुदात्त होता है ।
पदस्य, अपा-दौ, गतिः	**७१. तिङि चोदात्तवति ३९७८ ।**		उदात्तवत् तिङन्त पर रहने पर गति अनुदात्त होता है ।
पदस्य, अपा-दौ	**७२. आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् ४१२ ।**	आ-वत् ७४	पूर्व में आमन्त्रित अविद्यमानवत् होता है ।

पदस्य, आ-वत्, अपा-दौ — **७३. नामन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम्** ना-णे ७४ ४१३ । — आमन्त्रित समानाधिकरण पर रहने पर पूर्व आमन्त्रितान्त सामान्यवचन अविद्यमानवत् नहीं होता है ।

पदस्य, आ-वत्, अपा-दौ, ना-णे — **७४. सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने** ३६५५ । — विशेषवचन में आमन्त्रितान्त समानधिकरण पर रहने पर पूर्व आमन्त्रित बहुवचनान्त विकल्प से अविद्यमानवत् होता है ।

** बहुवचनमित्यपि भाष्यम् ।*

सर्वस्य बहुवचनस्य शेपेऽहेति चतुर्दश ।।
इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः ।

असिद्धत्वम्

पदस्य — **१. पूर्वत्रासिद्धम् १२ ।** पू-म् ८.४.६८ — अध्याय परिसमाप्ति तक पूर्वत्र असिद्धम् का अधिकार है अर्थात् सपादसप्ताध्यायी के प्रति त्रिपादी असिद्ध है और त्रिपादी में भी पूर्व के प्रति पर शास्त्र असिद्ध है ।

** पूर्वत्रासिद्धीयमद्विर्वचने ।*

पदस्य, पू-म् — **२. नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति ३५३** — कृत् में सुप् स्वर संज्ञा तुग्विधि में पूर्वत्र न लोप असिद्ध होता है ।

पदस्य, पू-म् — **३. न मु ने ४३९ ।** — मु भाव नाभाव में न लोप असिद्ध नहीं होता है ।

स्वरविधिः

पदस्य, पू-म् — **४. उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य** ३६५७ । अनु-स्य ६ — उदात्त यण् स्वरित यण् से परे अनुदात्त को स्वरित होता है ।

पदस्य, पू-म्, अनु-स्य — **५. एकादेश उदात्तेनोदात्तः ३६५८ ।** ए-न ६ — उदात्त के साथ अनुदात्त का एकादेश स्वरित होता है ।

पदस्य, पू-म्, ए-न, अनु-स्य — **६. स्वरितो वाऽनुदात्ते पदादौ ३६५९ ।** — अनुदात्त पदादि में उदात्त के साथ जो एकादेश होता है वह विकल्प से उदात्त स्वरित होता है ।

न लोपः

पदस्य, पू-म् — **७. नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य २३६ ।** न-स्य ८ — प्रातिपदिक के अन्त्य न का लोप होता है ।

** अह्नो नलोपप्रतिषेधः ।*

पदस्य, पृ-म्, नस्य	**८. न ङिसंबुद्ध्योः ३५२ ।** ** ङावुत्तरपदे प्रतिषेधः ।*		ङि और सम्बुद्धि में न का लोप नहीं होता है ।
	मतुब्वत्वम्		
पदस्य, पृ-म्	**९. मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः १८९७**	मतोः १६ वः १५	यव आदि से अतिरिक्त मान्त मोपधान्त अकारान्त अकारोपधान्त से परे मतुप् के म को व होता है ।
	(२५४) यव दल्मि ऊर्मि (उर्मि) भूमि कृमि क्रुञ्चा वशा द्राक्षा ध्राक्षा ध्रजि (व्रजि) ध्वजि निजि सिजि सञ्जि हरित् ककुत् मरुत् इक्षु द्रु मधु ।। **इति यवादिः ।। आकृतिगणः ।।**		
पदस्य, पृ-म्, वः, मतोः	**१०. झयः १८९८ ।**		झयन्त से उत्तर मतुप् के म को व होता है ।
पदस्य, पृ-म्, वः, मतोः	**११. संज्ञायाम् १८९९ ।**	सं-म् १३	संज्ञाविषय में मतुप् के म को व होता है ।
पदस्य, पृ-म्, सं-म्, वः, मतोः	**१२. आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्[1]कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती १९०० ।**		संज्ञा में आसन्दीवत् अष्ठीवत् चक्रीवत् कक्षीवत् रुमण्वत् चर्मण्वती निपातित होते हैं ।
पदस्य, पृ-म्, सं-म्, वः, मतोः	**१३. उदन्वानुदधौ च १९०१ ।**		संज्ञा में उदधि अर्थ में उदक को उदन् भाव निपातित होता है ।
पदस्य, पृ-म्, वः, मतोः	**१४. राजन्वान्सौराज्ये १९०२ ।**		सौराज्य में राजन्वान् निपातित होता है ।
पदस्य, पृ-म्, वः, मतोः	**१५. छन्दसीरः ३६०० ।**	छन्दसि १७	वेद में इवर्णान्त रेफान्त से उत्तर मतुप् के म को व होता है ।
पदस्य, पृ-म्, छन्दसि, मतोः	**१६. अनो नुट् ३६०१ ।**	नुट् १७	वेद में अन्नन्त से उत्तर मतुप् को नुट् आगम होता है ।
पदस्य, पृ-म्, छन्दसि, नुट्	**१७. नाद्घस्य ३६०२ ।** ** भूरिदाव्नस्तुड्वाच्यः ।* ** ईद्रथिनः ।*		वेद में नकार से परे घ संज्ञक को नुट् का आगम होता है ।
	लत्वविधिः		
पदस्य, पृ-म्	**१८. कृपो रो लः २३५० ।** ** वालमूललध्वसुरालमङ्गुलीनां वा लो रमापद्यत इति वाच्यम् ।* ** कपिलकादीनां संज्ञाच्छन्दसोर्वेति वाच्यम् ।*	रो लः २२	कृप धातु के रेफ को लकार आदेश होता है ।

१. अत्र कक्षीवच्छब्दस्य पाठो नार्ष इति 'न संप्रसारण' इति सूत्रभाष्यस्वरस इति शब्देन्दुशेखरे स्थितम् ।

(२५५) (वा० ग०) । कपिलक निर्विलीक लोमानि पांसुल कल्म शुक्ल कपिलिका तर्पिलिका तर्पिलि ॥ **आकृतिगणोऽयम् । इति कपिलकादिः ॥**

पदस्य, पू-म्, रोलः	**१९. उपसर्गस्यायतौ २३२६ ।**		अयति परे रहने पर उपसर्ग के रेफ को लादेश होता है ।
पदस्य, पू-म्, रोलः	**२०. ग्रो यङि २६३९ ।**	**॥ १ ॥** ग्रः २१	यङ् में गृ धातु के रेफ को लकारादेश होता है ।
पदस्य, पू-म्, ग्रः, रोलः	**२१. अचि विभाषा २५४१ ।**	विभाषा २२	अजादि प्रत्यय परे रहने पर गृ धातु के रेफ को विकल्प से लकारादेश होता है ।
पदस्य, पू-म्, विभाषा, रोलः	**२२. परेश्च घाङ्कयोः ३२६२ ।** ** घ इति स्वरूपस्य ग्रहणम् ।* ** योगे चेति वाच्यम् ।*		घ और अङ्क शब्द परे रहने पर परि के रेफ को विकल्प से लकार होता है ।
	लोपविधिः		
पदस्य, पू-म्	**२३. संयोगान्तस्य लोपः ५४ ।** ** यणः प्रतिषेधो वाच्यः ।*	सं-स्य २४ लोपः २९	संयोगान्त पद का लोप होता है ।
पदस्य, पू-म्, संस्य, लोपः	**२४. रात्सस्य २८० ।**	सस्य २८	संयोगान्तोत्तर रेफ से परे स का लोप होता है ।
पदस्य, पू-म्, सस्य, लोपः	**२५. धि च २२४९ ।** ** सङीति वक्तव्यम् ।*		धकारादि प्रत्यय परे रहे तो स का लोप होता है ।
पदस्य, पू-म्, सस्य, लोपः	**२६. झलो झलि २२८१ ।**	झलि ३७	झल् से उत्तर स का लोप होता है यदि पर में झल् हो ।
पदस्य, पू-म्, झलि, सस्य, लोपः	**२७. ह्रस्वादङ्गात् २३६९ ।**		यदि झल् पर में हो तो ह्रस्वान्त अङ्ग से स का लोप होता है ।
पदस्य, पू-म्, झलि, सस्य, लोपः	**२८. इट ईटि २२६६ ।**		इट् से उत्तर स का लोप होता है यदि बाद में ईट् हो ।
पदस्य, पू-म्, झलि, लोपः	**२९. स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ३८० ।**	अन्ते ३७	पदान्त में या झल् परे रहने पर तत्पूर्व संयोग के आदि में होने वाले स क का लोप होता है ।
	झलिपदान्ते च विकारः		
पदस्य, पू-म्, झलि, अन्ते	**३०. चोः कुः ३७८ ।**		चवर्ग को कवर्ग होता है पदान्त में या झल् परे रहने पर ।
पदस्य, पू-म्, झलि, अन्ते	**३१. हो ढः ३२४ ।**		ह को ढ होता है पदान्त में या झल् परे रहने पर ।

पदस्य, पू-म्, झलि, अन्ते	**३२. दादेर्धातोर्घः ३२५ ।**		दादि धातु के ह को घ होता है पदान्त में या झल् परे रहने पर।
पदस्य, पू-म्, झलि, अन्ते	**३३. वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् ३२७ ।**		पदान्त में या झल् परे रहने पर द्रुह मुह ष्णुह ष्णिह के ह को विकल्प से घ होता है।
पदस्य, पू-म्, झलि, अन्ते	**३४. नहो धः ४४० ।**		नह के ह को ध होता है यदि पर में झल् हो पदान्त हो।
पदस्य, पू-म्, झलि, अन्ते	**३५. आहस्थः २४५१ ।**		झल् परे रहने पर आह् के ह को थ होता है।
पदस्य, पू-म्, झलि, अन्ते	**३६. व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः २९४ ।**		व्रश्च भ्रस्ज सृज मृज यज राज भ्राज के छकारान्त शकारान्त को ष होता है पदान्त में या झल् परे रहने पर।
पदस्य, पू-म्, झलि, अन्ते	**३७. एकाचो बशो भष्झषन्तस्य स्ध्वोः ३२६**	वशो-भष् ३८ स्ध्वोः ३८	धात्ववयव एकाच् एवं झषन्त के अवयव बश को भष् होता है झल् या स ध्व परे रहने पर।
पदस्य, पू-म्, स्ध्वोः वशो-भष्	**३८. दधस्तथोश्च २५०१ ।**		द्विरुक्त झषन्त धाञ् के बश को भष् होता है त थ सध्व परे रहने पर।
पदस्य, पू-म्	**३९. झलां जशोऽन्ते ८४ ।**		पदान्त में वर्तमान झल् को जश् होता है।
पदस्य; पू-म्	**४०. झषस्तथोर्धोऽधः २२८० ॥ २ ॥**		झष् उत्तरवर्ती त थ के स्थान पर ध होता है दधाति को छोड़ कर।
पदस्य, पू-म्	**४१. षढोः कः सि २९५ ।**		ष् और ढ् को क् होता है यदि बाद में स हो।
	निष्ठाविकारः		
पदस्य, पू-म्	**४२. रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ३०१६**	नि-नः ६१	र और द से परे निष्ठा के त को न होता है और पूर्व को द होता है।
पदस्य, पू-म्, नि-नः	**४३. संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः ३०१७ ।**		संयोगादि आकारान्त यण्वान् धातु से परे निष्ठा के त को न होता है।
पदस्य, पू-म्, नि-नः	**४४. ल्वादिभ्यः ३०१८ ।** ** ऋल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः ।* ** दुग्वोर्दीर्घश्च ।* ** पूञो विनाशे ।* ** सिनोतेर्ग्रासकर्मकर्तृकस्य ।*		लूञ् से वृञ् तक के धातु से उत्तरवर्ती निष्ठा त को न होता है।

पदस्य, पू-म्, नि- नः	४५. **ओदितश्च ३०१९ ।**		ओदित् धातु से उत्तर निष्ठा के त को न होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	४६. **क्षियो दीर्घात् ३०१५ ।**		दीर्घ क्षिय् से उत्तर निष्ठा के त को न होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	४७. **श्योऽस्पर्शे ३०२१ ।**		स्पर्श में श्यै उत्तर निष्ठा के त को न होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	४८. **अञ्चोऽनपादाने ३०२४ ।**		अनपादान में अञ्चूत्तर निष्ठा त को न होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	४९. **दिवोऽविजिगीषायाम् ३०२८ ।**		अविजिगीषा में दिव् उत्तर निष्ठा त को न होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	५०. **निर्वाणोऽवाते ३०२९ ।**		अवात में निर्पूर्वक वा से परे निष्ठा त को न होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	५१. **शुषः कः ३०३० ।**		शुष् से उत्तर निष्ठा त को क होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	५२. **पचो वः ३०३१ ।**		पच् से उत्तर निष्ठा त को व होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	५३. **क्षायो मः ३०३२ ।**	मः ५४	क्षै से उत्तर निष्ठा त को विकल्प से म होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः, मः	५४. **प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् ३०३४ ।**		प्रपूर्वक स्त्यै से उत्तर निष्ठा त को विकल्प से म होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	५५. **अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः ३०३५ ।** ** उत्फुल्लसंफुल्लयोरुपसंख्यानम् ।*		उपसर्ग विहीन फुल्ल क्षीब कृश उल्लाघ निपातित होते हैं।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	५६. **नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम् ३०३८ ।**		नुद विद उन्दी त्रा घ्रा ह्री से उत्तर निष्ठा त को विकल्प से न होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः	५७. **न ध्याख्यापॄमूर्च्छिमदाम् ३०४० ।**	न ६१	ध्या ख्या पॄ मूर्च्छि मद से उत्तर निष्ठा त को न नहीं होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः, न	५८. **वित्तो भोगप्रत्यययोः ३०४१ ।**		यदि भोग और प्रत्ययवाच्य हो तो विद लाभे से उत्तर निष्ठा त को न नहीं होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः, न	५९. **भित्तं शकलम् ३०४२ ।**		शकल अर्थ में भित्त निपातित होता है।
पदस्य, पू-म्, नि- नः, न	६०. **ऋणमाधमर्ण्ये ३०४३ ।। ३ ।।**		आधमर्ण्य में ऋ से निष्ठा ऋण निपातित होता है।

पदस्य, पू-म्, नि-नः, न	**६१. नसत्तनिपत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि ३६०३ ।**		वेद में नसत्त निषत्त अनुत्त प्रतूर्त सूर्त गूर्त निपातित होते हैं।
	कुत्वविधिः		
पदस्य, पू-म्	**६२. क्विन्प्रत्ययस्य कुः ३७७ ।**	कुः ६३	क्विन् प्रत्ययान्त को पदान्त में कु होता है।
पदस्य, पू-म्, कुः	**६३. नशेर्वा ४३१ ।**		पदान्त में नश् को विकल्प से कवर्ग होता है।
पदस्य, पू-म्	**६४. मो नो धातोः ३४१ ।**	मो-तोः ६५	मकारान्त धातु के म को पदान्त में न होता है।
पदस्य, पू-म्, मो-तोः	**६५. म्वोश्च २३०९ ।**		मकारान्त धातु को न होता है यदि पर में म व हो।
	रुत्वविधिः		
पदस्य, पू-म्	**६६. ससजुषो रुः १६२ ।**	रुः ७०	सकारान्त और सजुष् को रु होता है।
पदस्य, पू-म्, रुः	**६७. अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च ३४१६ ।**		अवयाः श्वेतवाः पुरोडाः निपातित होते हैं।
पदस्य, पू-म्, रुः	**६८. अहन् ४४३ ।** ** रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम् ।*	अहन् ६९	अहन् के न को रु होता है।
पदस्य, पू-म्, रुः, अहन्	**६९. रोऽसुपि १७२ ।**	रः ७१	अहन् के न को रु होता है यदि पर में सुप् न हो।
पदस्य, पू-म्, रुः, रः	**७०. अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि ३६०४ ।** **** अहरादीनां पत्यादिषु वा रेफः ।*** **(२५६) (वा० ग०)** । अहर् गीर् धूर् ॥ **इत्यहरादिः ॥** **(२५७)** पति गण पुत्र ॥ **इति पत्यादिः ॥**	उभ-सि ७१	वेद में अम्नस् ऊधस् अवस् को रु होता है नहीं भी होता है।
पदस्य, पू-म्, रः, उभ-सि	**७१. भुवश्च महाव्याहृतेः ३६०५ ।**		वेद में महाव्याहृति के भुवस् को उभयथा होता है।
पदस्य, पू-म्	**७२. वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः ३३४ ।**	दः ७५	वसु स्रंसु ध्वंसु अनडुह् को द होता है।
पदस्य, पू-म्, दः	**७३. तिप्यनस्तेः २४८४ ।**		अस् को छोड़कर शेष सकारान्त को द होता है तिप् में।
पदस्य, पू-म्, दः	**७४. सिपि धातो रुर्वा २४८५ ।**	सिपि ७५ रुर्वा ७५ धातोः ७७	सिप् परे रहने पर सकारान्त धातु को रु द दोनों होते हैं।
पदस्य, पू-म्, दः, धातोः, सिपि, रुर्वा	**७५. दश्च २४६८ ।**		दकारान्त धातु को भी सिप् परे रहने रु द दोनों होते हैं।

पदस्य, पृ-म्, धातोः	७६. **र्वोरुपधाया दीर्घ इकः ४३३ ।**	र्वोः दी-कः ७९ उ-याः ७८	रेफ और व से उत्तर धातु के उपधा इक् को दीर्घ होता है।
पदस्य, पृ-म्, उ-याः, धातोः, र्वोः, दी-कः	७७. **हलि च ३५४ ।**	हलि ७८	हल् परे रहने पर रेफवकारान्त धातूपधा के इक को दीर्घ होता है।
पदस्य, पृ-म्, उ-याः, हलि, र्वोः, दी-कः	७८. **उपधायां च २२६५ ।**		धातूपधाभूत रेफ वकार से परे यदि हल् हो तो उपधा इक् को दीर्घ होता है।
पदस्य, पृ-म्, र्वोः, दी-कः	७९. **न भकुर्छुराम् १६२९ ।**		रेफ वकारान्त भ संज्ञक और कुर् छुर् को दीर्घ नहीं होता है।
पदस्य, पृ-म्	८०. **अदसोऽसेर्दादु दो मः ४१९** ।।४।।	अदसः ८१ दात् ८१ दो-मः ८१	असकारान्त अदस् के द् से परे वर्ण को उ तथा द को म होता है।
पदस्य, पृ-म्, दोमः, दात्, अदसः	८१. **एत ईद्बहुवचने ४३८ ।**		बहुवचन में अदस् के दकारोत्तर ए को ई और द को म होता है।
	प्लुतोदात्तः		
पदस्य, पृ-म्	८२. **वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः ९३ ।**	वा-टेः ९९	'वाक्य का टि प्लुत और उदात्त है' इसका अधिकार है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टेः	८३. **प्रत्यभिवादेऽशूद्रे ९४ ।** * *स्त्रियां न ।* * *भोराजन्यविशां वेति वाच्यम् ।*		अशूद्र विषयक प्रत्यभिवाद में प्रयुक्त वाक्य का टि प्लुत उदात्त होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टेः	८४. **दूराद्धूते च ९५ ।**	दू-ते ८६	दूर से बुलाने में प्रयुक्त वाक्य का टि प्लुत तथा उदात्त होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टेः, दू-ते	८५. **हैहेप्रयोगे हैहयोः ९६ ।**		है और हे युक्त बुलाने के वाक्य में है हे ही प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टेः, दू-ते	८६. **गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम् ९७**		सूत्र ८३ से होने वाला प्लुत यदि गुरु विषयक हो तो ऋकार वर्जित अन्त्य टि अनन्त्य स्वर और आदि स्वर को प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टेः	८७. **ओमभ्यादाने ३६०६ ।**		अभ्यादान में ओम् शब्द प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टेः	८८. **ये यज्ञकर्मणि ३६०७ ।**	य-णि ९२	यज्ञकर्म में ये प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टेः, य-णि	८९. **प्रणवष्टेः ३६०८ ।**	टेः ९०	यज्ञ कर्म में दि को प्रणव होता है।

पदस्य, पृ-म्, वा-टे:, य-णि, टे:	९०. **याज्यान्तः ३६०९ ।**		यज्ञकर्म में याज्या के अन्त्य टि प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टे:, य-णि	९१. **ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषडावहानामादेः ३६१०**	आदे: ९२	यज्ञकर्म में ब्रूहि प्रेष्य श्रौषट् वौषट् आवह का आदि प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टे:, य-णि, आदे:	९२. **अग्नीत्प्रेषणे परस्य च ३६११ ।**		अग्नीत्प्रेषण में आदि और पर दोनों प्लुत होते हैं।
पदस्य, पृ-म्, वा-टे:	९३. **विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः ३६१२ ।**	विभाषा ९४	पृष्ट प्रतिवचन में हि विकल्प से प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टे:, विभाषा	९४. **निगृह्यानुयोगे च ३६१३ ।**		निगृह्यानुयोग में प्रयुक्त वाक्य का टि विकल्प से प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टे:	९५. **आम्रेडितं भर्त्सने ३६१४ ।** ** भर्त्सने पर्यायेणेति वक्तव्यम् ।*	भर्त्सने ९६	भर्त्सन में आम्रेडित को प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टे:, भर्त्सने	९६. **अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम् ३६१५ ।**		अङ्ग से युक्त तिङन्त यदि साकाङ्क्ष है तो प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टे:	९७. **विचार्यमाणानाम् ३६१६ ।**	वि-म् ९८	विचार्यमाण वाक्यों में टि प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टे:, वि-म्	९८. **पूर्वं तु भाषायाम् ३६१७ ।**		भाषा में विचार्यमाण का पूर्व प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, वा-टे:	९९. **प्रतिश्रवणे च ३६१८ ।**		प्रतिश्रवण में वाक्य का टि प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म	१००. **अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः ३६१९ ।। ५ ।।**	अ-म् १०२	प्रश्नान्त अभिपूजित परे रहने पर अनुदात्त प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, अ-म्	१०१. **चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने ३६२०**		उपमार्थ में यदि चित् का प्रयोग हो वाक्य का टि अनुदात्त प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, अ-म्	१०२. **उपरिस्विदासीदिति च ३६२१ ।**		उपरिस्विदासीत् का टि अनुदात्त प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्	१०३. **स्वरितमाम्रेडितेऽसूयासंमतिकोपकुत्सनेषु ३६२२ ।**	स्व-म् १०५	असूया संमति कोप कुत्सन वाच्य हो तो आम्रेडित परे रहने पर स्वरित प्लुत होता है।
पदस्य, पृ-म्, स्व-म्	१०४. **क्षियाशीःप्रैषेषु तिङाकाङ्क्षम् ३६२३ ।**		क्षिया आशीःप्रैष वाच्य हो तो आकाङ्क्ष तिङन्त का स्वरित प्लुत हो जाता है।
पदस्य, पृ-म्, स्व-म्	१०५. **अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः ३६२४**		प्रश्न और आख्यान में अनन्त्य पद का भी टि प्लुत हो जाता है।

पदस्य, पू-म्	**१०६. प्लुतावैच इदुतौ ३६२५ ।**		ऐच् के प्लुत प्रसङ्ग में अवयवभूत इ उ भी प्लुत होते हैं ।
पदस्य, पू-म्	**१०७. एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ ३६२६ ।** ** प्रश्नान्ताभिपूजितविचार्यमाणप्रत्यभिवादनयाज्यान्तेष्वेव ।* ** पदान्तग्रहणं कर्तव्यम् ।* ** आमन्त्रिते छन्दसि प्लुतविकारोऽयं वक्तव्यः ।*		अदूराद्धूत प्लुत प्रसङ्ग में अप्रगृह्य एच् के पूर्व अर्द्ध को आत् तथा उत्तर अर्द्ध को इत् उत् हो जाता है ।
पदस्य, पू-म्	**१०८. तयोर्य्वावचि संहितायाम् ३६२७ ।**	सं-म ८.४.६७	उपर्युक्त इ उ को संहिता में य् व् भी होता है । अध्याय परिसमाप्ति तक संहितायाम् का अधिकार भी है ।

पूर्वत्राचि षढोर्नसत्तैत ईच्चिदित्यष्टौ ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य
द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

रुविधिः

पदस्य, पू-म्, सं-म	**१. मतुवसो रु संबुद्धौ छन्दसि ३६२८ ।** ** वन उपसंख्यानम् ।* ** विभाषा भवद्भगवदघवतामोच्चावस्य छन्दसि भाषायां च ।*	रु १२	वेद में मतुप् और वसु को सम्बुद्धि में रु होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु	**२. अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा १३६ ।**	अनु-कः ३ पू-स्य ४	यहाँ (रु प्रकरण में) (रु के) पूर्वस्वर को विकल्प से अनुनासिक होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु, अ-कः, पू-स्य	**३. आतोऽटि नित्यम् ३६३२ ।**		अट् परे रहने पर रु के पूर्वआस्वर को नित्य अनुनासिक होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु, पू-स्य	**४. अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः १३७ ।**		अनुनासिक को छोड़कर रु से पूर्वस्वर को अनुस्वार का आगम होता है
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु	**५. समः सुटि १३५ ।** ** संपुंकानां सो वक्तव्यः ।*		संहिता में सुट् परे रहने पर सम् को रु होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं-म, रु	**६. पुमः खय्यम्परे १३९ ।**	अम्परे ८	अम् परक खय् परे रहने पर पुम् को रु होता है।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु, अम्परे	**७. नश्छव्यप्रशान् १४० ।**	नः १२ छवि ८	प्रशान् वर्जित नकारान्त पद को रु होता है अम् परक छव् परे रहने पर।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु, नः, छवि, अम्परे	**८. उभयथर्क्षु ३६३० ।**		ऋक् में रु और न विकल्प से होते हैं।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु, नः	**९. दीर्घादटि समानपादे ३६३१ ।**		ऋक्समानपाद में अट् परे रहने पर दीर्घोत्तर पदान्त न् को रु होता है।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु, नः	**१०. नॄन्पे १४१ ।**		नॄन् के न् को रु होता है यदि बाद में प हो।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु, नः	**११. स्वतवान्पायौ ३६३३ ।**		स्वतवान् के न् को रु होता है यदि बाद में पायु हो।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रु, नः	**१२. कानाम्रेडिते १४३ ।**		कान् के न् को रु होता है यदि पर में आम्रेडित हो।
पदस्य, पू-म्, सं-म	**१३. ढो ढे लोपः २३३५ ।**	लोपः १४	ढ परे रहने पर ढ का लोप होता है।
पदस्य, पू-म्, सं-म, लोपः	**१४. रो रि १७३ ।**	रः १७	र परे रहने पर र का लोप होता है।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रः	**१५. खरवसानयोर्विसर्जनीयः ७६ ।** * (*विसर्जनीयोऽनुत्तरपदे*) ।	वि-यः १६	यदि खर् पर में हो या अवसान हो तो र को विसर्ग होता है।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रः, वि-यः	**१६. रोः सुपि ३३९ ।**	रोः १७	रु के र् को विसर्ग होता है यदि बाद में सुप् हो।
पदस्य, पू-म्, सं-म, रः, रोः	**१७. भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि १६७ ।**	भो-स्य २१ अशि २०	भो भगो अघो और अ यदि पूर्व में हो तो रु के र को य् हो जाता है यदि पर में अश् हो।
पदस्य, पू-म्, सं-म, भो-स्य, अ-शि	**१८. व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य १६८ ।**	व्योः २१	पदान्त व् य् के बाद यदि अश् हो तो लघूच्चारण व् य् हो जाता है विकल्प से।
पदस्य, पू-म्, सं-म, भो-स्य, अ-शि, व्योः	**१९. लोपः शाकल्यस्य ६७ ।**	लोपः २२	अवर्णपूर्व पदान्त य् व् का विकल्प से लोप होता है, यदि पर में अश् हो। (शाकल्य मत)
पदस्य, पू-म्, सं-म, भो-स्य, लोपः, अ-शि, व्योः	**२०. ओतो गार्ग्यस्य १६९ ।** ।। १ ।।		ओकार से उत्तर य् का लोप होता है अश् परे रहने पर। (गार्ग्य के मत में)

पदस्य, पू-म्, सं-म, लोपः, भो-स्य, व्योः	**२१. उञि च पदे १७० ।**		अवर्णपूर्व पदान्त य् व् का लोप होता है उञ् परे रहने पर ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, लोपः	**२२. हलि सर्वेषाम् १७१ ।**	हलि २३	भो भगो अघो अ पूर्व पदान्त य का लोप होता है यदि बाद में हल् हो ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, हलि	**२३. मोऽनुस्वारः १२२ ।**	मो-रः २४	पदान्त म् को हल् परे रहने पर अनुस्वर आदेश होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, मो-रः	**२४. नश्चापदान्तस्य झलि १२३ ।**		अपदान्त न् म् को झल् परे रहने पर अनुस्वार आदेश होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म	**२५. मो राजि समः क्वौ १२६ ।**	मः २६	सम् के म् को म् ही रहता है क्विबन्त राज परे रहने पर ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, मः	**२६. हे मपरे वा १२७ ।** **** यवलपरे यवला वेति वक्तव्यम् ।***	हे २७ वा ३१	म् को विकल्प से म् होता है यदि पर में मपरक ह् हो ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वा, हे	**२७. नपरे नः १२९ ।**		नकार परक ह यदि पर में हो तो म् को विकल्प से न् होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वा	**२८. ङ्णोः कुक्टुक्शरि १३० ।**	शरि ३०	पदान्त ङ ण को कुक् टुक् आगम विकल्प से होता है, यदि बाद में शर् हो ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वा, शरि	**२९. डः सि धुट् १३१ ।**	सि-ट् ३०	डकारान्त पद से उत्तरवर्ती स-कारादि पद को धुट् का आगम विकल्प से होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वा, शरि, सि-ट्	**३०. नश्च १३२ ।**	नः ३१	नकारान्त पद से उत्तर स को विकल्प से धुडागम होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वा, नः	**३१. शि तुक् १३३ ।**		पदान्त न को विकल्प से तुक् आगम होता है यदि पर में श हो ।
पदस्य, पू-म्, सं-म	**३२. ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम् १३४ ।**	अचि ३३	ह्रस्व से परे पदान्त ङम् से उत्तर अच् को ङमुट् का नित्य आगम होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, अचि	**३३. मय उञो वो वा १०८ ।**		मय् से उत्तर उञ् को विकल्प से व आदेश होता है अच् परे रहने पर ।

विसर्गसत्वे

पदस्य, पू-म्, सं-म	**३४. विसर्जनीयस्य सः १३८ ।**	वि-स्य ५४	(खर् पर रहने पर) विसर्जनीय को स् आदेश होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य	३५. **शर्परे विसर्जनीयः १५० ।**	वि-यः ३६	शर्परक खर् परे रहने पर विसर्ग को विसर्ग होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, वि-यः	३६. **वा शरि १५१ ।** * *खर्परे शरि वा विसर्गलोपो वक्तव्यः ।*		विसर्ग को विकल्प से विसर्ग होता है शर् परे रहने पर ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य	३७. **कुप्वोः ≍क ≍पौ च १४२ ।**	कुप्वोः ५४	कु और पु यदि पर में हो तो विसर्ग को क्रमशः ≍क ≍प आदेश होते हैं तथा विसर्ग भी होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः	३८. **सोऽपदादौ १५२ ।** * *पाशकल्पककाम्येष्विति वाच्यम् ।* * *अनव्ययस्तेति वाच्यम् ।* * *काम्ये रोरेवेति वाच्यम् ।*	सः ५४ अ-दौ ३९	अपदादि कु पु परे रहने पर विसर्ग को स् होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, अ-दौ	३९. **इणः षः १५३ ।**	षः ४८	अपदादि कु पु परे रहने पर इण् उत्तरवर्ती विसर्ग को ष् आदेश होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, षः	४०. **नमस्पुरसोर्गत्योः १५४** ।। २ ।।		कु पु परे रहने पर गतिसंज्ञक नमः पुरः के विसर्ग को सकारादेश होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, षः	४१. **इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य १५५ ।** * *मुहुसः प्रतिषेधः ।*		इकार उकार उपधा वाले अप्रत्यय विसर्ग को ष् आदेश होता है यदि पर में कु पु हों ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, षः	४२. **तिरसोऽन्यतरस्याम् १५६ ।**	अ-म् ४४	कु पु परे रहते तिरः के विसर्ग को विकल्प से स् होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, षः, अ-म्	४३. **द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे १५७ ।**		कृत्वसुच् के अर्थ में प्रयुक्त द्वि त्रि चतुर् के विसर्ग को विकल्प से ष् होता है कु पु परे रहने पर ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, षः, अ-म्	४४. **इसुसोः सामर्थ्ये १५८ ।**	इसुसोः ४५	सामर्थ्य में इस् उस् के विसर्ग को विकल्प से ष होता है कु पु परे रहने पर ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, षः, इसुसोः	४५. **नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य १५९ ।**	अ-स्य ४७ समासे ५४	समास में इस् उस् के विसर्ग को नित्य ष होता है, यदि वह उत्तरपद में न हो तथा कु पु परे हो ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, षः, अ-स्य, समासे	४६. **अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य १६० ।**	अ-स्य ४७	अकारोत्तर अनव्ययविसर्ग अनुत्तरपदस्थ को नित्य स होता है यदि बाद में कृ कमि कंस कुम्भ पात्र कुशा कर्णी शब्द हों ।

पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, षः, अ-स्य, अस्य, समासे	**४७. अधःशिरसी पदे १६१ ।**		समास में अनुत्तरपदस्थ अधस् शिरस् के विसर्ग को स आदेश होता है, यदि पद शब्द पर में हो ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, षः, समासे	**४८. कस्कादिषु च १४४ ।**		कस्क आदि में यथायोग विसर्ग को स् ष् होते हैं ।
	(२५८) कस्कः कौतस्कुतः भ्रातुष्पुत्र शुनस्कर्णः सद्यस्कालः सद्यस्क्रीः साद्यस्कः कांस्कान् सर्पिष्कुण्डिका धनुष्कपालम् बहिष्पलम् (बर्हिष्पलम्) यजुष्पात्रम् अयस्कान्तः तमस्काण्डः अयस्काण्डः मेदस्पिण्डः भास्करः अहस्करः ॥ **इति कस्कादिः ।। आकृतिगणः ।।**		
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, समासे	**४९. छन्दसि वाप्राम्रेडितयोः ३६३४ ।**	छन्दसि ५४	वेद में प्र और आम्रेडित से अतिरिक्त स्थल में विसर्ग को विकल्प से स होता है कु पु परे रहने पर ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, समासे, छन्दसि	**५०. कःकरत्करतिकृधिकृतेष्वनदितेः ३६३५**		अदिति शब्द यदि पूर्व में न हो तो वेद में विसर्ग को स होता है यदि पर में कःकरत् करति कृधि कृत हों ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, समासे, छन्दसि	**५१. पञ्चम्याः परावध्यर्थे ३६३६ ।**	प-याः ५२	पञ्चम्युत्तर विसर्ग को स होता है यदि पर में अध्यर्थ परि हों ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, समासे, छन्दसि, प-याः	**५२. पातौ च बहुलम् ३६३७ ।**		वेद में पातु परे रहने पर पञ्चमी के विसर्ग को बहुलतया स होता है ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, समासे, छन्दसि	**५३. षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु ३६३८ ।**	ष-षु ५४	वेद में षष्ठी विसर्ग को स आदेश होता है यदि बाद में पति पुत्र पृष्ठ पार पद पयस् पोष शब्द हों ।
पदस्य, पू-म्, सं-म, वि-स्य, कुप्वोः, सः, समासे, छन्दसि, ष-षु	**५४. इडाया वा ३६३९ ।**		इडा के षष्ठी विसर्ग को वेद में विकल्प से स होता है यदि बाद में पति पुत्र आदि शब्द हों ।

षत्वविधिः

पू-म्, सं-म	**५५. अपदान्तस्य मूर्धन्यः २१०।**	अ-यः ११९	पादपरिसमाप्ति तक 'अपदान्तस्य मूर्धन्यः' का अधिकार है।
पू-म्, सं-म, अ-यः	**५६. सहेः साडः सः ३३५।**		साड् रूप सह धातु के स को मूर्धन्य होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः	**५७. इण्कोः २११।**	इण्कोः ११९	पादपरिसमाप्ति तक 'इणः कवर्गात्' का अधिकार है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः	**५८. नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि ४३४।**	नु-पि ११९	नुम् विसर्ग शर् का व्यवधान रहने पर भी इण् कु से उत्तर अपदान्त स को मूर्धन्य हो।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि	**५९. आदेशप्रत्यययोः २१२।**		इण् कु से उत्तर अपदान्त स को मूर्धन्य होता है यदि स आदेश अथवा प्रत्यय का हो।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि	**६०. शासिवसिघसीनां च २४१० ॥ ३ ॥**		इण् कु से उत्तर शास् वस् घस् के अपदान्त स को मूर्धन्य हो जाता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि	**६१. स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात् २६२७।**	ष-त् ६२	ष्टु और ण्यन्त से षत्वभूत सन् के परे रहने पर अभ्यास इण् से उत्तर आदेश स को ष होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, ष-त्	**६२. सः स्विदिस्वदिसहीनां च २६२८।**		उपरिलिखित स्थिति में स्विद स्वद सह के स को स होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि	**६३. प्राक्सितादड्व्यवायेऽपि २२७६।**	अड्-पि ७०	७० वें सूत्र के पहले यहाँ अड् व्यवायेऽपिं का अधिकार है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, अड्-पि	**६४. स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य २२७७।**	अ-स्य ६५	स्था सेनय सेध में अभ्यास के व्यवधान रहने पर मूर्धन्य होता है अभ्यास सकार को भी होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, अड्-पि, अ-स्य	**६५. उपसर्गात्सुनोतिसुवतिस्यतिस्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेधसिचसञ्जस्वञ्जाम् २२७०**	उ-त् ७७	उपसर्ग से उत्तरवर्ती सुनोति सुवति स्यति स्तौति स्तोभति तथा सेनय सेध सिच सञ्ज स्वञ्ज के स को मूर्धन्य होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, अड्-पि	**६६. सदिरप्रतेः २२७१।**		प्रतिभिन्न उपसर्ग से परे सद के स को मूर्धन्य होता है।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, अड्-पि | **६७. स्तन्भेः २२७२ ।** | स्तन्भेः ६८ | उपसर्गोत्तर स्तन्भ के स को मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, अड्-पि, स्तन्भेः | **६८. अवाच्चालम्बनाविदूर्ययोः २२७३ ।** | अवात् ६९ | आलम्बन और आविदूर्य अर्थ में अव उपसर्ग से उत्तर स्तन्भ के स को मूर्धन्यादेश होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, अड्-पि, अवात् | **६९. वेश्च स्वनो भोजने २२७४ ।** | भोजनार्थ में वि, अव उत्तर स्वन के स को मूर्धन्य आदेश होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, अड्-पि | **७०. परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम् २२७५ ।** | प-भ्यः ७१ | परि नि वि पूर्वक सेव सित सय सिवु सह सुट् स्तु स्वञ्ज के स को मूर्धन्यादेश होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, प-भ्यः | **७१. सिवादीनां वाऽड्व्यवायेऽपि २३५९ ।** | वा ७६ | उपरिलिखित स्थिति में सिव आदि धातुओं को अट् व्यवधान रहने पर भी विकल्प से मूर्धन्यादेश होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, वा | **७२. अनुपर्यभिनिविभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु २३४९ ।** | अनु परि अभि नि वि से अप्राण्यर्थ प्रयुक्त स्यन्द के स को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, वा | **७३. वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् २३९८ ।** | स्कन्देः ७५ | अनिष्ठा में वि पूर्वक स्कन्द के स को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, वा, स्कन्देः | **७४. परेश्च २३९९ ।** | परिपूर्वक स्कन्द के स को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, वा, स्कन्देः | **७५. परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु ३०२६ ।** | प्राच्यभरत में परिस्कन्द निपातित होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, उ-त्, वा | **७६. स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः २५३७ ।** | निर् नि वि से उत्तर स्फुर स्फुल के स को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, **७७. वेः स्कभ्नातेर्नित्यम् २५५६ ।** वि पूर्वक स्कभ्नाति के स को नित्य मूर्धन्य होता है ।
इण्कोः, नु-पि, उ-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, **७८. इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात् २२४७ ।** इ-ध्वं ७९ धो-त् ७९ इण् अन्त वाले धातु से उत्तर षी ध्वम् लुङ् लिट् का धकार मूर्धन्य होता है ।
इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, **७९. विभाषेटः २३२५ ।** इण् से उत्तर होने वाले इट् से भी उत्तर षी ध्वम् लुङ् लिट् के धकार को मूर्धन्य होता है ।
इण्कोः, नु-पि, इ-ध्वं धो-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८०. समासेऽङ्गुलेः सङ्गः १०१९ ।। ४ ।।** समासे ८५ समास में अङ्गुलि के उत्तर सङ्ग के स को मूर्धन्य आदेश होता है ।
इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८१. भीरोः स्थानम् १०२० ।** समास में भीरु से उत्तर स्थान का स मूर्धन्य होता है ।
इण्कोः नु-पि, समासे

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८२. अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः ९२४ ।** समास में अग्नि से उत्तरवर्ती स्तुत् स्तोम सोम के स को मूर्धन्य होता है ।
इण्कोः नु-पि, समासे

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८३. ज्योतिरायुषः स्तोमः १०२१ ।** समास में ज्योतिष् आयुष् से उत्तर स्तोम का स मूर्धन्य होता है ।
इण्कोः नु-पि, समासे

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८४. मातृपितृभ्यां स्वसा ९८४ ।** स्वसा ८५ समास में मातृ पितृ से उत्तर स्वसृ के स को मूर्धन्य होता है ।
इण्कोः नु-पि, समासे

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८५. मातुःपितुर्भ्यामन्यतरस्याम् ९८३ ।** अ-म् ८६ मातुर् पितुर् से उत्तर स्वसा का स विकल्प से मूर्धन्य होता है समास में ।
इण्कोः, नु-पि, समासे, स्वसा

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८६. अभिनिसः स्तनः शब्दसंज्ञायाम् ३१९३** शब्द संज्ञा में अभि उत्तर स्तनति का स मूर्धन्य विकल्प से होता है ।
इण्कोः, नु-पि, अ-म्

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८७. उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः २४७२ ।** उपसर्ग और प्रादुस् से परे अस्ति के स को मूर्धन्य होता है, किन्तु स के बाद य अथवा अच् रहना चाहिये ।
इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८८. सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः २४७७ ।** सु वि निर् दुर् के उत्तर सुपि सूति सम के स को मूर्धन्य होता है ।
इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, **८९. निनदीभ्यां स्नातेः कौशले ३०८२ ।** कौशल अर्थ में नि नदी पूर्वक स्नाति के स को मूर्धन्य होता है ।
इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, **९०. सूत्रं प्रतिष्णातम् ३०८३ ।** सूत्र के विषय में प्रतिष्णातम् निपातित होता है ।
इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, **९१. कपिष्ठलो गोत्रे ३०८४ ।** गोत्रविषय में कपिष्ठल निपातित होता है ।
इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९२. **प्रष्ठोऽग्रगामिनि २९१७ ।**
इण्कोः, नु-पि
अग्रगामी अर्थ में प्रष्ठ निपातित होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९३. **वृक्षासनयोर्विष्टरः ३२३३ ।** विष्टरः ९४
इण्कोः, नु-पि
वृक्ष और आसन में विष्टर निपातित होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९४. **छन्दोनाम्नि च ३२०६ ।**
इण्कोः नु-पि, विष्टरः
छन्दोनाम में विष्टर निपातित होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९५. **गवियुधिभ्यां स्थिरः ९६७ ।**
इण्कोः, नु-पि
गवि युधि के उत्तर स्थिर का स मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९६. **विकुशमिपरिभ्यः स्थलम् ३०८५ ।**
इण्कोः, नु-पि
वि कु शमि परि उत्तरवर्ती स्थल का स मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९७. **अम्बाम्बगोभूमिसव्याऽपद्वित्रिकुशेकुशङ्क्वङ्गुमञ्जिपुञ्जिपरमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः २९१८ ।**
इण्कोः, नु-पि
** स्थास्थिन्स्थूणामिति वक्तव्यम् ।*
अम्ब आम्ब गो भूमि सव्य अप द्वि त्रि कु शेकु शङ्कु अङ्गु मञ्जि पुञ्जि परमे बर्हिस् दिवि अग्नि से उत्तरवर्ती स्थ का स मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९८. **सुषामादिषु च १०२२ ।**
इण्कोः, नु-पि
सुषामा आदि में स को मूर्धन्य होता है ।

(२५९) सुषामा निःषामा दुःषामा सुषेधः निषेधः (निःषेधः) दुःषेधः सुषन्धिः निःषन्धि दुःषन्धिः सुष्ठु दुष्ठु 'गौरिषक्थः संज्ञायाम्' १८१ । प्रतिष्णिका जलाषाहम् (जलाषाढम्) नौषेचनम् दुन्दुभिषेवणम् (दुन्दुभिषेचनम्) 'एति संज्ञायामगात्'[1] १८२ । 'नक्षत्राद्वा' १८३ । हरिषेणः रोहिणीषेणः ।। **इति सुषामादिः ।। आकृतिगणः ।।**

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९९. **एति संज्ञायामगात् १०२३ ।**
इण्कोः, नु-पि
ए पर में हो जिस स के उसको मूर्धन्य होता है, पर स को इण् कु से परे (ग भिन्न) तथा संज्ञा में होना चाहिये ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १००. **नक्षत्राद्वा १०२४ ।** ।।५।।
इण्कोः, नु-पि
पूर्व स्थिति में नक्षत्रवाची शब्द से उत्तर स् को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०१. **ह्रस्वात्तादौ तद्धिते १३२५ ।** तादौ १०४
इण्कोः, नु-पि
तादि तद्धित परे रहने पर ह्रस्वोत्तर स को मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०२. **निसस्तपतावनासेवने २४०३ ।**
इण्कोः, नु-पि, तादौ
अनासेवन अर्थ में तपति परे रहने पर निस् के स को मूर्धन्य होता है ।

---

१. एति संज्ञायां, नक्षत्राद्वा इत्यनयोर्गणसूत्रत्वमेव न्याय्यम् ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, तादौ	**१०३. युष्मत्तत्ततक्षुष्वन्तःपादम् ३६४० ।**	यु-षु १०४	युष्मदादेश तत् ततक्षुः यदि पर में हों तथा अन्तःपाद हों तो पूर्व स को मूर्धन्य होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, तादौ, यु-षु	**१०४. यजुष्येकेषाम् ३६ ४१ ।**	ए-म् १०६	यजुः विषय युष्मदादेश तत् ततक्षुस् परे रहने पर स को मूर्धन्य होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, ए-म्	**१०५. स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि ३६४२ ।**	छन्दसि १०९	स्तुत स्तोम के स को वेद में मूर्धन्य होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, छन्दसि, ए-म्	**१०६. पूर्वपदात् ३६४३ ।**	पू-त् ११९	वेद में पूर्वपद के बाद आये स को मूर्धन्य होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, छन्दसि, पू-त्	**१०७. सुञः ३६४४ ।**		वेद में पूर्वपद के बाद आये सुञ् के स को मूर्धन्य होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, छन्दसि, पू-त्	**१०८. सनोतेरनः ३६४५ ।**		अनकारान्त सनोति के स को मूर्धन्य होता है (वेद में)।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, छन्दसि, पू-त्	**१०९. सहेः पृतनर्ताभ्यां च ३६४६ ।**		पृतना ऋत से उत्तर सह् का स मूर्धन्य होता है।
पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, पू-त्	**११०. न रपरसृपिसृजिस्पृशिस्पृहिसवनादीनाम् ३१६८ ।**	न ११९	रेफ से परे यदि स हो तो उसे तथा सृप सृज स्पृश स्पृह सवन आदि के स को मूर्धन्य नहीं होता है।

(**२६०**) सवने सवने। सूते सूते। सोमे सोमे। सवनमुखे सवनमुखे। किंसं किंसम् (किंसः किंसः)। अनुसवनं अनुसवनम्। गोसनिं गोसनिम्। अश्वसनिं अश्वसनिम्॥ **पाठान्तरम् ।।** सवने सवने सवनमुखे सवनमुखे। अनुसवनमनुसवनम्। संज्ञायां बृहस्पतिसवः॥ शकुनिसवनम्। सोमे सोमे। सुते सुते। संवत्सरे संवत्सरे। बिसं बिसम्। किसं किसम्। मुसलं मुसलम्। गोसनिम् अश्वसनिम्॥ **इति सवनादिः ।।**

पू-म्, सं-म, अ-यः, इण्कोः, नु-पि, पू-त्, न	**१११. सात्पदाद्योः २१२३ ।**		साति का अवयव तथा पदादि स को मूर्धन्य नहीं होता है।

पू-म्, सं-म, अ-यः, **११२. सिचो यङि २६४० ।** यङ् परे रहते सिच् के स् को मूर्धन्य नहीं होता है ।
इण्कोः नु-पि न पू-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, **११३. सेधतेर्गतौ २२७८ ।** गत्यर्थक सेधति के स को मूर्धन्य नहीं होता है ।
इण्कोः नु-पि न पू-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, **११४. प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च ३०२७ ।** प्रतिस्तब्ध निस्तब्ध निपातित होते हैं ।
इण्कोः नु-पि न पू-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, **११५. सोढः २३५८ ।** सोढः के स को मूर्धन्य नहीं होता है ।
इण्कोः नु-पि न पू-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, **११६. स्तम्भुसिवुसहां चङि २५८० ।** चङ् परे रहने पर स्तम्भु सिवु सह के स को मूर्धन्य नहीं होता है ।
इण्कोः नु-पि न पू-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, **११७. सुनोतेः स्यसनोः २५२४ ।** स्य और सन् परे रहने पर सुनोति के स को मूर्धन्य नहीं होता है ।
इण्कोः नु-पि न पू-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, **११८. सदेः परस्य लिटि २३६१ ।** सदि के स को मूर्धन्य नहीं होता है लिट् परे रहने पर ।
इण्कोः नु-पि न पू-त् * *स्वञ्जेरुपसंख्यानम् ।*

पू-म्, सं-म, अ-यः, **११९. निव्यभिभ्योऽड्व्यवाये वा छन्दसि ३६४७ ।** वेद में अट् का व्यवधान रहने पर भी नि वि अभि से उत्तरवर्ती स को विकल्प से मूर्धन्य नहीं होता है ।
इण्कोः नु-पि न पू-त्

मतुवसोरुञि चेदुदुपधस्य स्तौतिण्योर्भीरोर्ह्र-
स्वात्तादावेकोनविंशतिः ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

णत्वविधिः

पू-म्, सं-म् **१. रषाभ्यां नो णः समानपदे २३५ ।** र-णः ३९ समानपद में र ष से परे न को ण होता है ।
* *ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् ।*

पू-म्, सं-म्, र-णः **२. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि १९७ ।** यदि अट् कु पु आङ् नुम् का व्यवधान भी हो तो र ष से पर न को ण होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः **३. पूर्वपदात्संज्ञायामगः ८५७ ।** पू-त् १३ सं-म् ४ संज्ञा विषय में गकार वर्जित पूर्व-पद निमित्त से उत्तर न को ण होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, पू-त्, सं-म्,	**४. वनं पुरगामिश्रकासिध्रकाशारिकाकोटराग्रेभ्यः १०३९ ।.**	वनं ६	संज्ञा में पुरगा मिश्रका सिध्रका शारिका कोटरा अग्रे पूर्वपद में हों तो वन के न को ण होता है ।
पू-म्, सं-म्, र-णः, पू-त्, वनं	**५. प्रनिरन्तःशरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्यखदिरपीयूक्षाभ्योऽसंज्ञायामपि १०५० ।**		प्र निर् अन्तः शर इक्षु प्लक्ष आम्र कार्ष्य खदिर पीयूक्षा पूर्वपद में हों तो वन के न को ण होता है, चाहे संज्ञा हो या असंज्ञा ।
पू-म्, सं-म्, र-णः, पू-त्, वनं	**६. विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः १०५१ ।** ** द्व्यच्त्र्यज्भ्यामेव ।* ** इरिकादिभ्यः प्रतिषेधो वक्तव्यः ।* (२६१) (वा० ग०) । इरिका मिरिका तिमिरा । **इतिरिकादिः ।। आकृतिगणः ।।**		ओषधि और वनस्पतिवाची शब्द पूर्वपद में हों तो वन के न को विकल्प से ण होता है ।
पू-म्, सं-म्, र-णः, पू-त्	**७. अह्नोऽदन्तात् ७९१ ।**		यदि अदन्त पूर्वपद में हो तो अहन् के न को ण होता है ।
पू-म्, सं-म्, र-णः, पू-त्	**८. वाहनमाहितात् १०५२ ।**		यदि आहितवाची पूर्वपद में हो तो वाहन के न को ण होता है ।
पू-म्, सं-म्, र-णः, पू-त्	**९. पानं देशे १०५३ ।**	पानं १०	देशाभिधान में पूर्वपदोत्तर पान के न को ण होता है ।
पू-म्, सं-म्, र-णः, पू-त्, पानं	**१०. वा भावकरणयोः १०५४ ।** ** गिरिनद्यादीनां वा ।* (२६२) (वा० ग०) । गिरिनदी गिरिनख गिरिनद्ध गिरिनितम्ब चक्रनदी चक्रनितम्ब तूर्यमान माषोन आर्गयन ।। **इति गिरिनद्यादिः ।। आकृतिगणः ।।**	वा ११	पूर्वपदोत्तर पान के न को ण विकल्प से होता है, यदि पान शब्द भाव या करण में निष्पन्न हो ।
पू-म्, सं-म्, र-णः, पू-त्, वा	**११. प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च १०५५ ।** ** युवादेर्न ।* (२६३) (वा० ग०) । युवन् पक्व अहन् ।। **इति युवादिः ।।** (आर्ययूना क्षत्रिययूना प्रपक्वानि परिपक्वानि दीर्घाह्नी) ।। **आकृतिगणोऽयम् ।।**	प्रा-षु १३	पूर्वपदोत्तर प्रातिपदिकान्त नुम् विभक्ति में न को विकल्प से ण होता है ।
पू-म्, सं-म्, र-णः, पू-त्, प्रा-षु	**१२. एकाजुत्तरपदे णः ३०७ ।**		एक अच् उत्तर पद में हो जिस समास में, उसमें प्रातिपदिकान्त नुम् विभक्ति में न को ण होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **१३. कुमति च १०५६**
पू-त्, प्रा-षु

यदि उत्तरपद कवर्ग युक्त हो तो पूर्वपदोत्तर प्रातिपदिकान्त नुम् विभक्ति में न को ण् होता है।

पू-म्, सं-म्, र-णः **१४. उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य २२८७** उ-त् २३

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर णोपदेश धातु के न को ण होता है असमास में भी।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **१५. हिनुमीना २५३०।**
उ-त्

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर हिनु मीना के न को ण होता है।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **१६. आनि लोट् २२३१।**
उ-त्

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर लोडादेश आनि के न को ण होता है।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **१७. नेर्गदनदपतपदघुमास्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु च २२८५।** नेः १८
उ-त्

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर नि के न को ण होता है यदि बाद में गद नद पत पद घु मा स्यति हन्ति याति वाति द्राति प्साति वपति वहति शाम्यति चिनोति देग्धि हो।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **१८. शेषे विभाषाऽकखादावषान्त उपदेशे २२३२।**
उ-त्, नेः

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर नि के न को विकल्प से ण होता है, यदि उत्तर धातु उपदेशावस्था मे अकादि अखादि तथा अषान्त हो।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **१९. अनितेः २४७८।** अ-तेः २१
उ-त्

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर अनिति के न को ण होता है।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **२०. अन्तः २९८४** ॥ १ ॥
उ-त्, अ-तेः

(इसी सन्दर्भ में) पदान्त में वर्तमान अनिति के न को ण होता है।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **२१. उभौ साभ्यासस्य २६०६।**
उ-त्, अ-तेः

(इसी सन्दर्भ में) साभ्यास अनिति के दोनों न को ण होता है।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **२२. हन्तेरत्पूर्वस्य ३५९।** ह-स्य २३
उ-त्

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर अत् युक्त हन् के न को ण होता है।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **२३. वमोर्वा २४२९।**
उ-त्, ह-स्य

(इसी सन्दर्भ में) हन् के न को ण होता है यदि बाद में व म हो।

पू-म्, सं-म्, र-णः **२४. अन्तरदेशे ३२९४।** अ-शे २५

अदेशाभिधान में अन्तर् उत्तरवर्ती अत्पूर्व हन् के न को ण होता है।

पू-म्, सं-म्, र-णः, **२५. अयनं च ३२९५।**
अ-शे

अदेशाभिधान में अन्तर् उत्तरवर्ती अयन के न को ण होता है।

पू-म्, सं-म्, र-णः **२६. छन्दस्यृदवग्रहात् ३६४८।** छन्दसि २७

वेद में ऋकारान्त अवग्रह पूर्वपद में हो तो उत्तर न को ण होता है।

पू-म्, सं-म्, र-ण:, छन्दसि	**२७. नश्च धातुस्थोरुषुभ्यः ३६४९ ।**	न: २८	धातुस्थ निमित्तोत्तर उरुशब्दोत्तर षु शब्दोत्तर नस् के न को ण होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, न:	**२८. उपसर्गादनोत्परः[1] ८५९ ।**	उ-त् ३४	यदि ओत्परक न हो तो उपसर्गस्थ निमित्त से परे नस् के न को ण होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, उ-त्	**२९. कृत्यचः २८३५ ।** * *निर्विण्णस्योपसंख्यानम् ।*	कृति ३४ अच: ३१	उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर अजुत्तर कृत्स्थ न को ण होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, कृति, उ-त्, अच:	**३०. णेर्विभाषा २८३६ ।**	विभाषा ३१	ण्यन्त से विहित कृत्प्रत्ययस्थ न को विकल्प से ण होता है यदि पूर्वपद में उपसर्गस्थ निमित्त हो।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, कृति, उ-त्, अच:, विभाषा	**३१. हलश्चेजुपधात् २८३७ ।**	हल: ३२	हलादि इजुपध धातु से परे कृत्सम्बन्धी न को विकल्प से ण होता है यदि उसके पूर्व में अच् हो तथा पूर्व में उपसर्गादि निमित्त हों।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, कृति, उ-त्, हल:	**३२. इजादेः सनुमः २८३८ ।**		इसी स्थिति में इजादि सनुम् हलन्त धातु से विहित् कृत् के न को ण होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, कृति, उ-त्	**३३. वा निंसनिक्षनिन्दाम् २८३९ ।**		उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर निंस निक्ष निन्द के न को विकल्प से ण होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, कृति, उ-त्	**३४. न भाभूपूकमिगमिप्यायीवेपाम् २८४० ।** * *पूञ एवेह ग्रहणमिष्यते ।* * *ण्यन्तभादीनामुपसंख्यानम् ।*	न ३९	उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर भा भू पू कमि गमि प्यायी वेपा के कृत् न को ण नहीं होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, न	**३५. षात्पदान्तात् ३३१० ।**		पदान्त ष से उत्तर न को ण नहीं होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, न	**३६. नशेः षान्तस्य २५१८ ।**		षकारान्त नश् के न को ण नहीं होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, न	**३७. पदान्तस्य १९८ ।**		पदान्त न को ण नहीं होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, न	**३८. पदव्यवायेऽपि १०५७ ।** * *अतद्धित इति वाच्यम् ।*		पद व्यवधान रहने पर न को ण नहीं होता है।
पू-म्, सं-म्, र-ण:, न	**३९. क्षुभ्नादिषु च ७९२ ।**		क्षुभ्न आदि में न को ण नहीं होता है।

---

१. 'उपसर्गाद्बहुलम्' इति भाष्यम्।

(२६४) क्षुभ्ना नृनमन नन्दिन् नन्दन नगर। एतान्युत्तरपदानि संज्ञायां प्रयोजयन्ति। हरिनन्दी हरिनन्दनः गिरिनगरम्। नृतिर्यङि प्रयोजयति। नरीनृत्यते। नर्तन गहन नन्दन निवेश निवास अग्नि अनूप्। एतान्युत्तर पदानि प्रयोजयन्ति। परिनर्तनम् परिगहनम् परिनन्दनम् शरनिवेशः शरनिवासः शराग्निः दर्भानूपः। 'आचार्यादणत्वं च' १८४। आचार्यभोगीनः। **आकृतिगणोऽयम्।। पाठान्तरम्।।** क्षुभ्ना तृप्नु नृनमन नरनगर नन्दन। यङ्नृती। गिरिनदी गृहगमन निवेश निवास अग्नि अनूप आचार्यभोगीन चतुर्हायन। 'इरिकादीनि वनोत्तरपदानि संज्ञायाम्' १८५। इरिका तिमिर समीर कुबेर हरि कर्मार ।। **इति क्षुभ्नादिः ।।**

**** अग्रग्रामाभ्यां नयतेर्णो वाच्यः ।***

सन्धिप्रकरणम्

पू-म्, सं-म्	**४०. स्तोः श्चुना श्चुः १११** ।। २ ।। **** श्चुत्वं धुटि सिद्धं वाच्यम् ।***	स्तोः ४२	सकार तवर्ग को शकार चवर्ग के योग में शकार चवर्ग होता है।
पू-म्, सं-म्, स्तोः	**४१. ष्टुना ष्टुः ११३ ।**	ष्टुः ४४	सकार तवर्ग को षकार टवर्ग के योग में षकार टवर्ग होता है।
पू-म्, सं-म्, स्तोः, ष्टुः	**४२. न पदान्ताट्टोरनाम् ११४ ।** **** अनाम्नवतिनगरीणामिति वक्तव्यम् ।***	न ४४	नाम् को छोड़कर पदान्त टवर्ग से उत्तर स्तु को ष्टु नहीं होता है।
पू-म्, सं-म्, ष्टुः, न	**४३. तोः षि ११५ ।**	तोः ४४	तवर्ग को षकार परे रहने पर ष्टुत्व नहीं होता है।
पू-म्, सं-म्, तोः, ष्टुः, न,	**४४. शात् ११२ ।**		शकार से उत्तर तवर्ग को श्चुत्व नहीं होता है।
पू-म्, सं-म्	**४५. यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ११६ ।** **** प्रत्यये भाषायां नित्यम् ।***	यरः ४७	अनुनासिक परे रहने पर पदान्त यर् को विकल्प से अनुनासिक होता है।
पू-म्, सं-म्, यरः	**४६. अचो रहाभ्यां द्वे ५९ ।**	अचः ४७ द्वे ५२	अच् से उत्तरवर्ती रेफ हकार से परे यर् को द्वित्व होता है।
पू-म्, सं-म्, यरः, द्वे, अचः,	**४७. अनचि च ४८ ।** **** यणो मयो द्वे वाच्ये ।***		अच् से परे यर् को द्वित्व होता है यदि पर में अच् न हो।
पू-म्, सं-म्, द्वे	**४८. नादिन्याक्रोशे पुत्रस्य ५५ ।** **** तत्परे च ।*** **** वा हतजग्धयोः ।*** **** चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम् ।***	न ५२	आक्रोश गम्यमान हो तो आदिनी शब्द से पहले पुत्र को द्वित्व नहीं होता है।

पू-म्, सं-म्, न, द्वे	**४९. शरोऽचि ३४० ।**		अच् परे रहने पर शर् को द्वित्व नहीं होता है ।
पू-म्, सं-म्, न, द्वे	**५०. त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य ५६ ।**		शाकटायन मत में तीन से अधिक संयुक्त व्यञ्जन हों तो दित्व नहीं होता है ।
पू-म्, सं-म्, न, द्वे	**५१. सर्वत्र शाकल्यस्य ५७ ।**		सर्वत्र द्विर्वचन नहीं होता है । (शा०)
पू-म्, सं-म्, न, द्वे	**५२. दीर्घादाचार्याणाम् ५८ ।**		दीर्घ से उत्तर को दीर्घ नहीं होता है कुछ आचार्यों के मत में ।
पू-म्, सं-म्	**५३. झलां जश्झशि ५२ ।**	झलां ५६	झल् के स्थान में जश् होता है यदि पर में झश् हो ।
पू-म्, सं-म्, झलां	**५४. अभ्यासे चर्च २१८२ ।**	चर् ५६	अभ्यास में वर्तमान झल् को चर् होता है तथा जश् भी होता है ।
पू-म्, सं-म्, झलां, चर्	**५५. खरि च १२१ ।**		यदि पर में खर् हों तो झल् को चर् होता है ।
पू-म्, सं-म्, झलां, चर्	**५६. वाऽवसाने २०६ ।**	वा-ने ५७	अवसान में झल् को विकल्प से चर् होता है ।
पू-म्, सं-म्, वा-ने	**५७. अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः ११० ।**		अवसान में अप्रगृह्य अण् को विकल्प से अनुनासिक होता है ।
पू-म्, सं-म्	**५८. अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः १२४ ।**	अ-णः ५९	यय् परे रहने पर अनुस्वर को परसवर्ण होता है ।
पू-म्, सं-म्, अ-णः	**५९. वा पदान्तस्य १२५ ।**		पदान्त अनुस्वर को यय् परे रहने पर विकल्प से परसवर्ण होता है ।
पू-म्, सं-म्	**६०. तोर्लि ११७ ।** ।। ३ ।।		तवर्ग को लकार परे रहने पर परसवर्ण होता है ।
पू-म्, सं-म्	**६१. उदः स्थास्तम्भ्वोः पूर्वस्य ११८ ।**	पू-स्य ६२	उद् से परे स्था स्तम्भ को पूर्वसवर्ण होता है ।
पू-म्, सं-म्, पू-स्य	**६२. झयो होऽन्यतरस्याम् ११९ ।**	झयः ६३ अ-म् ६५	झय् से उत्तर ह को विकल्प से पूर्वसवर्ग होता है ।
पू-म्, सं-म्, झयः, अ-म्	**६३. शश्छोऽटि १२० ।** ** छत्वममीति वाच्यम् ।*		झय् से उत्तर श को विकल्प से छ होता है, यदि पर में अट् हो ।
पू-म्, सं-म्, अ-म्	**६४. हलो यमां यमि लोपः ६० ।**	हलो-पः ६५	हल् से उत्तर यम् का विकल्प से लोप होता है, यदि बाद में यम् हो ।
पू-म्, सं-म्, अ-म्, हलो-पः	**६५. झरो झरि सवर्णे ७१ ।**		हल् से उत्तर झर् का विकल्प से लोप होता है, यदि पर में सवर्ण झर् हो ।

पू-म्, सं-म्	**६६. उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः ३६६० ।**	अनु-स्य ६७ ।	उदात्त से उत्तर अनुदात्त को स्वरित होता है ।
पू-म्, सं-म्, अनु-स्य	**६७. नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्यकाश्यपगालवानाम् ३६६१ ।**		उदात्तपर स्वरितपर अनुदात्त को स्वरित नहीं होता है । (गा० का० गालव)
पू-म्	**६८. अ अ ११ ।**		(विवृत) अ को (संवृत) अ होता है ।

रषाभ्यामुभौ ष्टुनाष्टुरुदः स्थाष्टौ ।'।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च ।

श्रीः

परिशिष्टम्

अत्र अष्टाध्याय्यामनेकेषु सूत्रेषु अन्यान्यपि वार्तिकादीनि समुपलभ्यन्ते (परन्तु अस्मिन् संस्करणे नोद्धृतानि) तानि संगृह्य प्रकाश्यन्ते ।

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
	प्रथमोऽध्यायः **(प्रथमः पादः)**	
६८	स्वं रूपं शब्दस्याशब्द संज्ञा	* सित्तद्विशेषाणां वृक्षाद्यर्थम् * पित्पर्यायवचनस्य च स्वाद्यर्थम् * जित्पर्यायवचनस्यैव राजाद्यर्थम् * झित्तद्विशेषाणां च मत्स्याद्यर्थम्
७३	वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्	* गोत्रोत्तरपदस्य च * गोत्रान्ताद् वाऽ समस्तवत् * जिह्वाकात्य हरित कात्य वर्जम्
	(द्वितीयः पादः)	
६	इन्धिमवतिभ्यां च	* श्रन्थिग्रन्थिदम्भि स्वञ्जीनामिति वक्तव्यम्
५९	अस्मदो द्वयोश्च	* अस्मदः सविशेषणस्य प्रयोगे न
७२	त्यदादीनि सर्वैं नित्यम्	* त्यदादीनां मिथो यद्यत्परं ततच्छिष्यते
	(तृतीयः पादः)	
२०	आङो दोऽनास्यविहरणे	* आस्यविहरणसमान क्रियादपि प्रतिषेधो वक्तव्यः

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
	(चतुर्थः पादः)	
६०	गतिश्च	* गत्युपसर्गसंज्ञकाः क्रियायोगे यत्क्रियायुक्तास्तं प्रतीति वचनम्
	द्वितीयोऽध्यायः **(प्रथमः पादः)**	
२०	नदीभिश्च	* नदीभिः संख्यायाः समाहारेऽव्ययीभावो वक्तव्यः
३३	कृत्यैधिकारार्थवचने	* कृत्यग्रहणे यण्ण्यतोर्ग्रहणम्
३९	स्तोकान्तिकदूरार्थ कृच्छ्राणि क्तेन	* शतसहस्रौ परेणेति वक्तव्यम्
४२	ध्वाङ्क्षेण क्षेपे	* ध्वाङ्क्षेणेत्यर्थग्रहणम्
४३	कृत्यैर्ऋणे	*कृत्यैर्नियोगे यद्ग्रहणम्
६०	क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ्	* कृतापकृतादीनामुपसंख्यानम् कर्त्तव्यम्
	(द्वितीयः पादः)	
८	षष्ठी	* तत्स्थैश्च गुणैः षष्ठी समस्यत इति वक्तव्यम् * न तु तद्विशेषणैः * गुणात्तरेण तरलोश्चेति वक्तव्यम्
१८	कुगतिप्रादयः	* स्वती पूजायाम् * दुर्निन्दायाम् * आङीषदर्थे

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
		* कु: पापार्थे * अव्ययं प्रवृद्धादिभ्य:
२४	अनेकमन्यपदार्थे	* बहुव्रीहि: समानाधिकरणानाम् * अव्ययानां न बहुव्रीहिर्वक्तव्य: * सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च * समुदायविकरणषष्ठ्याश्च * सुबधिकारेऽस्तिक्षीरादीनाम्
३३	अजाद्यन्तम्	* बहुष्वनियम: * द्वन्द्वे घ्यजाद्यदन्तं विप्रतिषेधेन
	(तृतीय: पाद:)	
१२	गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि	* अध्वन्यर्थग्रहणम् * आस्थितप्रतिषेधश्च
६७	क्तस्य च वर्तमाने	* नपुंसके भाव उपसंख्यानम् * शेषविज्ञानात् सिद्धम्
	(चतुर्थ: पाद:)	
७	विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामा:	* अग्रामा इत्यत्र नगराणां प्रतिषेधो वक्तव्य: * उभयतश्च ग्रामाणां प्रतिषेधो वक्तव्य:
१७	स नपुंसकम्	* वाऽऽबन्त: स्त्रियामिष्ट: * अनो नलोपश्च वा द्विगु: स्त्रियाम्
१८	अव्ययीभावश्च	* क्रियाविशेषणानां च क्लीवतेष्यते
२९	रात्राह्नाहा: पुंसि	* अनुवाकादय: पुंसीति वक्तव्यम्
५४	चक्षिङ: ख्याञ्	* ख्शादिरप्यमादेश इष्यते

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
		* बहुलं संज्ञाछन्दसोरिति वक्तव्यम्
५८	ण्यक्षत्रियार्षञितोयूनि लुगणिञो:	* अब्राह्मणगोत्रमात्राद् युवप्रत्ययस्योपसंख्यानाम्
८४	तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्	* सप्तम्या ऋद्धिनदीसमास संख्यावयवेभ्यो नित्यमिति वक्तव्यम्
	तृतीयोऽध्याय: **(प्रथम: पाद:)**	
५	गुप्तिज्किद्भ्य: सन्	* निन्दा क्षमा व्याधिप्रतीकारेषु सन्निष्यते
६	मान्वध दान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य	* अत्रापि सन्नर्थविशेष इष्यते। मानेर्जिज्ञासायाम्। वधेर्वैरूप्ये। दानेरार्जवे। शानेर्निशाने।
७	धातो: कर्मण: समानकर्तृकादिच्छायां वा	* इच्छासन्नन्तात्प्रतिषेधो वक्तव्य:
८	सुप आत्मन: क्यच्	* छन्दसि परेच्छायामिति वक्तव्यम्
११	कर्तु: क्यङ् सलोपश्च	* ओजसोऽप्सरसो नित्यं पयसस्तु विभाषया * सर्वप्रातिपदिकेभ्य इत्येके
१७	शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्य: करणे	* अटाट्टाशीकाकोटापोटासोटाकष्टा ग्रहणं कर्तव्यम्
२६	हेतुमति च	* आङ्लोपश्च कालात्यन्तसंयोगे मर्यादायाम् * चित्रीकरणे प्रापि

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
		* नक्षत्रयोगे ज्ञि	१७१	आदृगम हन जन: किकिनौ लिट् च	* किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि सदादिभ्यो दर्शनात्
३६	इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छ:	* ऊर्णोतेश्च प्रतिषेधो वक्तव्य:			
१०३	अर्य: स्वामिवैश्ययो:	* स्थानिन्यन्तोदात्तत्वं च वक्तव्यम्		(तृतीय: पाद:)	
			३	भविष्यति गम्यादय:	* अनद्यतन उपसंख्यानम्
११०	ऋदुपधाचाक्लृपिचृते:	* समवपूर्वाच्च			
११२	भृजोऽसंज्ञायाम्	* संपूर्वाद् विभाषा	१५	अनद्यतने लुट्	* परिदेवने श्वस्तनी भविष्यदर्थे वक्तव्या
११८	प्रत्यपिभ्यां ग्रहे:	* छन्दसीति वक्तव्यम्			
१४३	विभाषा ग्रह:	* भवतेश्चेति वक्तव्यम्	३५	उदि ग्रह:	* उद्ग्राभ निग्राभौ च छन्दसि स्रुगुद्यमननिपातयो:
	(द्वितीय: पाद:)				
४३	मेघर्तिभयेषु कृञ:	* उपपदविधौ भयादिग्रहणं तदन्तविधिं प्रयोजयति	४०	हस्तादाने चेरस्तेये	* उच्चयस्य प्रतिषेधो वक्तव्य:
७८	सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये	* उत्प्रतिभ्यामाङि सर्तेरुपसंख्यानम्	९४	स्त्रियां क्तिन्	* स्त्रियां क्तिन्नावादिभ्य:
					* श्रु यजिस्तुभ्य:
११०	लुङ्	* वसतेलुङ्, रात्रिविशेषे जागरण संततौ वक्तव्य:			* ऋकारल्वादिभ्य: क्तिन्निष्ठावद् भवतीति वक्तव्यम्
१११	अनद्यतने लङ्	* परोक्षे च लोकविज्ञाते प्रयोक्तुर्दर्शनविषये लङ् वक्तव्य:		(चतुर्थ: पाद:)	
			२१	समानकर्तृकयो: पूर्वकाले	* आस्यं व्यादाय स्वपिति संमील्य हसतीत्युपसंख्यानमपूर्वकालत्वात्
१२४	लट: शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे	* माङ्याक्रोशे			
१२८	पूङ्यजो: शानन्	* द्विष: शतुर्वा वचनम्			
१३६	अलंकृञ्-निराकृञ् प्रजनोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतु वृधु सह चर इष्णुच्	* अलङ्कृञो मण्डनार्थाद् युच: पूर्वविप्रतिषेधेनेष्णुज्वक्तव्य:		चतुर्थोध्याय: (प्रथम: पाद:)	
			१९	कौरव्य माण्डूकाभ्याञ्च	* कौरव्यमाण्डूकयोरा: सुरेरुपसंख्यानम्
१३९	ग्लाजिस्थश्च क्स्नु:	* दंशेश्छन्दस्युपसंख्यानम्			
			५३	अस्वाङ्गपूर्वपदाद् वा	* बहुलं संज्ञा छन्दसोरिति वक्तव्यम्
१५८	स्पृहि गृहि पति दयि निद्रा तन्द्रा श्रद्धाभ्य आलुच्	* आलुचि शीङो ग्रहणम्			
			५४	स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्	* अङ्गगात्रकण्ठेब्य इति वक्तव्यम्
१६२	विदि भिदिच्छिदे: कुरच्	* व्यधे: सम्प्रसारणं कुरच् वक्तव्य:	६५	इतो मनुष्यजाते:	* इञ उपसंख्यानमजात्यर्थम्

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
१२०	स्त्रीभ्यो ढक्	* वडवाया वृषे वाच्ये * अण् क्रुञ्चा कोकिलात् स्मृत: * आरक् पुंसि ततोऽन्यत्र * गोधाया ढ्रग्विधौ स्मृत:			* स्थाम्नो लुग् वक्तव्य: * अजिनान्ताच्च
			१२१	रथाद्यत्	* रथाङ्ग एवेष्यते * रथसीता हलेभ्यो यद्विधाविति तदन्तविधि रुपसंख्यायते
			१३१	रैवतिकादिभ्यश्छ:	* कौपिञ्जल हास्तिपदादण् * आथर्वणिकस्येकलोपश्च
१५६	अणो द्व्यच:	* त्यदादीनां वा फिञ् वक्तव्य:			
	(द्वितीय: पाद:)			(चतुर्थ: पाद:)	
३७	भिक्षादिभ्योऽण्	* गुणदिभ्य: ग्रामज्वक्तव्य:	१४०	वसो: समूहे च	* वसुशब्दादपि यद् वक्तव्य:
५१	इनि त्र कट्यचश्च	* कमलादिभ्य: खण्डच् * नर करि तुरङ्गाणां स्कन्धच् प्रत्यय: * पूर्वादिभ्य काण्ड:			
				पञ्चमोऽध्याय:	
६५	सूत्राच्च कोपधात्	* संख्या प्रकृतेरिति वक्तव्यम्		(प्रथम: पाद:)	
	(तृतीय: पाद:)		९	आत्मन् विश्वजन भोगोत्तर पदात्ख:	* राजाचार्याभ्यां नित्यम्
४	अर्धाद् यत्	* सपूर्वपदाट्ठञ् वक्तव्य:	२१	शताच्च ठन्यतावशते	* शतप्रतिषेधेऽन्यशतत्वेऽप्रतिषेध:
२३	सायं चिरं प्राह्णे प्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्यु ट्युलौ तुट् च	* प्रगस्य छन्दसि गलोपश्च	३३	खार्या ईकन्	* काकिण्याश्चोपसंख्यानम्
६०	अन्त: पूर्वपदाट्ठञ्	* समानशब्दट्ठञ् वक्तव्य:	३५	शाणाद् वा	* शताच्चेति वक्तव्यम्
		* तदादेश्च * ऊर्ध्व दमाच्च ठञ् वक्तव्य: * देहाच्च * लोकोत्तरपदाच्च * जनपरयो: कुक् च * मध्य शब्दादीय: * मणमीयौ च प्रत्ययौ वक्तव्यौ	९४	तदस्य ब्रह्मचर्यम्	* तच्चरतीति च * चातुर्मास्यानां य लोपश्च * अष्टाचत्वारिंशतोड्डुंश्च * संज्ञायामण् वक्तव्य:
			१११	अनुप्रवचनादिभ्यश्छ:	* छ प्रकरणे विशिपूरि पति रुहि प्रकृतेरनात् सपूर्वपदादुपसंख्यानम्

संख्याः	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
१२४	गुणवचन ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च	* अर्हतो नुम् च
१३२	योपधाद् गुरूपोत्तमाद् वुञ्	* सहायाद् वेति वक्तव्यम्
	(द्वितीयः पादः)	
११	अवारपारात्यन्तानुकामं गामी	* विपरीताच्च * विगृहीतादपीष्यते
१२	समां समां विजायते	* पूर्वपदस्य यलोपवचनम्
२९	संप्रोदश्च कटच्	* भङ्गायाश्च
३७	प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ् मात्रचः	* शक्छनोर्डिनिर्वक्तव्यः * डट् स्तोमे वक्तव्यः
४६	शदन्त विंशतेश्च	* शतग्रहणेऽन्त ग्रहणं प्रत्ययग्रहणे यस्मात् स तदादेरधिकारार्थम् * संख्याग्रहणं च कर्त्तव्यम्
१०९	केशाद्वोऽन्यतरस्याम्	* व प्रकरणे मणिहिरण्याभ्यामुपसंख्यानम्
१२२	बहुलं छन्दसि	* छन्दोविन्प्रकरणेऽष्ट्रामेखलाद्वयोभयरुजाहृदयानां दीर्घश्च * मर्मणश्चेति वक्तव्यम् * सर्वत्रामयस्योपसंख्यानम्
	(तृतीयः पादः)	
२	किंसर्वनाम बहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः	बहुग्रहणे संख्या ग्रहणम्
३२	पश्चात्	* दिक्पूर्वपदस्यापरस्य पश्चभावो वक्तव्यः आतिश्च प्रत्ययः * अर्धोत्तरपदस्य च समासे * अर्धे च
८४	शेवल सुपरि विशाल वरुणार्यमादीनां तृतीयात्	* वरुणादीनाम तृतीयादचो लोपः स चाकृसन्धीनामिति वक्तव्यम्
	(चतुर्थः पादः)	
३६	तद्युक्तात्कर्मणोऽण्	* नव सूर मर्त यविष्ठेभ्यो यत् * क्षेमाद्यः
६९	न पूजनात्	* प्राग्बहुव्रीहिग्रहणं च कर्त्तव्यम्
१०३	अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि	* अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि वा वचनम्
११६	अप्पूरणी प्रमाण्योः	* अपि प्रधानपूरणीग्रहणं कर्त्तव्यम् * छन्दसि च नेतुरुपसंख्यानम् * मासाद् भृतिप्रत्ययपूर्वपदाट्ठञ्विधिः
११८	अञ्नासिकायाः सञ्ज्ञायां नसं चास्थूलात्	* अप्रत्ययोऽपीष्यते
१३१	ऊधसोऽनङ्	* ऊधसोऽनङि स्त्रीग्रहणम्
	षष्ठोऽध्यायः **(प्रथमः पादः)**	
३	नन्द्राः संयोगादयः	* वा नामधातूनां तृतीयस्य द्वे भवत इति वक्तव्यम्
८	लिटिधातोरनभ्यासस्य	* द्विर्वचनप्रकरणे छन्दसि वेति वक्तव्यम्
१२	दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश्च	* द्विवर्चन प्रकरणे कृआदीनां के
३७	न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्	* कक्षायाः संज्ञायाम्

संख्याः	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
५०	मीनाति मिनोति दीङां ल्यपि च	* निमीमिलियां खलचोः प्रतिषेधो वक्तव्यम्
८६	षत्वतुकोरसिद्धः	* पदान्त पदाद्योरेकादेशोऽसिद्ध इति वक्तव्यम्
८९	एत्येधत्यूठ्सु	* ऋणदशाभ्यां च.
९४	एङि पररूपम्	* सीमन्तः केशवेशे
१२७	इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च	* ईषा अक्षादिषु प्रकृतिभावमात्रं वक्तव्यम्
१४४	अपरस्पराः क्रियासातत्ये	* समो हिततततयोर्वा लोपः * सम्तुमुनोः कामे * मनसि च * अवश्यमः कृत्ये
१५०	विष्किरः शकुनौ वा	* विष्किरं शकुनौ विकिरो वा
१५८	अनुदात्तं पदमेकवर्जम्	* विभक्तिस्वरान्नञ्स्वरो बलीयानिति वक्तव्यम् * विभक्तिनिमित्त स्वराच्च नञ्स्वरो बलीयानिति वक्तव्यम्
१७४	उदात्तयणो हल्पूर्वात्	* उदात्तयणि हल्ग्रहणं नकारान्ताद्यर्थम्
१७६	ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप्	* मतुबुदात्तत्वे रेग्रहणम् * त्रेश्च प्रतिषेधो वक्तव्यः
१८७	आदिः सिचोऽन्यतरस्याम्	* सिच आद्युदात्तत्वेऽनिटः पित उपसंख्यानम्
१९१	सर्वस्य सुपि	* सर्वस्वरोऽनच्कस्येति वक्तव्यम्
	(द्वितीयः पादः)	
२	तत्पुरुषे तुल्यार्थ तृतीया सप्तम्युपमानाव्यय द्वितीया कृत्याः	* अव्यये नञ्कुनिपातानाम्
	(तृतीयः पादः)	
५	आज्ञायिनि च	* आत्मनश्च पूरणे इत्युपसंख्यानम्
८९	दृग्दृशवतुषु	* दृशेः क्सप्रत्ययोऽपि तत्रैव वक्तव्यः
१०९	पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्	* वाचो वादेडत्वं वलभावश्चोत्तरपदस्येञि
१२२	उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम्	* सादकारयोः कृत्रिमे * अमनुष्यादिष्विति वक्तव्यम् * प्रतिवेशादिनां विभाषा
	(चतुर्थः पादः)	
८४	वर्षाभ्वश्च	* वर्षाहन्कार पुनः पूर्वस्य भुव इति वक्तव्यम्
९६	छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य	* अद्विप्रभृत्युपसर्गस्येति वक्तव्यम्
१०६	उतश्च प्रत्ययादसंयोग पूर्वात्	* उतश्च प्रत्ययाच्छन्दो वा वचनम्
११४	इद्दरिद्रस्य	* सिद्धश्च प्रत्ययविधौ भवतीति वक्तव्यम् * अद्यतन्यां वेति वक्तव्यम्
१३२	वाह ऊठ्	* असिद्धं वहिरङ्गमन्तरङ्गे
१४८	यस्येति च	* इयङुवङ्भ्यां लोपो भवति विप्रतिषेधेन
१४९	सूर्य तिष्यागस्त्य मत्स्यानां य उपधायाः	* अन्तिकस्य तसि कादिलोप आद्युदात्तत्वं च * तमे तादेश्च

संख्याः	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
	सप्तमोऽध्यायः	
	(प्रथमः पादः)	
९८	चतुरनडुहामुदात्तः	* आमनुडुहः स्त्रियां वेति वक्तव्यम्
१०२	उदोष्ठ्यपूर्वस्य	* इत्वोत्वोभ्यां गुणवृद्धी भवतो विप्रतिषेधेन
	(द्वितीयः पादः)	
१३	कृ सृ भृ वृ स्तु द्रु स्रु श्रुवो लिटि	* कृञोऽ सुट इति वक्तव्यम्
३६	स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते	* क्रमेः कर्तर्यात्मनेपदविषयात् कृति प्रतिषेधो वक्तव्यः
४९	सनीवन्तर्ध भ्रस्ज दम्भु श्रि स्वृ यूर्णु भर ज्ञपि सनाम्	* इषेस्तकारे, श्यन्प्रत्ययात् प्रतिषेधः
९९	त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृ चतसृ	* तिसृभावे संज्ञायां कन्युपसंख्यानाम् * चहसर्याद्युदात्तनिपातनं च
	(तृतीयः पादः)	
१	देविका शिंशपा दित्यवाड् दीर्घसत्र श्रेयसामात्	* वहीनरस्येद् वचनम्
१०७	अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः	* डलकवतीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः * छन्दसि वेति वक्तव्यम् * तलो ह्रस्वो वा ङिसम्बुद्ध्योरिति वक्तव्यम् * मातॄणां मातच् पुत्रार्थमर्हते
१०९	जसि च	* जसादिषु छन्दसि वा वचनं प्राङ्णौ चङ्युपधायाः
	(चतुर्थः पादः)	
१	णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः	* उपधाह्रस्वत्वे णेर्णिच्युपसंख्यानम्
१०	ऋतश्च संयोगादेर्गुणः	* संयोगादेर्गुणविधाने संयोगोपधग्रहणं कृञर्थम्
६१	शर्पूर्वाः खयः	* **शर्पूर्वविशेषे** खर्पूर्वग्रहणम्
८५	नुगतोऽनुनासिकान्तस्य	* पदान्तवच्चेति वक्तव्यम्
	अष्टमोऽध्यायः	
	(प्रथमः पादः)	
१२	प्रकारे गुणवचनस्य	* स्वार्थेऽवधार्यमाणेऽनेकस्मिन् * चापले द्वे भवत इति वक्तव्यम् * आभीक्ष्ण्ये द्वे भवतः * पूर्वप्रथमयोरर्थातिशयविवक्षायाम् * उतरडतमयोः समसंप्रधारणायां स्त्रीनिगदे भावे द्वे भवतः * कर्मव्यतिहारे सर्वनाम्नो द्वे भवत इति वक्तव्यम्
२६	सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा	* युष्मदस्मदोरन्यतरस्यामनन्वादेश इति वक्तव्यम् * सर्व एव वान्नावादयोऽनन्वादेशे विभाषा वक्तव्याः
६६	यद्वृत्तान्नित्यम्	* वा याथाकाम्ये

संख्याः	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
	(द्वितीयः पादः)	
६	स्वरितो वानुदात्ते पदादौ	* एकादेशस्वरोऽन्तरङ्गः सिद्धो वक्तव्यः * संयोगान्तलोपो रोरुत्वे सिद्धः * सिज्लोप एकादेशे सिद्धो वक्तव्यः * प्लुतिस्तुग्विधौ छे सिद्धौ वक्तव्यः * निष्ठादेशः षत्वस्वरप्रत्ययेड्विधिषु सिद्धो वक्तव्यः * श्चुत्वं धुटि सिद्धं वक्तव्यम् * अभ्यासजश्त्वचर्त्वमेत्वतुकोः सिद्धे वक्तव्ये * द्विर्वचने परसवर्णत्वं सिद्धं वक्तव्यम् * पदाधिकारश्चेल्लत्वढत्वघत्वनत्वरुत्व षत्वणत्वानुनासिक छत्वानि सिद्धानि वक्तव्यानि
८	न ङिसंबुद्ध्योः	* वा नपुंसकानामिति वक्तव्यम्
१८	कृपो रो लः	* कृपणादीनां प्रतिषेधः
२२	परेश्च घाङ्कयोः	* योगे चेति वक्तव्यम्
२९	स्कोः संयोगाद्योरन्ते च	* हृग्रहोर्भश्छन्दसि हस्येति वक्तव्यम्
३२	दादेर्धातोर्घः	* हृग्रहोर्भश्छन्दसि हस्येति वक्तव्यम्
७०	अम्नरूधरवरित्युभयथा	* छन्दसि भाषायां च

संख्याः	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
	छन्दसि	प्रचेतसो राजन्युपसंख्यानम्
८३	प्रत्यभिवादे शूद्रे	* असूद्रस्त्र्यसूयकेषु
१०३	स्वरितमाम्रेडितेऽसूयासंमति कोपकुत्सनेषु	* असूयादिषु वावचनं कर्त्तव्यम्
	(तृतीयः पादः)	
४१	इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य	* पुम्मुहुसोः प्रतिषेधो वक्तव्यः
१०१	युष्मत्तत्ततक्षुःष्वन्तः पादम्	* ह्रस्वात्तादौ तिङि प्रतिषेधः
११४	स्तम्भु सिवुसहां चङि	* स्तम्भु सिवु सहां चङि उपसर्गादिति वक्तव्यम्
	(चतुर्थः पादः)	
४५	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	* शरः खयो द्वे भवत इति वक्तव्यम्
६१	उदः स्थास्तम्भ्वोः पूर्वस्य	* उदः पूर्वत्वे स्कन्देश्छन्दस्युपसंख्यानम्

•••

अष्टाध्यायीसूत्राणां सूची (१)

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३५०३	अमु च च्छन्दसि ५।४।१२
९७०	अमूर्धमस्तकात्स्वा० ६।३।१२
७८३	अमैवाव्ययेन २।२।२०
३५६२	अमो मश् ७।१।४०
३६०४	अम्नरूधरवरित्युभय० ८।२।७०
२९१८	अम्बाम्बगोभूमिस० ८।३।९७
२६७	अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ७।३।१०७
३३३	अम् संबुद्धौ ७।१।९९
१८७६	अयः शूलदण्डाजि० ५।२।७६
२६४९	अयङ् यि क्ङिति ७।४।२२
३२९५	अयनं च ८।४।२५
३३९०	अयस्मयादीनि च्छ० १।४।२०
२३११	अयामन्ताल्वाय्ये० ६।४।५५
१३५३	अरण्यान्मनुष्ये ४।२।१२९
३८३४	अरिष्टगौडपूर्वे च ६।२।१००
२९४२	अरुर्द्विषदजन्तस्य मु० ६।३।६७
२१२१	अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोर० ५।४।५१
२४९३	अर्तिपिपर्त्योश्च ७।४।७७
३१६५	अर्तिलूधूसूखनस० ३।२।१८४
२५७०	अर्तिह्रीव्लीरीक्नू० ७।३।३६
१७८	अर्थवदधातुरप्रत्ययः १।२।४५
३७७८	अर्थे ६।२।४४
१०२६	अर्थे विभाषा ६।३।१००
३०६४	अर्देः संनिविभ्यः ७।२।२४
७१३	अर्धं नुपंसकम् २।२।२
८१६	अर्धर्चाः पुंसि च २।४।३१
८०२	अर्धाच्च ५।४।१००
१६८४	अर्धात्परिमाणस्य पू० ७।३।२६
१३७४	अर्धाद्यत् ४।३।४
३८२४	अर्मे चावर्णं द्व्यच्त्र्यच् ६।२।९०
२८५१	अर्यः स्वामिवैश्ययोः ३।१।१०३
३६४	अर्वणस्त्रसावनञः ६।४।१२७
१९३३	अर्शआदिभ्योऽच् ५।२।१२७
२९२६	अर्हः ३।२।१२
३११३	अर्हः प्रशंसायाम् ३।२।१३३
२८२२	अर्हे कृत्यतृचश्च ३।३।१६९
३११६	अलंकृञ्निराकृ० ३।२।१३६
९५८	अलंखल्वोः प्रतिषे० ३।४।१८
४२	अलुगुत्तरपदे ६।३।१
२४९	अलोऽन्त्यस्य १।१।५२
८७५	अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा १।१।६५
९०५	अप्लाख्यायाम् ५।४।१३६
२०४०	अल्पे ५।३।८५
२३४	अल्लोपोऽनः ६।४।१३४
१६००	अवक्रयः ४।४।५०
२०५०	अवक्षेपणे कन् ५।३।९५
८८	अवङ् स्फोटायनस्य ६।१।१२३
३४४२	अवचक्षे च ३।४।१५
२८४९	अवद्यपण्यवर्याग० ३।१।१०१
३५२४	अवपथासि च ६।१।१२१
१३९७	अवयवादृतोः ७।३।११
१५१५	अवयवे च प्राण्यौ० ४।३।१३५
१७४८	अवयसि ठंश्च ५।१।८४
३४१६	अवयाः श्वेतवाः पु० ८।२।६७
९४७	अवसमन्धेभ्यस्त० ५।४।७९
२२७३	अवाच्चालम्बनावि० ८।३।६८
१८३४	अवात्कुटारच्च ५।२।३०
२७२४	अवाग्रः १।३।५१
१७१२	अवारपारात्यन्तानु० ५।२।११
१३४९	अवृद्धादपि बहु० ४।२।१२५
१११६	अवृद्धाभ्यो नदी० ४।१।११३
२०९६	अवेः कः ५।४।२८
३२२६	अवो ग्रहो वर्षप्रति० ३।३।५१
३१९९	अवे तॄस्त्रोर्घञ् ३।३।१२०
३४१५	अवे यजः ३।२।७२
३१८७	अवोदैधौद्मप्रश्रथ० ६।४।२९
३१९७	अवोदोर्नियः ३।३।२६
८१	अव्यक्तानुकरणस्या० ६।१।९८
२१२८	अव्यक्तानुकरणाद्व्य० ५।४।५७
६५२	अव्ययं विभक्तिसमी० २।१।६
२०२६	अव्ययसर्वनाम्नाम० ५।३।७१
१३२४	अव्ययात्त्यप् ४।२।१०४
४५२	अव्ययादाप्सुपः २।४।८२
६५१	अव्ययीभावः २।१।५
४५१	अव्ययीभावश्च १।१।४१
६५९	अव्ययीभावश्च २।४।१८
१४३६	अव्ययीभावाच्च ४।३।५९
६६०	अव्ययीभावे चाकाले ६।३।८१
६७७	अव्ययीभावे शर० ५।४।१०७
३३८१	अव्यये यथाभिप्रेता० ३।४।५९
३५१९	अव्यादवद्यादव० ६।१।११६
२६६१	अशनायोदन्यध० ७।४।३४
१४४३	अशब्दे यत्खावन्य० ४।३।६४
८२७	अशाला च २।४।२४
२५३३	अश्नोतेश्च ७।४।७२
२६६२	अश्वक्षीरवृषलवणा० ७।१।५१
१०७४	अश्वपत्यादिभ्यश्च ४।१।८४
१८२०	अश्वस्यैकाहगमः ५।२।१९
३५९०	अश्वाघस्यात् ७।४।३७
१११३	अश्वादिभ्यः फञ् ४।१।११०
३४७२	अश्विमानण् ४।४।१२६
२०७९	अषडक्षाशितंग्वलं० ५।४।७
१०२५	अषष्ठ्यतृतीयास्थ० ६।३।९९
३७१	अष्टन आ विभक्तौ ७।२।८४
१०४६	अष्टनः संज्ञायाम् ६।३।१२५
३७१८	अष्टनो दीर्घात् ६।१।१७२
३७२	अष्टाभ्य औश् ७।१।२१
२२४२	असंयोगाल्लिट् कित् १।२।५
१५२९	असंज्ञायां तिल० ४।२।१४९
१६८२	असमासे निष्का० ५।१।२०
१३७९	अ सांप्रतिके ४।३।९
२१८३	असिद्धवदत्राभात् ६।४।२२
३४६९	असुरस्य स्वम् ४।४।१२३
२९५१	असूर्यललाटयोर्दृ० ३।२।३६
७६९	अस्तं च १।४।६८
१९७६	अस्ताति च ५।३।४०
१५१०	अस्तिनास्तिदिष्टं० ४।४।६०
२२५	अस्तिसिचोऽपृक्ते ७।३।९६
२४७०	अस्तेर्भूः २।४।५२
३२२२	अस्थिदधिसक्थ्य० ७।१।७५
८१८	अस्मदो द्वयोश्च १।२।५९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२२१३	झेर्जुस् ३।४।१०८
२१६९	झोऽन्तः ७।१।३
१५३३	ञितश्च तत्प्रत्ययात् ४।३।१५५
३०८८	ञीतः क्तः ३।२।१८७
३६८६	ञ्नित्यादिर्नित्यम् ६।१।१९७
२०७२	ञ्यादयस्तद्राजाः ५।३।११९
२०१	टाङसिङसामि० ७।१।१२
४५८	टाबृचि ४।१।९
४७०	टिड्ढाणञ्द्वयसज्० ४।१।१५
२२३३	टित आत्मनेपदा० ३।४।७९
३१६	टेः ६।४।१४३
१७८६	टेः ६।४।१५५
३२६७	ट्वितोऽथुच् ३।३।८९
१३०३	ठक्छौ च ४।२।८४
१४५४	ठगायस्थानेभ्यः ४।३।७५
१२४९	ठञ्कवचिन श्च ४।२।४
११७०	ठस्येकः ७।३।५०
२०३५	ठाजादावूर्ध्वं द्विती० ५।३।८३
१३१	डः सि धुट् ८।३।२९
२५९	डति च १।१।२५
४६१	डाबुभाभ्यामन्य० ४।१।१३
३२६६	ड्वितः क्त्रिः ३।३।८८
११३९	ढकि लोपः ४।१।१३३
११२२	ढक्च मण्डूकात् ४।१।११९
३४५५	ढश्छन्दसि ४।४।१०६
११४२	ढे लोपोऽकद्र्वाः ६।४।१४७
२३३५	ढो ढे लोपः ८।३।१३
१७४	ढ्रलोपे पूर्वस्य० ६।३।१११
३२१६	णचः स्त्रियामञ् ५।४।१४
२२८३	णलुतमो वा ७।१।९१
२५६४	णिचश्च १।३।७४
२५०२	णिजां त्रयाणां गुणः० ७।४।७५
३८१३	णिनि ६।२।७९
२३१२	णिश्रिद्रुस्रु० ३।१।४८
२७३८	णेरणौ यत्कर्म णौ० १।३।६७
३०६६	णेरध्ययने वृत्तम् ७।२।२६
२३१३	णेरनिटि ६।४।५१
२८३६	णेर्विभाषा ८।४।३०
३११७	णेश्छन्दसि ३।२।१३७
२२८६	णो नः ६।१।६५
२६०७	णौ गमिरबोधने २।४।४६
२३१४	णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ७।४।१
२६०१	णौ च संश्चङोः २।४।५१
२५७९	णौ च संश्चङोः ६।१।३१
२८८१	ण्य आवश्यके ७।३।६५
१२७६	ण्यक्षत्रियार्षञितो० २।४।५८
३२८४	ण्यासश्रन्थो युच् ३।३।१०७
२९०९	ण्युट् च ३।३।१४७
२८९५	ण्वुल्तृचौ ३।१।१३३
२१५६	तङानावात्मनेपदम् १।४।१००
१४५३	तत आगतः ४।३।७४
६८४	तत्पुरुषः २।१।२२
७४५	तत्पुरुष; समानाधि० १।२।४२
७८४	तत्पुरुषयाङ्गुलेः० ५।४।८६
९७२	तत्पुरुषे कृति ब० ६।३।१४
३७३६	तत्पुरुषे तुल्यार्थतृती० ६।२।२
३८५७	तत्पुरुषे शालायां० ६।२।१२२
८२२	तत्पुरुषोऽनञ्कर्म० २।४।१९
२०८९	तत्प्रकृतवचने मयट् ५।४।२१
१५७८	तत्प्रत्यनु ४।४।२८
११२८	तत्प्रत्ययस्य च ७।३।२९
२५७५	तत्प्रयोजको हेतुश्च १।४।५४
७२३	तत्र २।१।४६
१८६३	तत्र कुशलः पथः ५।२।६३
१७६०	तत्र च दीयते कार्यं० ५।१।९६
१३९३	तत्र जातः ४।३।२५
१७७९	तत्र तस्येव ५।१।११६
८४६	तत्र तेनेदमिति स० २।२।२७
१६२०	तत्र नियुक्तः ४।४।६९
१४२८	तत्र भवः ४।३।५३
१७०९	तत्र विदित इति च ५।१।४३
१६५०	तत्र साधुः ४।४।९८
१२१५	तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः ४।२।१४
७८१	तत्रोपपदं सप्तमीस्थम ३।१।९२
१८०८	तत्सर्वादेः पथ्यङ्ग० ५।२।७
५३८	तथायुक्तं चानी० १।४।५०
१२६९	तदधीते तद्वेद ४।२।५९
२१२५	तदधीनवचने ५।४।५४
१६७४	तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ५।१।१२
१७२८	तदर्हति ५।१।६३
१७८०	तदर्हम् ५।१।११७
१२९५	तदशिष्यं संज्ञाप्र० १।२।५३
१८४६	तदस्मिन्नधिकमि० ५।२।४५
१८८२	तदस्मिन्नन्नं प्राये० ५।२।८२
१२७९	तदस्मिन्नस्तीति दे० ४।२।६७
१७१३	तदस्मिन्वृद्ध्यायला० ५।१।४७
१६१७	तदस्मै दीयते नि० ४।४।६६
१६७८	तदस्य तस्मिन्स्यादिति ५।१।१६
१६०१	तदस्य पण्यम् ४।४।५१
१७२३	तदस्य परिमाणम् ५।१।५७
१७५८	तदस्य ब्रह्मचर्यम् ५।१।९४
१८३७	तदस्य संजातं तार० ५।२।३६
१४२७	तदस्य सोढम् ४।३।५२
१२६६	तदस्यां प्रहरणमि० ४।२।५७
१८९४	तदस्यास्त्यस्मिन्नि० ५।२।९४
३८१	तदोः सः सावन० ७।२।१०६
१९६८	तदो दा च ५।३।१९
१४६५	तद्गच्छति पथिदूतयोः ४।३।८५
१७१६	तद्धरतिवहत्यावहति० ५।१।५०
४४८	तद्धितश्चासर्वविभक्तिः १।१।३८
३७११	तद्धितस्य ६।१।१६४
५३०	तद्धिताः ४।१।७६
७२८	तद्धितार्थोत्तरपद० २।१।५१
१०७५	तद्धितेष्वचामादेः ७।२।११७
२१०४	तद्युक्तात्कर्मणोऽण् ५।४।३६
११९३	तद्राजस्य बहुषु० २।४।६२
१६२७	तद्वहति रथयुगप्रास० ४।४।७६
३४७१	तद्वानासामुपधा० ४।४।१२५
२४६६	तनादिकृञ्भ्य उः ३।१।७९
२५४७	तनादिभ्यस्तथासोः २।४।७९
३५४९	तनिपत्योश्छन्दसि ६।४।९९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१०४८	नरे संज्ञायाम् ६।३।१२९
२५२९	न लिङि ७।२।३९
३९३६	न लुट् ८।१।२९
२६३	न लुमताङ्गस्य १।१।६३
६२७	न लोकाव्ययनिष्ठा० २।३।६९
२३६	नलोपः प्रातिपदि० ८।२।७
३५३	नलोपः सुप्स्वर० ८।२।२
७५७	नलोपो नञः ६।३।७३
३३३५	न ल्यपि ६।४।६९
२६४६	न वशः ६।१।२०
१९०	न विभक्तौ तुस्माः १।३।४
२३४८	न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ७।२।५९
२४	न वेति विभाषा १।१।४४
२४१६	न व्यो लिटि ६।१।४६
२९३७	न शब्दश्लोककलह० ३।२।२३
२२६३	न शसददवादि० ६।४।१२६
२५१८	नशेः षान्तस्य ८।४।३६
४३१	नशेर्वा ८।२।६३
१३२	नश्च ८।३।३०
३६४९	नश्च धातुस्थो० ८।४।२७
१२३	नश्चापदान्तस्य झ० ८।३।२४
१४०	नश्छव्यप्रशान् ८।३।७
३०८	नषट्स्वस्रादिभ्यः ४।१।१०
३५५	न संयोगाद्वमन्तात् ६।४।१३७
७९३	न संख्यादेः स० ५।४।८९
८९३	न संज्ञायाम् ५।४।१५
३६०३	नसत्तनिषत्तानु० ८।२।६१
३६३	न संप्रसारणे सं० ६।१।३७
२०७७	न सामि वचने ५।४।५
३३०७	न सुदुर्भ्यां केव० ७।१।६८
३६६६	न सुब्रह्मण्यायां स्व० १।२।३७
६७९	नस्तद्धिते ६।४।१४४
३९३८	नह प्रत्यारम्भे ८।१।३१
३८३५	न हास्तिनफलक० ६।२।१०१
१०३७	नहिवृतिवृषि० ६।३।११६
४४०	नहो धः ८।२।३४
२५७२	नाग्लोपिशास्वृ० ७।४।२
३८६७	नाचार्यराजर्त्वि० ६।२।१३३
१३	नाज्झलौ १।१।१०
४२४	नाञ्चेः पूजायाम् ६।४।३०
८९६	नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ५।४।१५९
२९४५	नाडीमुष्ट्योश्च ३।२।३०
१६८५	नातः परस्य ७।३।२७
१६५	नादिचि ६।१।१०४
५५	नादिन्याक्रोशे० ८।४।४८
३६०२	नाद्धस्य ८।२।१७
३३८४	नाधार्थप्रत्यये० ३।४।६२
२७९३	नानद्यतनवत्० ३।३।१३५
२७३२	नानोर्ज्ञः १।३।५८
१८५०	नान्तादसंख्यादेर्मट् ५।२।४९
२५०३	नाभ्यस्तस्याचि पि० ७।३।८७
४२७	नाभ्यस्ताच्छतुः ७।१।७८
४१३	नामन्त्रिते समा० ८।१।७३
३७२३	नामन्यतरस्याम् ६।१।१७७
२०९	नामि ६।४।३
३३८०	नाम्न्यादिशिग्रहोः ३।४।५८
८२	नाम्रेतस्यान्त्य० ६।१।९९
८०१	नावो द्विगोः ५।४।९९
३९०२	नाव्ययदिक्शब्द० ६।२।१६८
६५७	नाव्ययीभावादतो० २।४।८३
२९४४	नासिकास्तनयो० ३।२।२९
५११	नासिकोदरौष्ठ० ४।१।५५
१६२४	निकटे वसति ४।४।७३
२७५३	निगरणचलनार्थे० १।३।८७
३६१३	निगृह्यानुयोगे च ८।२।९४
३२६५	निधो निमितम् ३।३।८
१५२४	नित्यं वृद्धशरा० ४।३।१४
१८५७	नित्यं शतादिमा० ५।२।५७
४८७	नित्यं संज्ञाछन्दसोः० ४।१।२९
४९२	नित्यं सपत्न्यादिषु ४।१।३५
१५९	नित्यं समासेऽनुत्तर० ८।३।४५
२५९६	नित्यं स्मयतेः ६।१।५७
७७८	नित्यं हस्ते पाणा० १।४।७७
२५४८	नित्यं करोतेः ६।४।१०८
२६३४	नित्यं कौटिल्ये गतौ ३।१।२३
७११	नित्यं क्रीडाजीविकयोः २।२।१७
२२००	नित्यं ङितः ३।४।९९
३४४६	नित्यं छन्दसि ४।१।४६
३५८७	नित्यं छन्दसि ७।४।८
८६२	नित्यमसिच्प्रजा० ५।४।१२२
३२४३	नित्यं पणः परिमाणे ३।३।६६
३६९८	नित्यं मन्त्रे ६।१।२१०
२१४०	नित्यवीप्सयोः ८।१।४
३०८२	निनदीभ्यां स्नातेः० ८।३।८९
३१२६	निन्दहिंसासक्लिशखाद ३।२।१४६
१०३	निपात एकाजनाङ् १।१।१४
३५३८	निपातस्य च ६।३।१२६
३९३७	निपातैर्यद्यदिहन्तकु० ८।१।३०
३२५१	निपानमाहावः ३।३।७४
३३५५	निमूलसमूलयोः कषः ३।४।३४
२५६०	निरः कुषः ७।२।४६
३२९९	निरभ्योः पूल्वोः ३।३।२८
३९१८	निरुदकादीनि च ६।२।१८४
३०२९	निर्वाणोऽवाते ८।२।५०
१५६९	निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः ४।४।१९
३७४२	निवाते वातत्राणे ६।२।८
३२१३	निवासचितिशरीर० ३।३।४१
३६४७	निव्यभिभ्योऽड्व्य० ८।३।११९
१३८४	निशाप्रदोषाभ्यां च ४।३।१४
२१३३	निष्कुलान्निष्कोषणे ५।४।६२
८९९	निष्ठा २।२।३६
३०१३	निष्ठा ३।२।१०२
३६९३	निष्ठा च व्द्यजनात् ६।१।२०५
३०५७	निष्ठायां सेटि ६।४।५२
३०१४	निष्ठायामण्यदर्थे ६।४।६०
३०५२	निष्ठा शीङ्स्विदि० १।२।१९
३९०३	निष्ठोपमानादन्यत० ६।२।१६९
३८४४	निष्ठोपसर्गपूर्वमन्य० ६।२।११०
८९७	निष्प्रवाणिश्च ५।४।१६०
२७०३	निसमुपविभ्यो ह्वः १।३।३०
२४०३	निसस्तपतावना० ८।३।१०२

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२६४२	नीग्वञ्चुसंसुध्वंसु० ७।४।८४
६	नीचैरनुदात्तः १।२।३०
२०३२	नीतौ च तद्युक्तात् ५।३।७७
२६४३	नुगतोऽनुनासिका० ७।४।८५
३०३८	नुदविदोन्दत्राघ्रा० ८।२।५६
४३४	नुम्विसर्जनीयशर्व्य० ८।३।५८
२८३	नृ च ६।४।६।
३७२८	नृ चान्यतरस्याम् ६।१।१८४
१४१	नॄन्पे ८।३।१०
२२६८	नेटि ७।२।४
२५१६	नेट्यलिटि रधेः ७।१।६२
२९८१	नेड्वशि कृति ७।२।८
३५५९	नेतराच्छन्दसि ७।१।२६
३४९	नेदमदसोरकोः ७।१।११
१२४०	नेन्द्रस्य परस्य ७।३।२२
९७७	नेन्सिद्धबध्नातिषु च ६।३।१९
३०३	नेयङुवङ्स्थानावस्त्री १।४।४
३९२६	नेरनिधाने ६।२।१९२
२२८५	नेर्गदनदपतपद० ८।४।१७
१८३३	नेर्बिडज्बिरीसचौ ५।२।३२
२६८७	नेर्विशः १।३।१७
३७२१	नोङ्धात्वोः ६।१।१७५
३८७६	नोत्तरपदेऽनुदात्ता० ६।२।१४२
३४५४	नोत्वद्वर्धबिल्वात् ४।३।१५१
३६६१	नोदात्तस्वरितोदय० ८।४।६७
२७६३	नोदात्तोपदेशस्य० ७।३।३४
३४०५	नोनयतिध्वनयत्ये० ३।१।५१
३३२४	नोपधात्थफान्ताद्वा १।२।२३
३७०	नोपधायाः ६।४।७
३२४१	नौ गदनदपठस्वनः ३।३।६४
३२३७	नौ ण च ३।३।६०
१५५५	नौ द्व्यचष्ठन् ४।४।७
१६४३	नौवयोधर्मविषमूल० ४।४।९१
३२२३	नौ वृ धान्ये ३।३।४८
१५४३	न्यग्रोधस्य च केवलस्य ७।३।५
२८६४	न्यङ्क्वदीनां च ७।३।५३
३७८७	न्यधी च ६।२।५३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१८२६	पक्षातिः ५।२।२५
१५८५	पक्षिमत्स्यमृगान्हन्ति ४।४।३५
१७२५	पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्च० ५।१।५९
५२३	पङ्गोश्च ४।१।६८
३०३१	पचो वः ८।२।५२
१७२६	पञ्चद्दशतौ वर्मे वा ५।१।६०
६९९	पञ्चमी भयेन २।१।३७
६३९	पञ्चमी विभक्ते २।३।४२
५९८	पञ्चम्यपाङ्परिभिः २।३।१०
३९७	पञ्चम्या अत् ७।१।३१
३६३६	पञ्चम्याः परावध्यर्थे ८।३।५१
९५९	पञ्चम्यास्तोकादिभ्यः ६।३।२
३००८	पञ्चम्यामजातौ ३।२।९८
१९५३	पञ्चम्यास्तसिल् ५।३।७
१६९९	पणपादमाषशताद्यत् ५।१।३४
२३५५	पतः पुम् ७।४।१९
२५७	पतिः समास एव १।४।८
१७९३	पत्यन्तपुरोहिता० ५।१।१२८
३७५२	पत्यावैश्वर्ये ६।२।१८
४९०	पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ४।१।१३३
१५०२	पत्रपूर्वादञ् ४।३।१२२
१५०३	पत्राध्वर्युपरिषदश्च ४।३।१२३
१४०२	पथः पन्थ च ४।३।२९
१७३९	पथः ष्कन् ५।१।७५
३५३०	पथि च छन्दसि ६।३।१०८
३६८७	पथिमथोः सर्वना० ६।१।१९९
३६५	पथिमथ्यृभुक्षामात् ७।१।८५
९५७	पथो विभाषा ५।४।७२
१६५६	पथ्यतिथिवसति० ४।४।१०४
१६३९	पदमस्मिन्दृश्यम् ४।४।८७
३१८२	पदरुजविशस्पृशो० ३।३।१६
१०५७	पदव्यवायेऽपि ८।४।३८
४०१	पदस्य ८।१।१६
४०२	पदात् ८।१।१७
१९८	पदान्तस्य ८।४।३७
१५६१	पदान्तस्यान्यतरस्याम् ७।३।९
१४९	पदान्ताद्वा ६।१।७६

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२८७०	पदास्वैरिबाह्यापं० ३।१।११९
३७४१	पदेऽपदेशे ६।२।७
१५८९	पदोत्तरपदं गृह्णाति ४।४।३९
२२८	पद्दन्नोमास्हृन्निशस० ६।१।६३
९९१	पद्यस्यतदर्थे ६।३।५३
१७४०	पन्थो ण नित्यम् ५।१।७६
२८	परः सन्निकर्षः सं० १।४।१०९
८१२	परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पु० २।४।२६
१८१	परश्च ३।१।२
१६०८	परश्वधाट्ठञ्च ४।४।५८
२७९६	परस्मिन्विभाषा ३।३।१३८
२१७३	परस्मैपदानां णल० ३।४।८२
९६५	परस्य च ६।३।८
५८९	पराजेरसोढः १।४।२६
३९३३	परादिश्छन्दसि० ६।२।१९९
३२१०	परावनुपात्यय इणः ३।३।३८
३३१९	परावरयोगे च ३।४।२०
१३७५	परावराधमोत्तमपूर्वाच्च ४।३।५
५८०	परिक्रयणे संप्रदान० १।४।४४
३३७७	परिक्लिश्यमाने च ३।४।५५
१६७९	परिखाया ढञ् ५।१।१७
२२७५	परिनिविभ्यः सेव० ८।३।७०
३२०९	परिन्योर्नीणोर्द्यूता० ३।३।३७
१५८६	परिपन्थं च तिष्ठति ४।४।३६
३७६७	परिप्रत्युपापावर्ज्य० ६।२।३३
३१९०	परिमाणाख्यायां स० ३।३।२०
१६८३	परिमाणान्तस्यासं० ७।३।१७
२९४८	परिमाणे पचः ३।२।३३
१५७९	परिमुखं च ४।४।२९
१२११	परिवृतो रथः ४।२।१०
२६८४	परिव्यवेभ्यः क्रियः १।३।१८
१५९४	परिषदो ण्यः ४।४।४४
१६५३	परिषदो ण्यः ४।४।१०१
३०२६	परिस्कन्दः प्राच्यभ० ८।३।७५
३९१६	परेरभितो भावि० ६।२।१८२
२७४८	परेर्मृषः १।३।८२
२१४१	परेर्वर्जने ८।१।५

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२६७९	भावकर्मणोः १।३।१३
३४४३	भावलक्षणे स्थेण्कृ० ३।४।१६
३१८०	भाववचनाश्च ३।३।११
३१८४	भावे ३।३।१८
३४९०	भावे च ४।४।११४
३२५२	भावेऽनुपसर्गस्य ३।३।७५
३०९७	भाषायां सदवसश्रु० ३।२।१०८
२७२०	भासनोपसंभाषा० १।३।४७
१२४४	भिक्षादिभ्योऽण् ४।२।३८
२९३१	भिक्षासेनादायेषु च ३।२।१७
३०४२	भित्तं शकलम् ८।२।५९
२८६६	भिद्योद्ध्यौ नदे ३।१।११५
३१५४	भियः कुक्लुकनौ ३।२।१७४
२४९२	भियोऽन्यतरस्याम् ६।४।११५
२५९५	भियो हेतुभये षुक् ७।३।४०
५८८	भीत्रार्थानां भयहेतुः १।४।२५
३१७३	भीमादयोऽपादाने ३।४।७४
१०२०	भीरोः स्थानम् ८।३।८१
२५९४	भीस्म्योर्हेतुभये १।३।६८
३६७५	भीह्रीभृहुमदजन० ६।१।१९२
२४९१	भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च ३।१।३९
२८७७	भुजन्युब्जौ पाण्युप० ७।३।६१
२७२७	भुजोऽनवने १।३।६६
५९४	भुवः प्रभवः १।४।३१
३१५९	भुवः संज्ञान्तरयोः ३।२।१७९
३११८	भुवश्च ३।२।१३८
३४४७	भुवश्च ४।१।४७
३६०५	भुवश्च महाव्याहृतेः ८।२।७१
२०५५	भुवो भावे ३।१।१०७
२१७४	भुवो बुग्लुङ्लिटोः ६।४।८८
१९९९	भूतपूर्वे चरट् ५।३।५३
२९९५	भूते ३।२।८४
२७९७	भूते च ३।३।१४०
३१७०	भूतेऽपि दृश्यन्ते ३।३।२
१८	भूवादयो धातवः १।३।१
७३५	भूषणेऽलम् १।४।६४
२२२४	भूसुवोस्तिङि ७।३।८८
२४९६	भृञामित् ७।४।७६
२८६१	भृञोऽसंज्ञायाम् ३।१।११२
२६६७	भृशादिभ्यो भुव्यच्वे० ३।१।१२
२८८५	भोज्यं भक्ष्ये ७।३।६९
१६७	भोभगोअघोअपूर्व० ८।३।१७
१२६३	भौरिक्याद्यैषुकार्या० ४।२।५४
३९५	भ्यसो भ्यम् ७।१।३०
२५३५	भ्रस्जो रोपधयो० ६।४।४७
३१५७	भ्राजभासधुर्विद्यु० ३।२।१७७
२५६५	भ्राजभासभाषदीप० ७।४।३
१०९१	भ्रातरि च ज्यायसि ४।१।१६४
११६७	भ्रातुर्व्यच्च ४।१।१४४
९३४	भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहि० १।२।६८
१०३०	भ्रुवो वुक्च ४।१।१२५
३६०	मघवा बहुलम् ६।४।१२८
१६०६	मड्डुकझर्झरादणन्य० ४।४।५६
१६४९	मतजनहलात्करण० ४।४।९७
३०८९	मतिबुद्धिपूजार्थे० ३।२।१८८
२६२८	मतुवसो रु संबुद्धौ० ८।३।१
३७०५	मतोः पूर्वमात्संज्ञा० ६।१।२१९
१२८५	मतोश्च बह्वजङ्गात् ४।२।७२
३४८२	मतौ च ४।४।१३६
१८५९	मतौ छः सूक्तसाम्नोः ५।२।५९
१०४१	मतौ बह्वचोऽनजि० ६।३।११९
३४७४	मत्वर्थे मासतन्वोः ४।४।१२८
३२४४	मदोऽनुपसर्गे ३।३।६७
१३५५	मद्रवृज्योः कन् ४।२।१३१
२१३८	मद्रात्परिवापणे ५।४।६७
१३२९	मद्रेभ्योऽञ् ४।२।१०८
११०९	मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मण० ४।१।१०६
३४८५	मधोः ४।४।१३९
३४७५	मधोर्ञ च ४।४।१२९
९६९	मध्याद्गुरौ ६।३।११
१३७८	मध्यान्मः ४।३।८
७७७	मध्येपदे निवचने च १।४।७६
१३०५	मध्वादिभ्यश्च ४।२।८६
२९९२	मनः ३।२।८२
४५९	मनः ४।१।११
९६१	मनसः संज्ञायाम् ६।३।४
१३५८	मनुष्यतत्स्थयो० ४।२।१३४
४९५	मनोरौ वा ४।१।३८
११८५	मनोर्जातावञ्य० ४।१।१६१
३८८५	मन्क्तिन्व्याख्या० ६।२।१५१
३४०२	मन्त्रे घसह्वरणश० २।४।८०
३४२०	मन्त्रे वृषेषपचमन० ३।३।९६
३४१४	मन्त्रे श्वेतवहोक्थश० ३।२।७१
३५५४	मन्त्रेष्वाङ्यादे० ६।४।१४१
३५३३	मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रि० ६।३।१३१
९९८	मन्थौदनसक्तुबि० ६।३।६०
५८४	मन्यकर्मण्यानादरे वि० २।३।१७
३८३	मपर्यन्तस्य ७।२।९१
१०८	मय उञो वो वा ८।३।३३
१४६२	मयट् च ४।३।८२
१५२३	मयड्वैतयोर्भाषा० ४।३।१४३
३३१८	मयतेरिदन्यतर० ६।४।७०
७५४	मयूरव्यंसकादयश्च २।१।७२
३४८४	मये च ४।४।१३८
१०६८	मस्करमस्करिणौ० ६।१।१५४
२५१७	मस्जिनशोर्झलि ७।१।६०
११६४	महाकुलादञ्खञौ ४।१।१४१
३७७२	महान्व्रीह्यपराह्ण० ६।२।३८
१२३८	महाराजप्रोष्ठपदा० ४।२।३५
१४७७	महाराजाट्ठञ् ४।३।९७
१२३१	महेन्द्रद्घाणौ च ४।२।२९
२२१९	माङि लुङ् ३।३।१७५
१६७३	माणवचरकाभ्यां खञ् ५।१।११
९२९	मातरपितरावुदीचाम् ६।३।३२
९८३	मातुःपितुर्भ्यामन्य० ८।३।८५
१११८	मातुरुत्संख्यासंभ० ४।१।११५
९८४	मातृपितृभ्यां स्वसा ८।३।८४
११४०	मातृष्वसुश्च ४।१।१३४
३७४८	मात्रोपज्ञोपक्रम० ६।२।१४
१५८७	माथोत्तरपद० ४।४।३७
१८९७	मादुपधायाश्च म० ८।२।९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२७००	वा गमः १।२।१३
९९४	वा घोषमिश्रशब्देषु ६।३।५६
२९५७	वाचंयमपुरंदरौ च ६।३।६९
२६०५	वा चित्तविरागे ६।४।९१
२९५६	वाचि यमो व्रते ३।२।४०
१९३०	वाचो ग्मिनिः ५।२।१२४
२१०३	वाचो व्याहृतार्थायाम् ५।४।३५
३५५२	वा छन्दसि ३।४।८८
३५१५	वा छन्दसि ६।१।१०६
३९०५	वा जाते ६।२।१७१
२३५६	वा जृभ्रमुत्रसाम् ६।४।१२४
१९३५	वातातीसाराभ्यां० ५।२।१२९
३०६८	वा दान्तशान्तपूर्ण० ७।२।२७
३२७	वा द्रुहमुहष्णुहष्णि ८।२।३३
४४४	वा नपुंसकस्य ७।१।७९
२८३९	वा निंसनिक्षनिन्दाम् ८।४।३३
६३	वान्तो यि प्रत्यये ६।१।७९
१०९२	वान्यस्मिन्सपिण्डे० ४।१।१६५
२३७८	वान्यस्य संयोगादेः ६।४।६८
१२५	वा पदान्तस्य ८।४।५९
२०४८	वा बहूनां जातिपरि० ५।३।९३
१०५४	वा भावकरणयोः ८।४।१०
३७५४	वा भुवनम् ६।२।२०
२३२१	वा भ्राशभ्लाशभ्रमु० ३।१।७०
१२१०	वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ ४।२।९
३०४	वामि १।४।५
३०२	वाम्शसोः ६।४।८०
३२९२	वा यौ २।४।५७
१२३३	वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ४।२।३१
५९०	वारणार्थानामीप्सितः १।४।२७
२४३७	वा लिटि २।४।५५
३३३४	वा ल्यपि ६।४।३८
२०६	वावसाने ८।४।५६
१५१	वा शरि ८।३।३६
९८९	वा शोकष्यञ्रोगेषु ६।३।५१
३५४१	वा षपूर्वस्य निगमे ६।४।९
८७१	वा संज्ञायाम् ५।४।१३३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२८३०	वासरूपोऽस्त्रियाम् ३।१।९४
१४७८	वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ४।३।९८
७७	वा सुप्यापिशलेः ६।१।९२
३२९	वाह ऊठ् ६।४।१३२
५१६	वाहः ४।१।६१
१९६१	वा ह च छन्दसि ५।३।१३
१०५२	वाहनमाहितात् ८।४।८
९००	वाहिताग्न्यादिषु २।२।३७
१३४१	वाहीकग्रामेभ्यश्च ४।२।११७
१६९७	विंशतिकात्खः ५।१।३२
१६८९	विंशतित्रिंशद्भ्यां० ५।१।२४
१८५६	विंशत्यादिभ्यस्तमड० ५।२।५६
११२७	विकर्णकुषीतका० ४।१।१२४
११२०	विकर्णशुङ्गच्छग० ४।१।११७
३०८५	विकुशमिपरिभ्यः० ८।३।९६
३६१६	विचार्यमाणानाम् ८।२।९७
२५३६	विज इट् १।२।२
३४१७	विजुपे छन्दसि ३।२।७३
२९८२	विड्वनोरनुनासिक० ६।४।४१
३०४१	वित्तो भोगप्रत्यययोः ८।२।५८
२४६५	विदांकुर्वन्त्वित्यन्य० ३।१।४१
३१४२	विदिभिदिच्छिदेः ३।२।१६२
१४६४	विदूराञ्ज्यः ४।३।८४
३१०५	विदेः शतुर्वसुः ७।१।३६
२४६४	विदो लटो वा ३।४।८३
१४५६	विद्यायोनिसंबन्धे० ४।३।७७
२२०८	विधिनिमन्त्रणा० ३।३।१६१
१६३५	विध्यत्यधनुषा ४।४।८३
२९५०	विध्वरुषोस्तुदः ३।२।३५
१८२८	विनञ्भ्यां नानञौ० ५।२।२७
२१०२	विनयादिभ्यष्ठक् ५।४।३४
३१४९	विन्दुरिच्छुः ३।२।१६९
२०२०	विन्मतोर्लुक् ५।३।६५
२६८५	विपराभ्यां जेः १।३।१९
२८७८	विपूयविनीयजि० ३।१।११७
९१७	विप्रतिषिद्धं चानधि० २।४।१३
१७५	विप्रतिषेधे परं कार्यम् १।४।२

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३१६०	विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञा० ३।२।१८०
१८४	विभक्तिश्च १।४।१०४
३५५५	विभाषर्जोश्छन्दसि ६।४।१६२
६६५	विभाषा २।१।११
२८००	विभाषा कथमि० ३।३।१४३
२७८४	विभाषा कदाकर्ह्योः ३।३।५
२७५१	विभाषाकर्मकात् १।३।८५
१६९४	विभाषाकार्षापणस० ५।१।२९
१३५४	विभाषा कुरुयुगं० ४।२।१३०
७७३	विभाषा कृञि १।४।७२
६४६	विभाषा कृञि १।४।९८
२८७१	विभाषा कृवृषोः ३।१।१२०
३२८७	विभाषाख्यानपरि० ३।३।११०
३०९९	विभाषा गमहनवि० ७।२।६८
६०२	विभाषा गुणेऽस्त्रि० २।३।२५
२९०५	विभाषा ग्रहः ३।१।१४३
३३४५	विभाषाग्रे प्रथमपूर्वेषु ३।४।२४
२३७६	विभाषा घ्राधेट्शा० २।४।७८
३२२५	विभाषा ङि रुप्लुवोः ३।३।५०
२३७	विभाषा ङिश्योः ६।४।१३६
८१०	विभाषा चत्वारिंश० ६।३।४९
२७६५	विभाषा चिण्णमुलोः ७।१।६९
२५२५	विभाषा चेः ७।३।५८
३६६५	विभाषा छन्दसि १।२।३६
३८९८	विभाषा छन्दसि ६।२।१६४
३५९३	विभाषा छन्दसि ७।४।४४
२२५	विभाषा जसि १।१।३२
२०८०	विभाषाञ्चेरदिक्स्त्रि० ५।४।८
१८०५	विभाषा तिलमाषो० ५।२।४
२७८	विभाषा तृतीया० ७।१।९७
३८९५	विभाषा तृन्नन्नती० ६।२।१६१
२९२	विभाषा दिक्समासे० १।१।२८
२९३	विभाषा द्वितीया० ७।३।११५
२८१२	विभाषा धातौ सं० ३।३।१५५
२३७५	विभाषा धेट्श्व्योः ३।१।४९
३८०१	विभाषाध्यक्षे ६।२।६७
३३४२	विभाषापः ६।४।५७

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३९००	व्यवायिवोऽन्तरम् ६।२।१६६
३३४१	व्यश्च ६।१।४३
२७४९	व्याङ्परिभ्यो रमः १।३।८३
१४२६	व्याहरति मृगः ४।३।५१
३२११	व्युपयोः शेतेः पर्याये ३।३।३९
१७६१	व्युष्टादिभ्योऽण् ५।१।९७
१६८	व्योर्लघुप्रयत्नतरः ८।३।१९
३२७५	व्रवयजोर्मनि क्यप् ३।३।९८
२९९०	व्रते ३।२।८०
२९४	व्रश्चभ्रस्जसृजमृज० ८।२।३६
११००	व्रातचफञोरस्त्रियाम् ५।३।११३
१८२२	व्रातेन जीवति ५।२।२१
१८०३	व्रीहिशाल्योर्ढक् ५।२।२
१५२८	व्रीहेः पुरोडाशे ४।३।१४८
१९२३	व्रीह्यादिभ्यश्च ५।२।११६
१६३२	शकटादण् ४।४।८०
३१७७	शकधृषज्ञाग्लाघट० ३।४।६५
३४३९	शकि णमुल्कमुलौ ३।४।१२
२८३३	शकि लिङ् च ३।३।१७२
२८४७	शकिसहोश्च ३।१।९९
१६०९	शक्तियष्ट्योरीकक् ४।४।५९
२९७१	शक्तौ हस्तिकपाटयोः ३।२।५४
१४७२	शण्डिकादिभ्यो ञ्यः ४।३।९२
१६९२	शतमानविंशतिकस० ५।१।२७
१९२६	शतसहस्रान्ताच्च० ५।२।११९
१६८६	शताच्च ठन्यतावशते ५।१।२१
३७१९	शतुरनुमो नद्यजादी ६।१।१७३
१८४७	शदन्तविंशतेश्च ५।२।४६
२३६२	शदेः शितः १।३।६०
२५९८	शदेरगतौ तः ७।३।४२
४४६	शप्श्यनोर्नित्यम् ७।१।८१
१५८४	शब्दर्दुरं करोति ४।४।३४
२६७३	शब्दवैरकलहाभ्र० ३।१।१७
२५१९	शमामष्टानां दीर्घः० ७।३।७४
३५४३	शमिता यज्ञे ६।४।५४
३१२१	शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ३।२।१४१
२९२८	शमि धातोः संज्ञायाम् ३।२।१४

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१५२२	शम्याः ष्लञ् ४।३।१४२
९७६	शयवासवासिष्वका० ६।३।१८
११०४	शरद्वच्छुनकदर्भा० ४।१।१०२
१०४२	शरादीनां च ६।३।१२०
१४३०	शरीरावयवाच्च ४।३।५५
१६६६	शरीरावयवाद्यत् ५।१।६
३४०	शरोऽचि ८।४।४९
२०६२	शर्करादिभ्योऽण् ५।३।१०७
१३०२	शर्कराया वा ४।२।८३
१५०	शर्परे विसर्जनीयः ८।३।३५
२२५९	शर्पूर्वाः खयः ७।४।६१
२३३६	शल इगुपधादनिटः० ३।१।४५
१६०४	शलालुनोऽन्यतर० ४।४।५४
१२०	शश्छोऽटि ८।४।६३
३९१	शसो न ७।१।२९
१५०८	शाकलाद्वा ४।३।१२८
२०५८	शाखादिभ्यो यः ५।३।१०३
२५८५	शाच्छासाह्वाव्यावे० ७।३।३७
३०७५	शाच्छोरन्यतरस्याम् ७।४।४१
१७००	शाणाद्वा ५।१।३५
११२	शात् ८।४।४४
३७४३	शारदेऽनार्तवे ६।२।९
५२७	शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् ४।१।७३
१८२१	शालीनकौपीने अ० ५।२।२०
२४८६	शास इदङ्हलोः ६।४।३४
२४१०	शासिवसिघसीनां० ८।३।६०
२४८७	शा हौ ६।४।३५
१३०८	शिखाया वलच् ४।२।८९
१३३	शि तुक् ८।३।३१
३८७२	शितेर्नित्याबह्वज्व० ६।२।१३८
२०५७	शिलायाः ढः ५।३।१०२
१६०५	शिल्पम् ४।४।५५
३८१०	शिल्पिनि चाकृञः ६।२।७६
२९०७	शिल्पिनि ष्वुन् ३।१।१४५
३४८९	शिवशमरिष्टस्य करे ४।४।१४३
१११५	शिवादिभ्योऽण् ४।१।११२
१६६८	शिशुक्रन्दयमसभ० ४।३।८८

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३१३	शि सर्वनामस्थानम् १।१।४२
२४४१	शीङः सार्वधातुके० ७।४।२१
२४४२	शीङो रुट् ७।१।६
१८७२	शीतोष्णाभ्यां कारिणि ५।२।७२
३५१४	शीर्षश्छन्दसि ६।१।६०
१७३०	शीर्षच्छेदाद्यच्च ५।१।६५
१६११	शीलम् ४।४।६१
१२२८	शुक्राद्धन् ४।२।२६
१४५५	शुण्डिकादिभ्योऽण् ४।३।७६
११२६	शुभ्रादिभ्यश्च ४।१।१२३
३०३०	शुषः कः ८।२।५१
३३५६	शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ३।४।३५
३६९४	शुष्कधृष्टौ ६।१।२०६
९१४	शूद्राणामनिरवसि० २।४।१०
१६९१	शूर्पादञन्यतरस्याम् ५।१।२६
२१३६	शूलात्पाके ५।४।६५
१२१८	शूलोखाद्यत् ४।२।१७
१८७९	शृङ्खलमस्य बन्धः० ५।२।७९
३८४९	शृङ्गमवस्थायां च ६।२।११५
३०६७	शृतं पाके ६।१।२७
२४९५	शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा ७।४।१२
३१५३	शॄवन्द्योरारुः ३।२।१७३
१०२	शे १।१।१३
२५४२	शे मुचादीनाम् ७।१।५९
२०३८	शेवलसुपरिविशाल० ५।३।८४
३५१६	शेश्छन्दसि बहुलम् ६।१।७०
२१५९	शेषात्कर्तरि परस्मै० १।३।७८
८९१	शेषाद्विभाषा ५।४।१५४
१३१२	शेषे ४।२।९२
२१६५	शेषे प्रथमः १।४।१०८
२८०८	शेषे लृडयदौ ३।३।१५१
३८५	शेषे लोपः ७।२।९०
३९४८	शेषे विभाषा ८।१।४१
३९५७	शेषे विभाषा ८।१।५०
२२३२	शेषे विभाषाकस्वा० ८।४।१८
२४३	शेषो घ्यसखि १।४।७
८२९	शेषो बहुव्रीहिः २।२।२३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
८४१	स्वाङ्गाच्चेतः ६।३।४०
५१०	स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद० ४।१।५४
३३८३	स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ३।४।६१
३३७६	स्वाङ्गेऽध्रुवे ३।४।५४
१८६६	स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते ५।२।६६
२५२३	स्वादिभ्यः श्नुः ३।१।७३
२३०	स्वादिष्वसर्वनाम० १।४।१७
३३४७	स्वादुमि णमुल् ३।४।२६
२५८४	स्वापेश्चङि ६।१।१८
१९३२	स्वामिन्नैश्वर्ये ५।२।१२६
६३६	स्वामीश्वराधिपति० २।३।३९
३३६१	स्वे पुषः ३।४।४०
१८३	स्वौजसमौट्छष्टाभ्यां० ४।१।२
२२५०	ह एति ७।४।५२
३२५३	हनश्च वधः ३।३।७६
२६९७	हनः सिच् १।२।१४
२८५६	हनस्त च ३।१।१०८
२५७४	हनस्तोऽचिण्णलोः ७।३।३२
२४३३	हनो वध लिङि २।४।४२
३९६१	हन्त च ८।१।५४
३५९	हन्तेरत्पूर्वस्य ८।४।२२
२४३१	हन्तेर्जः ६।४।३६
२९२३	हरतेनुद्यमनेऽच् ३।२।९
२९३९	हरतेर्दृतिनाथयोः ३।२।२५
१५६५	हरत्युसङ्गादिभ्यः ४।४।१५
११०२	हरितादिभ्योऽञः ४।१।१००
१५४६	हरीतक्यादिभ्यश्च ४।३।१६७
२५५९	हलः ६।४।२
२५५७	हलः श्नः शानज्झौ ३।१।८३
९६६	हलदन्तात्सप्तम्याः सं० ६।३।९
२६१३	हलन्ताच् च १।२।१०
१	हलन्त्यम् १।३।३
३३००	हलश्च ३।३।१२१
२८३७	हलश्चेजुपधात् ८।४।३१
१५०४	हलसीराट्ठक् ४।३।१२४
१६३३	हलसीराट्ठक् ४।४।८१
३१६४	हलसूकरयोः पुवः ३।२।१८३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
४७२	हलस्तद्धितस्य ६।४।१५०
२१७९	हलादिः शेषः ७।४।६०
३५४	हलि च ८।२।७७
३४७	हलि लोपः ७।२।११३
१७१	हलि सर्वेषाम् ८।३।२२
३०	हलोऽनन्तराः संयोगः १।१।७
६०	हलोयमां यमि लोपः ८।४।६४
२५२	हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घा० ६।१।६८
३४१२	हव्येऽनन्तःपादम् ३।२।६६
२७७६	हशश्वतोर्लङ् च ३।२।११६
१६६	हशि च ६।१।११४
२९१०	हश्च व्रीहिकालयोः ३।१।१४८
१९३९	हस्ताज्जातौ ५।२।१३३
३२१२	हस्तादाने चेरस्तेये ३।३।४०
३३६०	हस्ते वर्तिग्रहोः ३।४।३९
१७९५	हायनान्तयुवा० ५।१।१३०
२५४०	हिंसायां प्रतेश्च ६।१।१४१
३३६९	हिंसार्थानां च समा० ३।४।४८
३९४१	हि च ८।१।३४
१६१६	हितं भक्षाः ४।४।६५
२५३०	हिनु मीना ८।४।१५
९९२	हिमकाषिहतिषु च ६।३।५४
३७८९	हिरण्यपरिमाणं धने ६।२।५५
५५०	हीने १।४।८६
२११४	हीयमानपापयोगाच्च ५।४।४७
२४२५	हुझल्भ्यो हेर्धिः ६।४।१०१
२३८७	हुश्नुवोः सार्वधातुके ६।४।८७
५४१	हृकोरन्यतरस्याम् १।४।५३
१६४७	हृदयस्य प्रियः ४।४।९५
९८८	हृदयस्य हृल्लेखयद० ६।३।५०
११३३	हृद्भगसिन्ध्वते पूर्व० ७।३।१९
३०७०	हृषेर्लोमसु ७।२।२९
३९६७	हेति क्षियायाम् ८।१।६०
२५७६	हेतुमति च ३।१।२६
१४६१	हेतुमनुष्येभ्योऽन्य० ४।३।८१
२८१३	हेतुहेतुमतोर्लिङ् ३।३।१५६
५६८	हेतौ २।३।२३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३३९९	हेमन्तशिशिराव० २।४।२८
३४५२	हेमन्ताच्च ४।३।२१
१२७	हे मपरे वा ८।३।२६
२५३१	हेरचङि ७।३।५६
१८२४	हैयंगवीनं संज्ञायाम् ५।२।२३
९६	हैहेप्रयोगे हैहयोः ८।२।८५
३२४	हो ढः ८।२।३१
१८००	होत्राभ्यश्छः ५।१।१३५
३५८	होहन्तेर्ञ्णिन्नेषु ७।३।५४
२२९९	ह्म्यन्तक्षणश्वसजा० ७।२।५
२१८०	ह्रस्वः ७।४।५९
३१	ह्रस्वं लघु १।४।१०
२०८	ह्रस्वनद्यापो नुट् ७।१।५४
३७२२	ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् ६।१।१७६
२४२	ह्रस्वस्य गुणः ७।३।१०८
२८५८	ह्रस्वस्य पिति कृति० ६।१।७१
३५२७	ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तर० ६।१।१५१
१३२५	ह्रस्वात्तादौ तद्धिते ८।३।१०१
२३६९	ह्रस्वादङ्गात् ८।२।२७
३९०८	ह्रस्वान्तेऽन्त्यात्पूर्व ६।२।१७४
२०४१	ह्रस्वे ५।३।८६
३१८	ह्रस्वो नपुंसके० १।२।४७
३५७९	ह्वरेश्छन्दसि ७।२।३१
३०७३	ह्लादो निष्ठायाम् ६।४।९५
२५८६	ह्वः संप्रसारणम् ६।१।३२
३२४९	ह्वः संप्रसारणं च न्य० ३।३।७२
२९१४	ह्वावामश्च ३।२।२

सपरिशिष्टवार्तिकसूची (२)

+ एतच्चिह्नाङ्कितम् परिशिष्टीयं वार्तिकम् ।

—●—

गणपाठसूची (३क)

(वार्तिकगणपाठसहिता)

*** एवंचिह्निता गणा वार्तिकस्थाः**

गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः
२३१	अंश्वादि	६.२.१९३
१३९	अक्षद्यूतादि	४.४.१९
१९४	अङ्गुल्यादि	५.३.१०८
* १५६	अग्नि पदादि	५.१.९७
४५	अजादि	४.१.४
२४१	अजिरादि	६.३.११९
* ११५	अध्यात्मादि	४.३.६०
* २३७	अण्डादि	६.३.४२
१६०	अनुप्रवचनादि	५.१.१११
२४८	अनुशतिकादि	७.३.२०
१४७	अपूपादि	५.१.४
८४	अरीहणादि	४.२.८०
२५	अर्धर्चादि	२.४.३१
१८६	अर्श आदि	५.२.१२७
* १५४	अवान्तरदीक्षादि	५.१.९४
९१	अश्मादि	४.२.८०
६०	अश्वादि	४.१.११०
१४९	अश्वादि	५.१.३९
५३	अश्वपत्यादि	४.१.८४
* २५६	अहरादि	८.२.७०
१७६	आकर्षादि	५.२.६४
२२६	आचितादि	६.२.१४६
* २०२	आद्यादि	५.४.४४
१८	आहिताग्न्यादि	२.२.३७
* २६१	इरिकादि	८.४.६
१७७	इष्टादि	५.२.८८
७९	उक्थादि	४.२.६०
२१०	उञ्छादि	६.१.१६०
१०३	उत्करादि	४.२.९०
५४	उत्सादि	४.१.८६
१३७	उत्सङ्गादि	४.४.१५
१६८	उद्गात्रादि	५.१.१२९
३१	उपकादि	२.४.६९
* १५८	उपवस्त्रादि	५.१.१९७
२०७	उरः प्रभृति	५.४.१५१
५	ऊर्यादि	१.४.६१
११६	ऋगयनादि	४.३.७३
८६	ऋश्यादि	४.२.८०
७८	ऐषुकार्यादि	४.२.५४
११०	कच्छादि	४.२.१३३
१९	कडारादि	२.२.३८
* २५१	कणादि	७.४.३
३५	कण्ड्वादि	३.१.२७
१०५	कत्र्यादि	४.२.९५
१४४	कथादि	४.४.१०२
२५५	कपिलकादि	८.२.१८
६९	कम्बोजादि	४.१.१७३
२१८	कर्क्यादि	६.२.८७
९६	कर्णादि	४.२.८०
१७२	कर्णादि	५.२.२४
६३	कल्याणादि	४.१.१२६
२५८	कस्कादि	८.३.४८
२२४	काण्डादि	६.२.१३५
२१३	कार्तकौजपादि	६.२.३७
८८	काशादि	४.२.८०
१०८	काश्यादि	४.२.११६
२५३	काष्ठादि	८.१.६७
२४०	किंशुलकादि	६.३.११७
१४१	किसरादि	४.४.५३
* २३६	कुक्कुट्यादि	६.३.४२
५६	कुञ्जादि	४.१.९८
१००	कुमुदादि	४.२.८०
८७	कुमुदादि	४.२.८०
२०६	कुम्भपद्यादि	५.४.१३९
६६	कुर्वादि	४.१.१५१
१२२	कुलालादि	४.३.११८
१२	कृतादि	२.१.५९
८५	कृशाश्वादि	४.२.८०
२३९	कोटरादि	६.३.११७
२१९	क्रत्वादि	६.२.११८
८०	क्रमादि	४.२.६१
५०	क्रोडादि	४.१.५६
५२	क्रौड्यादि	४.१.८०
* २४९	क्षिपकादि	७.३.४५
२६४	क्षुभ्नादि	८.४.३९
७३	खण्डिकादि	४.२.४५
* ७५	खलादि	४.२.५१
४१	गम्यादि	३.३.३
५९	गर्गादि	४.१.१०५
१४६	गवादि	५.१.२
२३	गवाश्वप्रभृति	२.४.११
१११	गहादि	४.२.१३८
* २६२	गिरिनद्यादि	८.४.१०
१४५	गुडादि	४.४.१०३
२२९	गुणादि	६.२.१७६
६४	गृष्ट्यादि	४.१.१३६
२५२	गोत्रादि	८.१.२७

गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः	गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः	गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः
२९	गोपवनादि	२.५.६७	१९१	देवपथादि	५.३.१००	२३८	पृषोदरादि	६.३.१०९
१७५	गोपदादि	५.२.६२	२४६	द्वारादि	७.३.४	२६	पैलादि	२.४.५९
४८	गौरादि	४.१.४१	२०४	द्विदण्ड्यादि	५.४.१२८	* २१	प्रकृत्यादि	२.३.१८
२३२	गौरादि	६.२.१९४	१०९	धूमादि	४.२.१२७	९८	प्रगद्यादि	४.२.८०
३७	ग्रहादि	३.१.१३४	५७	नडादि	४.१.९९	२०१	प्रज्ञादि	५.४.३८
२१६	घोषादि	६.२.८५	१०४	नडादि	४.२.९१	१४३	प्रतिजनादि	४.४.९९
* १६६	चतुर्वर्णादि	५.१.१२४	१०६	नद्यादि	४.२.९७	२२ *	प्रत्यादि	२.३.४३
३	चादि	१.४.५७	३६	नन्द्यादि	३.१.१३४	१३२ *	प्रभूतादि	४.४.१
२२८	चार्वादि	६.२.१६०	* २०	नावादि	२.३.१७	२२७	प्रवृद्धादि	६.२.१४७
२२१	चिहणादि	६.२.१२५	२३०	निरुदकादि	६.२.१८४	४	प्रादि	१.४.५८
* १५९	चूडादि	५.१.११०	१४८	निष्कादि	५.१.२०	२३४	प्रियादि	६.३.३४
२२३	चूर्णादि	६.२.१३४	२५०	न्यङ्क्वादि	७.३.५३	९०	प्रेक्षादि	४.२.८०
१४२	छत्रादि	४.४.६२	९५	पक्षादि	४.२.८०	१२९	प्लक्षादि	४.३.१६४
२१७	छात्त्र्यादि	६.२.८६	३८	पचादि	४.१.१३४	९४	बलादि	४.२.८०
१५१	छेदादि	५.१.६४	* २५७	पत्यादि	८.२.७०	१८९	बलादि	५.२.१३६
* १८३	ज्योत्स्नादि	५.२.१०३	* १३४	परदारादि	४.४.१	४९	बह्वादि	४.१.४५
१२०	तक्षशिलादि	४.३.९३	* ११४	परिमुखादि	४.३.५९	५५	बाह्वादि	४.१.९६
२३५	तसिलादि	६.३.३५	१३५	पर्पादि	४.४.१०	५८	बिदादि	४.१.१०४
१७३	तारकादि	५.२.३६	१९६	पर्श्वादि	५.३.११७	•१२४	बिल्वादि	४.३.१३६
१२७	तालादि	४.३.१५२	१०७	पलद्यादि	४.२.११०	२४४	बिल्वकादि	६.४.१५३
६७	तिकादि	४.१.१५४	१२५	पलाशादि	४.३.१४१	१६५	ब्राह्मणादि	५.१.१२४
३०	तिककितवादि	२.४.६८	९	पात्रेसमितादि	२.१.४८	७०	भर्गादि	४.१.१७६
७	तिष्ठद्गु प्रभृति	२.१.१७	१८१	पामादि	५.२.१००	* १९०	भवदादि	५.३.१४
१८५	तुन्दादि	५.२.११७	२०९	पारस्करप्रभृति	६.१.१५७	१३८	भस्त्रादि	४.४.१६
८९	तृणादि	४.२.८०	* ४०	पार्श्वादि	३.२.१५	७२	भिक्षादि	४.२.३८
२७	तौल्वल्यादि	२.४.६१	७४	पाशादि	४.२.४९	४२	भिदादि	३.३.१०४
× २३३	त्रिचक्रादि	६.२.१९९	१८२	पिच्छादि	५.२.१००	४४	भीमादि	३.४.७४
१५२	दण्डादि	५.१.६६	१७१	पील्वादि	५.२.२४	३२	भृशादि	३.१.१२
२४	दधि पय आदि	२.४.१४	* २४३	पील्वादि	६.३.१२१	७७	भौरिक्यारि	४.२.५४
१९५	दामन्यादि	५.३.११६	* १६२	पुण्याह्वाचनादि	५.१.१११	१०२	मध्वादि	४.२.८६
२१४	दासीभारादि	६.२.४२	१६७	पुरोहितादि	५.१.१२८	१७०	मनोज्ञादि	५.१.१३३
११३	दिगादि	४.३.५४	१८८	पुष्करादि	५.२.१३५	१५	मयूर व्यंसकादि	२.१.७२
१६४	दृढादि	५.१.१२३	१६३	पृथ्वादि	५.१.१२२	* १५३	महानाम्न्यादि	५.१.९४

गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः
१४०	महिष्यादि	४.४.४८
२१९	मालादि	६.२.८८
* १३१	माशब्दादि	४.४.१
* ३९	मूलविभुजादि	३.२.५
२५४	यवादि	८.२.९
२८	यस्कादि	२.४.६३
१६	याजकादि	२.२.९
१९९	यावादि	५.४.२९
२१५	युक्तारोह्यादि	६.२.८१
१६९	युवादि	५.१.१३०
२६३	युवादि	८.४.११
७१	यौधेयादि	४.१.१७६
१९७	यौधेयादि	५.३.११७
१२८	रजतादि	४.३.१५४
१७८	रसादि	५.२.९५
१७	राजदन्तादि	२.२.३१
७६	राजन्यादि	४.२.५३
६५	रेवत्यादि	४.१.१४६
१२३	रैवतिकादि	४.३.१३१
१८०	लोमादि	५.२.१००
३३	लोहितादि	३.१.१३
१५०	वंशादि	५.१.५०
२२५	वनस्पत्यादि	६.२.१४०
१०१	वरणादि	४.२.८२
९९	वराहादि	४.२.८०
२२२	वर्ग्यादि	६.२.१३१
८१	वसन्तादि	४.२.६३
६८	वाकिनादि	४.१.१५८
२००	विनयादि	५.४.३४
१७४	विमुक्तादि	५.२.६१
२१२	विस्पष्टादि	६.२.२४
२११	वृषादि	६.१.२०३
१३६	वेतनादि	४.४.१२

गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः
१०	व्याघ्रादि	२.१.५६
१५५	व्युष्टादि	५.१.९७
१८४	व्रीह्यादि	५.२.११६
* २०८	शकन्ध्वादि	६.१.९४
११८	शण्डिकादि	४.३.५२
२०३	शरत्प्रभृति	५.४.१०७
१२६	शरादि	४.३.१४४
२४२	शरादि	६.३.१२०
१९३	शर्करादि	५.३.१०७
* १३	शाकपार्थिवादि	२.१.६०
१९२	शाखादि	५.३.१०३
५१	शार्ङ्गरवादि	४.१.७३
६१	शिवादि	४.१.११२
११७	शुण्डादि	४.३.७६
६२	शुभ्रादि	४.१.१२३
८	शौण्डादि	२.१.४०
१२१	शौनकादि	४.३.१०६
१४	श्रमणादि	२.१.७०
११	श्रेण्यादि	२.१.५९
९२	सख्यादि	४.२.८०
८२	संकलादि	४.२.७५
९३	संकाशादि	४.२.८०
१५७	संतापादि	५.१.१०१
११२	संधिवेलादि	४.३.१६
४७	सपत्न्यादि	४.१.३५
* ४३	सम्पदादि	३.३.१०८
१	सर्वादि	१.१.२७
२६०	सवनादि	८.३.११०
६	साक्षात्प्रभृति	१.४.७४
१७९	सिध्यादि	५.२.९७
११९	सिन्ध्वादि	४.३.९३
३४	सुखादि	३.१.१८
१८९	सुखादि	५.२.१३१

गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः
९७	सुतङ्गमादि	४.२.८०
८३	सुवास्त्वादि	४.२.७७
२५९	सुषामादि	८.३.९८
* १३३	सुस्नातादि	४.४.१
१९८	स्थूलादि	५.४.३
२४५	स्नात्वादि	७.१.४९
२	स्वरादि	१.१.३७
* १६१	स्वर्गादि	५.१.१११
४६	स्वस्रादि	४.१.१०
२४७	स्वागतादि	७.३.७
१३०	हरीतक्यादि	४.३.१६७
२०५	हस्त्यादि	५.४.१३८

(ख) गणपाठे स्वतन्त्ररूपेण न लिखिताः परमष्टाध्याय्यां प्रयुक्ताः, धातुपाठादौ भृशं व्यवहृताः केचन गणाः ।

गणः	उल्लेखस्थलम्		गणः	उल्लेखस्थलम्		गणः	उल्लेखस्थलम्	
आदिप्रभृति	२.४.७२		तनोत्यादि	६.४.३७	धातुपाठे	मुचादि	७.१.५९	धातुपाठे
अयस्मयादि	१.४.२०	न गणशब्दाः	तुजादि	६.१.७	आकृतिगणः	यजादि	६.१.१५	धातुपाठे
इन्द्रजननादि	४.३.८८	आकृतिगणः	तुदादि	३.१.७७	धातुपाठे	रधादि	७.२.४५	धातुपाठे
कण्वादि	४.१.१०५	गर्गादिगणे	त्यदादि	१.१.७४	सर्वादिगणे	रुदादि	७.२.७६	धातुपाठे
किरादि	७.२.७५	धातुपाठे	दिवादि	३.१.९१	धातुपाठे	रधादि	३.१.७८	धातुपाठे
कुटादि	१.२.१	धातुपाठे	द्युतादि	१.३.९१	धातुपाठे	लोहितादि	४.१.१८	गर्गादिगणे
क्र्यादि	३.१.८१	धातुपाठे	द्व्यादि	५.३.२	सर्वादिगणे	ल्वादि	८.२.४४	धातुपाठे
चुरादि	३.१.२५	धातुपाठे	पदादि	६.१.१७१	पद्दन्नोमासादौ	वर्ग्यादि	६.२.१३१	दिगादिगणे
जक्षादि	६.१.६	धातुपाठे	पुषादि	३.१.५५	धातुपाठे	वृतादि	१.३.९२	धातुपाठे
जुहोत्यादि	२.४.७५	धातुपाठे	प्वादि	७.३.८०	धातुपाठे	शमादि	३.२.१४१	धातुपाठे
ज्वलादि	३.१.१४०	धातुपाठे	फणादि	६.४.१२५	धातुपाठे	स्वपादि	६.१.१८८	धातुपाठे
डतरादि	७.१.२५	सर्वादिगणे	बिल्वकादि	६.४.१५३	नडादिगणे	स्वादि	१.४.१७	धातुपाठे
तनादि	२.४.७९	धातुपाठे	भूवादि	१.३.१	धातुपाठे	हरितादि	४.१.१००	विदादौ

(ग) वार्तिकेषूपलभ्यमाना भाष्यकारेण विवेचिताः केचन गणाः ।

अश्वघासादि २.१३६
उपकूलादि ४.३.५८
कम्बोजादि ४.१.१७५
खलतिकादि १.२.५२
खलादि ४.२.५१
खलेयवादि २.१.१७२
देवासुरादि ४.३.८८
पादहारकादि २.१.३३

पावकादि ७.३.४५
पैङ्गाक्षीपुत्रादि ४.२.२८
प्रतिवेशादि ६.३.१२२
ब्रह्मप्रजापत्यादि ६.३.२
भुज्य्वादि ७.१.१
मरुद्वृधादि ६.२.१०६
यवरवदादि ५.२.११६
याज्ञवल्क्यादि ४.२.६६

रथकट्यादि ७.३.४४
रौढ्यादि ४.१.७९
वतण्डादि ६.३.३४
विश्वजनादि ६.१.७६
वृषलादि ५.३.६६
वेदाध्यायादि ३.२.१
व्यतीक्षादि ३.३.४३
शिखादि ५.२.११६
स्नात्वाकालकादि ७.१.३४

अन्तर्गणसूत्रसूची

गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः
६३	अग्निशर्मन्	४.१.९९
११८	अङ्गात्कल्याणे	५.२.१००
२६	अचामचित्त	३.१.१३४
१३७	अणु निपुणे	५.४.२९
३	अन्तरं बहिर्योग	१.१.२७
९८	अन्नविकारेभ्य	५.१.४
२८	अभिभावी	३.१.१३४
१४	अम्	१.१.३७
५९	अमितौजस:	४.१.९६
१४९	अर्थान्नञ:	५.४.१५१
१०३	अर्हतो नुम्	५.१.१२४
१७५	अवहितो भोगेषु	६.२.१४७
(इदमपि ग्राह्यम्)	अवहित लक्षणम्	६.३.२०३
९	अव्ययीभावश्च	१.१.३७
१७४	आकर्षे अवहित:	६.२.१४७
२०	आख्यातमाख्यातेन	२.१.७५
१८४	आचार्यादणत्वं च	८.४.३९
७०	आत्रेय भरद्वाजे	४.१.११०
८४	आपदादि पूर्वपदात्	४.२.११६
१५	आम्	१.१.३७
३२	आरा शस्त्र्याम्	३.३.१०४
१२	आस्थाली	१.१.३७
१३०	इक्षुतिल	५.४.३
१७	इच्प्रत्यय:	२.१.१७
४९	इत: प्राण्यङ्गात्	४.१.४५
१८५	इरिकादीनि	८.४.३९
१४३	ईयसश्च	५.४.२९
१६६	उत्तमशश्वत्तम	६.१.१६०
६०	उदक: संज्ञायाम्	४.३.९६
९३	उदक: संज्ञायाम्	४.३.५४
५७	उदस्थान देशे	४.१.८६
१६	उपसर्ग विभक्ति	१.४.५७

गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः
१४४	उपायो ह्रस्वत्वं च	५.४.३४
९७	ऊधसोऽनङ्	५.१.२
१३५	ऋतावुष्णशीते	५.४.२९
११३	एकाच:	५.२.९५
(इदमपि ग्राह्यम्)	एतान्युत्तर	८.४.३९
१८२	एति संज्ञायाम्	८.३.९८
४२	एषण: करणे	४.१.४१
१८	एहीडादय:	२.१.७२
४६	कटाच्छ्रोणिवचने	४.१.४१
१५३	कारस्कारो वृक्ष:	६.१.१५७
३३	कारा बन्धने	३.३.१०४
१५६	किष्किन्धा गुहा	६.१.१५७
१५५	किष्कु: प्रमाणम्	६.१.१५७
८२	कुट्याया यलोपश्च	४.२.९५
(इदमपि ग्राह्यम्)	कुमारी क्रीडनकानि	५.४.२९
८५	कूलात्सौवीरेषु	४.२.१२७
१०	कृत्वसुच्	१.१.३७
५०	कृदिकाराक्तिन:	४.१.४५
६	कृन्मकार	१.१.३७
१२८	कृष्णातिलेषु	५.४.३
१४६	कृष्णमृगे	५.४.३८
६४	कृष्णरणौ	४.१.९९
५	क्त्वातोसुन्	१.१.३७
३६	क्रपे: सम्प्रसारणम्	३.३.१०४
८०	क्रुञ्चा ह्रस्वत्वम्	४.२.९१
६५	क्रोष्टु क्रोष्टं च	४.१.९९
७८	क्षुद्रकमालव	४.२.४५
११७	क्षुद्रजन्तूपतापयोश्च	५.२.९७
१६०	गरो दूष्ये	६.१.१६०
१११	गर्भादप्राणिनि	५.२.३६
११२	गुणात्	५.२.९५
३१	गुहागिर्योषध्यो:	३.३.१०४

गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः
१३१	गोमूत्र आच्छादने	५.४.३
१८१	गौरिषक्थ: संज्ञायाम्	८.३.९८
५८	ग्रीष्मादच्छन्दसि	४.१.८६
१०५	चतुर्वेदस्य	५.१.१२४
५२	चन्द्रभागान्नद्याम्	४.१.४५
७७	चर्मिवर्मिणो:	४.१.१५८
१३	च्व्यवर्था:	१.१.३७
३०	छिदा द्वैधीकरणे	३.३.१०४
११६	जटा घटाकटा	५.२.९७
१२२	जटा घटाकटा	५.२.१००
८९	जनपरयो: कुक्	४.२.१३८
१४७	जराया जरस्	५.४.१०७
१९	जहि कर्मणा बहुलम्	२.१.७२
१३३	जीर्ण शालिषु	५.४.३
८१	तक्षन्नलोपश्च	४.२.९१
१५७	तद्बृहतो: कर	६.१.१५७
२१	तद्राजाच्चाण:	२.४.५९
१४२	तनु सूत्रे	५.४.२९
(इदमपि ग्राह्यम्)	तसिलादय: प्राक्	१.१.३७
८	तसिलादयस्तद्धित:	१.१.३७
(इदमपि ग्राह्यम्)	तसिवती	१.१.३७
३४	तारा ज्योतिषि	३.३.१०४
९४	तालाद् धनुषि	४.३.१४२
४१	त्रिफलात्र्यनीका	४.१.४
७३	त्रिवेणी त्रिवणम्	४.१.११२
१४१	दान कुत्सिते	५.४.२९
(इदमपि ग्राह्यम्)	दासान्छन्दसि	४.१.३५
९०	देवस्य च	४.१.१३८
७२	द्व्यचो नद्या:	४.१.११२
३५	धारा प्रपातने	३.३.१०४
१८३	नक्षत्राद् वा	८.३.९८
२२	नन्दिवाशिमदि	३.१.१३४

गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः	गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः	गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः
(इदमपि ग्राह्यम्)	नानाञौ	१.१.३०	४०	मूलन्नञः	४.१.४	९६	शुनः सम्प्रसारणम्	५.१.२
९५	नामि नभ्रं च	५.१.२	१२९	यवव्रीहिषु	५.४.३	३९	शूद्रा चामहत्पूर्वा	४.१.४
(इदमपि ग्राह्यम्)	नृतिर्यङि	८.४.३९	२५	याचृव्याह	३.१.१३४	१४०	शून्य रिक्ते	५.४.२९
५४	नृनरयोर्वृद्धिश्च	४.१.७३	१५९	युगकालविशेषे	६.१.१६०	१४५	श्रोत्र शरीरे	५.४.३८
१३४	पत्रमूले	५.४.३	२४	रक्षश्रुवपशां	३.१.१३४	११०	श्रोतियस्य यलोपः	५.१.१३०
७९	पाथिन्पन्थ च	४.२.८०	१५४	रथस्था नदी	६.१.१५७	१६४	श्वभ्रे दरः	६.१.१६०
६६	परस्त्री परशुं च	४.१.१९४	(इदमपि ग्राह्यम्)	राजपुरुषात् ष्यञि	७.३.२०	९२	संवत्सरात्फल	४.३.१६
१७९	परेर्हस्तपाद	६.२.१८४	१०६	राजासे	५.१.१२८	१८०	संज्ञायां मेघ	७.३.५३
१३६	पशौ लूनविधाते	५.४.२९	१७८	राजाह्नोश्छन्दसि	६.२.१६०	३८	सदच्काण्ड	४.१.४
१६९	पात्रेसमितादयः	६.२.८१	४५	रेवती नक्षत्रे	४.१.४१	८६	समुद्रान्नावि	४.२.१२७
	क्वचित् पादः पत् च	४.४.१०	४४	रोहिणी नक्षत्रे	४.१.४१	१०२	समा मतिमनसो	५.१.१२३
१५२	पारस्करो देशः	६.१.१५७	७४	लक्ष्मण श्यामयोः	४.१.१२३	३७	संभस्त्राजिन	४.१.४
११४	पार्ष्णिधमन्योः	५.२.९७	१२१	लक्ष्म्या अच्च	५.२.१००	६१	संभूयोऽम्भसो	४.१.९६
४७	पिप्पलादयश्च	४.१.५१	८३	वडवाया वृषे	४.२.९७	७५	सम्राजः क्षत्रिये	४.१.१५१
१३८	पुत्र कृत्रिमे	५.४.२९	४	वत्वत्समत्	१.१.३७	५१	सर्वतोऽक्तिन्	४.१.४५
६९	पुंसि जाते	४.१.११०	१६३	वर्तनिः स्तोत्रे	६.१.१६०	१०४	सर्ववेदादिभ्यः	५.१.१२४
१०८	पुरुषासे	५.१.१३०	१७६	वर्तमान वर्धमान	६.२.१६०	१७०	संहिता गवि	६.२.१४६
१	पूर्वपरावर	१.१.२७	६७	वाजासे	४.१.१०५	२३	सहि तपि दमः	३.१.१३४
१४८	प्रतिपरिसमनु	५.४.१०७	११५	वात दन्त बल	५.२.९७	१६५	साम्बतापौ	६.१.१६०
१७३	प्रयुता सूष्णवः	६.२.१४७	१७७	विकारसदृशे	६.२.१६०	१५१	सारङ्ग पशु	६.१.९४
१७१	प्रवृद्धं यानम्	६.२.१४७	९९	विराग विरङ्ग	५.१.६४	१५०	सीमन्तः केशवेशे	६.१.९४
१७२	प्रवृद्धो वृषलः	६.२.१४७	२७	विशयी विषयी	३.१.१३४	११	सुच्	१.१.३७
१५८	प्राप्तुम्पतौ	६.१.१५७	१२०	विष्वगुत्तरपद	५.२.१००	(इदमपि ग्राह्यम्)	सुपन्थिन् पन्थ	४.२.८०
	क्वचित् वष्कयासमासे	४.१.८६	९१	वेणुकादिभ्य	४.२.१३८	१०७	सुभग मन्त्रे	५.१.१२९
१६७	भक्षमन्थभोग	६.१.१६०	१६१	वेद वेग वेष्ट	६.१.१६०	४३	सुमङ्गलात्संज्ञा	४.१.४१
७१	भरद्वाज आत्रेये	४.१.११०	७६	वेनाच्छन्दसि	४.१.१५१	१३२	सुरा अहौ	५.४.३
२९	भिदा विदारणे	३.३.१०४	१०१	वेर्यातलात	५.१.१२३	५५	सूत युवत्याम्	४.१.८०
५३	भोगिवद् गौरियतोः	४.१.७३	४८	शक्तिः शस्त्रे	४.१.४५	१३९	स्नात वेदसमाप्तौ	५.४.२९
५६	भोग क्षत्रिये	४.१.८०	६८	शप आत्रेये	४.१.११०	१६२	स्तु यु द्रुवः	६.१.१६०
८७	मध्य मध्यमम्	४.२.१३८	१६८	शमरणौ संज्ञा	६.१.२०३	२	स्वमज्ञाति धन	१.१.२७
(इदमपि ग्राह्यम्)	मध्यमा पुंयोगे	४.१.४	६२	शलङ्कु शलङ्कं	४.१.९९	१२५	स्वाङ्गद्धीनात्	५.२.१२७
१००	मांसौदनाद् विगृ०	५.१.१०१	९	शस्तसी	१.१.३७	१२४	स्वाङ्गाद् विवृद्धौ	५.२.११७
(इदमपि ग्राह्यम्)	मान्तः कृत्वोर्थः	१.१.३७	(इदमपि ग्राह्यम्)	शस्त्रभृतयः	१.१.३७	१०९	हृदयासे	५.१.१३०
१२६	माला क्षेपे	५.२.१३१	११९	शाकी पलाली	५.२.१००			
८८	मुखपार्श्वतसोः	४.२.१३८	१२३	शीर्षान्नञः	५.२.११६			

●

जमुई–पण्डित–ग्रामे गोरखपुरमण्डले
वसतः सारवार्यस्य कृतिः स्याद् बुधहर्षदा ।।